परमेश्वर के भेद

भाई बख्त सिंह

प्रकाशक
बेरिया बुक रूम
नवी मुम्बई, भारत

GOD'S SECRETS (Hindi)

by

Bakht Singh

All right reserved. No portion of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronics, mechanical, photocopying recording, or by any information storage and retrieval system, without the prior permission in writing from the publisher.

1st Hindi Edition, 1000 copies, 2017

Published by

BEREA BOOK ROOM

www.bereabookroom.org

Isaac Emmanuel

9967364360

Printed & Designed by

MASIHI SAHITYA SANSTHA

70 Janpath, New Delhi - 110001

Ph: 011-23320253, 23320373

E-mail: mssjanpath@gmail.com

₹ 150/-

जनवरी 1

हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। फिलि. 3:13-14

कई बार हम भूतकाल की ओर देखते हैं तथा अनेक वर्षों पूर्व प्रभु ने हमारे लिये जो किया था उसे आनन्दपूर्वक स्मरण करते हैं। वे अच्छे दिन फिर से हमारे जीवन में कुछ पलों के लिए आए, हम ऐसी इच्छा रखते हैं। परन्तु हम यह नहीं जानते कि परमेश्वर ने हमारे लिए भविष्य में इससे भी अधिक आशीषें रख छोड़ी हैं।

कदाचित परमेश्वर ने हमारे प्रति अत्यन्त भलाई दिखाई है और बीते समयों में उसने अनेक सामर्थी कार्य भी किए हैं परन्तु हम यह नहीं भूलें कि हमारे लिए और अधिक आशीषें परमेश्वर ने रख छोड़ी हैं। इन महान बातों के लिए उत्सुकता से अपेक्षा रखें। परमेश्वर ने हमारे लिए जो विशेष रीति से अच्छी बातें रखी हैं; जब उनके लिए हम आगे बढ़ेंगे तब ही हमारा विश्वास जीवित रहेगा। यह अपेक्षा और विश्वास हमें परमेश्वर के हृदय के समीप रखेगा। परमेश्वर जब तक परिपूर्णता से भरपूर न करे और हमें उसकी सम्पूर्णता तक नही लाए, तब तक वह सन्तुष्ट नहीं होता है।

प्रभु हमें अपना सम्पूर्ण राज्य, जो हमारी पूरी आत्मिक मीरास हैं उसे वह हमें देना चाहता है। इसीलिये तो वह चाहता है कि हम आगे बढ़ें, नहीं तो हमारी आत्मिक उन्नति और फलवन्तता रुक जायेगी। प्रभु ने सनातन-काल से जो योजना हमारे लिये की है उसका पूरा उपभोग करें, वह ऐसी इच्छा रखता है क्योंकि वह कहता है, "सब कुछ तुम्हारा है"। (1 कुरि. 3:21) इस वचन का हमें दावा करना होगा। परमेश्वर कहता है, "मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा। (इब्रा. 6:14) वह परमेश्वर का वचन है और उसके अनुसार, अनन्तकाल के लिए वह इन आशीषों को अधिकाधिक बढ़ाता ही जायेगा। इसलिए हमें, पिछला समय चाहे कितना ही अच्छा हो फिर भी उसे भूल जाना चाहिये और भविष्य में अधिक महान बातें होंगी ऐसी आशा रखनी चाहिए।

जनवरी 2

मैं हर समय यहोवा का धन्य कहा करूंगा। भजन 34:11

जब इस्राएल की सन्तान जंगल में से कूच करते थे तब यहूदा का गोत्र सबसे आगे रहता था। यहूदा का अर्थ है "स्तुति"। हमारे जीवन में भी स्तुति एवं भजन का स्थान सर्वप्रथम होना चाहिए। हमें हर समय प्रभु की स्तुति करनी सीखना चाहिए। इस अति महत्त्वपूर्ण आत्मिक अनुभव को हमें सीखने की आवश्यकता है। स्तुति और आराधना विजय का रहस्य है। यदि हम जीवन की हरेक परिस्थितियों में प्रभु भजन करना और उसका नाम बड़ा तथा ऊंचा करेंगे तो हमारा विरोधी शैतान के सभी हमलों को सरलता से हटा सकते हैं।

अय्यूब ने एक ही दिन में अपने सब बच्चों, प्राणियों एवं कर्मचारियों को खो दिया था, उसका शरीर बड़े-बड़े फोड़ों से भर गया था। उसके करीबी मित्र उस पर गलत रीति से दोष लगाते थे। परन्तु उसने परमेश्वर को दोष नहीं दिया। परमेश्वर के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहाँ परन्तु भूमि पर गिरकर उसने परमेश्वर को दण्डवत किया। इसीलिये अंत में परमेश्वर ने उसके मित्रों से कहा, 'मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, उसे मैं ग्रहण करूंगा'। वास्तव में अय्यूब को प्रार्थना की आवश्यकता थी, पर अय्यूब अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना जानता था। उसके मित्रों की धारणा यह थी कि अय्यूब के पाप के कारण परमेश्वर उसे दण्ड दे रहा है परन्तु वे परमेश्वर के महान इरादे इच्छा को नहीं जानते थे जो उससे भी अधिक आशीष देने के लिए था।

यदि हमें दु:ख भरे अनुभवों में से, संकट और कठिन परिस्थितियों में से जाना पड़े तौभी हम अय्यूब के समान परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा यह है कि हम सनातन-काल के लिये राज्य करें। इसीलिए परमेश्वर जो कुछ भी हमारे जीवन में होने दे रहा है उसके लिए कोई भी सन्देह या प्रश्न किए बिना उसका धन्यवाद और स्तुति करें।

जनवरी 3

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। 2 कुरि. 2:14

यह प्रेरित पौलुस की गवाही थी। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करनेवालों के जीवनों के लिये परमेश्वर की योजना जानकर ऐसी गवाही बनाए रखना चाहिये। हमारे पास सीमा बद्धता एवं असफलताएं होने के बदले में भी हम एक जयवंत जीवन व्यतीत कर सकते हैं। क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने हम सबों के लिये पूरा-पूरा एवं भरपूर प्रबन्ध किया है; परन्तु ऐसे जीवन के लिये हमें ईश्वरीय नियम को जानना आवश्यक है।

सर्वप्रथम प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने एवं जी उठने (पुनरुत्थान) के साथ हमारी आपसी एकता के विषय पूर्ण निश्चितता होना आवश्यक है। जब हम प्रभु से प्रार्थना करते व उसे पुकारते हैं तब वह हमारे पापों को क्षमा करता है। उसके पश्चात रोमियों की 6वें अध्याय में पौलुस कहता है तब हम उसके अनुसार तीन रीति से उसके साथ जोड़े जाते हैं तो उसकी मृत्यु, गाड़े जाने एवं पुनरुत्थान में हम सहभागी होते हैं।

अनेक देशों में अधिक एवं रसदार फल पाने के लिये वृक्षों को साटने की एक सरल पद्धति उपयोग में लायी जाती है। छोटे एवं खट्टे फल देने वाले वृक्ष साटने के पश्चात बड़े एवं मीठे फल देते हैं। इसी रीति से प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के द्वारा उसकी मृत्यु, दफन एवं पुनरुत्थान में हम भी सहभागी हो जाते हैं। किसी न किसी कारण वश बहुत ही कम लोग इस एकान्त को अपनाने का रहस्य सीखे हैं। इसीलिये चारों ओर हारा हुआ जीवन दिखाई देता है। जयवंत होने के लिये अनेक निर्णय करने के तदोपरान्त हम एक पराजित जीवन बिताते हैं, क्योंकि पाप पर जय प्राप्त करने के लिए हम गलत पद्धतियों को व्यवहार में लाकर हम इच्छा शक्ति, उपवास, लम्बी प्रार्थनाओं एवं बाइबल ज्ञान का उपयोग कर "पाप पर" जय प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु ये सब निष्फल हो जाते हैं। प्रभु मसीह के साथ हमारी जो एकता है उसे विश्वास से लेने के द्वारा हम एक जयवंत जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

जनवरी 4

और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। 1 पतरस 5:7

परमेश्वर का भक्त पतरस बंदीगृह में चार-चार सिपाहियों के चार पहरों से घिरा हुआ था। उसके हाथ मजबूत जंजीरों से बंधे हुए थे, तो भी वह गहरी नींद में सो रहा था। वह डनलप के किसी आरामदायक बिस्तरे पर नहीं सो रहा था बल्कि बंदीगृह के पत्थर के फर्श पर सो रहा था, उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी। इसीलिए वह गहरी नींद लेता था। वह सब परिस्थितियों के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखता था।

हममें से अनेक लोगों को अच्छी नींद नहीं आती क्योंकि वे बहुत चिन्ता करते है। वे नींद की गोलियां लेते हैं, गरम पेय लेते हैं, पर नींद नहीं आती। आपकी चिन्ता और अविश्वास दोनों आपकी नींद को उड़ा ले गए हैं। आपको कोई कुछ कहे तो आपकी नींद चली जाती है। यदि आप कुछ खो बैठते हैं, चाहे वह कोई पुराना छाता ही क्यों न हो, तो आपको दो-तीन रात नींद नहीं आती। ऐसे समय में घुटनों पर आए और परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखें। चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर कठिन परिस्थितियों को हमारे जीवन में इसलिए आने देता है कि हम उसकी विश्वासयोग्यता को परखें। वह हमारा जीवित परमेश्वर है। वह सर्व-शक्तिमान है। प्रत्येक परिस्थितियों में वह स्वयं को साबित करना चाहता है।

जिस हेरोदेस ने पतरस को बन्दीगृह में डलवाया था उसके साथ परमेश्वर ने उसके साथ व्यवहार किया। पतरस ने प्रभु को कभी यह नहीं कहा कि 'हेरोदेस को दण्ड दे' पर परमेश्वर ने स्वयं उसे दंडित किया। पतरस सामान्य मनुष्य था, वह हेरोदेस को शाप दे सकता था, पर उसने हेरोदेस के लिये बैर का एक भी शब्द नहीं कहा वह गहरी नींद लेता रहा और उसने हेरोदेस को परमेश्वर के हाथ में सौंप दिया। पड़ोस में या कार्यालय में हेरोदेस जैसे लोग हों तो चिन्ता न करें। परमेश्वर स्वयं उनका न्याय करेगा। वह आपकी समस्या का हल करेगा। वह आपका पक्ष लेगा और शत्रुओं का न्याय करेगा। वह आपकी चिन्ता करता है। और आपकी छोटी से छोटी बातों में वह इच्छुकता दिखाता है।

जनवरी 5

अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुम्हें सम्भाले रहूँगा।यशा. 41:10

नया जन्म पाने के बाद यदि आप पाप करें और किसी भी रीति से परमेश्वर के प्रति कर्त्तव्य से चूक जाते हैं, तो शैतान आपके पास आकर कहने लगता है, "परमेश्वर अब तेरा उपयोग नहीं कर सकता। अब तेरा सब कुछ खत्म हो गया है। तू ऊंची आवाज में गीत गाता था और प्रचार करता था एवं इसमें गर्व करता था ना, अब देख, तेरा कैसा पतन हो गया"। यदि आप इन शब्दों पर ध्यान देते हैं, तो आप निराश हो जायेंगे और आत्मिक रीति से निष्फल रहेंगे, परन्तु जब आप नम्र होकर प्रभु को नई रीति से समर्पित होकर उसके आधीन होने के लिए तैयार हों तो अब भी वह आपको उपयोग करने के लिये इच्छुक है। प्रभु कहता है कि तेरी मूर्खता एवं अनेक निष्फलताओं के बदले में भी तू मेरा है, मैंने तुझे त्यागा नहीं है।

जब हम गिर जाते हैं तब कोई हमें उठाकर खड़ा करे, ऐसी आवश्यकता का अनुभव करते हैं। निर्बल होने के कारण हममें उठने की शक्ति नहीं होती है। प्रभु कहता है, "मैं तेरी सहायता करूंगा और तुम्हें पकड़े रहूँगा" प्रभु आपकी गिरी हुई दशा में आपको दु:खद और निराश में छोड़ नहीं देगा। वह आपके साथ रहकर आपका हाथ पकड़ेगा। आप नदी पार करते हो या जोखिम भरे मार्ग से जाते हो ऐसे समय में कोई बलशाली व्यक्ति आपका हाथ पकड़े तो आप उसे अवश्य पसन्द करेंगे। प्रभु कहता है, 'जब भी मैं तुम्हें किसी जोखिम में देखूंगा तब मैं तेरा हाथ पकड़कर तुम्हें पार कराऊंगा'। इस प्रकार से ये वचन परीक्षाओं एवं कसोटियों के समय हमारी सहायता करते है।

ध्यान दें कि प्रभु के हाथ धार्मिकता के हाथ है। आप कभी यह विचार न रखें कि आपके अच्छे कार्य आपके कोई काम आएंगे। प्रति भोर में प्रभु से कहें, हे प्रभु यीशु। तुम मेरा जीवन एवं धार्मिकता हो। मैं अपने सद्‌गुणों पर आधार रखता हूँ। तुम मेरी धार्मिकता हो। उसके बाद प्रभु आपको थामे रहेगा।

जनवरी 6

इसलिए कि यहोवा यूसुफ के साथ था, और जो कुछ वह करता था, यहोवा उसको उसमें सफलता देता था। उत्पत्ति 31:23

परमेश्वर यूसुफ को ईश्वरीय ज्ञान देने के लिए उसे मिस्र में ले गया। यहाँ पोतीपर ने देखा कि परमेश्वर उसके संग रहता है। यदि हमारे सब कार्यों में हम अपने परमेश्वर को आदर देंगे तो हमारे आसपास के सब लोग यह कह सकेंगे कि परमेश्वर हमारे साथ है। हमारा अदृश्य परमेश्वर हमारे साथ है। हमारा अदृश्य परमेश्वर आश्चर्यजनक रीति से हमारे अधिकारियों की दृष्टि में हमें अनुग्रह दिलाता है। चाहे वह पाठशाला, कॉलेज, कारखाना या फिर कोई अन्य स्थान ही क्यों न हो। यूसुफ अपने भाइयों के विरुद्ध बड़बड़ाहट या कोई शिकायत कर सकता था। परन्तु पूरी कथा में हम देखते हैं कि अपने भाईयों या किसी दूसरो के विरुद्ध बड़बड़ाहट या शिकायत का एक शब्द भी उसके मुंह से नहीं निकला। यह जो कुछ करता था उसमें और उसे जहाँ भी रखा जाता वहाँ पर वह परमेश्वर को आदर देना चाहता था।

जब परमेश्वर ने उसे पोतीपर के घर में आशीष दी तब पोतीपर ने उसकी सराहना की होगी, पर यूसुफ ने इन सबमें कभी घमण्ड नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि उसको जय दिलाने वाला तो परमेश्वर था। वह जो कुछ करता था उन सब में भी वह स्वयं को मान नहीं देता था। एक अपरिचित व्यक्ति की तरह वह पोतीपर के घर में आया फिर उसने उस पर पूरा भरोसा किया, क्रमानुसार सारे दायित्व उसके पास आ गए।

अपने कार्य में हम सचमुच परमेश्वर को आदर देंगे तो हमारे साथ काम करने वाले लोग यह स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर हमारे साथ है। हम परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कर रहे है इसे दिखाने के लिए परमेश्वर हमें कठिन परिस्थितियों में से ले जाता है और इसके अतिरिक्त उच्च स्थान के लिये उन परिस्थितियों के द्वारा परमेश्वर हमें तैयार भी करता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर हमारे लिए अधिक अच्छे विचार रखता है। केवल उसके आधीन होकर उस पर भरोसा रखने की इच्छा रखनी चाहिये।

जनवरी 7

सो तुम्हारे लिए जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है। 1 पतरस 2:7

"मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है।" (यशा. 43:4) प्रभु यीशु मसीह विश्वास करने वालों के लिये अति बहुमूल्य बन जाता है। जैसे-जैसे हम उससे प्रेम करने और उसकी स्तुति करना सीखते हैं वैसे-वैसे वह अनन्तकाल के लिये बहुमूल्य बनता जाता है। यद्यपि हम बहुत ही नासमझ एवं निर्बल है फिर भी प्रभु कहता है कि हम उसकी दृष्टि में बहुत ही अनमोल हैं। प्रभु तो अत्यन्त ही दयालु, प्रेमी और कृपालु है, इसलिये हमारे लिए वह बहुमूल्य बना वह योग्य है, परन्तु प्रभु के लिये हम बहुत ही अनमोल है यह एक बहुत बड़ा मर्म है, जिसे केवल ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा ही समझा जा सकता है।

अनेकों बार हम समय और शक्ति को खो दिए, नासमझ बनकर, अनेक अवकाश और अनेक लाभ पाने पर भी हमने कुछ भी नहीं पाया है और न ही किसी के लिए हम लाभ की आशीष का कारण बने हैं। हम स्वीकार ही करते रहे कि हम माता-पिता और पड़ोसियों के लिए केवल दु:ख का कारण ही बने हैं। फिर भी हम प्रभु के लिये अनमोल है।

हममें उसने छिपा हुआ धन देखा है, जो उसके लिये बहुत कीमती है (मत्ती 13:44)। संसार को दृष्टि में हम निर्बल, मूर्ख और पाखंडी है पर प्रभु के लिये हम विशिष्ट धन है। पाप के कारण कुरूप और नष्ट होने पर भी एक दिन वह हमें अपने लिए प्रदीप्तवान मोती बनायेगा। अपने बहुमूल्य लोहू के द्वारा और अपनी बहुतायत का अनुग्रह के द्वारा वह हमें सनातन-काल के लिये राजा बनायेगा। इस प्रकार हम स्वर्गदूतों से भी अधिक बहुमूल्य बनेंगे। नई सृष्टि में हम अधिकारी बनेंगे। मृत्यु में से फिर जी उठने के पश्चात हमें अमर देह दी जायेगी। हम कई बार प्रभु के विरुद्ध बलवा करते हैं फिर भी वह हमारे प्रति धीरज रखता है और उसकी ओर लौट आने के लिये इच्छा रखता है क्योंकि हम उसके लिये बहुत ही अनमोल है और इसीलिये प्रभु भी हमारे लिये बहुमूल्य है।

जनवरी 8

जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे मरूभूमि मगन होकर केसर की नाई फूलेगी। यशा. 35:1

अन्य फूल पौधों की अपेक्षा गुलाब के पौधे की देखभाल बहुत ही सावधानी से करनी पड़ती है, नहीं तो कीड़े पौधे को खा जाते हैं, और उसमें फूल नहीं खिलते हैं। इसके बदले में यदि योग्य देखभाल की जाए तो सब फूलों में गुलाब श्रेष्ठ है। प्रभु का वचन कहता है, "जंगल तथा निर्जल देश... गुलाब नाई फूलेगी"। प्रभु यीशु मसीह के पास आने से पहले हम मरूभूमि जैसे होते हैं, जिसमें किसी भी प्रकार के फूल नहीं होते हैं। परन्तु प्रभु यीशु यदि सदैव हमारे साथ हो तो हमारा जीवन सुन्दर बगीचे के समान बन सकता है। पाप ने हमारा नाश कर दिया है और हम पर गंदे दाग लगाये हैं। इन पाप के दागों को प्रभु यीशु के अलावा अन्य कोई भी मिटा नहीं सकता है। प्रभु हमसे कहता है कि तुम जो पूरी तरह से उजाड़ एवं निकम्मे बन गए हो फिर भी मैं तुम्हें एक दिन गुलाब के बाग की नाई विकसित करूंगा। यशा. 27:3 के अनुसार, प्रभु कहता है कि 'मैं स्वयं अपने हाथों से तुम्हें पानी डालकर सींचूंगा एवं तुम्हारी देखभाल करूंगा।

गुलाब के पौधे को दिन में कम से कम तीन बार पानी डालना पड़ता है। परन्तु प्रभु तो स्वयं खुशी से कहता है, "मैं क्षण-क्षण उसको सींचता हूँ। दिन में तीन बार नहीं बल्कि क्षण-क्षण।" इस रीति से हम सुन्दर फूलों से भरपूर गुलाब की फुलवारी जैसे बनेंगे।

विवाह समारोह हो या अन्य कोई शुभ समारोह हो, लोगों को हम फूल देते हैं, तब साधारणत: वे गुलाब के फूल पसन्द करते हैं। कोई शुभकामनायें देते समय भी वे गुलाब के फूल देते हैं। इसी प्रकार जब हमारा जीवन गुलाब के फूल की नाई खिलता है तब वह आशीषमय एवं स्वर्गीय गीत के समान बनता है। परन्तु हम यह स्मरण रखें कि हमको फलवंत जीवन देने के लिये एवं स्वर्गीय राज्य के योग्य बनाने के लिये प्रभु सांसारिक क्लेशों को उपयोग में लाया करता है और तब पृथ्वी पर भी हमारा जीवन संगीतमय बन जाता है।

जनवरी 9

हे यहोवा मैं तुझसे उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूँ, मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं। भजन 119:174

प्रभु यीशु मसीह का सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में बीता था (यूहन्ना 4:34, 5:30) यदि हमें उसके प्रेम एवं ममता को चखना हो और उसके हृदय के निकट आना हो तो परमेश्वर की इच्छा को जानना एवं उसे पूरा करना हमें सीखना ही पड़ेगा। परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के द्वारा ही हम उसकी उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं। जिस प्रकार महायाजक उरीम एवं तुम्मीम द्वारा प्रभु की इच्छा व्यक्तियों, परिवार और समस्त देश के लिये खोजी जा सकती थी, इसी प्रकार से आज हम विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह हमारा उरीम एवं तुम्मीम है। हमारे हृदय में निवास करने वाला प्रभु यीशु मसीह हमारा स्वर्गीय महायाजक है, हमारे जीवन के द्वारा एवं विश्वास से स्वर्गीय जीवन पाने के द्वारा प्रभु यीशु हमारे लिये सब में सब कुछ बनता है।

परमेश्वर का वचन पढ़ते समय भजन 119:18 के अनुसार हमें कहना चाहिये, "मेरी आंखे खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं।" इस प्रकार से हमें स्वर्गीय प्रकाश मिलता है। हे प्रभु, मुझमें स्वर्गीय जीवन उंडेल तेरे वचन में जो गुप्त भेद छिपे हैं मुझे समझा एवं आज के लिये तथा आने वाले कल के लिए मुझे अपना मार्ग दिखा। परमेश्वर के वचन को पढ़ने के द्वारा ही हमें स्वर्गीय ज्योति मिलती है एवं हम परमेश्वर का वचन स्पष्ट रीति से समझ सकते हैं।

परमेश्वर की वाणी सुनने के द्वारा, परमेश्वर के घर में हम उसके सहकर्मी एवं भागीदार बनते हैं। परमेश्वर से प्रार्थना करके उसकी वाणी सुनना यह हमारा प्रतिदिन का अभ्यास होना चाहिये और हमें हमारे हृदयों को शुद्ध रखना चाहिये। लोभ, शत्रुता एवं अपवित्रता से हमें मुक्त रहना चाहिये। दैनिक अभ्यास द्वारा हम परमेश्वर की वाणी सुन सकते हैं, एवं किसी भी तरह की समस्या के लिये जबरदस्ती नहीं करेंगे। विवाह, व्यापार, नौकरी या किसी और प्रवृत्ति के लिये भी उसकी इच्छा जानने के लिये हमें उसके पास जाना होगा। परन्तु दुःख की बात है कि बहुत ही थोड़े विश्वासी है जो परमेश्वर से सलाह लेना स्वयं का दायित्व मानते हैं। क्योंकि वे उसकी उपस्थिति में धीरज से बात नहीं जोहते हैं। परिणाम-स्वरूप दुःख एवं असफलताएं आती है। आत्मिक रूप से वे बहरे एवं अंधे हो जाते हैं। परमेश्वर के पास वापस लौट आने के द्वारा हमें सब कुछ वापस मिलता है।

जनवरी 10

और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। कुलु. 3:3

अधिकतर लोग विजयी जीवन के लिये केवल उपदेश पर विश्वास रखते हैं, वे कई सभाओं में आना चाहते हैं, किताबें तथा कई उपदेश रखना चाहते हैं, परन्तु व्यक्तिगत जीवन में प्रभु यीशु मसीह को प्रथम स्थान देना नहीं चाहते। ये हमारे लिये जोखिम है। यद्यपि हम कई अच्छे सन्देश सुनते हैं, तो भी संभव है कि हम पराजित जीवन जीते हैं। इसका एक ही उपाय है कि हम यह समझें कि हमारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। प्रभु यीशु को अपने जीवन पर अधिकार करने दें। आप उसमें छिप जाएं और परिणाम-स्वरूप भरपूर जीवन उद्‌भव होगा।

प्रभु यीशु में छिपे रहने का रहस्य आपको सीखना है। यह सही है कि आपकी सहायता करने के लिये प्रभु उपदेशकों का उपयोग करता है। परन्तु प्रभु यीशु को आपके हृदय, घर, उद्योग में प्रथम स्थान मिलना चाहिये जिससे कि उसे सब प्रकार का आदर एवं महिमा मिले। आपकी पृष्ठभूमि में रहना चाहिये जिससे लोग जब आपको देखें या आपके साथ बातें करें तब वे परमेश्वर को महिमा दें और हर समय आपका यह उद्देश्य होना चाहिये। जब आप प्रार्थना करें तब प्रभु को किस प्रकार से महान यीशु को अति मान दिया जाए एवं उसकी आराधना की जाए। तब आपके जीवन में उन्नति होती रहेगी। यदि आप प्रार्थना में भीख ही मांगा करोगे तो उन्नति नहीं होगी परन्तु प्रभु यीशु को महिमान्वित करें कि जीवन में उन्नति हो।

जहाँ कहीं आप हैं क्या आप वहाँ खुद को प्रभु यीशु मसीह में छिपाते हैं। क्या आपकी बातचीत, वस्त्र, आपके जीवन द्वारा प्रभु को महिमा मिलती है? अनेक बार आपको इस गुप्त स्थान में लाने के लिये प्रभु को दु:खदायक मनुष्यों का प्रयोग करना पड़ता है। वह आपकी मित्रता को तोड़ने लगता है। वह घर, माता-पिता, पति-पत्नी या प्रिय बच्चों को ले लेता है। आपके द्वारा की गई योजनाओं को छिन्न-भिन्न कर डालता है।

कई लोग सरलता से नहीं टूटते हैं। उन्हें अपना मार्ग बदलना कठिन जान पड़ता है क्योंकि वे प्राय: स्वयं के मार्ग में जाना पसन्द करते हैं। प्रत्येक विश्वासी के जीवन में नम्र बनने वाले अवसर आते हैं, और आगे चलकर आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऐसा व्यवहार आपने क्यों किया, परन्तु इन अनुभवों में से प्रभु आपको तोड़कर नम्र बनाता था। तब ही आप सच्चे अर्थ में प्रभु यीशु में छिपे रहेंगे ओर आप जानेंगे कि प्रभु यीशु आपका सर्वस्व है। उसी समय से आप दूसरों पर नहीं, स्वयं पर नहीं, परन्तु केवल उस पर भरोसा रखेंगे। पौलुस को यह अनुभव जंगल में सिखाया गया, और प्रभु आपको भी यह सिखाना चाहता है।

जनवरी 11

और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं। इफि. 4:11,12

आरंभ में मैं एक स्वतंत्र प्रचारक के समान सेवा करता था। एक समय हम कुनूर में थे। वहाँ हमने चाय के बगीचे में जाकर सुसमाचार प्रचार करने की योजना बनाई। हम बारह लोग साथ में थे। पूरी व्यवस्था करने के बाद हम जाने की तैयारी में थे कि परमेश्वर ने मुझसे 1 कुरि. 3:10 से बातें की, "परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राज-मिस्त्री की नाईं नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है, परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है"।

प्रभु बारम्बार मुझसे कहने लगा, "क्या तू मजबूत नींव पर घर बना रहा है"? हमने सब कार्यक्रम स्थगित कर दिए। दो महीने से भी अधिक समय होने पर भी हमने सुसमाचार की कोई योजना नहीं बनाई, हम प्रार्थना करते रहे। "प्रभु हमें अपनी योजना दिखा"। प्रभु का मैं धन्यवाद करता हूँ कि उसने हमें सिखाया: बाद में लोग आत्मिक सिद्धता में आए और उनको दिये गये वरदानों का वे उपयोग करने लगे।

बरनबास जब अंताकिया में गया तब उसने परमेश्वर के अनुग्रह को सामर्थ से कार्य करते हुए देखा। तुरन्त ही उसने अनुभव किया कि किसी सहकर्मी की आवश्यकता है। सो वह जाकर शाऊल को ले आया और वे साथ रहकर परिश्रम करने लगे। प्रभु के कार्य का आरंभ चाहे कितने ही सामर्थ्य से क्यों न हुआ हो, उसकी स्थापना बिना कोई सहकर्मी के नहीं हो सकती। प्रेरितों, रखवालों, उपदेशकों जैसे आत्मिक वरदान के साथ मिलकर कार्य करें यह उनकी आवश्यकता थी। मसीह की देह को उन्नति के लिए अन्तकिया में नबियों और प्रेरितों को साथ लाया गया।

अब पौलुस और बरनबास की सेवा के लिये प्रभु की अगुवाई का दायित्व केवल उन दोनों पर ही नहीं रहा परन्तु उनकी सेवा के लिये प्रभु की योजना यह मंडली का दायित्व बन गई। पवित्र-आत्मा ने इसे (योजना) मंडली को दिखाया, बाद में यह मंडली का कर्त्तव्य बना कि उनके लिये प्रार्थना करें, उन पर हाथ रखें और सेवा के लिये बाहर भेजें। प्रेरित भिन्न-भिन्न स्थानों में गये, हरेक श्रेणी के लोग उद्धार पाए और प्रत्येक मण्डली में प्रेरितों ने प्रधानों को नियुक्त किया, बाद में वे अन्ताकिया वापस लौटे, जहाँ से उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा गया। इस प्रकार क्लेश, कसोटी एवं विपत्तियों के उपरान्त भी मण्डलियां दृढ़ होती गई, क्योंकि परमेश्वर के दास मानवीय ज्ञान और मानवीय अगुवाई पर आधार न रखकर पवित्र-आत्मा की अगुवाई को आधार बनाते हैं। परमेश्वर का कार्य परमेश्वर की योजनानुसार करने के लिये प्रभु हमारी सहायता करे।

जनवरी 12

कि इस्राएल के अगुवों ने जो अगुवाई की और प्रजा जो अपनी ही इच्छा से भरती हुई। न्या. 5:2

हम सभी स्वभाव से परमेश्वर के शत्रु हैं। हम नया जन्म पाकर ही परमेश्वर की सन्तान बनते हैं। नया जन्म प्राप्त करने के बाद आप सलाहकार बनते हैं। आपके द्वारा परमेश्वर के शत्रु परमेश्वर के मित्र बनते हैं। परमेश्वर की सन्तान होने के कारण यह सेवा आपको एक अधिकार के रूप में दी गई है। क्या प्रभु आपसे इस प्रकार कह रहा है, "मेरे पीछे चल, मेरे पीछे चल"? उसका सामना न करें। परमेश्वर के साथ वाद-विवाद करने में अपना समय न गवायें। परमेश्वर के आधीन होने से रोकने के लिये शैतान अनेकों प्रयास करता है। पृथ्वी के किसी भी छोर तक परमेश्वर आपको भेजे तो भी उसके आधीन होने के लिये परमेश्वर आपकी सहायता करे।

प्रशिक्षण के समय कैसी भी विपत्ति उठाने के लिये आपको स्वीकार होना होगा। मानवीय योगयताओं के विषय अधिक सोच-विचार न करें। यदि हम परमेश्वर के आधीन होने के लिये तैयार हो तो वह हमें उपयोग कर सकता है, परन्तु आपको कर्त्तव्य निभाने के लिये वह आप पर दबाव नहीं डालेगा। जब मैंने परमेश्वर से कहा कि, मैं अपना जीवन तुझे सौंपता हूँ। तब ही उसने मुझे लिया और मेरा उपयोग किया। बाद में अपने तरीके से परमेश्वर ने मुझे शिक्षा दी। कई दु:खदायी कसौटियों में से वह मुझे ले गया और उन सबके लिये में परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। अब मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि अभी आप परमेश्वर के आधीन हो जाएं। उससे कहें, "प्रभु मेरा जीवन ले और जैसा तुझे भाए, उस रीति से मेरा उपयोग कर"।

जब हम स्वयं को प्रभु यीशु को सौंप देते हैं तब वह हमारे द्वारा स्वर्गीय संगीत को आने देता है। इसलिये उसके आधीन हो जाएं, प्रत्युत्तर दें और कहें कि मेरे प्रभु मैं तेरे पीछे चलूंगा, मेरा जीवन ले और मुझे अपना गवाह बना। अपनी महिमा के लिये मेरा उपयोग कर। मैं तेरे लिये व्यय करने एवं स्वयं भी व्यय हो जाने के लिये तैयार हूँ। अपनी युवावस्था में ही प्रभु को अपना जीवन सौंप दें; वृद्धावस्था तक के लिए न ठहरें।

जनवरी 13

और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। इफि. 3:19

इन थोड़े शब्दों के द्वारा परमेश्वर की आत्मा हमें स्मरण कराती रही है कि हम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाएं। इसी कारण हमें छुटकारा दिया गया है। ऐसा सुखरूपी अनुभव जब तक हमें प्राप्त न हो जाये तब तक परमेश्वर सन्तुष्ट नहीं होता। इसी कारणवश हमें परमेश्वर का वचन दिया गया है, कि हम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक किस रीति से परिपूर्ण हो, वह हम जान सकें। परमेश्वर चाहता है कि हम, उसकी सामर्थ्य के द्वारा पूरी रीति से भरपूर हो जाएं। इस सामर्थ के द्वारा हम परीक्षाओं, कसौटियों और विपत्तियों पर जय पाते है एवं इसी सामर्थ के द्वारा एक दिन हमें अविनाशी देह मिलेगी। (रोमियों 8:11)

यह सामर्थ तो पुनरुत्थान की सामर्थ है जिसे मरे हुओं में से यीशु को जिलाने में परमेश्वर ने प्रगट किया। इस पृथ्वी पर प्रतिदिन इस सामर्थ के द्वारा हम अपनी परीक्षाओं और बोझों पर जय पा सकते हैं, इसी सामर्थ के द्वारा स्वर्ग में हमें अविनाशी देह दी जायेगी एवं इसी सामर्थ के द्वारा हम परमेश्वर की भरपूरी से हमारा जो भाग है उसका उपभोग कर सकेंगे। पुनरुत्थान की सामर्थ के द्वारा ही हमारा भीतरी मनुष्यत्व बलवन्त हो सकता है एवं हम प्रभु यीशु मसीह में गहराई से जड़ पकड़ सकते है। (इफि. 3:16,17)

हम देखते हैं कि पर्वत पर के वृक्ष बड़ी आंधी में भी गिर नहीं जाते क्योंकि उनकी जड़ बहुत ही गहराई तक पहुंची हुई होती है। कैसी भी आंधी उन्हें उखाड़ नहीं सकती है। इसके विपरीत ये वृक्ष और भी ऊंचाई में बढ़ते जाते हैं और उनकी जड़ और भी गहराई में उतरती जाती है। इसी रीति से पुनरुत्थान की सामर्थ द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में हम प्रभु यीशु मसीह में गराई तक जड़ पकड़ते हैं। कोई भी विपत्ति, दु:ख, क्लेश या परीक्षा हमें हिला नहीं सकती है। अपने परखे जाने में हम आनन्द करते हैं और साथ-साथ आत्मिक रीति से अधिक बलवन्त बनते हैं। जब आत्मिक रीति से अधिक बलवन्त बनते हैं, तब आत्मिक रीति से वृद्धि पाते हैं, तब हम समझते हैं कि धीरे-धीरे हम परमेश्वर की सारी भरपूरी से परिपूर्ण होंगे। इस प्रकार वास्तविक रूप से परमेश्वर के प्रेम को अपने में अधिकाधिक भरते हुये हम देख सकेंगे। परिणाम-स्वरूप अधिक नम्र, धीरजवंत और दयालु बनेंगे। हम शत्रुओं को प्रेम करेंगे। जिनको प्रेम करना संभव नहीं है उनसे भी हम प्रेम करेंगे और हमें अपने धिक्कारने वालों तथा शाप देने वालों के लिये प्रार्थना करेंगे। प्रभु यीशु मसीह में हमारी जड़ गहराई तक पहुंचाई गई है, उस वास्तविकता का यह एक प्रमाण है। हमारी आशा यह है एक दिन हममें परमेश्वर की सारी भरपूरी व परिपूर्णता हो जायेंगे।

जनवरी 14

और मनों को जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। रोमि. 8:27

पवित्र-आत्मा हमें इसलिये दिया गया है किहम परमेश्वर के भक्तों के लिये विनती कर सकें, अन्त के दिनों में शैतान बहुत कार्यशील होगा।

शैतान बहुत से लोगों का उपयोग करके परमेश्वर को लोगों के विरुद्ध झूठे आरोप लगाता है। अनेकों बार तो विपत्ति खड़ी करने के लिये वह भयंकर बातें फैलाता है। इसलिए शैतान को भरमानेवाला, दोष लगाने वाला तथा सतानेवाला कहा गया है। परन्तु ऐसे पीड़ित लोगों के लिये हम विनती कर सकते हैं। बारम्बार हृदय में बड़े बोझ के साथ हमें विशेष लोगों के लिये मध्यस्थता करने के लिये स्मरण दिलाया गया है, और उसमें तो आग्रह-पूर्वक एवं वेदना-पूर्वक प्रार्थना की जाती हे। सताने के द्वारा, धोखा देने या दोष लगाने के द्वारा शैतान अनेक संतों पर जब आक्रमण कर रहा हो तब सामान्य प्रार्थना नहीं की जाती है। केवल मध्यस्थता के द्वारा ही उनकी रक्षा हो सकती है।

जब-जब लोगों पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं, तब-तब हमने मध्यस्थता करने का निर्णय किया है। कई बार हम पूरी रात या पूरा दिन भर प्रार्थना किए। बचाव पत्र लिखने की हमने चिन्ता नहीं नहीं की, परन्तु बिचवई द्वारा उनका बचाव हुआ है। परमेश्वर का वचन बताता है कि, "जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जायें, उन में से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुद्धई होकर तुझ पर नालिश करे, उन सभी से तू जीत जायेगा। यहोवा के दासों का यही भाग हो, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है। (यशा. 54:17)

केवल मध्यस्थता करने के द्वारा ही हम उनकी सहायता कर सकते हैं। स्वयं को बचाने के लिए पत्र लिखने में अपना समय नष्ट न करें और अपनी निद्रा भी न खोए। पेट भर कर खाएं, नींद भी लें, परन्तु उनके लिये मध्यस्थता करें। झूठे आरोप, धोखा, या सताये जाने के द्वारा शैतान का हमला होता है, उनके लिये मध्यस्थता द्वारा हम परमेश्वर से सुरक्षा मांग सकते हैं। परमेश्वर के दासों और परमेश्वर के संतों को सताने का बड़ा अधिकार शैतान के पास है। हम मध्यस्थता करने के द्वारा, प्रार्थना में परिश्रम द्वारा उनको बचा सकते हैं।

जनवरी 15

जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य है तो अचम्भा किया, फिर उनको पहचाना, कि वे यीशु के साथ रहे हैं। प्रेरितों. 4:13

"हमारी आत्मा में जब परमेश्वर का आत्मा रहने के लिये आता है तब वह हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलाना चाहता है। परन्तु हमारा प्राण शरीर के द्वारा खींचा जाता है। पहले हमारा मन विचार और योजनाओं को गढ़ता है, बाद में शरीर उसे कार्य-रूप देता है। शरीर के अवयव अपने आप पाप कर नहीं सकते हैं। परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा को चेतावनी देता है कि, शरीर द्वारा चलाये जाने से तू प्राण के अधिकार में रहेगा, फिर तू हार जायेगा, मेरे अधिकार के नीचे रह, तो मसीह की विजय तेरी जय बनेगी।"

यदि प्रभु यीशु मसीह हममें वास नहीं करता हो तो हमें स्वयं को मसीही कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। हमें दूसरों के समक्ष यह प्रमाणित करना होगा कि प्रभु यीशु मसीह हमारे अन्दर निवास करता है और हमारा शरीर प्रभु का बना है। उदाहरण के रूप में जब किसी भवन को देखते हैं तब हम कह सकते हैं कि वह पाठशाला है, दवाखाना है अथवा बैंक है।

इसी रीति से जब लोग आपके चेहरे, वस्त्र, एवं व्यवहार को देखें तो उन्हें यह आभास होना चाहिये कि आप अन्य लोगों से भिन्न है। यदि आप विश्वासी है तो आपके विषय में भिन्न क्या है? क्या आपका चेहरा दूसरों से भिन्न दिखता है? चाहे यह गोरा, काला एवं भूरा रंग का चेहरा क्यों न हो, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुख्य बात यह है कि क्या लोग आपके चेहरे के द्वारा प्रभु यीशु मसीह को देख सकते हैं? यदि सचमुच आपमें प्रभु का वास हो, तभी आपके परिवर्तित जीवन के द्वारा लोग मसीह को देख सकेंगे।

जब हम नया जन्म पाते हैं तब प्रभु यीशु मसीह का प्रेम हमारे अन्दर आता है और वह हमारे जीवन में, अर्थात बातचीत में, वस्त्रों में और रहन-सहन में बदलाव लाता है। पवित्र-आत्मा प्रभु यीशु मसीह का जीवन जीने में हमारी सहायता करता है और जितना हम आत्मा के आधीन होते हैं उतना ही उस जीवन को हम विस्तृत रीति से अनुभव कर सकते हैं।

जनवरी 16

क्योंकि यहोवा कहता है कि, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हरी और मेरी गति एक सी है। यशा. 55:8

परमेश्वर ने राहेल को पुत्र दिया उससे पहले उसे अनेक आँसू बहाने पड़े और कई निन्दा सहन करनी पड़ी। उसका यह बेटा पूरे मिस्र के लिये और कई राष्ट्रों के लिये आशिष का कारण बना। परमेश्वर पहले से ही जानता था कि मिस्र में यूसुफ उसके पात्र के रूप में उपयोग हो सकेगा, क्योंकि परमेश्वर अन्त की बातें को आदि से जानता आया है। (यशा. 46:10) इसी रीति से कई वर्षों बाद होने वाली हमारी भविष्य की बातों को वह आदि से ही जानता है। (यशा. 45:21) सो इसी कारण से परमेश्वर हमें अनेक दु:खदायी परिस्थितियों में से ले जाता है।

यूसुफ के भाई मार डालने की योजना बनाए। वे यूसुफ के प्रति क्रोध और द्वेष से भरे हुए थे। परन्तु इसी क्रोध को परमेश्वर ने उपयोग किया और यूसुफ को उनसे दूर करके उसे एक बहुत ही अच्छे स्थान में ले गया, जहाँ उसने उसे उपयोग करने की योजना बनाई थी। "निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जायेगी।" (भजन 76:10) यद्यपि यूसुफ को उसके भाइयों ने बेचा फिर भी उसके साथ जो कुछ घटनायें घटी उसके लिये परमेश्वर उत्तरदायी था। वह समय यूसुफ के लिये प्रशिक्षण का था। हमारे सभी दु:ख हमारी भविष्य की सेवा के लिये हमें तैयार करने के लिये बहुत आवश्यक है।

परमेश्वर हमारे अनजाने में हमें ऐसी कठिन परिस्थितियों में रखेगा और वहाँ हमें ले चलेगा जहाँ हम उसकी योजना को समझ पाते हैं। उसके मार्ग परिपूर्ण एवं अगम्य है। आरंभ में परमेश्वर के मार्गों को और हमारे साथ उसके व्यवहार को हम समझ नहीं सकते परन्तु कई वर्षों के बाद जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तब हमें महसूस होता है कि परमेश्वर के कुशलता भरे हाथ हमें चलाते थे। हम अपने व्यक्तिगत और सुख के विषय में ही विचार करते हैं। परन्तु हमें पसन्द करने में परमेश्वर का एक बहुत ही उत्तम अभिप्राय है, हमारी कल्पना से बाहर वह हमें दूसरों के लिए महान आशिष का कारण बनाना चाहता है, जब तक हमें योग्य प्रशिक्षण न मिले तब तक हम परमेश्वर की सेवा में उच्च स्थान तक पहुंच नहीं सकते। अनेक लोग परमेश्वर की सेवा में सांसारिक ज्ञान का उपयोग करते हैं इसी कारणवश उनकी सेवा में निष्फलता दिखाई देती है। उनमें धन-दौलत, मान-सम्मान एवं कीर्ति का लोभ होता है। परन्तु फलदाई एवं विजयी जीवन के लिये ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।

जनवरी 17

क्या तू अपने लिये बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज। यिर्म. 45:5

स्वर्गीय विषयों के प्रति लूत को कोई भूख नहीं थी, जब इब्राहीम ने उसे स्थान का चुनाव करने के लिये कहा, तब वह सदोम और गम्मोरा के समीप की तराई को चुन लिया। वे नगर तो दुष्टता एवं पाप के लिये प्रसिद्ध थे। भूमि की उपजाऊपन से वह आकर्षित हो गया और उसने ऐसा भी विचार किया होगा कि "मैं सदोम और गम्मोरा नगरों में बसने वाला तो नहीं हूँ।" अन्ततः तो मैं बाहर ही हूँ। परन्तु कुछ ही समय में लूत नगर का मुख्य न्यायाधीश बन गया। कदाचित लूत का विचार तो शहर के बाहर ही रहने का था।

परन्तु जब नगर के लोगों ने उसे प्रधान होने के लिये विनती की, तब उसने विचर किया कि, "ऐसा करने के द्वारा मैं इन लोगों के लिये कुछ सहायक हो सकूंगा"। उसके इस विचार से हम देख सकते हैं कि लूत का मन किन विषयों पर लगा हुआ था, उसने लोकप्रियता की इच्छा की। जैसे-जैसे उसका धन बढ़ता गया वैसे-वैसे यश प्राप्त करने की उसकी लालसा भी बढ़ती गई। बहुत से विश्वासी इसी रीति से यश, अधिकार एवं सत्ता के भूखे होते हैं। मण्डली में वे मुख्य स्थान प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। आत्मिक बातों की चिन्ता के कारण नहीं परन्तु नाम कमाने की इच्छा से वे ऐसा करते हैं। कृप्या करके सचेत रहें एवं जगत-रूपी समृद्धि से धोखा न खाएं। सांसारिक धन-दौलत के बदले में, प्रभु अपने समय पर जो देता है उसे प्राप्त करने की इच्छा अधिक उत्तम है।

कसीदियों के ऊर नगर से निकल आने के लिये इब्राहीम को भारी मूल्य देना पड़ा, परन्तु उसका बदला चुकाने के लिये प्रभु के पास उसका स्वयं का उपाय था। बहुत अधिक लाभ या धन प्राप्त करने के लिये उसे सदोम एवं अमोरा जाने की उसकी आवश्यकता नहीं थी। प्रभु स्वयं अपनी रीति से उसकी हर आवश्यकता पूरी करता गया। इसी तरह एक विश्वासी होने के नाते हमें सांसारिक रीति से अधिक लाभ एवं धन-दौलत को अपनाना नहीं चाहिये। क्योंकि हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिये प्रभु के पास उसके अपने मार्ग है।

जनवरी 18

जब मैं देखने लगा, तो क्या देखता हूँ कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा और लहराती हुई आग सहित बड़ी आंधी आ रही है। और घर के चारों ओर प्रकाश और आग के बीचों-बीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है। यहेज. 1:4

उत्तर वह दिशा को दिखाता है, जहाँ से परमेश्वर न्याय-शासन प्रगट करता है, आंधी तीव्र गति को दिखाती है। परमेश्वर नबी से कहता है कि वह स्वयं जो कह रहा है शीघ्र होने वाला है, उसके बाद आंधी में से अग्नि प्रगट हुई। परमेश्वर के न्याय-शासन की अग्नि और इस अग्नि में से जीवधारियों के समान कुछ निकले। इन जीवधारियों के पांव सीधे थे। उनके पांव के तलुवे बछड़ी के खुरों के से थे, और वे मलकाए हुए पीतल की नाई चमकते थे। बछड़ा परमेश्वर की सेवकाई का प्रतीक है परमेश्वर का दास बनने के लिये यहेजकेल को सीधे पांव की आवश्यकता है जिससे परमेश्वर की आज्ञानुसार सीधे मार्ग में वह सीधे चले। उसके मार्ग में किसी प्रकार का टेड़ापन नहीं चाहिये। उसकी हाँ की हाँ एवं ना की ना होनी चाहिये। उसके मुख से कोई भी अयोग्य शब्द नहीं निकलना चाहिये। पीतल के पांव का अर्थ यह था कि जैसे हमारे प्रभु ने स्वयं अपने पैर से शैतान का सिर कुचल डाला, वैसे ही हम भी उसके आधीन रहने से शैतान को हमारे पांव से कुचलवा सकता है। (रोमि. 16:20)

यद्यपि ये जीवधारी प्रेरणात्मक एवं चिन्ताकर्षक दिखाई देते थे, फिर भी उनका रूप मनुष्य जैसा था। और मनुष्य जैसे ही हाथ थे। यहेजकेल केवल मनुष्य था, फिर परमेश्वर उसके द्वारा बड़ी सेवा कराना चाहता था। जब हमारा नया जन्म होता है, तब परमेश्वर हमें स्वर्गीय सेवकाई का न्यौता देता है। वह जानता है कि हम मनुष्य ही है। हमें भोजन, निन्द्रा और विश्राम की आवश्यकता पड़ती है, तथा मानवीय शरीर की सीमायें होती हैं इन सबके अलावा अपने सनातन उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु वह हमारा उपयोग करना चाहता है। जब हम विश्वास से परमेश्वर की प्रवृत्ति में तथा उसके अभिप्राय के अनुसार कार्य में एक मन होते है, तब ही यह संभव होता है। उदाहरण के लिये प्रार्थना द्वारा एक मनुष्य से कितना कुछ सफल हो सकता है। जब मनुष्य प्रार्थना करते, सीखते हैं, तब संसार के सभी भागों में उसके द्वारा पराक्रम प्रगट होता है। ऐसे लोग जो सीधे-सादे हैं, तथा जिनमें कोई विशेष आत्मिक दान नहीं है, फिर भी उनकी प्रार्थना के द्वारा आकाश के द्वार खुल जाते हैं एवं गांव तथा शहर आशीष पाते हैं। जब हम प्रभु के साथ एक होते हैं तब हमारे द्वारा परमेश्वर अपने अभिप्राय तथा भविष्यवाणियों को पूरा कर सकता है।

जनवरी 19

उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी। भजन. 34:1

अदुल्लाम की गुफा में दाऊद के साथ 400 अन्य लोग थे। वे संकट में थे, ऋणी एवं उदास थे। वहाँ उनके पास रुपये, कोई मदद या भोजन नहीं था। परन्तु दाऊद स्तुति के गीत गाता था, वह न केवल गीत गाता था परन्तु स्तुति के गीत भी रचता था। जब मानवीय सहायता असफल हुई और उसके मित्र पराये हो गये तब परमेश्वर ने उससे भेंट किया। उसी समय उसे दृढ़ जीवित विश्वास मिला। उसी कारण वह भोर को उठकर स्तुति के गीत गाने लगा (भजन. 108-2-3)।

अन्य जो विपदाई एवं संकट में थे वे देर रात तक शिकायत और बड़बड़ाहट करते थे परन्तु दाऊद भोर को वीणा बजाकर परमेश्वर की स्तुति करता था। उसका चेहरा प्रकाशित और चमकता था। वह अपनी कठिनाईयों के विषय नहीं कहता था परन्तु वह परमेश्वर की स्तुति करते हुए गाने लगा, तू स्वर्ग के ऊपर हो और तेरी महिमा समापत पृथ्वी के ऊपर हो। उसने परमेश्वर की महिमा देखी। परमेश्वर के सत्य का उसे दर्शन हुआ और इससे उसका भय जाता रहा। परमेश्वर उसके लिये वास्तविक और जीवित बना। उसने परमेश्वर के हाथों को अपने पक्ष में कार्य करते हुए देखा। प्रत्येक कठिनाई और संकट में वह परमेश्वर को देखने लगा, उसने देखा कि परमेश्वर उसे अपने भरपूरी के मार्ग में लाना चाहता था।

मेरे एवं आपके जीवन में भी परमेश्वर दु:ख और संकट इसलिये आने देता है कि हमें नया और जीवित अनुभव मिले है। उसके बाद हमारे पड़ोसी, शत्रु और मित्र परमेश्वर की महिमा को हमारे चेहरे पर देख सकेंगे। जब प्रभु यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता बनता है तब परमेश्वर की किरणें हमारे अत:करण में चकमती है, उसके बाद वही किरणें चेहरे पर चमकती हैं। जिसके कारण लोग जान सकते है कि परमेश्वर हमारे साथ है। वही किरणें हमारे मार्ग में चमकती हैं और वह प्रतिदिन हमें ले चलती हैं।

जनवरी 20

तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिए उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया। यहोशू 9:14

यहोशू और लोगों ने विचार किया कि नम्र और भयभीत गिबोनियों के साथ वाचा बांधने में कोई हानि नहीं है। इसलिये परमेश्वर की सलाह लिये बिना इन आग्रह करने वाले लोगों के प्रति दया और सहानुभूति दिखाने की इच्छा रखते हुए उन्होंने वाचा बांधी। यह इसलिए कि वे मारे नहीं जायेंगे। जिसके कारण इस्राएलियों पर ऐसा दु:ख आ पड़ा जिससे पूरी प्रजा का पतन हो गया।

हम भी यहोशू के समान कई बार परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त करने में चूक जाते हैं। परमेश्वर की सन्तान होने के नाते उसकी अगुवाई लेना यह हमारा अधिकार है। कोई भी निर्णय लेने से पूर्व, कोई भी कार्य करने से पूर्व परमेश्वर की अगुवाई को लेना ध्यान में रखें, ऐसा न हो कि आप हानि उठाएं और पछताएं। कुछ ही लोग यह विचार करते होंगे कि छोटी-छोटी बातों के लिये भी क्या परमेश्वर के पास जाएं?

यहोशू ने ऐसे ही सन्देह भरे विचार रखे थे। गिबोनी लोग छोटी प्रजा है। गरीब है, मूर्ख है, उनके पास पैसे नहीं, हथियार नहीं, आवश्यकता नहीं। और इसके बदले में परमेश्वर ने आज्ञा दी कि वे सभी लोगों का पूरा-पूरा नाश करे। परमेश्वर यह जानता था कि केवल एक व्यक्ति भी उनके लिये पतन का कारण हो सकता है। इसलिये कृपा करके स्मरण रखें कि एक सीधी सी बात में, एक सामान्य विषय में, एक मूर्खता, एक भूल, एक निष्फलता, एक अशुद्धता और एक पाप आपके ऊपर दु:ख, आपत्ति, क्लेश, असफलता और पछतावा लायेंगे, जो कई वर्षों तक बनते रहेंगे।

परमेश्वर की सन्तान होने के नाते सावधान रहें। अपने सगे-संबन्धी, अपने समाज, अपने मित्र या पड़ोसी या कोई और के द्वारा आकर्षित न होएं। परमेश्वर के वचन द्वारा पवित्र-आत्मा द्वारा परमेश्वर की वाणी द्वारा ही अगुवाई पाएं और उसके आधीन रहें।

जनवरी 21

तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। यिर्म. 20:3

मूसा पर्वत पर परमेश्वर के साथ बातें कर रहा था, तब प्रजा व्याकुल हो गई। उन्होंने गर्जन और बिजली, मेघ एवं नरसिंगा पर्वत पर अग्नि और धुआं इन सबने देखा और सुना था। परन्तु मूसा को आने में विलम्ब हुआ तब व्याकुल होकर संदेह करने लगे कि मूसा का क्या हुआ होगा। वे परमेश्वर की व्यक्तिगत रीति से जानते नहीं थे और उन्होंने परमेश्वर की वाणी कभी भी नहीं सुनी थी, इस कारण उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया। उनकी गणनानुसार यह चालीस दिन बहुत लम्बा समय था। वे अपनी गणनानुसार व्यवहार किये, परन्तु परमेश्वर ने अपनी गणनानुसार व्यवहार किया। उन्होंने हारून से कहा, 'अब हमारे लिये देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चले' (निर्ग. 32:1) शैतान ने उनके व्याकुलता का लाभ उठाया और उनको धोखा देकर मार्ग पर ले चला।

हम भी कई बार इस्राएलियों के समान ही व्यवहार करने लगते हैं यदि परमेश्वर हमारी गणनानुसार कार्य नहीं करता है तो हम व्याकुल हो जाते हैं और नहीं ठहरते हैं और इसलिये शैतान हमें भरमाता है। अनेक लोग परमेश्वर के वचन को और परमेश्वर के मार्ग को समझ नहीं पाते हैं। इसीलिये वे परमेश्वर से बलवा करते हैं और अन्य देवताओं की ओर मुड़ जाते हैं। इस्राएलियों के समान सोना, चांदी के देवता नहीं बनाते है, परन्तु स्वयं की आवश्यकताओं के लिये मदद एवं सुरक्षा के लिये परमेश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा रखने के बदले में लोगों के समान सोना-चांदी पर भरोसा रखते हैं। कितने ही लोगों के लिये तो उनके बच्चे उनके ईश्वर बन जाते हैं। वे उनकी आराधना करते हैं। परमेश्वर के घर से अपने बच्चों की वे अधिक चिन्ता करते हैं। अन्य कितने ही लोग रविवार के दिन भवन में जाने के बदले मित्रों को प्रसन्न करने के लिए घर में रहते हैं अथवा सरकारी कार्यालय में कार्यरत है तो वहाँ समारोह में भाग लेने के लिये परमेश्वर के भवन की सेवा को एक ओर कर देते हैं। ऐसे लोग आत्मिक रीति से बांझ रहते हैं। परमेश्वर के घर की कभी भी अवगणना नहीं करें। परमेश्वर को प्रसन्न करने का एक भी अवसर न खोएं।

जनवरी 22

धन्य है वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। मत्ती 5:10

कई वर्षों पूर्व एक मुसलमान व्यक्ति मेरे पास आया और कहा कि वह मसीही बनना चाहता है। वह विश्वविद्यालय का स्नातक था। मैंने उससे पूछा क्या आप कोई सभा में गये थे?

उसने कहा कि एक दिन वह पड़ोस के एक हिन्दु के घर गया था। उस घर के सामने एक खुला स्थान था। वह वहाँ खड़ा था तभी एक सफाई कर्मचारी झाड़ू लगाने आया। उसने अपनी टोकरी को एक कोने में रखा। वह झाड़ू कर ही रहा था उसी मध्य एक हिन्दू दुकानदार भी उसी घर में खुले स्थान से होते हुए अन्दर आया। वह धोती पहना हुआ था और ऐसा कि उसकी धोती उस सफाई कर्मचारी की टोकरी से छू गई। वह व्यक्ति बहुत क्रोधित हो गया। वह अपना जूते उतार कर उस सफाई कर्मचारी को मारने लगा और कहा, किसलिये इस टोकरी को यहाँ रखा है। "सफाई कर्मचारी ने कहा, यह मेरा कर्त्तव्य है। मैं तो केवल झाड़ू लगाने आया हूँ, ऐसा कह कर उसने अपना दूसरा गाल भी उसकी ओर फेर दिया और कहा, परमेश्वर आपको आशीष दे"।

यह सब पूरा होने के बाद वह मुसलमान व्यक्ति जो सब कुछ देख रहा था उसने सफाई कर्मचारी से कहा, "किसलिये तूने मार को सह लिया? तेरी कोई गलती ही नहीं थी। तू तो अपना काम कर रहा था। सारी गलती तो उसी की थी। उसे तो धोती को थोड़ा ऊंचा पकड़ कर चलना चाहिए था। परन्तु सफाई कर्मचारी ने कहा, 'जब मेरे प्रभु ने मेरे लिए इतना सब कुछ सहन किया तो मैं उसके लिए थोड़ा भी सहन न करूं"? यह मुसलमान व्यक्ति ने अपनी बात को थोड़ा आगे बढ़ाते हुए ये कहा, 'इस सफाई कर्मचारी के प्रेम ने मेरे अंत:करण को छू लिया। इसी कारण से मुझे मसीही बनना है। वह मसीही बना, बपतिस्मा की गवाही दी और प्रभु का अच्छा गवाह भी बना। धीरज से क्लेश सहते रहें तो दूसरों के हृदयों में प्रेम बढ़ेगा।

जनवरी 23

जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा। यशा. 62:5

परमेश्वर हमारे साथ जो-जो व्यवहार करता है उसके पीछे उसका उद्देश्य यह है कि हमारे साथ उसका पूर्वास्थ संबन्ध हो। उसी निशाने की ओर वह हमें पग-पग ले चलता है। यह तो हमारे प्रभु के साथ सम्पूर्ण एकता और संगति का श्रेष्ठ आनन्द है।

पवित्र-शास्त्र बताता है, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता जै वैसे...."। यहाँ पवित्र आनन्द के विषय में कह रहा है जो जीवन की संगति के द्वारा उद्‌भव होता है और वह परमेश्वर का दान है।

परमेश्वर चाहता है कि हम सच्ची संगति का अनुभव करें। यह शब्द 'संगति' पवित्र-शास्त्र का एक अनोखा शब्द है। जो नया जन्म नहीं पाए वे उसे सच्ची रीति से नहीं समझ सकते है। पिता और पुत्र के साथ पूर्वास्थ संबन्ध केवल उन्हीं के लिये है जिन्होंने उसकी ओर से नया जीवन प्राप्त किया है और जिन्होंने सदा के लिए उसके साथ और उसमें रहते है। परमेश्वर का जीवन हमारे अन्दर बहता है और हमारा जीवन परमेश्वर की ओर बहता है। सच्ची संगति परस्पर है और वह हमें परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप की ईश्वरीय समानता में लायेगी।

परमेश्वर स्वर्गदूतों को ज्ञान, अधिकार और सामर्थ और स्वर्ग में अनेक बड़े काम देता है, परन्तु अपनी गहराई, उद्धारक, सनातन प्रेम उन्हें दे नहीं सकता। वह ईश्वरीय प्रेम परमेश्वर मुझको और आपको देता है, जो स्वर्गदूत नहीं ले सकते और अनुभव भी नहीं कर सकते हैं।

जनवरी 24

यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। मत्ती 5:13

नमक उपयोग करने से पहले उसे शुद्ध करने की आवश्यकता है। शुद्ध करने के बाद उसे दो भागों में बांट दिया जाता है। पहला जिसमें स्वाद है, और दूसरा जिसमें स्वाद नहीं है। स्वादहीन नमक को फेंक दिया जाता है। बेस्वाद नमक बिलकुल निरूपयोगी है। वह पेड़-पौधों, पक्षियों, मनुष्यों किसी के भी काम में नहीं आता।

स्वादहीन नमक घूरे (गंदगी) के लिये भी अयोग्य है। ऐसे घूरे पर कीड़े-मकोड़े, चींटियाँ और जीव-जन्तु भी नहीं रहेंगे, क्योंकि वहाँ उन्हें भोजन नहीं मिलता है। यदि आप सत्यता से, आनन्द से और स्पष्टता से नहीं कह नहीं सकते कि प्रभु यीशु ने आपके पाप क्षमा किए है, आपकी मलीनता को धो दिया और आपको नया स्वभाव दिया है तो आप स्वादहीन नमक के समान है।

आप कैसे भी क्यों न हो आप निरूपयोगी है। पृथ्वी पर आप बोझ रूपी है, आप जहाँ जायें, जहाँ रहें वहाँ दु:ख और क्लेश के सिवाय कुछ नहीं लाते है। प्रतिदिन आपके द्वारा दूसरे लोग भी दिलासा, प्रेरणा, शांति और आनन्द प्राप्त करते होंगे? या फिर आप स्वादहीन नमक जैसे है? आपको बदलने के लिए प्रभु शक्तिमान है। प्रभु यीशु मसीह यदि हमारे जीवन में आए तभी हम नमक समान जीवन जी सकते हैं। उसके द्वारा आपका जीवन बदल जाने के बाद आप जहाँ भी जाए वहाँ आपको लोग नये नाम से बुलाएंगे, आपको स्वीकार करेंगे, एक अच्छे नमक के समान आपका स्वागत करेंगे।

जनवरी 25

उसे परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना और उत्तम लगा। इब्रा. 11:25

अकाल के कारण एलीमेलेक, नाओगी और उसके दो बेटे बेतलेहेम छोड़कर मोआज देश में गये। परमेश्वर की प्रजा होने के नाते उन्हें प्रतिज्ञा के देश को छोड़कर नहीं जाना चाहिये था। थोड़े समय के लिये दुःख सहना पड़े और कठिनाइयों का सामना भी करना पड़े उन्हें बेतलेहेम छोड़कर मोआब के देश में जाना नहीं चाहिये था। मोआब के देश में भोजन-वस्तु की कमी नहीं थी परन्तु वह देश भ्रष्टाचार से भरपूर था। (लेवी. 18) कई लोग परीक्षा और कसौटी के समय परमेश्वर के घर से दूर चले जाते हैं और परमेश्वर के लोगों का साथ छोड़ देते हैं। वे ऐसा सोचते हैं कि ऐसा करने के द्वारा वे अपनी समस्याओं का हल कर सकते हैं। अन्त में उन्हें ज्ञात होता है कि उन्होंने भारी भूल की है, नाओमी के जीवन से चले जाना चाहिये, परमेश्वर के घर से कभी दूर न जाएं। परमेश्वर के लोगों के साथ रहने में ही हमारी भलाई है। सताव कठिनाइयां और कसौटी आयें फिर भी हमें परमेश्वर के लोगो के साथ ही रहना चाहिये। वहाँ परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

नाओमी और उसका परिवार मोआब के देश में थोड़े समय तक सुख से जीवन बिताते तो रहे, परन्तु बाद में लगातार कठिनाईयां आने लगी और दुःख से वह व्याकुल हो गये। परन्तु इसका कारण वह स्वयं ही थे ऐसा वह नहीं समझे और परमेश्वर के विरुद्ध वह कई बातें कहने लगे। (रूत:20)

परमेश्वर के घर से दूर जाने की इस भूल को वह नहीं समझे। हम भी कई बार ऐसा ही करते हैं।

हम देखते हैं कि नाओमी का संबन्ध केवल भोजन वस्तु से ही था। बेतलेहेम में भोजन-वस्तु नहीं थी इसलिये वह वहाँ से चले गये और बाद में बेतलेहेम में भोजन-वस्तु है ऐसा वहाँ जानकर वहाँ वह भोजन-वस्तु के लिए वापस आये। कई मसीही ऐसे ही होते हैं। किसी लाभ के लिये चाहे वह धन, मान, स्थान या सेवा हो, उसे खुद को जिससे तृप्ति मिले अगर वह हो तो कहीं भी वह जाने को तैयार है। वे लोग परमेश्वर के घर के महत्त्व को नहीं समझते और केवल विवाह, नौकरी या दूसरी सांसारिक विषयों में ही इच्छा दिखाते है उनके लिये यहाँ सन्देश है। ऐसी इच्छा उन्हें केवल दुःख, क्लेश और आत्मिक हानि ही की ओर ले जायेगी।

जनवरी 26

जो परम-धन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। 1 तीमु. 6:15

एक राजा की नाई प्रभु हमसे प्रेम करता है। अब हमें किस राज की आवश्यकता अनुभव महसूस होती है? कुशलता, सुरक्षा एवं युद्ध के लिये हमें एक राजा की आवश्यकता होती है। हमें संभालने के लिए तथा एक शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें, इसलिये राजा की सेना होती है। अदृश्य हाकिमों के सब प्रहारों से रक्षा करने के लिये प्रभु यीशु मसी हमारा स्वर्गीय राजा है। इफि. 6:12 में हम पढ़ते है, "क्योंकि हमारा यह मल्ल युद्ध लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं"।

ऐसे अनेक दुष्ट अदृश्य हाकिम हैं, जो हमको कुछ हानि एवं चोट पहुंचाने के लिये निरन्तर प्रयत्न करते हैं। प्रभु यीशु मसीह हमारा स्वर्गीय राजा है और हमारे अनजाने में वह हमारे पक्ष में युद्ध कर रहा है जिससे दुष्ट हाकिमों के आक्रमणों से हमारी रक्षा हो। जब हम बारम्बार कहते हैं, प्रभु यीशु, हम विश्वासपूर्वक स्वयं को तेरे लहू के आधीन रक्षा के लिए लाते हैं, तब वह शक्तियां घर कर जाती है। हमारी रक्षा के लिए हम पुलिस अथवा सेना के पास नहीं जाते हैं, क्योंकि स्वर्गीय राजा में हमारी सुरक्षा है। साथ ही साथ उसके राज्य के ज्ञान के कारण हम आत्मिक रीति से वृद्धि पाते जाते हैं। इसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह हमारा स्वर्गीय राजा है, और अनुग्रह तथा ज्ञान वृद्धि पाने के लिये वह हमारी सहायता करता है।

जनवरी 27

तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है, वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपरहेगा, फिर ऊँचे स्वर में गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा। सप. 3:17

लोगों को मन्दिर में से बाहर निकालने के बाद प्रभु शहर से वापस लौट रहे थे। प्रभु यीशु के लिये यह बहुत कठिन काम था। सभी लोगों पर उसने प्रेम और करूणा दिखाई थी परन्तु उसे स्वीकार न करने के कारण उनका न्याय करना पड़ा। उसने चौकियों को उलट दिया और रस्सी का कोड़ा बनाकर लोगों को निकाल दिया। उसे बहुत दु:ख लगता था इसलिये वह वापस बैतनिय्याह गया जहाँ उसे सच्चा विश्राम और तृप्ति मिलती थी क्योंकि बैतनिय्याह में एक छोटा सा झुण्ड था जो उसे सच्चा विश्राम और तृप्ति देगा, इसे वह जानता था।

कई बार हम बहुत थके हुए, श्रमित और अकेलेपन का अनुभव करते हैं। अपनी दु:ख, पीड़ा और बोझ को अन्य लोगों अथवा पड़ोसियों के साथ हम बांट नहीं सकते हैं। इसलिये घर जाकर माता-पिता, पत्नी या कुटुम्ब के साथ उसे हम बांटना चाहते हैं। इसी व्याकुलता के साथ प्रभु यीशु बैतनिय्याह गया। यरूशलेम को प्रभु अपना घर नहीं माना। परन्तु बैतनिय्याह, जहाँ अपना बोझ और दु:ख को वह बांट सकता था और जहाँ सांत्वना और सामर्थ्य मिल सकती थी, वह उसका घर था। प्रभु यीशु हमारा सृष्टिकर्ता, कितना अद्‌भुत है कि वह अपने लोगों के पास से सांत्वना खोज रहा है। जैसे हमें सांत्वना की आवश्यकता अनुभव होती है वैसे ही प्रभु भी सांत्वना पाने की इच्छा रखता है। बैतनिय्याह में प्रभु को कोई दु:ख नहीं था क्योंकि उससे प्रेम रखने वाले छोटे से झुण्ड ने वहाँ उसका प्रेमपूर्वक स्वागत किया था। बैतनिय्याह में प्रभु को सच्ची शांति, सच्चा विश्राम एवं सच्ची सांत्वना मिली और उसके वचन को सुनने की इच्छा रखने वाले लोग मिले।

क्या आप ऐसा कह रहे हैं कि, प्रभु मुझसे कहो, मैं किस रीति से तुझको आनन्द दूं? तृप्त करूं, सांत्वना एवं विश्राम दूं? जो पूछ रहे है उन्हें प्रभु उत्तर देगा। आत्मिक रीति से हमें वृद्धि पाना होता है। हमारा दैनिक व्यवहार यही होना चाहिये। प्रभु मेरी समस्याओं या मेरी किसी भी प्रकार की आवश्यकताओं की मुझे चिन्ता नहीं है, कृप्या करके मुसे कहो, मैं कहाँ जाऊं अथवा किससे मिलूं या किस की सहायता करूं जैसा आप चाहते हैं? जो आपकी सम्पूर्ण इच्छा में हो और आपको आनन्द सुख और शांति दे, ऐसा कुछ है जिसे मैं आपके लिये कर सकता हूँ? तब वह आपको बताएगा कि कहाँ जाना और क्या करना है। परमेश्वर के आधीन होना यह अद्‌भुत विषय है। प्रभु स्वयं ही हमारे बिना मांगे हमारी सहायता करता है और हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

जनवरी 28

पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आपको भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने और मूर्तों के आगे के बलिदान खाने को सिखलाकर भरमाती है। प्रका. 2:20

कैथोलिक धर्म का प्रारभ तब हुआ जब उन्होंने क्रूस की उपासना करना शुरू किया और क्रमवार अनेक प्रतिमाओं को भी उपासना करना शुरू किया। इन धर्म-भ्रष्ट नियमों को हमें दूर करना होगा। अनेक मसीही, परमेश्वर के वचन के अधीन होने के बदले अनेक प्रकार के नियमों को मण्डली में शामिल करते हैं। अनेक लोग पूरे वर्ष प्रभु के भवन में नहीं जाते हैं, परन्तु ईश्वर के रविवार के दिन नये सूट एवं नये जूते (परन्तु नया हृदय से नहीं) पहनकर प्रभु के भवन में जाते हैं और प्रभु की मेज में से भाग लेते हैं। इसी कारण आत्मिक उजाड़ आता है। यही वस्तुएं प्रभु यीशु मसीह की महिमा को हर लेते हैं। हमें आत्मा और सच्चाई से प्रभु का भजन करना चाहिये (यह. 4:24)। परमेश्वर की इस रीति से उपासना करने के द्वारा ही जो मीरास वह हमारे लिये तैयार कर रहा है उसका हिस्सा पाने के हम योग्य होंगे। आत्मा में प्रार्थना करें, आत्मा में भजन गाएं आत्मा में जागृत रहें। आपकी भजन की सेवा सादगीपूर्ण हो, अर्थात विधियों और नियमों से स्वतंत्र रखें।

प्रका. 2:15 में नीकुलइयों की शिक्षा के विषय में पढ़ते हैं। यहाँ तो परमेश्वर की मण्डली में मनुष्यों के द्वारा ठहराए हुए अधिकार लाने वाली शिक्षा है। जिसके द्वारा शिक्षक (उपदेशक) बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करते है कि उनकी लोग पूजा करें। इस बात को परमेश्वर धिक्कारता है। अन्य लोग ऐसे कितने ही कैथालिक मण्डली के अनेकों काम, जैसे की कुर्ता, मोमबत्ती, आचार-संहिता, प्रार्थना पुस्तकों आदि अपनाने लगे है। पवित्र-आत्मा का अंकुश हमारे जीवन में न हो तो हम भी अनेक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के मार्ग में चल पड़ेंगे। प्रका. 2:16 में प्रभु कहता है कि ऐसी सारी बातों के विरुद्ध वह अपनी तलवार से लड़ेगा। यह तलवार तो परमेश्वर का वचन है। हमें परमेश्वर के वचन को मान देना चाहिये और केवल प्रभु यीशु मसीह के आगे ही झुकना चाहिये। कितने ही विश्वासी बैठे-बैठे प्रार्थना करते है, परन्तु हमें घुटने टेक कर प्रार्थना करनी चाहिए। अपने व्यक्तिगत जीवन में, पारिवारिक जीवन में और मण्डलिक जीवन में परमेश्वर के वचन को मान दें। कई बार सभा में, विशेष रूप से युवा वर्ग के मध्य ठट्ठा हंसी होती है। हमें उनको चिताना चाहिये कि परमेश्वर को किस रीति से मान देना है। युवाओं को सिखाना है। उन्हें परमेश्वर के वचन को ध्यान से सुनना चाहिए, विश्वासियों को यह सिखाना आवश्यक है।

जनवरी 29

इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है? इफि. 5:17

परमेश्वर को किस रीति से जानना है यदि इस बात को आप नहीं जानते तो आप नासमझ है, क्या आप सच्चाई से यह कह सकते हैं कि प्रतिदिन की प्रत्येक आवश्यकता, समस्या और प्रत्येक विषय के लिये आप परमेश्वर की इच्छा खोज रहे है? पवित्र-आत्मा के कार्य का यह बाह्य सूचना है कि हमें अगुवाई दे और परमेश्वर की सम्पूर्ण ईच्छा जानना सिखाये। एक दिन मैं कनाडा देश के वसनकंवर नामक शहर में था, तब मेरे पास एक व्यक्ति ने टेलीफोन किया और कहा, "इस रविवार के दिन क्या आप आकर हमें सन्देश देंगे? मैंने कहा, कृपया करके थोड़ी देर ठहरें, मैं अपनी डायरी देखकर आपको बताऊंगा"। जब मैंने उत्तर दिया हाँ, किसी ने मुझसे कहा, क्या आप प्रार्थना करके परमेश्वर की इच्छा नहीं खोजते? मैंने कहा, प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। मैं खाली ही हूँ, मैं किसी सांसारिक काम के लिये नहीं जा रहा हूँ। परमेश्वर का सन्देश और अपनी गवाही देना यह मेरा अधिकार है। मैं अपना समय नष्ट नहीं करता हूँ। परन्तु उन्होंने कहा, आपको क्या मालूम आपके लिये परमेश्वर की योजना अलग हो सकती है।

मुझे लगा कि, वे मेरी गलती खोजने का प्रयत्न कर रहे थे। इससे मुझे बुरा लगा और दो हफ्ते तक मैंने उनको "शुभ प्रभात" भी नहीं कहा। मैं अपने मन में गुस्से से भरा हुआ था और उनके साथ बातें नहीं किया। दो सप्ताह के बाद परमेश्वर ने मेरे कान खींचकर कहा, क्या मेरी इच्छा जानना तुझे आता है? मुझे नहीं आता था। मैं चार-पांच बार पूरे पवित्र-शास्त्र का अध्ययन किया और सांसारिक आनन्द से सम्पूर्ण रीति से स्वतंत्र हो गया। ऐसे विषयों में मुझे किसी भी प्रकार का बिल्कुल रस नहीं था और फिर भी मैं सच्चाई के साथ कह नही सकता था कि, परमेश्वर की इच्छा किस रीति से खोजने के विषय मे मैं जानता हूँ। मेरे लिये यह एक धक्का जैसे था। इसलिये मैंने कहा, "प्रभु, अब से मैं कहीं नहीं जाऊंगा, कोई सभा नहीं चलाऊंगा। कृपा करके आपकी इच्छा खोजना मुझे सिखाएं" और परमेवर ने मुझे सिखाया। भारत में या बाहर किसी दूसरी जगह से भी कोई मुझसे यह पूछे कि "मसीही होने के नाते आपका सबसे बड़ा अधिकार कौन सा है"? तब मेरा जवाब यह है कि "परमेश्वर की इच्छा जानना और उसे पूरा करने का अधिकार"। परमेश्वर जब हमसे कहता है कि मार्ग यही है, तब कैसा अद्‌भुत आनन्द मिलता है। ऐसा लगता है कि मानो स्वर्ग में घूम रहे हो। चाहे किसी भी परिस्थितियों में हों परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में ही हम सुरक्षित है।

जनवरी 30

उसके सद्गुणों को प्रकट करो। 1 पत. 2:9

जैसे एक बड़े चट्टान में से एक छोटा टुकड़ा खोदकर निकाला जाये तो, बड़े चट्टान के टुकड़े के सारे गुण एक छोटे चट्टान के टुकड़े में मिलेंगे। इसी प्रकार हम प्रभु यीशु की ओर ताकते रहें तो प्रभु यीशु मसीह के सारे सद्गुण और योग्यता हमारे अन्दर उंडेल दिए जाते हैं। वह स्वयं हमारा श्रेष्ठ नमूना एवं हमारा जीवन है। यदि हम किसी सलाह सूचना मदद और नमूने के लिये मनुष्य की ओर देखेंगे तब हम निराश हो जायेंगे और ठोकर खायेंगे। परन्तु हमें निरन्तर प्रभु को अपनी धार्मिकता और जीवन के रूप में देखना चाहिए, और वह हमें अपने सद्गुणों से भर देगा।

यदि आपको उसके अनुसार बनना हो तो विश्वास-पूर्वक कहना होगा, हे प्रभु, अपना जीवन मुझ में उंडेल, आपको नम्र बनना हो तो उससे कहें, "प्रभु मुझको अपने समान नम्र और दीन बनाओ"। अपने शत्रुओं से प्रेम करना हो तो उससे कहें, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे जो कर रहे है उसे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे है, ऐसा कर जो प्रेम तूने अपने शत्रुओं के प्रति दिखाया, वही प्रेम मुझे भी दो"। इसी प्रकार जब हमारी निन्दा होती है तब हम उसकी ओर फिरते हैं और इस प्रकार हम ईश्वरीय गुणों को प्राप्त करते हैं।

ये सभी सद्गुण कृपा और सहनशीलता हमारे स्व-प्रयत्नों से नहीं आते हैं। यदि आप कहें कि "मैं नम्र बनूंगा तो आप अधिक अभिमानी हो जायेंगे" और इसी प्रकार जब आप कहेंगे कि "मैं क्रोध नहीं करूंगा, तो आप अधिक क्रोधी बन जायेंगे। स्व-प्रत्यनों से आप कभी भी सद्गुणों को प्राप्त करने में सफल नहीं होंगे। इसलिये विश्वास-पूर्वक उससे कहें, हे प्रभु, तू मेरी धार्मिकता है। तूने मुझे अपना स्वभाव दिया है। अब मैं दुखित हूँ कि मैं परीक्षा से गिर गया हूँ। अपना स्वयं का जीवन मुझे दो और मुझे विजयी बनाओ"। इस रीति से आप विजयी होंगे। यदि आप उसकी ओर नहीं फिरोगे तो आप हार जायेंगे।

जनवरी 31

क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। 2 कुरि. 4:11

स्वयं ही एक विजयी जीवन बिताने के लिये और परमेश्वर की इस इच्छा को समझने में कुरिन्थि के विश्वासी निष्फल हो गए। उनके जीवन में अनेक प्रकार की निष्फलताएं एवं निर्बलताएं थी। प्रेरित पौलुस, पतरस और अपुल्लोस जैसे सेवकों द्वारा परमेश्वर का वचन उनको सिखाया गया था। फिर भी वे आत्मिक रीति से बालक ही थे (1 कुरि. 3:1,2)। आज भी कई विश्वासी लोग आत्मिक रूप से बालक ही है। उनमें निष्फलताएं और पतन दिखाई देता है। आत्मिक रीति से वे बाँझ और परमेश्वर के वचन के रहस्यों को समझने में पंगु जीवन ही व्यतीत करते हैं। शैतान के द्वारा वे धोखा खाते हैं, विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं में और झूठी शिक्षा में फंस जाते हैं।

इन सबका कारण यह है कि वे मसीह के क्रूस को सही रूप से नहीं समझे। हमें आत्मिक वृद्धि के लिये मसीह के क्रूस को समझने की आवश्यकता है। आप चाहे कितना ही कठिन कार्य क्यों न करें, चाहे कितनी ही लम्बी प्रार्थना करें, चाहे कितनी ही पवित्र-शास्त्र ज्ञान प्राप्त करें, परन्तु मसीह के क्रूस की एकता में नहीं आए तब परमेश्वर की सामर्थ आप पर प्रगट नहीं होगी। प्रेरित पौलुस के लिये क्रूस एक दैनिक अनुभव था (गलतियों 6:14)। अब आप क्रूस को सहन करते हैं यह शारीरिक आपकी दु:ख या मानसिक वेदना नहीं है। बल्कि क्रूस में मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान ये तीनों बातें सम्मलित हैं।

मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया और हमारे अन्दर वास करने के लिये वापस जी उठा। आत्मिक वृद्धि पाने के लिए प्रभु को हृदय-पूर्वक आभार दिखाएं कि वह आपके पापों का दण्ड लेने के लिये मृत्यु को पाया और अपने पापी स्वभाव के लिये आप मृत्यु पायें इस कारण भी वह मृत्यु को पाया। आपको अपने पापी स्वभाव पर मृत्यु प्राप्त करना होगा। तब ही आप पाप के ऊपर जय प्राप्त कर सकेंगे। उसके लिये विश्वास-पूर्वक प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की सामर्थ को अपने अन्दर क्रोध, ईर्ष्या, व्यभिचार इत्यादि, इत्यादि पापों के लिए देखना होगा। अपने बल पर आप उन सबके ऊपर जय प्राप्त नहीं कर सकते है। उससे कहें, कृपया करके अपनी मृत्यु की सामर्थ मुझमें उंडेल?" तभी अपने पापी स्वभाव के लिए मरेंगे। प्रेरित पौलुस कह सका, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ"। स्वयं के विषय में मृत्यु पाना यह हमारा दैनिक अनुभव होना चाहिये।

फरवरी 1

जब यीशु बैतनिय्याह में घर में था, तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उंडेल दिया। मत्ती 26:6,7

परमेश्वर का मेम्ना होने के नाते प्रभु अपना प्राण देने वाला है इस बात पर विश्वास करके यह स्त्री अति बहुमूल्य इत्र को संगमरमर के पात्र में लेकर आई। वह इत्र इतना बहुमूल्य था कि उसका मूल्य कोई भी लगा नहीं सकता था। इस इत्र को मोल लेने के लिये इस स्त्री ने जो कुछ भी उसके पास था वह सभी बेच चुकी होगी और बहुत ही कठिनाइयों का सामना और श्रम किया होगा, और तो और यह इत्र इतना सुगंधित था कि इसका एक बूंद ही बहुत है कि सब सुगन्धित हो जाता। परन्तु वह स्त्री पूरा इत्र ही प्रभु के ऊपर उण्डेल देना चाहती थी। इसलिये उसने पात्र को तोड़कर पूरा ही इत्र प्रभु के सिर पर उण्डेल दिया जिससे कि सम्पूर्ण देह का अभिषेक हो। जैसे किसी राजा का अभिषेक होता हो। इस रीति से वह प्रभु यीशु के शरीर का अभिषेक करना चाहती थी। वह विश्वास से उस बहुमूल्य इत्र के साथ इस प्रकार से कहती होगी, "प्रभु, तुम्हारे लिये मैं सब कुछ देने के लिये तैयार हूँ, तुम मुझसे जो कुछ भी मांगो, मैं देने के लिये तैयार हूँ। तुम जो कुछ भी मांगो वह तुम्हारा ही है। मैं तुमको आनन्द-पूर्वक दे दूंगी।

जिस रीति से इस स्त्री ने पात्र तोड़ दिया उसी रीति से हमें भी सम्पूर्ण रीति से टूट कर उण्डेला जाना होगा। जब हम सच्ची रीति से टूटे एवं नम्र होते हैं तब ही सच्ची आराधना निकलती है। हम अपने प्रभु को हमारा सृष्टिकर्ता, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु के रूप में आराधना के योग्य देखते हैं और कहते हैं, मैं सर्वस्व दे रहा हूँ"। हमारे लिए जो कीमती हो वह सब कुछ उसके ऊपर उण्डेल देने के लिये और उसके चरणों में रहने के लिये हमें तैयार रहना चाहिए। जयवन्त लोगों की बड़ी से बड़ी विशेषता यह है कि वे स्तुति और आराधना से भरपूर होते हैं। जहाँ आराधना नहीं वहाँ बहुत थोड़ी वृद्धि होती है। हमारे पास उत्तम शिक्षण हो परन्तु यदि स्तुति करना नहीं सीखे हैं तो हममें वृद्धि नहीं होगी। कई बार सामान्य विश्वासी दमकते चेहरे से प्रभु की स्तुति करते हैं। शिक्षित विश्वासी, बहुत भजन के बदले प्रार्थना करते हैं। हम विश्वासियों से कहते हैं कि रोटी तोड़ने के पूर्व वे केवल स्तुति की भेंट चढ़ाएं।

सच्ची आराधना के द्वारा हमारी आत्मिक उन्नति होती है।

फरवरी 2

जब वे खाकर तृप्त हो गये तो उसने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए। यूहन्ना 6:12

हमारे प्रभु को बिगाड़ पसन्द नहीं है। इसलिये उसने कहा कि कुछ फेंका न जाए। अब बचे हुए टुकड़ों के विषय में प्रभु इतना अधिक ध्यान रखता है तब हमारे समय, धन और शक्ति के लिए कितना अधिक ध्यान रखता होगा। जब हम अपने जीवन को देखते हैं तब हमें स्वीकार करना होगा कि हम प्रभु की सेवा करते हैं। हम ऐसा विचार रखते हैं। हमारा अधिकांश समय नष्ट हो जाता है, हमारा बहुत सा धन गलत रीति से खर्च होता है और हमारी बहुत शक्ति व्यर्थ कार्यों में क्षीण हो जाती है, अपने आप की जांच करें।

जब मैंने 1933 में भारत में सेवकाई का आरंभ किया तब मैंने विचार किया कि जहाँ जाऊं वहाँ सुसमाचार प्रचार करने में अपना सारा समय खर्च करूंगा। ऐसा करने से प्रभु प्रसन्न होगा। सुबह शीघ्र ही सुसमाचार और पत्रियां लेकर मैं निकल पड़ता था। प्रत्येक दुकान, गली और सब लोगों को मैं उन्हें बांट देता, उसके बाद सुसमाचार प्रचार और प्रतिदिन शाम को किसी न किसी के घर सभा चलाता। मैं दोपहर के भोजन और चाय की चिन्ता किये बिना मैं कठिन परिश्रम करता था। छः महीनों तक ऐसा ही चलता रहा, परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं निकला। मैंने स्वयं को सांत्वना देते हुए कहा, "मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है"। यहाँ मैं जान गया कि मेरा आत्मिक जीवन एक हो गया है। मेरी आत्मिक रीति से उन्नति नहीं हो रही है। बाद में मैंने प्रार्थना की और पूछा, 'प्रभु मैं कहाँ पर गलती कर रहा हूँ'?

प्रभु ने मुझसे कहा कि मैं अपने सामर्थ और बुद्धि द्वारा सेवा कर रहा था और इस प्रकार से समय बर्बाद कर रहा था और यह भी बताया कि सुबह-शाम के ध्यान मनन के समय में मैंने कटौती कर दी है, क्योंकि मैं बाहर जाकर सभाएं लेता था। मैंने तुरन्त पश्चाताप किया और निर्णय लिया कि मैं सर्वप्रथम परमेश्वर की योजना जानने के लिये बाट जोहूँगा और उसके बाद ही बाहर निकलूंगा। मुझे अपने परिश्रम का प्रतिफल देखना था, ऐसा करने के बाद प्रभु प्रतिदिन आत्माओं को बचाते गया, और कई हिन्दू मुसलमान और सिख लोग प्रभु के पास आए।

फरवरी 3

इसलिये मैं तुझे सम्मति देता हूँ, कि आग में ताया हुआ सोना मुझसे मोल ले, कि धनी हो जाए। प्रका. 3:18

अग्नि में ताया हुआ सोना मजबूत और जीवित विश्वास का प्रतिबिम्ब है। 1 पतरस तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से लाए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आद का कारण ठहरे। "सोने को सात बार शुद्ध किया जाता है। हम साबुन और परनी से उसे शुद्ध नहीं कर सकते। सोनार सोने को एक कटोरी में रखता है और उसे पिघलाता है। जब वह पूरी तरह से पिघल जाता है तब फूंकनी से उसे फूंकता है ऐसा करने से उसमें से आसमानी रंग की ज्वाला उत्पन्न होने लगती है। जिससे कि रेती के छोटे से छोटे कण भी भस्म हो जाए।

आइने में जैसा चेहरे को देख सकते हैं वैसे ही, पिघले हुए सोने में छोटे कणों का न दिखाई देने तक सोनार उसे शुद्ध करता ही रहता है। रेती का एक छोटा कण भी सोने को धुंघला कर सकता है। इसलिये वह आसमानी रंग की ज्वाला को फूंकता ही रहता है। इसी रीति से, प्रभु कहता है कि यदि हम ऐसा शुद्ध विश्वास चाहते हो तो हमें भी अनेक शुद्ध करने वाली अग्नि में से होकर जाना पड़ेगा। इन अन्तिम दिनों में हमें दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है।

अधिकांश लोग चिन्हों की खोज में है और कई तो स्वप्न की आशा रखते हैं। दु:ख रूपी शुद्ध करने वाली अग्नि में से जाने के द्वारा सरल दृढ़ और क्रियाशील विश्वास मिलता है। जब प्रभु कहता है कि तू मुझसे सोना मोल ले, तब इसका अर्थ यह है कि हमारे अन्दर उसका विश्वास हो। तभी लोग हमारे मनों में शंका के बीज बोने में सफल नहीं होंगे।

फरवरी 4

जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला-हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर-ऊपर मंडराता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया। व्य. वि. 32:11

जैसे उकाब अपने बच्चों को संभालती है वैसे ही यहोवा ने अपनी प्रजा को संभाला। सभी पक्षियों ने उकाब ही ऐसा पक्षी है जो अपना घोंसला चट्टानों पर बनाता है। गौरेया एवं अन्य पक्षी घर में या पेड़ों पर घोंसला बनाते हैं और वहाँ अंडे देती है। परन्तु उकाब को जब तक ऊंचे से ऊंचा स्थान न मिले तब तक वह यहाँ से वहाँ फिरती ही रहती है।

यह किसलिये? क्योंकि उसकी ऐसी इच्छा होती है कि उसके बच्चे ऊंचे से ऊंचा उड़ना सीखें। बच्चे तो अभी कोमल अवस्था में ही होते हैं। वे रोने लगते हैं और मानों कि माता को ऐसा कह रहे हो कि "मां हमारे प्रति इतनी क्रूरता न दिखाओ, हम पर दया करो"। परन्तु माता उकाब नहीं सुनती है। जब वह देखती है कि बच्चे नीचे की ओर गिर रहे हैं तब वह अपने पंखों को फैलाती है और उन्हें परों पर उठा लेती है। और फिर ऊंचे पर ले जाकर छोड़ देती है इस रीति से बच्चे खूब ऊंचाई पर उड़ना सीखते हैं और उनके पंख भी बहुत मजबूत हो जाते हैं। वे लम्बी दूरी तक उड़ सकते हैं, परन्तु इसके लिये उन्हें कई परीक्षाओं में से जाना होता है।

प्रभु हमसे कहता है कि, "तुम मेरे साथ ऊंचे स्थानों पर आओ जिससे कि मुझे तुहारे घौंसलों को हिलाना पड़े। खूब ऊंचे उड़ान के लिये तुम्हें संसार की कठिनाईयों में से जाना होगा। यदि आप परमेश्वर की संतान बन गये हैं तब परमेश्वर द्वारा हिलाए जाने के लिये आप तैयार रहें। आपको ऊंचाई पर उड़ने के लिए मजबूत पंखों की आवश्यकता है। तभी आप उद्धार के ऊंचे पर्वत शिखर की सुन्दरता का अनुभव कर सकते हैं। यशा. 58:14 "मैं तुझे देश के ऊंचे स्थानों पर चलने दूंगा"।

जो युवा अपनी शक्ति पर भरोसा रखते हैं, वे अवश्य गिर जायेंगे। परन्तु जो प्रभु की बाट जो रहे हैं वे नया बल प्राप्त करेंगे। (यशा. 40:31) वे उकाब की नाई पंखों को फैलाएंगे। प्रभु की बाट जोहने वालों के लिये उनकी कठिनाइयां ही ऊँची उड़ान का कारण बनती है। यदि उनको घोंसलों में ही रखा जाए तो वे गौरेयों के समान ही रहेंगे और ऊंचे में उड़ान नहीं कर सकेंगे।

फरवरी 5

उनके पंख एक दूसरे से परस्पर मिले हुए थे, वे अपने-अपने सामने सीधे ही चलते हुए मुड़ते नहीं थे। यहे. 1:9

पंख स्वतंत्र गति को दिखाते रहते हैं। परमेश्वर ने हमको भी आत्मिक पंख दिये हैं जिससे उसके साथ एक होकर परमेश्वर के समस्त संसार में स्वतंत्र होकर उड़ सकें।

जब हम मसीही जीवन का आरंभ करते हैं तब हम अपने विषय में तथा हमारे निकट के कुटुम्बियों के विषय विचार करते हैं, परन्तु जैसे-जैसे आत्मा में उन्नति करते हैं, वैसे-वैसे हम दूसरों के विषय में विचार करते हैं। धीरे-धीरे हमारे विचार सम्पूर्ण विश्व भर के लिए दिखाई पड़ते हैं। इसके बाद हमारे अन्दर यह जानने की उत्सुकता जाग उठती है कि इस संसार का अन्त आने के पश्चात परमेश्वर क्या करनेवाला है। हमारा मन स्वर्ग का, आने वाली नई सृष्टि पर विचार करने लगता है। जैसे-जैसे हमारी आत्मिक वृद्धि या उन्नति होती है, वैसे-वैसे ही यह सब विचार आता है, और इसीलिए शैतान हमको जगत की टल जानेवाली वस्तुओं में फंसाए रखता है। परमेश्वर का उद्देश्य यह है, कि हम मानवीय विचारों की सीमा में न रहें। करूब पंखों के सहारे परमेश्वर का उद्देश्य पूरा करने के लिये विश्व में कहीं भी जा सकते थे। हमें भी इसी रीति से परमेश्वर के आधीन रहना चाहिए। इसी प्रकार से मण्डली द्वारा प्रत्येक स्थान में परमेश्वर का स्वर्गीय उद्देश्य पूरा होगा।

इन चारों जीवधारियों के पंख परस्पर एक दूसरे के साथ जुड़े हुए थे। इसका अर्थ यह है कि जहाँ कहीं एक ही जीवधारी जाए वहाँ अन्य तीनों को भी उसके पीछे जाना ही पड़ेगा। वह सच्ची आत्मिक एकता को दर्शाता है। वे स्वतंत्र रीति से अपनी इच्छानुसार स्वयं को दिशा में नहीं ले जा सकते है। मसीह की कलीसिया को इसी रीति से कार्य करना चाहिए। परमेश्वर की सेवायें हम अपनी इच्छा या व्यवहार से नहीं कर सकते हैं। जैसे-जैसे हम परमेश्वर की मण्डली के विषय का सम्पूर्ण उद्देश्य समझते हैं, वैसे-वैसे हमें यह ज्ञात होती है कि हम स्वतंत्र रीति से कार्य नहीं कर सकते हैं। परन्तु जीवन साथी और सहकर्मियों के साथ जो बुलाये गए हैं उनकी पूर्ण संगति में ही कार्य कर सकते हैं। परमेश्वर हमसे आत्मिक एकता चाहता है।

जैसे–जैसे आप आत्मा में बढ़ते जायेंगे वैसे–वैसे परमेश्वर के सहमति के रूप में आप परस्सर लोगों से आत्मिक एकता दिखाएंगे। जब दूसरों के साथ घुल–मिल कर रहने तथा कार्य करने में कठिनाई लगे तब इसका अर्थ यह है कि अभी भी आप सांसारिक एवं मसीह में बच्चे ही है। परन्तु जैसे–जैसे हमारी आत्मिक उन्नति होती है, वैसे–वैसे एकता, मेल, स्वतंत्रता, शान्ति आती है।

स्मरण रखें कि यह आत्मिक एकता है। यह संसारिक एकता नहीं है। जिन्होंने परमेश्वर को नहीं देखा और जो परमेश्वर का उद्देश्य एवं लक्ष्य नहीं जानते, वे आपके साथी नहीं हो सकते हैं। जो परमेश्वर को पहचानते हैं और जिनके अन्दर परमेश्वर का आत्मा वास करता है वे आपके साथ कार्य कर सकते हैं। चारों जीवधारियों का सीधा चलना, यह अनन्त जीवन को दर्शाता है। वे पीछे नहीं लौटते, केवल आगे बढ़ते हैं। जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ आगे बढ़ते हैं वैसे–वैसे हमारी व्यवस्थित उन्नति होती है।

फरवरी 6

और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

लूका 14:27

परमेश्वर ने इब्राहीम को यह आज्ञा दी कि अपना देश छोड़कर एक नये देश में जा। लूत को इब्राहीम के साथ जाने के लिये परमेश्वर ने नहीं कहा था। फिर भी मानवीय सहानुभूति के कारण इब्राहीम लूत को साथ ले जाने के लिये तैयार होता है। लूत इब्राहीम का भतीजा था, और उसने इब्राहीम से निवेदन किया होगा कि, "चाचा, कृपा कर मुझे भी साथ ले चलें"। कदाचित आरंभ में इब्राहीम ने लूत के आग्रह को अस्वीकार किया होगा, परन्तु बाद में उसके आंसू देखकर इब्राहीम ने "हाँ" कह दिया होगा। मानवीय प्रेम एवं भावुकता के आधीन होकर हम कई बार परमेश्वर के हृदय के श्रेष्ठ विचारों को खो देते है। कई विश्वासी हानि उठाते है। परमेश्वर की इच्छा की अवगणना करके अनाज्ञाकारी बनते हैं।

इब्राहीम ने अपने साथ लूत को लिया परन्तु कुछ ही समय बाद दोनों के चरवाहों के मध्य झगड़े उत्पन्न हो गए (उत्प. 13:7) मानवीय प्रेम प्राय: झगड़े लाते हैं। इससे हमें स्मरण रखना चाहिये कि प्रत्येक प्रेम भाव चाहे वह पति-पत्नी, बच्चे, माता-पिता, भाई-बहन, सगे स्नेही के लिए सब प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पवित्र किए गए होने चाहिये। यदि यह पवित्र नहीं है तब अवश्य एक दिन वे कठिनाइयों को खड़ी कर देगी।
मत्ती 12:48-50 हम देखते हैं कि प्रभु यीशु की माता तथा उसके भाईयों की यह धारणा थी कि प्रभु पर उनका कुछ विशेष अधिकार बनता है। उन्होंने प्रभु से मिलने के लिये संदेश भेजा। परन्तु प्रभु क्या कहता है? कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई? क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन और माता है। "पति-पत्नी, बच्चे, माता-पिता, भाई-बहन जैसे सगे-सम्बन्धी के प्रति प्रेम आपको परमेश्वर से दूर न रखे इसके लिए बचते रहें। अनेकों बार हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो प्रभु की इच्छा के आधीन होने के बदले सगे-स्नेही के प्रेम को अधिक महत्त्व देते हैं। उनकी धारणा यह होती है कि ऐसे-ऐसे सम्बन्धों को हम कैसे छोड़ सकते हैं? कैसे दु:खी कर सकते हैं? कैसे उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं? परन्तु वे भूल जाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाने के कारण पवित्र-आत्मा कितनी शोकित होती है।

फरवरी 7

इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो वे सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। मत्ती 6:33

यदि हम सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर पर भरोसा रखें तब उसकी विश्वासयोग्यता को हम प्रमाणित कर सकते हैं। हम लगभग पच्चीस लोग सुसमाचार की एक सभा में गये थे। उस समय हम स्वयं अपना भोजन बनाते थे। रविवार के दिन जिन्हें रसोई का कार्य करने की इच्छा थी, वे सब सभा में आकर बैठ गए, क्योंकि प्रभु चाहता है कि हम भवन की सेवा में जाए। उन्होंने दोपहर के खाने के लिए पूछा, मैंने कहा, "प्रभु पूरा करेगा"।

इस प्रकार हम सब भजन की सेवा में गये। सभा पूरी होने के बाद हम बस स्टेण्ड पर खड़े थे। इतने में सिर पर एक बड़ी टोकरी उठाये एक व्यक्ति को आते हुये मैंने देखा। मैं उसे पहचानता था, मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ से आ रहा है। उसने उत्तर दिया कि वह एक विवाह भोज में गया था। वहाँ बहुत खाना बच गया था। मालिक ने कहा कि जिनको आवश्यकता हो वे भोजन लेकर जा सकते हैं। इस व्यक्ति ने विचार किया कि, 'मेरा तो परिवार है नहीं, पर पड़ोसियों एवं मित्रों के लिये ले जाऊं'। परन्तु हमें देखने के पश्चात उसे लगा कि यह भोजन हमें देना चाहिए। उस खाने से भरी हुई टोकरी से हम सभी लोग अच्छे से तुप्त हुए।

हम परमेश्वर पर भरोसा रखकर अपना कर्त्तव्य पूरा करें तो वह अवश्य हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

फरवरी 8

यहोवा के भवन के आंगनों... कोठरियों... भण्डारों के जो-जो नमूने ईश्वर की आत्मा से उसको मिले थे, वे सब दे दिये। 1 इति. 28:12

दाऊद को अपने मन्दिर का स्थान प्रगट करने के पश्चात परमेश्वर ने मन्दिर का नमूना उसे लिखित में दिया। विश्वासी होने के कारण हम सबके लिये परमेश्वर का स्वर्गीय नमूना है और वह चाहता है कि हम उस नमूने को खोजें।

कई लोग नहीं जानते कि परमेश्वर ने उनके जीवन के लिये कौन सी योजना बनाई है। वे असमंजस्य में जीते हैं और परमेश्वर की योजना तथा इच्छा के ज्ञान बिना यहाँ-वहाँ जाते हैं, और इस प्रकार भारी हानि उठाते हैं। परन्तु हम सबके लिये व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा कलीसियाई जीवन के लिये स्वर्गीय योजना है। परमेश्वर के संतों के द्वारा हम उसकी योजना सरलता से ढूंढ़ सकते हैं।

जो परमेश्वर के घर से दूर रहते हैं उन्हें परमेश्वर की योजना को जानना बहुत कठिन लगेगा। यदि आप केवल सन्देश सुनने के लिये ही परमेश्वर के घर में है और सन्देश आपको बहुत ही रस-प्रद लगे फिर भी आप परमेश्वर की योजना नहीं जान पाएंगे। परमेश्वर के लोगों के साथ संगति में रहना तथा परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखना, ये दो नाते जब तक नहीं सीखेंगे तब तक परमेश्वर आपको स्वर्गीय योजना नहीं दे सकता है। दोनों संगति को बनाये रखने के द्वारा परमेश्वर आपके समक्ष प्रतिदिन, प्रत्येक महीने, प्रत्येक वर्ष अपनी योजना प्रगट करेगा।

प्रतिदिन परमेश्वर की योजना प्रगट होते हुए देखने तथा पालन करने में अति आनन्द मिलता है, तब हम आनन्द-पूर्वक कह सकेंगे, "मैं जानता हूँ, परमेश्वर आज मुझको यहाँ रखना चाहता है। मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझे यहाँ लाया है, वह मुझसे कहता है कि आज यहाँ, कल वहाँ जा"। केवल कभी-कभी ही नहीं पर प्रतिदिन हमें इसी रीति से सच्चाई से कहना चाहिए। स्मरण रखें, दाऊद सम्पूर्ण रीति से टूट गया था इसके बाद ही परमेश्वर ने उसे अपना स्वर्गीय नमूना दिया।

फरवरी 9

और मैं उसको और उसके मृत्युन्जय की सामर्थ को और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। फिलि. 3:10

प्रभु यीशु मसीह पर सरल विश्वास करने के द्वारा पुनरुत्थान की सामर्थ को स्वीकार करके हम धर्मी ठहराये जाते हैं। "वह हमारे अपराधों के लिये पकड़ा गया और हमारे धर्मी ठहराये जाने के लिये जिलाया भी गया"। (रोमि. 4:25)। परमेश्वर ने इब्राहीम एवं उसकी पत्नी को पुत्र पाने के लिए 25 वर्ष तक प्रतिक्षा करायी। वे दोनों बहुत ही वृद्ध हो गये एवं सन्तान पाने की उम्र को पार कर गये। समय पर परमेश्वर ने अपना वचन पूरा किया। इस प्रकार से परमेश्वर ने यह बताया कि जब तक उनके शरीर में सामर्थ, मृत्युन्जय और पुनरुत्थान की सामर्थ, प्रवेश न करे तब तक उनको वृद्धावस्था में पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती। सही समय में वे परमेश्वर के समक्ष धर्मी ठहराये गए। (रोमि. 4:22-25) सरल विश्वास के द्वारा मृत्युन्जय की सामर्थ को स्वीकार करके कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष सनातनकाल के लिए धर्मी बन सकता है।

दूसरी बात, इसी सामर्थ द्वारा हमें महिमान्वित अविनाशी देह दिया जाएगा और वह उस दिन, जब प्रभु यीशु मसीह अपने प्रतिज्ञानुसार सब स्वर्गदूतों एवं सब संतों के साथ फिर से आयेगा। "और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुओं से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा"।

तीसरी बात, फिलिप्पों 4:13 के अनुसार इस सामर्थ को पाने के द्वारा हम प्रतिदिन की अपनी कसौटियों एवं परीक्षाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं। जब हम बिमार होते हैं, तब चंगाई के स्पर्श का दावा करते हैं। जब परमेश्वर के वचन को समझना हो तब उससे ज्ञान की मांग करते हैं। वैसे ही प्रत्येक आवश्यकताओं के लिये हम विश्वास से पुनरुत्थान की सामर्थ की मांग कर सकते हैं। इसी सामर्थ के द्वारा हम मानवीय सीमाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक परिस्थितियों एवं कठिनाईयों का सामना करने के लिये वह सामर्थ मिल सकती है। इस अद्‌भुत सामर्थ की मांग करने के द्वारा हम परमेश्वर के कार्य में बड़े बोझ और दायित्व को ले सकते हैं।

फरवरी 10

फिर भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था, फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। राजा 19:12

महायाजक के वस्त्रों में जो नीले रंग का बाग था उसके नीचे वाले घेरे में नीले रंग के कपड़े के अनार लगे हुए थे। अनारों के बीचों-बीच सोने की घंटियां लगी हुई थी। वे तांबा या लोहे की नहीं, परन्तु सोने की घंटियां थी, जिनके द्वारा स्वर्गीय संगीत उत्पन्न होता था। जब महायाजक इसे पहन कर चलता था, तब इन सोने की घंटियों में से विशेष प्रकार की ध्वनि आती थी, यह ध्वनि परमेश्वर की वाणी का संकेत था। जिस प्रकार सोने की घंटियों की ध्वनि असाधारण थी, और तांबा या लोहे की घंटियों की ध्वनि से बिल्कुल ही भिन्न, उसी प्रकार से परमेश्वर की वाणी मनुष्य की वाणी से बिल्कुल भिन्न है। जब हम परमेश्वर की वाणी को सुनते हैं तब अनुभव से पहचानते हैं कि यह तो मनुष्य की वाणी नहीं है। पर परमेश्वर की वाणी है। यह तो धीमी एवं कोमल वाणी है। यह स्वर्गीय वाणी है, यह मधुर वाणी अधिकार युक्त पर प्रेमी है। यह वाणी हम अपने हृदय में सुन सकते हैं।

परमेश्वर की वाणी सुनने के द्वारा उसकी मंडली को बनाने के काम में भाग ले सकते हैं। आजकल लोग सोचते हैं कि बहुत धन व्यय करके और अधिक प्रवृत्तियों को रखने के द्वारा परमेश्वर की मण्डली बना सकते हैं। वे भूल जाते हैं कि जब तक परमेश्वर की वाणी निरन्तर न सुनें और मण्डली के लिये परमेश्वर की योजना को नहीं समझें तब तक परमेश्वर के घर को बनाने के काम में हम भाग नहीं ले सकते हैं। इस प्रकार से इन सोने की घंटियों के द्वारा परमेश्वर हमें स्मरण कराता है कि उसका सनातन पवित्र-स्थान बनाने के लिए उसको सहकर्मी बनना हो तो सर्वप्रथम उसकी वाणी को सुनना व सीखना होगा। इसीलिए लम्बे समय तक हमें घुटनों पर रहकर कहना होगा कि, "प्रभु मुझसे बात कर, अपना सन्देश भेज, अपनी वाणी में मुझसे बात कर, मुझे पार लगा, मुझे शक्ति और अपना अनुग्रह दे"। हम नया जन्म पाये बिना कभी भी परमेश्वर की वाणी को सुन नहीं सकते हैं और न परमेश्वर के साथ उसके सहकर्मी बन सकते हैं।

फरवरी 11

देख, मैंने तुझे निर्मल तो किया, परन्तु चांदी की नाई नहीं, मैंने दु:ख की भट्ठी में परखकर तुझे चुन लिया है।
यशा. 48:19

आरंभ में तो यह वचन हमें बहुत आनन्दप्रद नहीं लगता है, क्योंकि किसी को भी विपत्तियों में जाना अच्छा नहीं लगता। प्रभु कहता है कि "मैं तुझे निर्मल करूंगा। क्योंकि जो स्वयं पवित्र है वह हमें भी पवित्र बनाना चाहता है।" परमेश्वर का सबसे बड़ा उद्देश्य यह है कि हम उसकी पवित्रता के भागीदार बनें। खेद की बात है, कि हम किसी के दूसरे जैसा पवित्र बनना चाहते हैं, इसीलिये हमें अनेक शुद्ध करने वाली अग्नि में से जाना पड़ता है।

अच्छे से अच्छा स्टील बनाने के लिए कच्चे लोहे को अनेक बार आग में से होकर जाना पड़ता है। प्रथम में कच्चा लोहा साधारण मिट्टी के समान दिखाई देता है और पूरी तरह रेत और मिट्टी से लगा हुआ होता है, उसे तेज गर्म अग्नि में पिघलाया जाता है। ऐसे में लोहा नीचे बैठ जाता है और लोहा कठोर हो जाता है, जिससे घड़ी की सूई जैसी नाजुक चीजें बनाई जाती है। सोना भी अग्नि से शुद्ध किया जाता है। पेट्रोल तथा अन्य धातुओं को शुद्ध करने के लिए अग्नि का उपयोग किया जाता है। इसी रीति से रेशम, मोती, हीरा को उनके वास्तविक स्थिति में आने के लिए ऐसी ही प्रक्रिया में जाना पड़ता है।

जब परमेश्वर हमें चुनता है तब वह एक बहुत उच्च श्रेणी को हमारे समक्ष रखता है, क्योंकि उसकी ऐसी इच्छा है कि हम बिना किसी कलंक या दाग के पवित्र बनें। इसीलिए वह हमें दु:ख की मिट्टी में से लेकर जाता है। अनेकों बार हम यह कहते हैं, "प्रभु हमें भूल गया है"। यदि बिमारी बढ़ती जाए और अन्य कठिनाईयां आती रहें, तब हम कहते हैं, हे प्रभु, क्यों तू इतने लम्बे समय तक मुझे इस स्थिति में रखा है? मैंने कोई भी गलती नहीं की। मैं प्रत्येक सभा में गया, और तूने मुझे शिक्षा दी। फिर भी यह शिक्षा नहीं है, यह तो शुद्ध करने वाली अग्नि है, जिससे कि हम पवित्रता की एक उच्च श्रेणी तक पहुंचें।

फरवरी 12

और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी-भरी करेगा, और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। यशा. 58:11

हमारे प्रेमी और जीविते परमेश्वर का यह एक बहुमूल्य वचन है। हम घर जाते हैं या अनेक भूल कर बैठते हैं फिर भी अपनी समस्याओं और प्रवृत्तियों के लिए अनुवाई पाने के लिए जब उसके मुख को देखते हैं तभी वह हमारी सहायता और अगुवाई करता है। हम सोचते हैं कि हम बहुत बुद्धिमान हैं और हम योजनाएं बनाते हैं, परन्तु हमारी योजनाएं चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हो, वे एक दिन अवश्य निष्फल हो जायेंगी। हम परमेश्वर के वचन को अनदेखा करके अपने बच्चों के लिए अपनी योजनाएं बनाते हैं। इस विचार से कि वे ही उनके लिए अच्छी हैं। दु:खित विवाह संबन्धों के विषय में भी ऐसा ही है। विश्वासी माता-पिता परमेवर के वचन को अपनाते तो हैं, परन्तु उसे उचित मान नहीं देते। वे सगे-सम्बन्धियों या अनजान व्यक्तियों की सलाह लेते हैं परन्तु परमेश्वर के वचनों को नहीं मानते हैं। वे संसार की योग्यताओं के अनुसार चलते जाते हैं। वे परमेश्वर के मुख की ओर नहीं देखते, उसकी वाणी नहीं सुनते या परमेश्वर की योजनाओं को ढूंढ़ने का प्रयत्न नहीं करते हैं। परिणाम-स्वरूप उनकी सन्तान दु:खी रहती हैं। अपनी इच्छा से कुछ करेंगे तो निष्फल हो जायेंगे, परन्तु यहाँ परमेश्वर का वचन है, "और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा"।

हर कदम पर और छोटी से छोटी बातों में अगुवाई करने का दायित्व वह स्वयं अपने हाथ में लेता है। बाजार में जाने से पहले प्रभु से मांगें और वह आपकी अगुवाई करेगा। विश्वास से कहें 'प्रभु दुकानदार बहुत ही धूर्त होते हैं उनके द्वारा मैं धोखा न खाऊं, इसलिये मुझे बचा, अच्छी दुकान में मुझे ले चल और अच्छी वस्तुएं खरीदने में मेरी सहायता करें।' फिर धीरज से प्रतीक्षा करें, जब तक सच्ची शान्ति न मिले तब तक न जाएं। प्रभु आपकी छोटे से छोटे विषयों में भी रक्षा करेगा। यदि आप उसकी अगुवाई नहीं चाहते तो वह आप पर दबाव नहीं डालेगा। केवल जब उसकी अगुवाई चाहेंगे तब ही वह देगा। कई बार तो हमें इतना घमण्ड होता है कि उससे मांगते ही नहीं परिणाम-स्वरूप गलत मार्ग पर चल पड़ते हैं।

हमें अगुवाई पाने के लिये परमश्वर के शक्तिशाली मजबूत हाथों की आवश्यकता है। प्रत्येक कदम पर, हर छोटे से छोटे विषयों में उसकी अगुवाई पाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिये।

फरवरी 13

और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो, और इसीलिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो। इफि. 6:18

याकूब ने परमेश्वर के साथ मल्ल युद्ध किया और कहा, "मुझे आशीर्वाद दे नहीं तो मैं तुझे जाने न दूंगा"। (उत्पत्ति 32:26) इब्राहीम ने नम्रतापूर्वक हठ करके सदोम तथा अमोरा के लिए परमेश्वर से मध्यस्थ किया। विश्व में यहाँ-वहाँ बिखरे हुए परमेश्वर के लोगों तथा उसके दासों को कष्ट उठाकर मध्यस्थ करने का अधिकार भी है।

हम व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक स्थान पर नहीं जा सकते है, परन्तु हम प्रार्थना कर सकते है। हमारी मध्यस्थ ही परमेश्वर के साथ मल्ल-युद्ध है। भिन्न-भिन्न लोगों की आवश्यकताओं, दु:खों और समस्याओं के विषय में जानें फिर उनके लिए एक परमेश्वर के साथ मल्ल-युद्ध करना हमें सीखना चाहिये। जैसे-जैसे हम प्रार्थना में बढ़ते जायेंगे, वैसे-वैसे परमेश्वर के हृदय के निकट आते जायेंगे।

कई वर्ष पूर्व मैं विक्टोरिया (कनाडा) में था। मुझे एक वृद्ध स्त्री की ओर से एक संदेश मिला, इस स्त्री की रीढ़ की हड्डी टूट गई थी और उसे प्लास्टर चढ़ाया गया था। अधिकांश समय वह बहुत ही पीड़ा में बिताती थी। उसके छोटे से कमरे में, जहाँ वह रहती थी, मैं गया तब उसने मुझसे कहा, "इस रीति से मुझे बिस्तर पर रखने के लिये मैं प्रभु की आभारी हूँ, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में परमेश्वर के अनेक सेवकों के लिये प्रार्थना करने का मुझे अधिकांश समय मिला है।" कई वर्ष पूर्व वह एक धर्म प्रचारक के रूप में परदेस में रहकर प्रभु की सेवा करना चाहती थी, पर किसी कारणवश यह नहीं हो सका।

उसने कहा, जब मुझे पीड़ा होती है और नींद नहीं आती तब संसार के भिन्न स्थानों में सेवा करनेवाले सेवको को प्रभु स्मरण कराता है, और में उनके लिये प्रार्थना करती हूँ। परमेश्वर की ओर से उसे यह सेवा दी गई थी। विक्टोरिया एक बंदरगाह है और संसार के विभिन्न स्थानों से आने वाली प्रत्येक फरहरा वहाँ रुकती थी। इस प्रकार से कई देशों के धर्म प्रचारक वहाँ से होकर जाते थे। इस प्रकार से, यहाँ से जाने वाले धर्म प्रचारकों का नाम उस बहन के पास था और वह उन्हें बुलाती थी कि वे

आकर उससे मिलें। किसी ने मेरे विषय में उन्हें बताया। इसलिये मुझे भी यह निमंत्रण मिला। जब में उनसे मिलने गया तब आनन्द से उनका मुख चमक रहा था, उन्होंने मुझसे कहा कि पिछले कई वर्षों से वह मेरे लिये प्रार्थना करती रही। केवल सनातन काल में ही हम जान सकेंगे कि उनकी प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने कैसे महान कार्य किए हैं और जिन संतों एवं सेवकों के लिये वह मध्यस्थता की प्रार्थना करती है, उनके उत्तर में कैसे कार्य हुए है। प्रार्थना में मल्ल-युद्ध करने का अधिकार हम सभों को मिल सकता है।

रेल की यात्रा में प्रार्थना मुझे बहुत ही उपयोगी जान पड़ती है। भीड़ से भरी हुई गाड़ियों में, आरक्षण नहीं हो फिर भी, प्रार्थना करने के द्वारा हम समय को सदुपयोग बना सकते हैं। इस रीति से कठिनाई को अनदेखा किया जा सकता है और दूसरों के लिए प्रार्थना करने से आनन्द प्राप्त होता है। इस रीति से हम परमेश्वर के हृदय के निकट पहुंचते हैं।

फरवरी 14

मुझको यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है।
भजन. 143:10

क्या आप परमेश्वर का घर बनाना चाहते है? फिर परमेश्वर की इच्छा को आप ढूंढ़ना सीखें और उसे पूरा करने के लिए सदैव तैयार रहें, यह अति आवश्यक है। हममें से अधिकांश लोग अपनी इच्छानुसार पैसे खर्च करते हैं, छुट्टियों के लिये स्वयं ही योजनाओं को बनाते हैं और अपनी इच्छा से समय का उपयोग करते हैं। मेरा जीवन पूर्ण रीति से आशीषमय होगा लेकिन मुझे, मेरे जीवन की छोटी से छोटी बातों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानना सीखना पड़ेगा। यदि पैसे खर्च करने के लिए, बचे समय का उपयोग करने के लिए, या सुअवसर का उपयोग करने के लिए परमेश्वर के अधिकार के लिए मैं तैयार न होऊं तो परमेश्वर का घर बनाने में तेरा कोई भाग नहीं है।

जब इस्राएलियों ने मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया तब बादल और अग्नि मिलापवाले तम्बू पर छा गया। इस बादल के द्वारा इस्राएल के घराने को अगुवाई मिलती थी। जब-जब वह बादल निवास के ऊपर से उठ जाता, तब-तब वे कूच करते थे और बादल के नहीं उठने पर वे भी कूच नहीं करते थे। प्रभु यीशु मेरे लिये बादल है, वह अन्दर निवास करता है और अधिकार के साथ मुझे वो प्रतिदिन अगुवाई करता है। वह मेरा मित्र है और जिस मार्ग से मुझे जाना चाहिये उस मार्ग में वह अगुवाई करनेवाला मेरा स्वर्गीय मार्गदर्शक है।

जैसे परमेश्वर ने मिलापवाले तम्बू के निवास के लिए सामग्रियां, लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई की छोटी से छोटी बातों के लिए नमूना दिया, वैसे ही दैनिक जीवन में तथा सेवा में हमारी सभी प्रवृत्तियों के लिए अपना स्वर्गीय नमूना देने के लिए परमेश्वर इच्छा रखता है। परमेश्वर द्वारा संचालित होने के लिए यदि हम तैयार है, तो परमेश्वर हममें निवास करेगा, हमारे द्वारा काम करेगा और हमारे द्वारा अपनी महिमा प्रगट करेगा।

फरवरी 15

और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। उत्पत्ति 3:15

"प्रभु यीशु मसीह स्त्री की सन्तान रूप में आया, इसके साथ ही वह परमेश्वर का पुत्र भी था, क्योंकि मरियम पवित्र-आत्मा द्वारा गर्भवती हुई थी। प्रभु यीशु की एड़ी को डसने की मनसूबे इच्छा से शैतान ने लोगों को उकसाया और जोर से कहलवाया कि "उसे क्रूस पर चढ़ा दे"। क्रूस के पास लोग चिल्ला रहे थे और उसका ठट्ठा उड़ा रहे थे। इस रीति से शैतान प्रभु यीशु मसीह की एड़ी को कुचल रहा था परन्तु रोमि. 16:20 में हम देखते हैं उसके अनुसार इसी एड़ी के द्वारा शैतान को शीघ्र ही मसीह ने हमारे पैरों के नीचे कुचलवा दिया। हम चमत्कार, चिन्ह, स्वप्नों, उपवास या लम्बी प्रार्थनाओं द्वारा, उसे हरा नहीं सकते।

प्रभु यीशु मसीह स्वयं भी चमत्कार, चिन्हों या सन्देशों द्वारा शैतान को नहीं हराया। जब उसने कहा, "पूरा हुआ" और प्राण छोड़ दिया तब उसने शैतान को हराया। प्रभु यीशु मसीह को मृत्यु प्राप्त करने को हराया। प्रभु यीशु मसीह को मरना अवश्य था। वह पवित्र-शास्त्र के अनुसार मृत्यु पाया और पवित्र-शास्त्र के अनुसार दफनाया गया और पवित्र-शास्त्र के अनुसार फिर जी भी उठा। उसने हमारे पाप और दण्डाज्ञा को अपने ऊपर ले लिया, क्योंकि इसी रीति से वह मृत्यु को हरा सकता था। हम भी इसी रीति से शैतान को हरा सकते हैं। हम पवित्र-शास्त्र के ज्ञान द्वारा अथवा लम्बी प्रार्थनाओं के द्वारा शैतान को हरा नहीं सकते हैं। परन्तु क्रूस के द्वारा उसे हरा सकते हैं।

हम कह सकते हैं, "शैतान अब मेरे पास नहीं आना क्योंकि मेरा प्रभु क्रूस के ऊपर तुझे हरा चुका है। वह मेरे लिये मरा और मेरे पापों को दफना देने के लिए दफनाया गया और मुझमें जीवित रहने के लिये वह फिर जी उठा। इस विश्वास से हम शैतान को हराते है, हमारे अच्छे कार्य या स्वयं प्रयत्नों से नहीं। कई मसीही लोग घटा हुआ जीवन व्यतीत करते हैं क्योंकि वे पवित्र-शास्त्र के ज्ञान और अनुभव द्वारा शैतान को हराने का प्रयत्न करते हैं। परमेश्वर की विजय क्रूस में है (1 कुरि. 1:8) "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है"। प्रभु यीशु मसीह ने अपने कुचले (डसे) हुए एड़ी के द्वारा शैतान को हरा दिया है और विश्वास के साथ उस विजय को मैं अपने लिये लेता हूँ। यह उसकी वाचा है। प्रभु यीशु मसीह मेरे लिये इस जगत में आया, मेरे लिये उसने अपने प्राण दिये और अब प्रतिदिन अपने पापों और परीक्षाओं पर जय प्राप्त करने के लिये मैं उसकी विजय का दावा करता हूँ। इसी रीति से हमें शैतान पर विजय प्राप्त होती है और हम उस पर प्रभुता रखते हैं। इसी उद्देश्य से पुनरुत्थान की सामर्थ मुझमें प्रवेश करती है और मुझे भरपूर करती है।

फरवरी 16

कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन
इफि. 3:21

पतमुस के टापू पर जब प्रेरित यूहन्ना ने पुनरुत्थित प्रभु यीशु को देखा तथा बोलते हुए सुना तब उसे आश्चर्य हुआ। किसलिये उसे यह अनुभव मिला? इसलिये कि परमेश्वर की ओर से उसे आसिया की सात कलीसियाओं को प्रभु की ओर से सन्देश भेज सके। परन्तु उसने क्या भेजा? उसने जो देखा केवल इतना ही नहीं कि, "मनुष्य के पुत्र सदृश्य एक" का वर्णन, परन्तु जो सन्देश उत्तर पुरुष ने दिया, इन्हीं के यही सब सन्देशों से वास्तव में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से भरी हुई है। आप देखेंगे कि परमेश्वर की महिमा केवल हमारे व्यक्तिगत सन्तोष के लिये बताई नहीं गई, कि हम इस अनुभव के विषय में बताते रहें, परन्तु सभी कलीसियाओं को लक्ष्य में रखकर कलीसिया की सेवार्थ के लिये गौरव प्रगट किया गया है।

मसीही कार्य तथा बाहरी वस्तुओं की गवाही से, भिन्न-भिन्न वरदानों से, गवाहियों से हम कैसे आकर्षित हो जाते हैं। मुझे गीत गाने तथा वॉयलन बजाने का दान मिल सके इसके लिये मैं प्रार्थना करता था, क्योंकि मैं समझता था कि सुसमाचार के लिये यह महत्त्वपूर्ण योग्यता है। मैं सोचता था कि प्रभु इसके लिये तथा इनके जैसे अन्य वरदानों का आधार रखता है। मेरी यह धारणा कैसी भूल-भुलैया थी। गाने से या वॉयलन बजाने से आत्माएं नहीं बचती हैं। हमारे लिये महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर की वाणी को सुनें और जो वह कह रहा है उसका पालन करें, इसलिये कि हम दूसरे मनुष्यों तक उसका सन्देश पहुंचा सकें।

हमें ईश्वरीयक्रम में आना चाहिये। यूहन्ना के सुसमाचार में वह प्रभु के साथ सबसे निकट का संबन्ध रखने वाला दिखाई दिया है। इस विषय को ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि में रखकर अब उसे कलीसियाओं को सन्देश भेजने का दायित्व सौंपा है, इस विषय के लिए उसे यशस्कर जा रहा है कि जिससे वह अधिकार सहित उन्हें कह सके।

सब कलीसियाअें के लिये परमेश्वर की योजना में आए, इससे गौरव क्या है? अपने झुण्ड, पार्टी, मिशन या आंदोलन, के लिये कार्य करने के द्वारा, अधिक समय लोग इकट्ठे करने से तथा दूसरों पर अपना प्रभाव डालने से दिखाई नहीं देता है। केवल जब परमेश्वर के निवास स्थान को बनाते है अर्थात, पुराने नियम का मिलाप तम्बू और सुलेमान का मन्दिर जिसका आत्मिक अर्थ है मनुष्य को अन्तरात्मा में बनना, तभी परमेश्वर का गौरव अन्दर दिखाई देता है।

फरवरी 17

....जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी इस जीवन की सी चाल चलें।
रोमियों. 6:4

प्रभु यीशु मसीह जब बैतनिय्याह गया तब मरियम ने अत्यन्त बहुमूल्य इत्र लेकर प्रभु यीशु मसीह के पैरों पर डाल कर बालों से पौंछा था। इत्र की सुगन्ध पूरे घर में फैल गई, यह ऐसी मधुर एवं तीव्र थी कि जो वहाँ से गुजर रहे लोगों ने भी इसका आनन्द उठाया होगा।

हमारा मसीही जीवन, पारिवारिक जीवन और कलीसियाई जीवन भी ऐसा ही होना चाहिये। हमारे आसपास के लोगों को प्रभु यीशु मसीह की सुगन्ध का आनन्द उठाना चाहिये और उसका अनुभव करना चाहिये। बैतनिय्याह का यह घर उस दिन शान्ति, आनन्द और विजय के विषय में कह रहा था। इससे पहले तो उस घर में दु:ख, आँसू, अविश्वास, शिकायत और बुड़बुड़ाहट थी। अब वह आनन्द, शान्ति और सुख का घर बन गया। नया जन्म प्राप्त करने से पहले हम शोक से भरे घर जैसे होते है। हमारा जीवन हार, निष्फलताओं और अनेक समस्याओं से भरा होता है। अनेक घरों में लोग बुड़बुड़ाहट और शिकायत से भरे होते हैं और यह घर भी ऐसा ही था, परन्तु अब यह शान्ति और आनन्द से भरपूर था, संगति, आराधना और विजय का घर था।

अब मरियम और मार्था में कोई झड़प नहीं हो रही थी। पहले तो छोटी बातों के लिये वे झगड़ती थी, पर अब प्रेम और एकता का आत्मा दिखाई देता है। इसी रीति से लाजर भी आनन्द से भरकर प्रभु के पास आता है।

उन्होंने एकजुट होकर पुनरुत्थान की सामर्थ का अनुभव किया। उस दिन तक मार्था और मरियम प्रभु यीशु का आदर सत्कार करते थे, उससे प्रेम रखते थे और उसे मान देते थे, परन्तु प्रभु जिस पुनरुत्थान की सामर्थ्य उन्हें देना चाहता था, अभी उसके पास नहीं थी।

अय्यूब 1:1 के अनुसार अय्यूब परमेश्वर का भय मानता था। वह खरा और सीधा था, और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से परे रहता था। अय्यूब 42:5,6 के अनुसार उसे परमेश्वर के विषय में ज्ञान था। परन्तु अनेक दु:ख और पीड़ा सहने के बाद ही उसे जीवते परमश्वर का व्यक्तिगत अनुभव हुआ। मार्था, और लाजर के विषय में भी ऐसा ही था, वे कठिन दु:खो में से होकर गए। अनेकों अपमान सहे, क्योंकि प्रभु की अधिक पहुनाई किए थे। अपने भाई की बिमारी के समय में उसके पास सन्देश भेजा गया फिर प्रभु नहीं आया। कई यहूदियों ने ठट्ठा करते हुये कहा होगा, “देख, तुमने उसे आदर-मान दिया और अपने घर में उसका स्वागत किया, परन्तु अभी तुम्हारे संकट की घड़ी में वह नहीं आया। इसी प्रकार से कई कठिनाईयों, दु:खों और लज्जा का सामना उन्हें करना पड़ा होगा, परन्तु इसी दु:ख के द्वारा वे पुनरुत्थान की सामर्थ का अनुभव प्राप्त कर सके।”

फरवरी 18

...उन्होंने उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी। जकर्याह 3:5

पगड़ी सुन्दर सफेद कपड़े की बनी हुई थी और महायाजक के वस्त्रों में इसका स्थान बहुत ही महत्त्व का था। इफि. 6:14-17 में विश्वासियों को दी गई कवच और आत्मिक युद्ध के लिये विविध-शास्त्रों की सूची में एक उद्धार का टोप है। महायाजक की पगड़ी उद्धार के टोप को दिखाती हैं। (इफि. 6:17)। जब हम प्रभु यीशु मसीह को उसने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते है, तब करुणा और दया का मुकुट बांधा जाता है। (भजन. 103:4)

आदम के पाप के कारण परमेश्वर द्वारा प्रेम से दिये हुए आशीषों का अनुभव करने का अधिकार हम खो बैठे हैं, परन्तु जब हम अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, और प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, तब प्रभु यीशु मसीह के द्वारा वे आशीषें हमें वापस मिल जाती हैं। इस प्रकार से पगड़ी हमें स्मरण कराती है। परमेश्वर का प्रेम और दया का मुकुट जो आदम ने पाप के कारण खो दिया गया था, अब वह सरलता से हमें मिल सकता है, परन्तु यह तभी संभव हो सकता है जब हम पश्चाताप करते हैं और मसीह में विश्वास रखते हैं।

पगड़ी द्वारा एक और सन्देश भी हमें दिया गया है, वह अनुग्रह का सन्देश है। 'परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ,' (1 कुरिन्थियों 15:10)। हमें कई बार आश्चर्य होता है कि हम जैसे निर्बल, दुर्बल और मूर्ख लोग कैसे से प्रभु की सम्पूर्णता से परिपूर्ण होते हैं। क्यों परमेश्वर हमें उसकी सम्पूर्णता से परिपूर्ण करना चाहता है? हम कुछ हैं ये अपनी बुद्धिमानी, दान या योग्यताओं के कारण नहीं। केवल उसके अनुग्रह के कारण हैं। इसीलिये अपने परिवार या शिक्षा या दूसरों को किसी बात में हमें कभी घमण्ड नहीं करना चाहिये। हम केवल प्रभु के अनुग्रह के कारण उद्धार पाये हैं और प्रतिदिन प्रत्येक आवश्यकताओं के लिये हमें इसी अनुग्रह का दावा करना चाहिये। परमेश्वर के समक्ष हम केवल कीड़ा जैसे हैं। फिर भी, हमारे दीन-हीन दशा में उसने हमको उठाया और आदर का स्थान दिया। इस बात की प्रतीति होने के बाद कि परमेश्वर हम पर भरपूर अनुग्रह करता है, उसके लिए हम परमेवर का आभार व्यक्त किये बिना नहीं रह सकते हैं।

महायाजक की पगड़ी पर सोने का टीका लगाया जाता था (निर्ग. 28:36) जिसके ऊपर 'यहोवा के लिये पवित्र' ये अक्षर खुदे होते थे। यह हमारा दैनिक सूत्र होना चाहिए कि प्रभु के लिये स्वयं को पवित्र रखें।

फरवरी 19

.... परन्तु इस कारण कि तम संसार के नहीं, वरन मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है।

यूहन्ना 15:19

परमेश्वर की प्रजा को दिये गये अद्भुत नामों में एक नाम है, मण्डली, अथवा 'ईक्कलेसिया'। विचार करें कि सोना, रूपा, लौहा, पीतल, हीरा, मणिक्य और मूल्यवान पत्थरों को बड़े ढेर के पास लौह-युक्त चम्बुक लाया जाये, तब केवल गंदा और जंग लगा हुआ धातु ही बाहर खींचकर आयेगा। परन्तु सुन्दर और कीमती वस्तुयें वहीं रह जायेंगी। इसी रीति से निर्धन, खोये हुये, अशुद्ध पापियों को मसीह आकर्षित करता है, परन्तु संसार के अभिमानी और धनवान लोग उसकी ओर आकर्षित नहीं होते है।

'ईक्कालेसिया' का अर्थ है खींचकर' निकाले हुये। मसीह द्वारा जिन्हें संसार में से खींचकर निकाला गया है उनका उल्लेख उपरोक्त पद में किया गया है। यद्यपि वे अनपढ़ थे और संसार की उच्च योग्यताएं उनके पास न थी फिर भी परमेश्वर को दृष्टि में वे अत्यन्त मूल्यवान गिने गये। ऐसे लोगों के लिये परमेश्वर कहता है, "मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है"। यूहन्ना 15:19)

क्या आप इस मण्डली के हैं? क्या आप सच्चाई से कह रहे हैं कि मसीह आपको संसार में से खींचकर निकाला है? आपका एक मसीही नाम है और आपको पवित्र-शास्त्र का बहुत ज्ञान है, इसलिये आप प्रभु के हैं। आप ऐसा विचार नहीं रखें। आपके जीवन में और हृदय में परिवर्तन आना चाहिये। जब परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा आपको खींचकर निकाला जाता है तभी सांसारिक इच्छा और आनन्द का आकर्षण आपसे दूर होता है। आपको प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि मसीह आपके हृदय में आया है इसीलिये अंधकार लुप्त हो गया है और पाप की शक्ति से मुक्त हो गए हैं। जब तक आपको ऐसा अनुभव नहीं मिले तब तक आप ऐसा नहीं कह सकते हैं कि आप मण्डली से जुड़ गये हैं।

फरवरी 20

भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

रोमियों 12:10

उत्तर भारत के कई भागों में अतिथि आते हैं, तब सर्वप्रथम उन्हें नमकीन जैसी वस्तुएं खाने के लिये दी जाती है उसके बाद पानी का ग्लास दिया जाता है। ऐसा करते समय वे अतिथियों से कहते हैं कि हम आपको ग्रहण करते हैं, या आपका स्वागत करते हैं और इन वस्तुओं द्वारा हम आपके प्रति प्रेम दर्शाते हैं"। नमक सच्चा और अथाह प्रेम दिखाता है। सांसारिक प्रेम संसार की वस्तुओं पर आधारित रहता है। परन्तु ईश्वरीय प्रेम चाहे कैसी भी परिस्थितियों में क्यों न हो फिर भी अधिक गहरे में उतरता है।

प्रभु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम रखो"। कैसा अद्‌भुत नमक। जो हमें विवश कर देता है कि हम उनसे प्रेम रखें। पीड़ाओं में तात्कालिक सहायता देना ही प्रेम नहीं है परन्तु सदाकाल के लिए इस प्रेम के भागीदार हो वे इस कारण प्रेम कर सकते हैं।

हमारे अन्दर नम्रता, टूटा और पिसा हुआ मन होना आवश्यक है, तब ही हम शुद्ध नमक बन सकते हैं। जब परमेश्वर स्वयं हमारे भीतर रहने आयेगा तो हम लोगों पर, हाँ शत्रुओं पर भी सच्चा प्रेम प्रगट कर सकते हैं।

फरवरी 21

और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ और जैसे तुम सिखाए गये ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो। कुलु. 2:7

जैसे किसी पेड़ की जड़ धरती में गहराई से उतरती जाती है और रस चूसती है, वैसे ही अपने पोषण और स्थिरता के लिये हमें दिन-प्रतिदिन प्रभु यीशु मसीह के जीवन को अपने अन्दर ग्रहण करना होगा।

लबानोन में एक देवदार का वृक्ष है जो चार सदियों से भी अधिक पुराना है। वह एक भव्य वृक्ष है। उस पर आई आंधियों ने उसकी जड़ को धरती में गहराई तक जाने दिया और दूर-दूर तक फैल कर उसका भोजन पूरा किया। इसी रीति से परमेश्वर हमारे जीवनों से आंधी आने देता है, परन्तु वह हमारे नुकसान के लिये नहीं परन्तु इसलिए कि मसीह में हम गहरी जड़ पकड़ते जायें।

आत्मा का कार्य अधिक गहराई से हो इसलिये प्रभु माना गया और हमारा जीवन बना, हमें निरन्तर उसका आभार मानना होगा। इन दो बातों के लिये प्रभु का आभार मानने में कभी भी न थकें। जब-जब शैतान आपके पाप और असफलताओं को स्मरण कराए अथवा जब आपको अकेलापन या निराशा सताये तब धन्यवाद, स्तुति करके देखें। शैतान कहेगा आपके लिये कोई आशा नहीं है। इसके विपरीत में आप घुटनों पर जाइये और प्रभु का आभार मानें। वह आपकी धार्मिकता बना है इसलिये उसका आभार मानें। अपने आत्मिक जीवन को पूरी तरह से अनुभव करने के लिये धन्यवाद-स्तुति ही एक मार्ग है।

स्मरण रखें कि आप अपनी धार्मिकता पवित्र-शास्त्र ज्ञान, प्रवृत्तियों या प्रार्थना पर आधारित होकर ही परिपूर्ण नहीं होते, परन्तु आप मसीह में ही परिपूर्ण होते हैं। इस विश्वास से आप आत्मिक जीवन में स्थिर रह सकेंगे।

फरवरी 22

परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि... उसे अपवित्र ना होना पड़े। दानि. 1:8

जयवंत जीवन का यही रहस्य है। अपने जीवन में किसी भी प्रकार की अपवित्रता या मलिनता को आने नहीं देना चाहिए। मलिनता परमेश्वर के साथ की संगति को तोड़ देती है। हम अपने प्रयत्नों से मलिनता पर जय प्राप्त नहीं कर सकते।

मसीह को लहू की सामर्थ में सरल विश्वास रखने के द्वारा जय प्राप्त कर सकते हैं। शत्रु हमें अशुद्ध करने के लिये दिन में हजार प्रयत्न करें फिर भी हम लहू द्वारा निरन्तर शुद्ध हो सकते हैं और मलिनता से बच जाते हैं। विश्वास से हमें कहना चाहिये, मैं अपवित्र होना नहीं चाहता हूँ। मुझे पवित्र होना है। हे प्रभु, तेरा यह लहू मुझे ढांके और शुद्ध करे, मैं ऐसा चाहता हूँ। इस रीति से हम किसी भी परीक्षा पर जय प्राप्त कर सकते हैं।

दानिय्येल अपने जीवन में जिस भी परिस्थितियों में गया उसे पहले से देख नहीं सकता था, परन्तु वह जानता था कि एक महान उद्देश्य के लिए परमेश्वर उसको तैयार कर रहा था। स्मरण रखें कि परमेश्वर आपको भी एक महान उद्देश्य के लिए तैयार कर रहा है और आप भी अपने मन में निश्चय करें कि आप स्वयं को अपवित्र नहीं करेंगे। लोग आपके निश्चय को देखकर और यह देखकर कि परमेश्वर आपको आशीष दे रहा है उन्हें भी हियाब मिलेगा और वे भी प्रभु के पक्ष में खड़े रहेंगे।

दानिय्येल केवल शाकाहारी भोजन लेने के लिये तैयार था (वचन 12)। वह और उसके तीनों मित्र जानते थे कि अन्य लोगों के बदले वे अधिक बलवान और अच्छे बनेंगे। जिन्होंने विश्वास रखकर मांगा है परमेश्वर उन्हें अधिक सामर्थ्य, बुद्धि और ज्ञान देगा, वैसे ही हमें भी विश्वास से मांगना चाहिये।

फरवरी 23

परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं, पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है। भजन. 46:5

परमेश्वर को ऐसे लोग चाहिये जो अनन्त जीवन की बातें ढूंढ़ते हैं। यदि हम उसके राज्य में रहना चाहते हैं तब हमें ऐसा जीवन चाहिये जिससे हमारे काम और बातें अनन्तकालिक फल लाएं। इस प्रकार के जीवन और सेवा के द्वारा उसके राज्य में हमें ग्रहण किया जायेगा। यदि हम जयवन्त होना चाहते हैं तब वह परमेश्वर की परीक्षा है।

नबूकदनेसर द्वारा बनाई गई मूर्ति को तोड़ने वाला पत्थर छोटा था परन्तु बाद में वह बड़ा पहाड़ बनकर पूरी पृथ्वी पर फैल गया (दानि. 2:35) परमेश्वर बड़ी सरलता से दिखा रहा था कि जो-जो बातें बनावटी है उनका अन्त अचानक आयेगा। जो काम परमेश्वर की ओर से है उसे कभी भी हिलाया या हटाया नहीं जायेगा। परमेश्वर के कार्य का आरंभ साधारण से भले ही हो परन्तु वह सदाकाल तक टिका रहेगा।

सुसमाचार प्रचार के लिये परमेश्वर स्वर्गदूतों का उपयोग नहीं करेगा। वह ठानता तो उस अनुसार किया होता। वह तो दीन स्त्री-पुरुषों को, छोटे एवं निर्बल पात्रों के रूप में सुसमाचार प्रचार के लिये उपयोग करता है। और इस रीति से शैतान के गढ़ का नाश करता है और अपना राज्य स्थापित करता है।

प्रभु यीशु स्वयं एक छोटे पत्थर के रूप में इस संसार में आया। वह संसार के राजसी वैभव के साथ नहीं आया। वह केवल एक मनुष्य के रूप में आया, और फिर भी निष्पाप था। आज भी उसके शिष्यों की संख्या थोड़ी ही है। परन्तु उनके द्वारा वह अपना राज्य स्थापित कर रहा है। परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने वाले लोग भले ही सीधे-सादे हो, वे निभर्य है और उनके हृदय पूरी शान्ति और आनन्द से भरपूर है।

फरवरी 24

जब मैंने कहा, हे प्रभु मैं क्या करूं। प्रेरितों. 22:10

यदि आपके पाप क्षमा हुए है और परमेश्वर के पास से नया जीवन मिला है तो स्मरण रखें कि आप परमेश्वर की प्रजा के साथ जोड़े गये हैं। पवित्र-शास्त्र मानव जाति को दो भागों में बांटता है। परमेश्वर की सन्तान है, या शैतान की सन्तान है। यदि आप परमेश्वर की सन्तान है तो यह आपका अधिकार है कि परमेश्वर की इच्छा को ढूंढ़े और उसकी आत्मा द्वारा अगुवाई पाएं। परन्तु आपके अधिकार को अनुभव करने के लिये परमेश्वर आप पर दबाव नहीं डालेगा।

यहाँ परमेश्वर की इच्छा ढूंढ़ने में एक दिन, एक सप्ताह, पांच वर्ष, या इससे भी अधिक वर्ष लग सकते हैं। चाहे कितना भी समय लगे जब तक परमेश्वर आपके साथ बात करने के लिये तैयार न हो तब तक धीरज से बाट जोहते रहें। अन्यथा आप और आपके बच्चे हानि उठायेंगे। यह हानि अनेक रीति से आ सकती है। सर्वप्रथम आप आत्मिक रूप से अन्धे हो जायेंगे। परमेश्वर के वचन को आप समझ नहीं सकेंगे। प्रार्थना करने में आपको कोई आनन्द नहीं मिलेगा। आत्मिक बहरेपन के कारण आप परमेश्वर की वाणी सुन नहीं सकेंगे। शत्रु शैतान को आपके जीवन में अधिक से अधिक स्थान मिलता जायेगा।

यदि शैतान किसी भी रीति से आपको भरमाने का प्रयत्न करता हो तो सचेत हो जाएं। परमेश्वर की सलाह लिये बिना कोई भी निर्णय न करें, योजनाएं न बनाएं या किसी से प्रतिज्ञा न करें। अपने परिवार या विवाह या नौकरी संबन्धी निर्णय लेना हो तो बारम्बार प्रार्थना करें, सुबह, दोपहर, रात्रि में, प्रतिदिन प्रार्थना करें, जब तक की परमेश्वर स्पष्ट रीति से आपके साथ न बोले। अधीर न हो। मानवीय सहानुभूति से खिच न जायें। बाहरी दिखावा धोखा देने वाला होता है। यदि आप सहानुभूति और भावनाओं द्वारा चलेंगे तो शैतान भरमायेगा और आप अपनी मीरास खो बैठेंगे।

फरवरी 25

क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिसने परदेस को जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी। मत्ती 25:14

यह व्यक्ति अपने दासों की सामर्थ को जानता था। इसलिए उसने अनकी सामर्थ के अनुसार तोड़े दिए। इसी रीति से प्रभु हमें ऐसा बोझ नहीं देगा जो हम नहीं उठा सकेंगे। अधिकांश समय हमें ऐसा लगता है कि हमारा बोझ बहुत भारी है। परन्तु बाद में हम यह समझते हैं कि हमारी क्षमतानुसार ही उसने हमें बोझ दिया है। 1 कुरि. 10:13 में दिये गये बहुमूल्य वचन के अनुसार हम सहन न कर सकें ऐसी परीक्षा में वह हमें नहीं जाने देगा।

जैसे दास अपने स्वामी से प्रश्न नहीं कर सकते थे कि एक को पांच तोड़े दूसरे को दो और तीसरे को एक क्यों दिया, वैसे ही आप भी परमेश्वर से पूछ नहीं सकते कि आपके पड़ोसी से अधिक बोझ आपको क्यों दिया गया है। परमेश्वर पक्षपाती है वैसा आप नहीं कह सकते। परमेश्वर मनुष्य के नियमों द्वारा नहीं चलता। हमारी व्यक्तिगत क्षमता, शक्ति और बुलावे के अनुसार उसने हमें बोझ दिया है। हमें यह कहना चाहिये कि परमेश्वर ने मुझे जो बोझ दिया है उसे में विश्वासपूर्वक उठाऊंगा। जो दायित्व मुझे दिया गया है उसका अच्छा परिणाम लाऊंगा।

हममें से अधिकांश जानते भी नहीं है कि परमेश्वर ने उन्हें कौन सा तोड़ा दिया है, इसीलिये हम एक असफल जीवन जी रहे है। प्रार्थना द्वारा हम जान सकते है कि परमेश्वर ने हमें कौन तोड़ा दिया है। यदि उसकी इच्छा है कि मैं भारी बोझ उठाऊं तो वह भारी बोझ हमें धीरज से उठाना चाहिये। 'बोझ भारी है, उसे हल्का करो' ऐसी प्रार्थना नहीं करनी चाहिये। इस विषय में असफल हो जाने के कारण अधिकांश लोग अपना प्रतिफल और स्वर्गीय मीरास खो देते है। हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि प्रभु मुझे पर्याप्त अनुग्रह दो जिससे कि मैं बोझ को उठा सकूं। इसके विपरीत प्रभु दबाव नहीं डालता है। यदि वह हमारा बोझ को हल्का करे, तब हमारा जीवन फलरहित हो जायेगा। कई बार हम प्रभु की इच्छा के बिना बोझ उठाते है और परमेश्वर को आत्मा के अगुवाई में पाए बोझ को अस्वीकार करते हैं।

फरवरी 26

क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊँचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ, और उसके संग भी रहता हूँ, जो खेदित और नम्र है, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं। यशा. 57:15

प्रत्येक वर्ग के लोग, अनेक कठिनाईयों और दु:खों को उठाकर परमेश्वर को ढूंढ़ने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु ढूंढ़ नहीं सके, क्योंकि ज्ञान, आचार संस्कार या क्रियाकलापों के द्वारा कोई भी परमेश्वर को प्राप्त कर नहीं सकता है।

जो नम्र एवं टूटे हृदय के हैं, वे ही उसे देख या ग्रहण कर सकते हैं। गल. 2:20 में पौलुस अपने बारे में क्या कहता है उसे देखें। 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, परन्तु मसीह मुझमें जीवित है। ...उस विश्वास में जीवित हूँ। यह सच्ची नम्रता है। प्रत्येक परिस्थितियों में लोग कह सकते हे, 'प्रभु मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी अभिलाषा नहीं परन्तु तेरी अभिलाषा, मेरा मार्ग नहीं परन्तु तेरा मार्ग'। छोटी-छोटी बातों के लिए भी ऐसी प्रार्थना करेंगे। इस प्रकार की नम्रता मनुष्य को परमेश्वर का निवास स्थान बनाती है। चमत्कारी, चिन्हों या ज्ञान द्वारा कोई भी परमेश्वर का निवास स्थान बन नहीं सकता। प्रत्येक दिन मृत्यु के अनुभव में से जाने के द्वारा सच्ची नम्रता आती है, उसके बाद आप सच्चाई और खराई से कह सकें, "प्रभु मेरा नहीं परन्तु तेरा मार्ग, मेरी इच्छा नहीं पर तेरी इच्छा"।

इस प्रकार की मृत्यु के अनुभव में से जाने के लिये हमें मसीह के सामर्थ को लेना होगा, क्योंकि कोई भी अपने आप मर नहीं सकता। तो विश्वास से शुद्ध हृदय और खराई के साथ कहना चाहिये, 'प्रभु, मेरी सब योजनाएं तोड़ी जायें इसके लिये मैं तैयार हूँ। मेरी सब अभिलाषाओं और विचारों को ले लिया जाए, उसके लिये मैं तैयार हूँ। विश्वास से मैं प्रभु यीशु की सामर्थ को लाता हूँ। तू आ और मुझमें रह। अपने विचार और इच्छाओं को मेरे जीवन में पूरा कर। ऐसा अनुभव आपको परमेश्वर का निवास स्थान बनायेंगे और आप रात-दिन उसकी उपस्थिति का अनुभव करेंगे। जहाँ भी आप जायें वहाँ आप जानेंगे कि परमेश्वर की उपस्थिति आपके साथ जाती है, आपके साथ काम करती है और परमेश्वर आपमें रहता है।

फरवरी 27

... पुरानी बातें बीत गई है, देखो सब नई गई। 2 कुरि. 5:17

भूमि में बीज डालकर और उसे प्रतिदिन पानी दिया जाए तो थोड़े दिनों में किसी आहार के बिना भूमि में से एक छोटा पौधा उगता है। उसके बाद उसमें पत्ते आते है और उचित समय पर फूल और फल लगते हैं। परन्तु यह सब बहुत शान्ति से होता है। इसी रीति से प्रभु यीशु का जीवन भी आपके अन्दर कार्य करेगा और आपके हृदय में धीरज, दीनता, नम्रता और सहनशीलता दिखाई देगी।

यदि किसी ने आपको हानि पहुंचाया है तो प्रभु के समान ही उसे क्षमा किया है और यही प्रेम आपके अन्दर आयेगा। दूसरों को क्षमा करने में मदद करेगा और आपके हृदय को कड़वाहट और ईर्ष्या से मुक्त रखेगा। आपका हृदय परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता से भरपूर रहेगा। जैसे-जैसे आप निरन्तर यह स्मरण रखेंगे कि प्रभु यीशु मसीह ने आपके पापों के लिये दु:ख सहा और आपको क्षमा किया वैसे-वैसे प्रत्येक दिन के अन्त आप धन्यवाद स्तुति के साथ करेंगे।

पहले तो आप, उपन्यासों, पत्रिकाओ, चलचित्रों इत्यादि से समय नष्ट करते थे, आपको परमेश्वर के वचन के लिये बिल्कुल भूख नहीं थी। आपका हृदय गन्दा था इसलिये आप ऐसे स्थानों में जाते थे जहाँ गन्दी पापपूर्ण बातें देखकर आपकी वासना तृप्त हो। भ्रष्ट हृदय खराब वस्तुओं की लालसा रखता है। आपके हृदय में प्रभु यीशु मसीह में आने के पूर्व आप दिन का प्रारंभ चलचित्रों के गीतों से करते थे, फिर वो रेडियों पर हो या टेपरिकार्डर हो। परन्तु उद्धार पाने के बाद नये जीवन में आपके हृदय में परमेश्वर के वचन के लिये भारी भूख और उद्धारकर्ता के लिये महान प्रेम हो गया है। आपको जो ईश्वरीय जीवन प्राप्त हुआ है उससे आपका हृदय आत्मिक गीतों से भरपूर रहता है और रात हो या दिन, किसी भी समय आपको ये गीत गाने में प्रिय लगते हैं और इसके द्वारा आपके हृदय में शान्ति और सांत्वना आती है।

फरवरी 28

क्योंकि हम परमेश्वर के निकट... मसीह की सुगन्ध है।
2 कुरि. 2:15

तिनकों को बटोरकर मैं गूंथ लेने के द्वारा वह मजबूत बनता है और बारिश या आँधी में भी वह मजबूती से बना रहता है। हमें किसी भी स्थिति में योग्य रीति से चलना होगा। कितने ही लोगों को अकेले रहने में अत्यन्त आनन्द आता है। हम जब दूसरे लोगों के साथ रहते हैं तब एक दूसरे से झगड़ा हो जाता है। जब प्रभु के सच्चे विश्राम के लिये हम उसकी माला का भाग (हिस्सा) बनते है तब प्रभु की सामर्थ्य हमें मिलती है। "क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता है और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है" (भजन. 84:5)। किसी भी प्रकार का बोझ कसौटी या कठिनाईयों के लिये हम प्रभु के पास जा सकते हैं। यदि हम मसीह यीशु की माला का हिस्सा बने हैं तो संसारिक मित्रों या सगे-सम्बन्धियों के पास मदद के लिये जाने की आवश्यकता नहीं है। हम प्रत्येक बोझ के लिये प्रभु को पुकार सकते हैं। वह हमारी समस्याओं को हल करेगा। प्रभु की माला का हिस्सा बनने वाले जहाँ जाते हैं वहाँ स्तुति फैलाते हैं।

एक प्रचारक अपने शिष्यों के साथ एक गांव में गया। वहाँ के लोगों ने उसका आवभगत नहीं किया। इसलिये वह वहाँ से ऐसा कह कर चला गया कि परमेश्वर आपको आशीष दे और सहायता करे। बाद में वह वहाँ से दूसरे गांव में गया, जहाँ लोगों ने बहुत ही प्रेम दिखाया। उस गांव को छोड़कर जाते समय उसने कहा, "परमेश्वर तुम लोगों को बिखेर दे"। उसके सहकर्मियों ने उससे पूछा कि दोनों गांव में ऐसी अलग-अलग आशीष क्यों दी। उसने उत्तर दिया, 'जिन्होंने हमारा सत्कार नहीं किया वे लोग जहाँ है वहीं रहें, नहीं तो जहाँ जायेंगे वहाँ उनका बुरा स्वभाव भी जायेगा। परन्तु दूसरे आशीषें लेकर जायेंगे, क्योंकि उनके पास परमेश्वर का सन्देश है। अपनी प्रार्थना, प्रेम और संगति के द्वारा वे परमेश्वर का सन्देश देंगे।'

पाप में वर्षों जीने वाले पाप की दुर्गंध को छोड़ते जाते हैं, जैसे सिगरेट पीने वाले जहाँ कहीं भी जाते हैं, वहाँ गाड़ी या बस में तम्बाकू की दुर्गंध को फैला देते हैं इसी रीति से पापी लोग धिक्कार, पाप और अशुद्धता के चिन्हों को छोड़ते हैं। प्रभु यीशु की माला का भाग बनने के द्वारा हम जहाँ नहीं जाते हैं वहाँ दिलासा, शान्ति और आशीष लेकर जाते हैं। विश्वासी होने क नाते यह हमारा अधिकार है।

फरवरी 29

स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। भजन 73:25

एपोद के ऊपर के सोने से जड़ा हुआ कढ़ाई काम का सूक्ष्म सनी के कपड़े का चपरास था। चपरास पर बारह मणि थी, इस बारह मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के बारह गोत्रों के नाम थे (निर्गमन 28:15-21)।

ये बारह मणियां महायाजक के हृदय के बहुत निकट थे। जहाँ कहीं वह जाये वहाँ ये मणियां भी उनके साथ जाती है और इनके द्वारा परमेश्वर अपनी प्रजा को समझा रहा है कि वह अपनी प्रजा को अपने हृदय के निकट रखना चाहता है।

बहुत से लोग अब परमेश्वर के निकट आना नहीं चाहते हैं। निःसन्देह वे परमेश्वर को चाहते हैं, उसके वचनों को चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर जितना उनके निकट आने की इच्छा रखता है उतना वे नहीं आते। अनेकों बार हमारे और परमेश्वर के मध्य में सांसारिक मित्र आते हैं। कई बार ऐसा हो जाता है कि हम प्रार्थना करना चाहें तभी आगंतुक आ जाते हैं, और इन मित्रों के साथ संगति बनाए रखने के लिये हम परमेश्वर की उपस्थिति को तंज देते हैं। जो समय परमेश्वर तथा उसके वचन के लिए व्यतीत करना चाहिये वह सांसारिक बातों के लिए व्यतीत करते हैं। परमेश्वर के निकट रहने की सोच हमें पसन्द है परन्तु किसी दीवार पर सेंध लग जाती है। अब इन बहुमूल्य मणियों द्वारा परमेश्वर हमसे कहता है, 'मेरी प्रजा, मैं तुझे अपने पास रखना चाहता हूँ। इसलिये मेरा संपूर्ण प्रेम तथा आनन्द को अनुभव करो'।

बहुत लोग कुछ मांगने के लिये प्रार्थना करते हैं। उदाहरणतः जब वे बिमार रहते हैं तब प्रार्थना करते हैं, 'हे प्रभु मुझे चंगाई दे, चंगाई दे' परन्तु चंगाई पाने के बाद वे परमेश्वर को भूल जाते हैं। जब दुःख में होते हैं तब ही प्रार्थना करते हैं, 'प्रभु मेरी कठिनाईयों को देख। कृपा करके मेरे दुःख में मेरी सहायता करें, और प्रभु उनकी प्रार्थना सुनता है उसके बाद वे उसको भूल जाते हैं। बहुत से लोग जब दुःख या कसौटी में होते हैं तब ही प्रार्थना करते हैं। परन्तु बहुत थोड़े लोग परमेश्वर से उसके प्रेम के कारण प्रार्थना करते हैं।

आपके व्यस्क बच्चे कितने स्तब्ध करने वाले होते हैं, इसे आप जानते हैं, परन्तु छोटे बच्चे आपको पसन्द करते है। बच्चे जैसे-जैसे बढ़ने लगते हैं, उन्हें जो कुछ भी देते हैं, उसके लिये आपको पसन्द करते हैं, परन्तु छोटे बच्चों को माता का स्नेह चाहिये। जैसे बच्चा माता के स्नेह का भूखा होता है। वैसी ही हमें भी परमेश्वर के लिए आतुर होना चाहिए। किसी विनती या निवेदन के बिना, किसी विशेष आवश्यकता के बिना हमें उसको पुकारना चाहिये, 'हे प्रभु, मुझे तेरी आवश्यकता है। तेरा स्नेह चाहता हूँ'। हम महायाजक के चपरास के ऊपर जड़े हुये मूल्यवान मणियों के समान हैं। हम परमेश्वर के हृदय के निकट रात-दिन उसकी उपस्थिति में रहने वाले हैं।

मार्च 1

हे मेरे परमेश्वर हे राजा, मैं तुझे सराहूँगा, और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूँगा।
भजन. 145:1

जब-जब आप प्रार्थना करने के लिये घुटने टेकते हैं तब-तब प्रार्थना करने से पहले प्रभु को अति महान बनाएं और जो वह है उसके लिये उसका भजन गाएं।

आपके लिये वह कितने ऊंचे स्थान में विराजमान है उसे समझें। उसके बाद प्रार्थना करना आपके लिये आनन्दमय होगा। अन्यथा थोड़े ही पलों में घुटने दुःखने लगेंगे और बाद में पेट, सिर, कान दुःखने लगेंगे और अन्य कई प्रकार के कष्ट बढ़ जायेंगे। आप सोने की तैयारी करेंगे और कहेंगे कि "मैं कल प्रार्थना करूंगा"।

प्रभु जानता है कि मैं कितना अधिक थक गया हूँ। बीती रात मैं चार बजे सोने गया था। इसलिये अभी कैसे प्रार्थना कर सकता हूँ? उसके बाद आपकी प्रार्थना छोटी होगी, "प्रभु मुझे आशीष दो, सभों को आशीष दो"। इसलिये प्रार्थना करने से पहले उपासना करें। प्रार्थना करने के लिये यह शक्तिवर्धक बन जायेगा। आप प्रार्थना में ताजगी अनुभव करेंगे और थकान नहीं होगी। इसी रीति से वचन की सेवा करते समय या गवाही देते समय यही बातें कहें, जिससे प्रभु को मान मिले और आपको थकान नहीं होगी। जितना आप प्रभु को सम्मानित करेंगे उतना ही आपको सामर्थ मिलेगी। उसके गौरवशाली नाम को स्वीकार करने में कभी नहीं लजायें। इस रीति से परमेश्वर का जीवन आपमें और आपके द्वारा बहता रहेगा।

मार्च 2

मेरे साथ बांधी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात तेरे वंश को करना पड़ेगा, सो यह है, कि तुम में से एक-एक पुरुष को खतना हो। उत्प. 17:10

यह आज्ञा देते समय परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया हुआ वचन फिर से स्मरण दिलाया कि वह अवश्य ही उसे पुत्र देगा, उसे बहुत बढ़ायेगा और उसे कनान देश की मीरास देगा। उस समय इब्राहीम नब्बे वर्ष के थे। मानवीय रीति से देखा जाए तो उनका शरीर संन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम को खतना करने की आज्ञा इसलिये दी कि वे स्मरण रखे कि स्वयं के बल या सामर्थ से नहीं परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञा से तथा पुनरुत्थान की शक्ति के द्वारा ही उन्हें सन्तान प्राप्त हुई।

जकर्याह 4:6 में हमें यही सन्देश मिलता है। 'न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझे सेनाओं के याहेवा का यही वचन है।' जरूब्बाबेल प्रश्नों और सन्देह से भरपूर था कि यरूशलेम का मन्दिर किस तरह से बनेगा। उसने देखा की यरूशलेम की दीवार तोड़ दी गई थी और उसके फाटक आग में जला दिये गये थे। उसके साथ जो इस्राएली प्रजा थी वह बहुत कम संख्या में थी। उसके पास धन और मदद भी थोड़ी थी। ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर का वचन जरूब्बाबेल के पास पहुंचा कि परमेश्वर का कार्य मानवीय शक्ति और मानवीय अधिकार से नहीं परन्तु उसकी आत्मा से होगा।

हम प्रभु की कोई भी सेवा अपनी शक्ति से नहीं कर सकते। हम अपने प्रयत्नों से उसकी मीरास को पाना और उसका अनुभव नहीं कर सकते हैं। हमें परमेश्वर की आत्मा पर आधारित रहना सीखना पड़ेगा और उसकी आज्ञाओं के प्रति अनाज्ञाकारी होने से हम आत्मिक रूप से अंधे बन जायेंगे। आज हम देखते हैं कि परमेश्वर की बातों के विषय में अनेक लोगों ने दर्शन खोए क्योंकि वे अनाज्ञाकारी बने हैं या परमेश्वर का आधा-अधूरा आज्ञापालन किए हैं।

मार्च 3

और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकाराता है, हमारे हृदय में भेजा है। इसलिये तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है, और जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ। गल. 4:6-7

हम किसी भी समय परमेश्वर को पुकार सकते हैं। कभी वह हमें चिताए तोभी उसके पास जाने से हम घबराते नहीं हैं, क्योंकि उसके सिंहासन के पास हमें जाने के लिए हियाव होता है। हमें वह ताड़ना भी दें, तौभी हम जानते हैं कि उसका प्रेम महान है। परमेश्वर हमें चिताए तौभी उसका प्रेम जारी है। इसलिये वह कहता है, "तुमको पुत्र का आत्मा दिया गया है"। तभी आप प्रत्येक आवश्यकताओं के लिये परमेश्वर को पुकार सकते हैं (यिर्म. 33:3, भजन 81:10) वह मेरा स्वर्गीय पिता है और उसने मुझे अपने पुत्र का आत्मा दिया है। जिससे कि अपनी प्रत्येक आवश्यकताओं, सभी बोझ और सभी समस्याओं के लिए उसे पुकार सकूं।

यूहन्ना 16:24 कहता है, 'अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा, मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। उससे मांगों, भीख मांगने या उधार लेने की आवश्यकता नहीं है।' रोमियों 13:8 में आज्ञा दी गई है, आपस में प्रेम को छोड़कर किसी बात में किसी के कर्जदार न हो, क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। अधिकांश विश्वासी घर की वस्तु खरीदने के लिए रुपये उधार लेते हैं। वे घर, रेडियो, विवाह सूट, पियानो आदि सभी चीजें खरीदते हैं। सभी चीजें पैसे उधार में लेकर खरीदते हैं। ये सब पवित्र-शास्त्र के विरुद्ध है। अपना उधार चुकाएं। जब भी किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो प्रभु को पुकारें, वह आपको देगा। वह जो कुछ भी दे उसमें संतुष्ट रहें। लोभी या लालची न बनें क्योंकि वह आपसे प्रेम रखता है, और जो कुछ भी आपके लिये अच्छा है उसे वह देगा। (भजन. 54:11), क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य तथा ढाल है, यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा, और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उनसे वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा। परमेश्वर पर भरोसा रखें और अवश्य ही आपकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। पवित्र-आत्मा को उसके पुत्र का आत्मा कहा गया है और हम परमेश्वर की सन्तान है, हम उसके हैं और हमारी सभी आवश्यकताओं को उसे ही पूरा करना चाहिये।

मार्च 4

मेरे पिता की महिमा इसी में होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ। यूहन्ना 15:8

परमेश्वर ने हारून की लकड़ी में फूल उगाकर चमत्कार किया और यह दिखाया कि मूसा तथा हारून को जो स्थान दिया गया था वह परमेश्वर की ओर से था, और वे ईश्वरीय बल और अधिकार सहित काम करते थे। केवल पुनरुत्थान की ईश्वरीय सामर्थ से ही लोग परमेश्वर के दास बन सकते हैं। कई ऐसे हैं जो अपने आप को ईश्वरीय देने होने का दावा करते हैं, परन्तु उनकी बादाम की छड़ी में फूल खिलने का कोई चिन्ह नहीं है।

मूसा के समान प्रजा की अगुवाई करने के लिये ढ़ाई सो (250) अगुवे इच्छा रखते थे। उनकी परमेश्वर की धारणा ऐसी थी कि प्रजा की अगुवाई करने की सभी योग्यताएं उनमें थी, परन्तु प्रभु उनका उपयोग कर नहीं सका। उसने केवल मूसा तथा हारून को चुना क्योंकि उनको बड़ी जिम्मेदारी सौंपने के पूर्व परखा था।

परमेश्वर का कार्य करने वाले सेवकों के विषय ऐसा ही है। अपने जीवन में पुनरुत्थान की सामर्थ को अनुभव करने से पहले मुश्किलों और जगत के अनुभव से तैयार होना पड़ता है। जब हम पहले परमेश्वर के पास आते हैं तब सामान्य सूखी लकड़ी जैसे होते हैं, लम्बे समय तक बहुत थोड़े फल दिखते हैं, परन्तु जब हम संपूर्ण रीति से स्वयं को उसके हाथ में सौंपते हैं और उसे कार्य करने का समय देते हैं, तब हम नये जीवन से भरपूर होते हैं।

एक भिखारी की कहानी है, जो कई वर्षों तक वॉयलीन बजाता था और पथ यात्री उसके भिक्षा पात्र में थोड़े पैसे डालते थे। एक दिन वहाँ से जा रहे एक व्यक्ति ने भिखारी से वॉयलीन मांग कर ऐसी सुन्दर रीति से बजाया कि इकट्ठे हुये लोगों ने बहुत पैसे दिए। बाद में वे पैसे उसने उस भिखारी को दिये। उस वृद्ध भिखारी के पास कई वर्षों से वॉयलीन था, वह ऐसे बजाता था और थोड़े पैसों के अलावा वह बहुत रकम प्राप्त नहीं कर पाता था। जब सही वादक ने उसे बजाया तब विशेषज्ञ की नाई सुन्दर स्वर निकले। जब आप सम्पूर्ण रीति से अपना जीवन प्रभु के हाथ में सौंपकर स्वयं के विषय में मरने के लिये हो तब पुनरुत्थान की सामर्थ आपमें कार्य करेगी। हारून की लकड़ी का हमारे लिये यही सन्देश है।

मार्च 5

और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। यशा. 11:2

प्रभु यीशु मसीह का प्रत्येक शब्द पराक्रम और अधिकार सहित था (मत्ती 7:21, यूहन्ना 7:46)। प्रभु में जो निष्पाप हो, वही पहले उनको पत्थर मारे (यूहन्ना 8:7)। ऐसे ज्ञानपूर्ण शब्दों द्वारा वह शत्रु को लज्ज्ति कर सका। कैसा सम्पूर्ण ज्ञान और प्रेम। लूका 29:1-8 और 21-26 में देखते हैं कि लोगों ने बड़ी जाल तो बिछाई, परन्तु प्रभु को पकड़ नहीं सके। एक ही शब्द के द्वारा वे झेप गये। ऐसा था उसका दिव्य, स्वर्गीय, सम्पूर्ण ज्ञान और ऐसा ही उसका प्रेम और अधिकार। सांसारिक ज्ञान द्वारा हम आत्माएं जीत नहीं सकते। लोगों की धारणा है कि बुद्धिमानी, आधुनिक पद्वति और सांसारिक ज्ञान द्वारा जागृति आयेगी, परन्तु यह संभव नहीं। उसके लिये दिव्य, स्वर्गीय आत्मिक ज्ञान और अधिकार तथा प्रेम की आवश्यकता है।

एक बार मैं पुस्तिकाओं को बांट रहा था। एक हिन्दु व्यक्ति को मैंने सुसमाचार की पुस्तिका दी। उसने कहा, "यह विदेशी पुस्तिका मुझे नहीं चाहिये। मैंने उससे पूछा, 'इस पुस्तक को आप विदेशी कहते हैं, फिर आपकी इस सिगरेट के बारे में क्या? वह व्यक्ति विदेशी सिगरेट फूंक रहा था। मैंने कहा, विदेशी की बनावटी सिगरेट के पीछे आप अपना पैसा खर्च कर रहे हैं, और इस अद्‌भुत पुस्तिका को पढ़ने के लिए आप इन्कार करते हैं? उसने सिगरेट फेंक दी। मैंने कहा, अभी तो पुस्तिका आपके हाथ मेंनहीं आई और आपने सिगरेट फेंक भी दी। आप पुस्तिका खरीदें, आपको बहुत आशीष मिलेगी"।

एक बार मैं गाड़ी में सफर कर रहा था तब एक रोमन कैथोलिक पादरी से भेट हुई। मैं उसे अपनी गवाही देने लगा। जब वह अन्दर आया तब वह मुझे सिगरेट देने लगा और मैंने नम्रतापूर्वक अस्वीकार किया। जब मैं गवाही देने लगा तब उसने मुझसे कहा, "आप क्यों अपनी गवाही दे रहे हैं? क्या पूरे विश्व में आप ही एकमात्र मसीही है?" मैंने कहा, नहीं। जब आप अन्दर आये तब आप मुझे सिगरेट देने लगे क्योंकि आपको वह पसन्द है। आपको जो अच्छा लगा आपने वह किया, मुझे जो अच्छा लगा वह मैं आपको दे रहा हूँ। इससे उसने कहा, ठीक है, ठीक है। इसके बाद उसे गुस्सा आने लगा। ऐसे साधारण उत्तर के द्वारा हम शत्रु को लज्जित कर सकते हैं। इसलिए हमें दिव्य ज्ञान दिया है, जिससे थोड़े शब्दों के द्वारा हम शत्रु को लज्जित कर सकें। कोई वाद-विवाद, तर्क-वितर्क या बुद्धि की आवश्यकता नहीं, केवल परमेश्वर का सन्देश ही वह कार्य करेगा। बाहर जाते समय प्रार्थना करें, "प्रभु, मुझे अपना सन्देश दीजिये। प्रभु यीशु के पास जितने भी प्रश्न लेकर आयें उनको इसी रीति से उसने एक के बाद एक को लज्जित किया। वह मात्र थोड़े से ही शब्द कहता था और वे लज्जित हो जाते थे।

मार्च 6

क्योंकि उसने जब परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।

इब्रा. 2:18

मेरे जीवन के कठिन समयों में वचन के प्रति मेरा ध्यान खिंचा गया था। नये जन्म से पहले मैं बहुत आनन्द मनाया करता था। ढेर सारे मित्र तथा पैसे थे। परन्तु परिवर्तन के बाद पैसे गये, मित्र गये, और कितने ही बार भूखे रहना पड़ता था।

मैंने निश्चय किया था की किसी भी व्यक्ति से मदद नहीं लूंगा। आवश्यकता पड़ जाये तो भूखे मर जाऊंगा, परन्तु अपनी आवश्यकताओं को किसी भी व्यक्ति को नहीं बताऊंगा। एक दिन चलते समय निराशा से विचार करने लगा, "क्यों प्रभु ने मेरे जीवन में ऐसी परिस्थिति आने दी है?" अचानक, मार्ग में पट्टी पर यह वचन लिखा हुआ देखा, 'क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उनको भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है'। (इब्रा. 2:18)

मैं इस वचन को जानता था, परन्तु वहाँ खड़े होकर उस वचन को पढ़ने से मुझे सांत्वना मिली। मैं मन में ऐसा कहते हुये बढ़ने लगा, 'वह सहायता करने में शक्तिमान है'। उस दिन से मैं कभी निराश नहीं हुआ। मैंने कहा, 'मेरे पाप के कारण प्रभु ने प्रत्येक कठिनाई को सहा है। परीक्षा क्या है, उसे वह जानता है। इसलिये जब मैं परीक्षा में हूँ तब सहायता करने में वह शक्तिमान है'।

अब आपकी परीक्षा हो तब जानें कि प्रभु यीशु की परीक्षा हुई थी और वह सहायता करने में शक्तिमान है। क्या यह अद्‌भुत नहीं है? प्रभु यीशु मसीह सभी के मनों को जानता है। आपके हृदय को आपसे अधिक वह जानता है। ऐसा नहीं सोचें कि आप अकेले ही सहन कर रहे हैं। आप कहते होंगे, 'अरे, मैं नहीं समझता कि मुझ जैसे किसी को भी सहन करना पड़ा होगा।' मेरे माता-पिता कैसे हैं वह कोई नहीं जानता। मेरा पति या मेरी पत्नी जिसे सहन कर रहा हूँ। कृपा अपने लिए बहाना नहीं ढूंढें। प्रभु यीशु मसीह इसलिए मनुष्य के रूप में आया कि किसी भी स्थान, समय और कठिनाई में हमारी सहायता कर सके।

मार्च 7

जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किये जाओगे। कुलु. 3:4

प्रभु ने जो पराक्रम इब्राहीम में उण्डेला था वही पराक्रम वह हमारे अन्दर भी उण्डेल सकता है। हमारी दैनिक निर्बलता और अधूरेपन के लिये यह मिल सकता है और हम विश्वास से इस पराक्रम को ले सकते हैं, परन्तु स्मरण रखें कि कोई भी व्यक्ति एक ही दिन में सम्पूर्ण नहीं हो सकता।

हम देखते हैं कि प्राणी जब जन्म लेते हैं, उसी ही दिन से चल सकते हैं। परन्तु मनुष्य की सन्तान चाहे चीन, जापान, इग्लैंड, यूरोप और अन्य स्थानों के क्यों न हो, एक जैसी निर्बलता से जन्म लेते हैं। घुटनों के बल चलने के लिये भी दस महीने का समय बीत जाता है, और इस प्रकार प्रगति की अनेक सीड़ियों से होकर उन्हें जान पड़ता है। इसी रीति से हम एक ही दिन में आत्मिक सम्पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हम धीरे-धीरे बढ़ते हैं। हम सभी को कष्ट, कठिनाइयों और परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु कुलु. 3:4 के अनुसार 'मसीह जो हमारा जीवन है', उस जीवन का प्रतिदिन दावा करने का अधिकार हमें मिला है।

इस पृथ्वी पर, हमें मात्र रविवार को ही नहीं परन्तु प्रतिदिन, प्रभु यीशु मसीह का स्वभाव, जीवन और चरित्र को स्वीकार करने का अधिकार मिला है। उसका प्रेम, सहनशीलता, धीरज और आनन्द को हम मांग सकते हैं। उसने कहा, "प्रभु मैंने परीक्षा में जब इसे पाने का निर्णय लिया है। इस आतुरता के साथ विश्वास-पूर्वक प्रभु की शक्ति और विजय का दावा करें। उसके बाद एक दिन हम उसके समान होंगे। इस जीवन के द्वारा हमें अमर, महिमान्वित देह दिया जायेगा (यूहन्ना 3:2) आपको यदि उसके समान दिखना हो तो प्रभु यीशु के जीवन को अपनाएं आपमें निर्बलता या अधूरापन ही चाहे क्यों न हो, एक दिन आप दृढ़ बनेंगे। जैसे-जैसे विश्वास से प्रभु के जीवन को अपनायेंगे, वैसे ही वैसे यह धीमी प्रक्रिया सी होगी। उसके बाद आप शत्रु से धोखा नहीं खायेंगे। यदि हम गिर जाएं तौभी प्रभु हमें क्षमा करने के लिये तैयार हैं हम अपने पड़ोसियों को चार सौ नब्बे (490) बार क्षमा करें, प्रभु हमसे ऐसी आशा रखता है। (मत्ती 18:22)। 490 बार अपने पड़ोसी को क्षमा करूं तो प्रभु परमेश्वर हमें कितना अधिक क्षमा करेगा? हम अनेक भूल करें तौभी प्रभु के जीवन का बारम्बार दावा करके हम विजयी होंगे। हम उससे कहें, 'प्रभु अपना जीवन मुझमें उण्डेल, उसके द्वारा एक दिन में तेरे जैसा होऊंगा। अपनी विफलताओं और अधूरेपन को जीतने के लिये तेरे जीवन का विशेष प्रमाण में मुझे दूंगा'।

मार्च 8

जो फलती है उसे वह छांटता है ताकि और फले। यूहन्ना 15:2

हमारा प्रेमी पिता चाहता है कि हम अत्याधिक फलवन्त बनें। ऐसे फलवन्त जीवन को प्राप्त करना कोई सरल बात नहीं है। सर्वप्रथम, उसमें बने रहने के द्वारा आप फलवन्त बन सकते हैं (यूहन्ना 15:4)। दूसरी बात, पेड़ और उसकी डालियों में जिस रीति से रस बहता है उसी रीति से, प्रभु का जीवन आपके अन्दर मसीह का जीवन आपके अन्दर स्वतंत्र रीति से और भरपूरी से बहा रहा है। यदि ऐसी निश्चयता न हो तो इस प्रवाह को रोकने वाली वस्तु कौन सी है, इसे खोज निकालें और पाप स्वीकार करके प्रभु से क्षमा मांगें।

तीसरी बात, प्रभु कहता है, और जो डाली फलती है उसे वह छांटता है, ताकि और फले। (यूहन्ना 15:2) लगभग दो सौ वर्ष पूर्व लंदन शहर के निकट हेम्पटन कोर्ट महल के बगीचे में एक दाखलता बोया गया। तुरन्त ही वह दाखलता पुरानी हो गई परन्तु गुंबद के आकार का एक विशाल कमरे में फैली हुई इस दाखलता को देखना एक अद्भुत दृश्य है। जब उसमें फल लगते हों, तब दाख के हजारों गुच्छे देख सकते हैं। पिछले दो सौ वर्षों से इसी प्रकार से वह फल देता है, क्योंकि उसे बहुत सावधानीपूर्वक छांटा जाता है। हमारा प्रभु कहता है कि फलदायी होने के लिये हमें भी छांटने और शुद्ध करने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमारे जीवन में दु:खदायी कसौटियों और कठिनाइयों को आने देता है जिससे कि हम अधिक फलवन्त बनें।

परमेश्वर ने दु:खों के द्वारा यूसुफ को फलवन्त बनाया। लगभग पंद्रह वर्षों तक उसके जीवन में दु:ख आये परन्तु वे व्यर्थ नहीं गये। एक अति उच्च स्थान के लिये यूसुफ को तैयार करने के लिये परमेश्वर ने उनका उपयोग किया। मैं मानता हूँ कि इन दिनों के मध्य प्रभु उसके लिये उत्यन्त मूल्यवान बन गया था और अधिकांश समय वह प्रार्थना में और परमेश्वर के साथ संगति में बिताया होगा। इस तरह आगामी आने वाले दिनों में जो ऊंचा स्थान उसे प्राप्त होने वाला था उसके लिये परमेश्वर ने उसे तैयार किया।

किसी भी अपवाद के बिना प्रत्येक विश्वासी को दु:खों में से होकर जाना ही पड़ता है। पवित्र-शास्त्र के अनुसार परमेश्वर के समस्त भक्तों को अनेक कठिन कसौटियों में से जोकर जाने के पश्चात ही दाऊद कहता है, "और उसने मुझे निकाल कर चौड़े स्थान में पहुंचाया।" (भजन. 18:19)। प्रेरित पौलुस भी जिस चालीस से भी अधिक कष्टदायक अनुभवों में से होकर गया उसका विवरण 2 कुरि. 11:23-30 में देता है। इस प्रकार से, आगामी महान दायित्वों के लिये तैयार होने और प्रशिक्षण के लिए परमेश्वर हमें अवतार देता है, इसके लिये हमें परमेश्वर को धन्यवाद करना चाहिये।

इन सभी दु:खों में से आप होकर न जाएं तो आप केवल सामान्य जीवन ही बितायेंगे। परन्तु प्रभु के साथ उसके राज्य में उच्च स्थान भोगने की इच्छा यदि आप रखते हो, तो उसकी दृष्टि में ऐसी अनेक शुद्ध करने वाली अग्नि के अनुभवों में से होकर जाना पड़ेगा।

मार्च 9

यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है, यहोवा के विषय विश्वासयोग्य है, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं। भजन. 19:7

वाचा के सन्दूक में सोने के पात्र में एक मन्ना इसलिये रखा गया था कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिये पर्याप्त और भरपूर स्वर्गीय आहार का प्रबन्ध किया है। यह उसकी गवाही दे। परमेश्वर के घर में किसी को भी भूखा रहने की आवश्यकता नहीं है। मन्ना, सच्ची रोटी की प्रतिछाया थी। यह हमें प्रभु यीशु मसीह को दिखाता है, जो स्वयं हमारे जीवन की रोटी बना (यूहन्ना 6:47-50)

प्रत्येक इस्त्राएली को स्वयं के लिये भोजन इकट्ठा करना था। इसी रीति से, हमें भी व्यक्तिगत रूप से प्रातःकाल में सर्वप्रथम मसीह को खाना है। जो लोग घुटनों पर दिन का आरंभ करने की आदत रखते हैं, वे विश्वास से, अपनी आवश्यकतानुसार स्वर्गीय रोटी को खाना जानते हैं।

वाचा के सन्दूक में का सोने का पात्र हमें यह स्मरण कराता है कि रोटी को सोने के पात्र में रखा जाता है। पवित्र-शास्त्र में सोना ईश्वरीय स्वभाव का प्रतीक है। नया जन्म ईश्वरीय स्वभाव का प्रतीक है। जो लोग नया जन्म पाते हैं, वे सोने के पात्र जैसे बनते हैं। बाह्य रीति से तो मिट्टी का पात्र है, परन्तु अन्दर सोने का पात्र जो ईश्वरीय स्वभाव है। आपका नया जन्म हो जाने के, बाद जो कुछ भी वचन से सीखें, वह सनातनकाल के लिए आपकी धरोहर है। यदि आप कुछ समय के लिये उसे भूल जायें, तौभी पवित्र-आत्मा द्वारा आपके हृदय पट्ट पर लिखी हुई ऐसी वस्तु है जिसका मूल्य सनातन काल तक के लिए है और आवश्यकता के समय पवित्र-आत्मा उनका स्मरण कराता है।

प्रभु का वचन हममें भरपूरी से रहना चाहिये। वह शिक्षा देने और संस्थापन जैसे दो उद्देश्यों के लिये हमारे हृदय में है, हम प्रभु के वचन को मनुष्य को संस्थापित दृढ़ और शिक्षित करने दें। उसके बाद हमने प्रभु से जो शिक्षा पाई है उसे दूसरों के मध्य बांटकर उनकी मदद करें। जब तक मनुष्य स्वयं प्रभु के वचन से (सीखे) या सुधार कर पाये तब तक वह अच्छे कार्य के लिये सिद्ध नहीं होता (2तीमु. 3:16,17)। यदि परमेश्वर का वचन आपमें वास करता हो तो वह आपको शिक्षा (उपदेश) देगा तथा सुधारेगा और ऐसे ही आपके द्वारा दूसरों को सुधारेगा। जब आपको परमेश्वर का वचन प्रगट करना हो तब, उसे सिखायें तथा पूरे अधिकार के साथ दें। (तीतु. 2:15) बिना नया जन्म के समझाना और उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है। वे केवल दूसरों की त्रुटियों को देखेंगे। ऐसी प्रवृत्ति के लोगों से हानि होती है।

मन्ना वचन जो कि शक्तिवर्द्धक है, किसी-किसी समय में ही समझने के लिए कठिन दिखाई देता है, तथा सांसारिक लोगों को अच्छा नहीं लगता है। परन्तु हमारी आत्मिक दृढ़ता के लिए उसे दिया गया है। हम सोने के पात्र है, इसलिये बिना विवाद के इस वचन के आधीन हो जाएं।

मार्च 10

जितने अपनी इच्छा से देना चाहें, उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना। निर्ग. 25:2

परमेश्वर के कार्य तथा उसके पवित्र स्थान के लिये परमेश्वर दबाव से क्या अपने दिये गये दान को स्वीकार नहीं करेगा। मैं आपसे पूछता हूँ, अपना सर्वस्व, कुछ भी वापस रखे बिना, आनन्द से प्रभु को देने का रहस्य आप जानते हैं? सबसे उत्तम प्रभु को देना है?

कई बार लोगों की समझ ऐसी ही होती है। यदि उसके बेटे-बेटियां बुद्धिमान हो तो कहेंगे, "हे प्रभु हमें अपने बेटे को डॉक्टर या वकील बनाना है"। परन्तु बेटा अनुपयोगी हो कहेंगे, "प्रभु में उसे तेरी सेवा में देता हूँ। वह मैट्रिक में फेल हो गया है, इसलिये वह तेरी सेवा करे"। आपके बुद्धिमान बेटे-बेटियां संसार में प्रगति करें ऐसा चाहते हैं। परन्तु निकम्मों के लिये कहते हैं, "उन्हें उपदेशक बनने दो"।

यदि आप ऐसी बहस करते हो तो अभी तक प्रभु को अपना सर्वोत्तम देने का आनन्द आप जानते नहीं हैं। परमेश्वर की सेवा करने से अधिक कोई दूसरा आनन्द हो सकता है? जो परमेश्वर की सेवा करता है, वह मनुष्यों में माननीय होता है। सचमुच, परमेश्वर की सेवा करना सर्वोच्च मान है। हम जो कुछ भी प्रभु को दें, वह कभी व्यर्थ नहीं जाता है, चाहे वह धन, समय, शक्ति या बच्चे हों। हम अधिक देते हैं, उससे भी कई गुणा अधिक हमें मिलता है। इसके विपरीत जब प्रभु को देना हो तो कितने कंजूस होते हैं।

परमेश्वर के घर में आप प्रार्थनाकर्ता, उपदेशक या भेंटकर्ता के रूप में सेवा करना चाहते हैं, तो आप उसे खुशी से स्वीकार करें। कभी यह न मानें कि भीख मांगकर लाया हुआ या दबाव में लिया हुआ धन पैसे इत्यादि प्रभु चाहता है। ऐसे धन को प्रभु कभी भी उपयोग नहीं करेगा। मनुष्य उसे स्वीकार कर सकता है, परन्तु प्रभु कभी स्वीकार नहीं करेगा। प्रभु केवल उसे स्वीकार करेगा जोकि आनन्द के साथ चढ़ाया गया है।

जैसे पवित्र-आत्मा अगुवाई करे, वैसा ही देना चाहिये। जो लोग इस प्रकार से व्यवहार नहीं करते वे परमेश्वर के घर के मर्म (सच्चा अर्थ) को सीख नहीं सकते हैं।

मार्च 11

समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिये था, तौभी यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? इब्रा. 5:12

इब्री विश्वासी लोगों ने कई वर्षों तक दृढ़ता से परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया। आत्मिक रीति से उनमें बहुत बढ़ोतरी होनी चाहिये थी और गुरु हो जाना चाहिये था, परन्तु इसके विपरीत वे छोटे बच्चों जैसे ही रह गये। वे आत्मिक भारी भोजन लेने को तैयार नहीं थे। इन दिनों में भी हम देखते हैं कि संसार के कई भागों में विश्वासी लोग पवित्र-शास्त्र का अधिक ज्ञान होने के बावजूद लम्बे समय से बच्चे ही बने रहते हैं। परमेश्वर की गहरी बातों को समझ उन्हें नहीं होती है। पौलुस को इब्रियों को साथ कई आत्मिक बातों को बांटने की आवश्यकता थी, परन्तु आत्मिक बाल्यावस्था के कारण वह ऐसा कर नहीं सका। इब्रानियों को लिखे पत्र में हमारे स्वर्गीय महायाजक के रूप में प्रभु यीशु मसीह की महत्त्ता को और उसके द्वारा हमको प्राप्त हो रहे महान उद्धार को पौलुस प्रगट करता है। परन्त इब्री विश्वासी लोग तो बालवर्ग के समान अक्षरज्ञान सीखते हुए बच्चों जैसे थे। वे आत्मिक रीति से बच्चों जैसे ही रहे, इसका कारण यह था कि उनको उद्धार के मूलभूत सिद्धान्तों के विषय स्पष्ट और सचेत समझ नहीं थी। अधिकांश घर गहरी और मजबूत नींव नहीं होने के कारण तूफान में नष्ट हो जाते है। प्रभु ने अपने वचन में हमें चेतावनी देते हुये बताया है, कि पृथ्वी पर हमें कई आँधियों का सामना करना होगा और उनमें होकर गुजरना है। यदि हम भी एक दृढ़ नींव पर घर न बनायें तो मत्ती 7:27 के अनुसार गिर जायेंगे। जब कठिनाईयों, विपत्तियों और कसौटियों का सामना करने का समय आता है, तब कई विश्वासी लोग विश्वास खो बैठते हैं, ठोकर खाते हैं और आसानी से झूठे उपदेशों और जगत के आकर्षणों की ओर खिंचे जाते हैं। हमें जीवन यात्रा के मध्य ऐसी अनेक आंधियों का सामना करना होता है और इसीलिये हम एक दृढ़ नींव के ऊपर है कि नहीं इसकी चौकसी करना आवश्यक है।

सर्वप्रथम हमें प्रभु यीशु मसीह की नींव के ऊपर बनना चाहिये। परमेश्वर का वचन कहता है कि, क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेंव डाल सकता है"। (1 कुरि. 3:11) इस बात को हमें निश्चयता होनी आवश्यक है कि हमें जीवते प्रभु यीशु मसीह का सचेत और व्यक्तिगत अनुभव है। उसमें अपने उद्धार के व्यक्तिगत अनुभव की निश्चियता को पाने के बाद प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को नींव पर बनाये जाना है (इफि.2:20)। परमेश्वर के वचन में प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं ने जो उपदेश दिये हैं उनका हम अनुसरण करते हैं। यही हमारा स्वर्गीय क्रम है। इस ईश्वरीय क्रम और स्वर्गीय नक्शे को हम बदल नहीं सकते, क्योंकि आत्मिक उन्नति के लिये आवश्यक सूचनायें हमें स्पष्ट रीति से दिये गये है कि इस नेव पर किस रीति से आ सकें। यदि आप परिपूर्ण होने के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं तो उद्धार के मूलभूत के संबन्ध में स्पष्ट और चौकस रहें।

मार्च 12

यह ठीक नहीं है कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें।प्रेरितों. 6:12

जब शिष्यों की संख्या बढ़ती गई और प्रभु सामर्थ-सहित कार्य कर रहा था तब शैतान ने ऐसा किया कि इब्रानियों के विरुद्ध यूनानी लोग कुड़कुड़ाने और बुड़बुड़ाहट लगे। कारण यह था कि प्रतिदिन की सेवकाई में यूनानी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। इस प्रकार से चालाकी से परमेश्वर की प्रजा में झगड़े उत्पन्न हुये। सदियों से शैतान दो प्रकार के हथियारों का उपयोग कर रहा है, जिससे परमेश्वर के कार्य रुक जायें और उसके सेवक सच्ची सेवा से वंचित हो जायें।

प्रथम, जब परमेश्वर कोई कार्य प्रारंभ करता है और लोगों के जीवनों में अपना सामर्थ प्रगट करता है तब परमेश्वर की प्रजा में बुड़बुड़ाहट शिकायतें और झगड़े होते हैं। इस रीति से कार्य बिगड़ता है और रुक जाता है। ऐसे बुड़बुड़ाहट करने वाले विश्वासियों की बहुत थोड़ी संख्या परमेश्वर की आत्मा को बुझा सकती है और कार्य को हानि पहुंचा सकती है।

दूसरा, शैतान परमेश्वर के सेवकों को वचन की सेवा करने से रोकता है और उन्हें इस कर्त्तव्य के लिये मजबूत करता है कि वे खिलाने-पिलाने की सेवा करें। वह चाहता था कि प्रेरित लोग अपनी महत्त्वपूर्ण सेवा छोड़कर इस कार्य को करें। संसार के कई हिस्सों में परमेश्वर के सेवकों के मध्य में यही दयनीयता देखी जा सकती है। परमेश्वर ने उन्हें प्रचारक होने के लिये बुलाया है परन्तु अभी भी वे खिलाने-पिलाने की सेवा में लगे हैं। कुछ समय के लिये तो वे विश्वासी रहते हैं परन्तु जब कार्य में वृद्धि होने लगती है तब वे संसार के साथ हो जाते हैं।

अन्य परमेश्वर के सेवक जिनकी पत्नी सांसारिक है, घर में शान्ति बनाये रखने के लिए घर में कार्य करते हैं। विवाह पूर्व ये पुरुष परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में प्रथम स्थान देते थे और प्रार्थना में अधिकांश समय बिताते थे तथा जोश से भरे रहते थे। परन्तु अब वे शुष्क हो गये हे और धीमे-धीमे पतन की ओर जा रहे हैं। यदि आप पूछेंगे कि उनकी सेवकाई में फल क्यों नहीं दिखाई देता तो वे कहेंगे कि भूमि बहुत जटिल है। परन्तु परमेश्वर का वचन निर्बलता का सच्चा रहस्य बताता है। प्रथम बातों को प्राथमिकता देनी ही चाहिये। प्रेरितों. 6:3 में परमेश्वर ने अपने चेलों को जो दिव्य ज्ञान दिया, उसी रीति से हमें भी वही दिव्य ज्ञान देगा।

मार्च 13

...परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना।
1 शमू. 12:20

ईश्वरीय क्रमबद्ध रीति में हम विश्वासियों को यह अधिकार मिला है कि प्रत्येक विषय में, चाहे वह कलीसियाई सेवा या परमेश्वर के भवन में कोई भी कार्य हो, परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा को ढूंढें।

अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और कलीसियाई जीवन के लिये वह अति महत्त्वपूर्ण है कि हम ईश्वरीय काम का अनुसरण करें। यदि हम अपने स्व-ज्ञान को लेते हैं और परमेश्वर के क्रम को बदल देते हैं तो हम अधिक हानि को उठाते हैं, उसके वचन के आधीन होना और उसके क्रम के आधीन होना ही अत्यन्त बड़ी आवश्यकता है।

कलीसिया के गठन में यह आवश्यकता विशेष रीति से पूरी होनी चाहिये। परमेश्वर के हृदयानुसार पासबानों की हमें जरूरत है और कलीसिया के साथ हम दिनों तक, हाँ सप्ताहों और महिनों तक प्रार्थना करनी पड़ेगी। जिससे इस महान कार्य के लिये प्रभु ने जिनको बुलाया हो, तैयार किया हो सकें और चुने हुओं को हम खोज सकते हैं। परमेश्वर की सेवा में चाहे कैसी भी जिम्मेदारी हमारे सिर पर हो, हमें परमेश्वर के मुख को तथा योजना को हमेशा खोजना चाहिये। हम नये जमाने में जी रहे हैं, या आज का दिन तो अलग है ऐसा कह कर परमेश्वर के वचन को हमें कभी भी बदलने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

परमेश्वर का वचन कभी बदल नहीं सकता। इसलिये अपने स्व-ज्ञान में परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा या परमेश्वर की इच्छा खोजे बिना विवाह संबन्ध जोड़े जाने के द्वारा जो कुछ भी हानि आपने उठायी वो सब वापस प्राप्त करने के लिये प्रभु आपको मदद करें। इस कारण प्रार्थना करें, कदाचित आपके पश्चाताप द्वारा दूसरे लोग लाभ प्राप्त करेंगे। विवाह संबन्ध में की गई भूल का आप पश्चाताप करें। और प्रभु से क्षमा मांगें। वह आपको अवश्य क्षमा करेगा और न केवल उन सभी को प्राप्त करेंगे जिनसे आप हानि पाए वरन दूसरों पर आपका जीवन प्रभु के हाथों आशीष होने के लिए उपयोगी हो जायेगा।

मार्च 14

...तेरा भला आत्मा मुझको धर्म के मार्ग में ले चले।

भजन. 143:10

इस्राएली जब जंगल में प्रवेश किये तब उन्हें वहाँ चालीस वर्ष तक भटकना पड़ा। न कोई काम था न कोई खेती थी और न तो कोई मालिकाना मकान था। उसके भोजन के विषय में परमेश्वर ने कहा, "मैं प्रतिदिन तुमहारे लिये मन्ना बरसाऊंगा", परन्तु उन्हें एक काम करना था कि साक्षी के तम्बू के आगे न बढ़ें जब तक परमेश्वर का बादल छाया रहता था, बल्कि जिस स्थान पर वे डेरा डाले है वहीं रहें। (गिनती 9:18,22)।

जब वे जंगल में थे उस मध्य में वे अपनी इच्छानुसार यहाँ वहाँ नहीं जा सकते थे। परमेश्वर की प्रजा और हर विषय में उन्हें परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त करनी होती थी तथा सम्पूर्ण रीति से उसके अधिकार में रहना था। यह एक सामान्य बोध था परन्तु उन्हें यह सीखने के लिये बहुत मुश्किल था। परमेश्वर चाहता है कि आप और मैं यह बोध सीखें। रोम. 8:14 के अनुसार उसकी आत्मा की अगुवाई में रहना सीखें। परमेश्वर की प्रजा को पवित्र-आत्मा का दान दिया हुआ है। वह हमारा मार्गदर्शक है। जब हम स्व-इच्छा को मारते हैं तब ही वह संभव बन सकता है। यह बोध सीखने में अनेक वर्ष लगते हैं।

बहुत से लोग है जो पति या पत्नि, बच्चों, पड़ोसियों, मित्रों, कोई स्त्री या पुरुष चलाये चलते हैं, परन्तु परमेश्वर के द्वारा नहीं। पुरुष सभा में परमेश्वर की वाणी सुनते है परन्तु घर जाकर पत्नि की सलाह लेते है, जो कहती है, मूर्ख नहीं बनें। आपको पत्नि और तीन बच्चों की चिन्ता करनी है। यह मार्ग आपके लिये नहीं है। दूसरे कितने ही ऐसे लोगों के चलाये चलते हैं जो उन्हें पाप में लेकर चले जाते हैं। वे शर्मनाक जीवन बिताते हैं और शरीर की वासना, लालच तथा व्यर्थता द्वारा चलाये जाते हैं। वे कहते हैं, "हमारे मित्रगण और पड़ोसीगण क्या कहेंगे? इसमें थोड़ी भी आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसे लोग चालीस वर्ष तक जंगल में भटकते हैं। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि किस प्रकार से सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर की अगुवाई में रहना उसे सीखने के लिये ऐसे लोगों को चालीस वर्ष तक जंगल में भटकना पड़ता है?

मार्च 15

मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।
प्रका. 2:10

मिलापवाले तम्बू में प्रत्येक तख्ते की लम्बाई दस हाथ की थी। दस संख्या कसौटियों और दु:खों से मिली हुई आत्मिक परिपक्वता तथा जिम्मेदारी को बता रही है, जो दस विपत्तियों से जयवंत होकर बाहर निकले उन्होंने जीवन का मुकुट प्राप्त किया। जब पीछे हटे बिना आप विपत्ति तथा कसौटी सहने को तैयार रहते हैं, तब आप मुकुट पाने के लिये तैयार होते हैं। मानसिक ज्ञान से आत्मिक परिपक्वता नहीं आती। आपके पास खरा ज्ञान हो, परन्तु मुश्किलों, कसौटियों, विपत्तियों को सहने के पश्चात ही आप आत्मिक रीति से परिपक्व होते हैं। पृथ्वी पर का जीवन आपका शिक्षण केन्द्र है। उत्पत्ति की पुस्तक में हम देखते हैं कि किस प्रकार से याकूब को अपने ससुर के यहाँ कसौटी के दस वर्षों में से होकर जाना पड़ा। याकूब के ससुर ने उसे धोखा देने की ठान लिया था, परन्तु वह विजयी होकर बाहर आ गया। इस कारण दस संख्या कसौटी तथा परीक्षाओं के बाद आई हुई आत्मिक परिपक्वता को दिखाता है।

अय्यूब अपने भयंकर मुसीबतों में सर्वस्व खो दिया था। अपने बच्चे, सम्पत्ति, स्वास्थ, इस कड़वे शब्दों में उसकी पत्नि ने उसे ताना मारा और दस बार उसे उलाहना दिया गया। उसके मित्रों ने उसे दिलासा देने के बदले नौ बार उलाहना दिये, और दसवीं बार परमेश्वर ने स्वयं उसे उलाहना दिया। इन सबके बाद यह आत्मिक परिपक्वता को पाया परमेश्वर ने दोगुना आशीष को दिया जो कि आत्मिक परिपक्वता और दायित्व के रूप में है। गिनती 14:22,23 में हम ऐसे लोगों को देखते हैं, जिन्हें दस बार मौका देने के बावजूद वे निष्फल हो गये।

इसी प्रकार से हरेक की कसौटी तथा परीक्षा होगी, जब तक कि वे परिपक्व न हो जायें और परमेश्वर के घर में जिम्मेदारी लेने लायक शक्तिमान न बन जायें। जो बाल बुद्धि के है उनको किस रीति से आत्मिक जिम्मेदारी दे सकते हैं? पृथ्वी पर घूस दकर मनुष्य ज्यादा प्रबल तथा पहुंच वाला बन सकता है, परन्तु आत्मिक विषयों में ऐसा नहीं चलेगा। स्वर्गीय स्थानों में पृथ्वी पर की कोई भी सिफारिश नहीं चलती है। पृथ्वी पर आपका अपना जयवन्त जीवन ही आपको आत्मिक जिम्मेदारी के लिये योग्य ठहरायेगा।

मार्च 16

अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा... परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनी है, सब तुम्हें बता दी। यूहन्ना 15:15

परमेश्वर के वचन में तीन अलग-अलग स्थानों में इब्राहीम को परमेश्वर का मित्र कहा गया है। (यशा. 41:8, 2 इति. 20:7, याकूब 2:23) प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को मित्र कहा, प्रभु चाहता है कि हम उसके अन्तःकरण की गूढ़ और गुप्त बातों को जानें, क्योंकि हृदय की गुप्त बातों को परस्पर बांटने के द्वारा मित्रता प्रायः अधिक घनिष्ट होती है। उत्पत्ति 18:17 के अनुसार सदोम और अमोरा को नाश करने से पूर्व परमेश्वर कहता है, यह जो मैं करता हूँ, उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूं? परमेश्वर चाहता है हम उसके ऐसे मित्र बनें कि हम उनके स्वर्गीय योजना के अन्तर्गत आकर उसके गूढ़ भेद और मर्म को जानें। 1पत. 1:12 में हम पढ़ते हैं कि इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। यह बातें कौन सी है? ये तो ऐसे भेद और मर्म है जो स्वर्गदूतों परमेश्वर के उपदेशकों और महान व्यक्तियों से गुप्त है, परन्तु हम जो प्रभु यीशु के मित्र है उन पर इन्हें प्रगट किया गया है।

जिस रीति से दो घनिष्ट मित्र एक दूसरे के साथ अन्तःकरण की गूढ़ बातों को बांटते हैं, इसी रीति से हम प्रभु यीशु के मित्र बन कर उसके अंतःकरण की बातों को जानें, ऐसा वह चाहता है। परन्तु इसे संभव बनाने के लिये हमें उसके साथ विस्तार से बातें करनी है, और वैसे ही प्रतिदिन स्पष्ट रीति से उसकी वाणी को सुनने के अभ्यासगत होना चाहिये। हर पल हमारा जीवन उसके द्वारा चलाया जाना चाहिये। यदि प्रतिदिन हम हमारा एकान्त समय प्रार्थना में बितायेंगे तो प्रभु यीशु वचनों के द्वारा हमसे बातें करेगा और जो बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रखी गई है, उन बातों को हम पर प्रगट करेगा। (मत्ती 13:17) परन्तु उसकी मित्रता प्राप्त करने के लिये हमें सच्चे हृदय से उसकी और लौटना चाहिये।

वरन् प्रभु यीशु मसीह का सच्चा मित्र बनने के लिये हमें पुरानी मित्रता, संबन्धों और संगति से छूट कर नई मित्रता में बढ़ें यह मुख्य बात है। प्रभु के सामर्थी हाथों ने हमें सांसारिक स्नेही जनों ओर मित्रों से, जो परमेश्वर के साथ मित्रता नहीं कर सकते, उन लोगों से हमें अलग किया है। (यूहन्ना 15:19)।

जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते जायेंगे, वैसे-वैसे हम प्रभु यीशु मसीह के साथ घनिष्ठ मित्रता को अनुभव करते जायेंगे। उसके साथ खुलकर बातें करेंगे, अपनी समस्त गुप्त बातें उससे खुलकर कहेंगे और वह भी हमारे साथ प्रेम से बातें करेगा। और प्रतिदिन हमें नई-नई बातों को बतायेगा।

मार्च 17

अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, परम-प्रधान परमेश्वर यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, उसकी मैं यह शपथ खाता हूँ, कि जो कुछ तेरा है उसमें से न तो मैं एक सूत और न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूंगा, कि तू ऐसा न कहने पाए कि अब्राहम मेरे ही कारण धनी हुआ। उत्पत्ति 14:22,23

अब्राहम बहुत धनी थे और इन सब वस्तुओं की उसे आवश्यकता नहीं थी इस कारण उसने सदोम के राजा की बात को अस्वीकार किया, ऐसा तो नहीं है, परन्तु यह बताना चाहता था कि उसकी सभी आवश्यकताओं के लिये हाँ जूती के एक बन्धन के लिये भी, वह परमेश्वर पर विश्वास रखता था।

दूसरी बात, सदोम और अमोरा के राजा की अशुद्ध और भ्रष्ट सम्पत्ति में से भेंट स्वीकार कर के इब्राहीम अशुद्ध होना नहीं चाहता था। हम जब बहुत ही भूखे और प्यासे होते हैं, उसी समय हम परीक्षाओं में आते हैं। अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के संबन्ध में हम परमेश्वर पर सन्देह करते हैं। बहुत से उपदेशक और सेवक परमेश्वर के सेवक कहलाने योग्य नहीं होते हैं। वे अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए दूसरों से माँग करते हैं। इस प्रकर से वे स्वयं को और दूसरों को ठगते हैं और परमेश्वर पर विश्वास करना छोड़ देते हैं। इसीलिये वे प्राय: अभाव में रहते हैं और आत्मिक रीति से निष्फल रहते हैं। इसके विपरीत यदि आप प्रभु परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे तो वह आपकी सभी आवश्यकताओं, यहाँ तक की जूती का बन्धन भी देगा। अधिकांश विश्वासी नौकरी के लिए अथवा नौकरी में बढ़ोतरी के लिए सांसारिक लोगों के पास जाते हैं और जगत की पद्धतियों को अपनाते हैं। विवाह के लिये धन चाहिये तो वे मामा या चाचा पर भरोसा रखते हैं। विवाह के लिए ऐसा करने से वे अपना विश्वास खो बैठते हैं।

इब्राहीम ने जो कुछ उसके पास था उसका दशमांश उसने मलिकिसिदक को दिया। इसके द्वारा वह यह बताना चाहता था कि शत्रु को पराजित करने में मदद करनेवाला स्वयं परमेश्वर ही था। उसने दिखाया कि यही परमेश्वर भविष्य में विश्वास से दशमांश देने के द्वारा हमारी सब आवश्यकताओं को पूरी करेगा। हम प्रभु से यह कहते हैं कि किसी भी प्रकार की मदद के लिये सांसारिक मित्रों या सगे-संबन्धी के पास नहीं जायेंगे।

मार्च 18

सब कुछ तुम्हारा है... तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है। 1 कुरि. 3:21,23

जब हम यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में अंगीकार करते हैं तब हम सात प्रकार की भागीदारी से जुड़ जाते हैं। पहला, प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के द्वारा हम पवित्र-आत्मा के भागीदार हो जाते हैं (इब्रा. 6:4)। दूसरी बात, हम परमेश्वर की पवित्रता के भागीदार हो जाते हैं (इब्रा. 12:10)। पवित्र-शास्त्र का ज्ञान, प्रार्थना या उपवास द्वारा नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह स्वयं हमें पवित्र करता है। (इब्रा. 3:1) इस जगत में हम कुछ व्यवसाय करके जीवन निर्वाह कर रहे हैं, परन्तु आत्मिक रीति से हम सभों को एक ही स्वर्गीय के आगे परमेश्वर की महिमा, पराक्रम तथा उसकी सुन्दरता को प्रगट करें। जो नया जन्म पाये हुये है, उनके मुख पर विशेष और स्वर्गीय सुन्दरता झलकती है। यह सुन्दरता सांसारिक विषयों से नहीं आती है। चौथी बात, हम स्वर्गीय मीरास में भागीदार है (कुलु. 1:12) यहाँ पर नाशवान वस्तुओं के लिये प्रेम समाप्त हो जाता है। नये जन्म के पूर्व आप धन कमाने में समय बिताते थे। परन्तु अब इस धन का अधिक महत्त्व नहीं होगा क्योंकि मृत्यु के बाद आप इसे अपने साथ नहीं ले जा सकेंगे।

यूनानी देश के विख्यात राजा सिकंदर के विषय एक बात कही जाती है कि ई. पूर्व. 325 सन में वह भारत देश में आया था। उसकी मृत्यु तीस वर्ष की आयु से पहले हो गई। मृत्यु से पूर्व उसकी माँ उसके पास आई, और कहा, मेरे पुत्र तेरी कोई इच्छा है? उसने कहा, जब मेरी मृत्यु हो तब कृपा करके मेरे दोनों हाथ बक्से से बाहर रखना। सामान्य रीति से मृत्तक शरीर को बक्से में रखते हैं। परन्तु उसने कहा, मेरी इच्छा है कि मेरे दोनों हाथ बक्से के बाहर ही रखे जायें। भीड़ में मेरे बक्से के आगे एक व्यक्ति चलते-चलते इस प्रकार से बोलें, कि 'महान सिकंदर राजा जा रहा है, देखो! उसके दोनों हाथ खाली है। वह खाली हाथ इस संसार में आया और खाली हाथ ही इस संसार से जा रहा है। उसके पास अपार धन था, परन्तु वह सब कुछ छोड़ गया। मनुष्य मृत्यु के समय सभी सांसारिक सम्पत्ति यही छोड़ जाता है। परन्तु हमें एक आत्मिक मीरास दी गयी है। पांचवीं बात, हम स्वर्गीय महिमा के भागीदार है' (1 पत. 5:1)। कैसा महान अधिकार। जब प्रभु यीशु मसीह वापस आयेगा, तब जो विश्वासपूर्वक जीवित रहेंगे उन्हें महिमा का भागीदार बनायेगा। छठवीं बात, हम स्वयं प्रभु के साथ भागीदार है (इब्रा. 3:14) उसका जो कुछ है उसके भागीदार है। (1कुरि. 3:22,23)। सातवीं बात, हम ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार हो गये हैं (2पत. 1:4)।

मार्च 19

अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज, वे मेरी अगुवाई करें। भजन. 43:3

पुराने नियम में लोग प्रभु की इच्छा को जानने के लिए महायाजक के पास जाते थे, परन्तु अब प्रभु स्वयं ही मेरा महायाजक है। वही हमारा दाता प्रभु, राजा, मित्र और मेरा बिचवई है। में किसी भी समय उसके पास जा सकता हूँ। महायाजक को ऊरीम और तुम्मीम नामक दो पत्थर दिये गये थे। परन्तु अब यही दो पत्थर जो दिव्य प्रकार और दिव्य सच्चाई है प्रभु यीशु ने हमारे अन्दर रखा है। भजन. 43:3 के अनुसार प्रभु की इच्छा जानने के लिये जब मैं परमेश्वर के मन्दिर में जाऊं तब उसका प्रकाश और उसकी सच्चाई मेरी अगुवाई करेंगे।

वह स्वयं मेरी सच्चाई, मेरा प्रकाश और मार्गदर्शक है। परन्तु कई विश्वासी अपने अधिकारों का उपयोग नहीं करते है। परमेश्वर से परामर्श लिए बिना वे दूसरों से परामर्श लेते हैं। कई विश्वासी अपनी बुद्धि का उपयोग करके स्वयं की योजना बनाते है। वे अपने मित्रों तथा सांसारिक ज्ञान को अधिक महत्त्व देते है। इस रीति से व्यवसाय, विवाह तथा अन्य बातों में वे भूल करते हैं और यदि उनसे पूछें कि, 'आपने किस लिये प्रभु की ईच्छा के लिये नहीं ठहरे'? तो वे कहेंगे, "मैं कब तक ठहरूं, मैंने कई वर्षों तक ठहरा रहा, अब अधिक ठहरने की शक्ति नहीं है।"

इसी कारणवश आज कई लोग दु:ख उठा रहे हैं। वे प्रभु की ईच्छा की उपेक्षा किये है और प्रभु की योजना को खोये और इसीलिये वे भारी हानि उठा हरे है। परमेश्वर की इच्छा को एक ओर करके तथा प्रभु की अगुवाई में निष्फल होने से कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है इसे अब वे समझ सकेंगे।

प्रभु की इच्छा जानने के लिए सावधान रहें। कृपया कर पलिश्तियों के पास चाहे वे आपके चाचा-चाची, मामा-मामी या अन्य कोई सगे संबन्धी क्यों न हो, ना जायें। आपके परिवार की कोई बात हो या मण्डली से सम्बन्धित कोई बात हो, या अन्य कोई बात हो, आप सांसारिक ज्ञान का उपयोग न करें, नहीं तो, दाऊद के समान विलाप करने के लिये तैयार रहें। आपके खास मित्र भी आपको त्याग दे उसके लिए तैयार रहें।

अन्त में दाऊद परमेश्वर के पास लौट आया। जिस नम्रता और दीनता के साथ वह परमेश्वर की ओर वापस मुड़ा और प्रभु में बल प्राप्त किया उसके लिये प्रभु की स्तुति हो। दाऊद ने प्रभु की सलाह ली और प्रभु ने दाऊद के साथ बातें की। उसके बाद दाऊद सब कुछ वापस लाया उसने जो खोया था बल्कि उससे भी अधिक वह तो धन्य दिवस था।

मार्च 20

...मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ। प्रका. 3:20

लाजर प्रभु यीशु के साथ मेज पर बैठा था और वे खाते-खाते आपस में बातचीत कर रहे थे। हमारे प्रतिदिन के बल के लिये परमेश्वर जो वचन देता है इसे भोजन ही कहते हैं। परमेश्वर अपना जीवित वचन प्रतिदिन देता है। संगति द्वारा भोजन और भी स्वादिष्ट और रूचिकर बन जाता है, साथ मिलकर भोजन करने से हमारी संगति भी आनन्ददायक बन जाती है। जब हम अकेले भोजन करते हैं तब इतना आनन्द नहीं मिलता है। भाइयों और बहनों को सर्वप्रथम प्रभु यीशु के साथ और उसके बाद एक दूसरे के साथ संगति के लिये एकत्रित होना चाहिये।

लाजर प्रभु के साथ मेज पर परस्पर बातें कर रहा था। उसने प्रभु से अनेक प्रश्न किये होंगे और प्रभु ने उसे उत्तर भी दिये होंगे। अब लाजर लजाता नहीं था और प्रभु यीशु को दूर भी नहीं करना चाहता था। अब प्रभु को देखकर और उससे प्रश्न पूछने के द्वारा उसे बहुत ही आनन्द आता था। हमें भी प्रभु यीशु के लिये ऐसा ही प्रेम होना चाहिये और जैसे मित्र-मित्र के साथ बातें करते हैं, वैसा ही उसके साथ भी बातें करने की इच्छा होनी चाहिये यही सच्ची संगति है।

अब कदाचित घुटनों पर अपनी समस्याओं, प्रश्नों तथा मुश्किलों के लिये प्रभु यीशु के साथ संगति रखकर उसके साथ बात करने की इच्छा आप रखते होंगे। परन्तु जब तक वह आपके साथ बातें नहीं करे तब तक आप ठहरे रहें। कई बार हम बहुत ही बातें करते हैं। बहुत से ऐसे लोग होते हैं जो बातें करते चले जाते हैं और दूसरों को बोलने की अवसर भी नहीं देते। आत्मिक रीति से भी ऐसे लोग भी होते हैं। वे अपनी ही बातें रखते हैं और परमेश्वर को उनके साथ बोलने के लिये अवसर तक नहीं देते हैं। हमारे हृदयों की निर्बलताओं, मुश्किलों और जरूरतों को उसे जानना चाहिये, और साथ ही साथ प्रभु को अवसर देना चाहिये कि वह हमारे साथ बात करे और हमें बताए कि क्यों हम निर्बल हैं। प्रभु हमको बतायेगा कि किस रीति से सब कुछ यथा-स्थित करना, किस रीति से बल प्राप्त करना और किस रीति से हमारी आवश्यकताएं पूरी हों। उसके वचन हमारे लिये बहुत ही मूल्यवान और सच्चे बन जाते हैं। मेज पर का भोजन परमेश्वर के वचन के विषय में है, जो प्रभु यीशु के साथ संगति द्वारा हम अनुभव करते हैं। उसके बाद व्यक्तिगत रीति से और पारिवारिक रीति से सच्ची वृद्धि होती है।

मार्च 21

परमेश्वर पर विश्वास रखो।

मरकुस 11:22

हमें परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिए। प्रत्येक बात के लिये हमको विश्वास की आवश्यकता है। प्रार्थना करने के लिये हमें विश्वास की आवश्यकता है। परमेश्वर का जीवन अपने अन्दर लेने के लिये विश्वास की आवश्यकता है। "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है"। (इब्रा. 11:1) अनदेखी वस्तुयें ही सत्य हैं परन्तु उन्हें देखी हुई वस्तुओं से समझा नहीं जा सकता है। हम कितने भी बुद्धिमान हो तौभी हमारे लिये वह भेद ही बना रहता है। परन्तु विश्वास के द्वारा हम स्वर्गीय भेदों को और अनदेखी वस्तुओं को समझ सकते हैं। विश्वास के द्वारा हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त होता है। विश्वास के द्वारा हम प्रभु के सामर्थ को अनुभव करते हैं। विश्वास के द्वारा हम प्रभु के आधीन होकर उसके पीछे चलते हैं। यह सब विश्वास से प्राप्त होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रार्थनापूर्ण जीवन, पवित्र-शास्त्र का अभ्यास या अन्य सेवा के लिये विश्वास एक मूल रूप और आधार-रूपी नियम है।

जब प्रभु ने मुझे सेवकाई के लिये बुलाया तब मैं समझ नहीं पाया कि अपने अयोग्यताओं के कारण मैं किस रीति से उसकी सेवा कर सकूंगा। परन्तु मैंने विश्वास रखा कि हकलाने के बावजूद भी वह मेरी मदद कर सकता है। जब मैं प्रगट रूप में सेवा आरंभ किया तब मुझे अत्याधिक प्रार्थना करनी पड़ती थी। उस समय प्रभु ने मत्ती 10:20 की प्रतिज्ञा की ओर मेरा ध्यान खींचा, "क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुममें बोलता है"। मैंने उस प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। अपनी कमियों और घटियों के बावजूद हर समय विश्वास से मैं प्रभु से विनती करता और वह मेरा मदद करता गया। हमारा आत्मिक जीवन विश्वास से बिताया जाता है। विश्वास से हम शैतान को बांधते हैं। विश्वास से हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करते हैं। विश्वास से ही हमें सदाकाल का जीवन मिलता है। इसलिये पश्चाताप और विश्वास, विश्वास से जुड़े हुए हैं। (इब्रा. 6:9)। जिनके पास नहीं, वे आत्मिक रीति से बढ़ नहीं सकते। प्रभु पर जीवित और दृढ़ विश्वास से हम सम्पूर्ण शान्ति का अनुभव कर सकते हैं, और प्रत्येक आवश्यकताओं को पूरा होते हुये देख सकेंगे।

मार्च 22

उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत ने उनका उद्धार किया, प्रेम और कोमलता से उसने आप ही उनको छुड़ाया, उसने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिये फिरा। यशा. 63:9

हमारे संकट, मुश्किल, पीड़ा या कष्ट चाहे कुछ भी हो, हमारा प्रभु हमारे साथ दु:खी होता है। विश्वासी के रूप में हम उसके साथ दु:ख सहन करेंगे तो उसके साथ राज्य करेंगे। हमारे बोझ में वह सहभागी होता है और उसे उठाता है। इसलिये ही मत्ती 11:29 में वह कहता है, 'मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो'।

सामान्य रीति से बैलगाड़ी को दो बैल खींचते हैं और दाई ओर के बैल को अधिक भार खींचना और उठाना पड़ता है, जो कि परिश्रम मेहनत वाला होता है। खेत को जोतना है इसीलिए दाईं ओर के बैल को अधिक भार उठाना पड़ता है तब प्रभु भी दु:ख सहता है। आप जब संकट में होते हैं तब वह आपका कष्ट उठाता है। आप आँसू बहाते हैं तब उसके आँसू बहते हैं आप भूखे रहते हैं तब उसे भूख लगती है। कैसी सेवा। परमेश्वर का वचन कहता है, "उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया"। इसीलिए जब तक हम उसके स्वर्गीय भोजन में हिस्सा लेने के लिए प्रभु यीशु को मना करते हैं, तब वह कहता, "मैं तेरी प्रतीक्षा करूंगा, तेरा कष्ट उठाऊंगा, ऐसा नहीं मानता कि तू अकेले हैं"।

इसीलिए इस पृथ्वी पर किसी भी प्रकार के संकट और कष्ट हम आनन्द से उठा सकते हैं। हमारा प्रभु हमारे साथ है, और संकटों, कष्टों और बोझ को उठाता है। इस रीति से बड़े दु:खों में हम परमेश्वर की उपस्थिति का विशेष अनुभव कर सकते हैं। बारम्बार मैंने इसका अनुभव किया है। अनेक समस्याओं को हल के लिए प्रार्थना की तब प्रभु की उपस्थिति में मुझे विशेष आनन्द मिलता है। उस समय प्रभु बहुत ही निकट रहता है और कहता है, मेरे बेटे, मैं तेरे बोझ को उठाऊंगा। तू मत घबरा, अपने बोझ तथा समस्याओं में मुझे भाग लेने दे"।

मार्च 23

...हम व्यवस्था के कामों में नहीं पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरें। गलातियों 2:16

हममें से कोई भी लम्बी-लम्बी प्रार्थनाओं से, उपवास से, पवित्र-शास्त्रीय ज्ञान से, कठिनाईयों को उठाने से या ऐसे किसी भी कार्य के द्वारा परमेश्वर के समक्ष हम धर्मी नहीं हो सकते हैं।

अधिकांश लोग ऐसा समझते हैं कि साधारण जीवन बिताने के द्वारा और प्रभु की मेज में भाग लेने से वे अधिक धर्मी ठहर सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह स्वयं ही हमारी धार्मिकता बना। 'परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता और छुटकारा'। (1 कुरि. 1:30)। रोमि. 4:5 में हम पढ़ते हैं, "परन्तु जो काम नहीं कर सकता वरन भक्तिहीन को धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।

हम प्रभु की मेज में भाग लेते हैं तब इस बात की गवाही देते हैं कि प्रभु यीशु मसीह हमारी रोटी है, वह हमारा जीवन है और वही हमारा धर्म है। उसका धर्म हमें निरन्तर अपनाते रहना है। विश्वास से उसका जीवन हमारे अन्दर अपनाने के द्वारा हम अधिक धर्मी ठहरते हैं। यदि हम अपने आपको अधिक दु:ख देकर पवित्र बनने का प्रयत्न करते रहेंगे तो बारम्बार पराजित होंगे। इसीलिये अधिकांश लोग न्याय के लिए होते हैं। स्वयं ही धर्मी ठहराने के अथाह प्रयत्न करते हैं उसके बावजूद वे धर्मी नहीं ठहर सकते। धर्मी ठहराने के लिये हमारे प्रयत्न मरे हुए कार्यों के समान है।

इसलिये पौलुस कहता है कि धर्मी ठहराये जाने के लिये सर्वप्रथम जो काम करना है वह है मरे हुए कामों के प्रति पछतावा। अन्तरात्मा से हम विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु ने मेरा स्थान लिया, मेरे पापों का दंड उसने अपने ऊपर लिया और वह स्वयं मेरे लिये धर्मी ठहरा है। हमें विश्वास से उसके जीवन को अधिक से अधिक अपनाना चाहिये। जब पराजित हो जायें तब ऐसा कहना चाहिये 'प्रभु मैं स्वयं पर गर्व नहीं करता हूँ, तुम मेरे लिये जीवन एवं धर्म हो। यही उद्धार का सर्वप्रथम आधारभूत नियम है।

मार्च 24

...जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें। रोमि. 6:4

मसीह हमारे पापों के लिये मरा और हममें निवास करने के लिए और नए जीवन में मदद करने के लिये वह मरे हुओं में से फिर जी उठा। अपने मनोबल एवं पवित्र-शास्त्रीय ज्ञान द्वारा नये जीवन को जीने का प्रयत्न करेंगे तो हम निष्फल हो जायेंगे। हम बहुत ही सरलता से क्रोध से भर जायेंगे और झूठ भी बोलेंगे। सच्ची जय प्राप्त करने के लिये विश्वास से अपने अन्दर मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ को ग्रहण करना चाहिये। हमें इसे मत्ती 7:7 और 6:31-33 के अनुसार मांगना पड़ेगा। सांसारिक वस्तु को मांगने के बदले स्वर्गीय एवं आत्मिक वस्तुओं को मांगना चाहिये। प्रत्येक पाप एवं परीक्षा पर जय प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन प्रभु के पुनरुत्थान की सामर्थ का दावा करना चाहिये।

मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने एवं पुनरुत्थान में हमारी आत्मिक एकता को समझने के बाद हमारे अन्दर नये जीवन को आते हुये अनुभव करेंगे। (कुलु. 3:1-3)। पृथ्वी पर की वस्तुओं के प्रति प्रेम घट जाता है और परमेश्वर के राज्य के विषय में अधिक जानने के लिये, पवित्र जीवन के लिये, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये, स्वर्गीय भेदों को समझने के लिये और परमेश्वर की सेवा अधिक फलवन्त रीति से करने के लिए हमारे अन्दर तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है।

जब शरीर में लगा हुआ घाव पक जाता है तब उसमें मवाद भर जाता है, परन्तु जब घाव भरने लगता है तब आप देखेंगे कि पुराना माँस धीरे-धीरे सूख जाता है और नया स्वच्छ मांस भरता जाता है। इसी रीति से प्रभु यीशु का जीवन हमारे भीतर प्रवेश करता है, तब द्वेष, कपट, ईर्ष्या और शत्रुता जैसी पुरानी बातें सूख जाती हैं और उसकी जगह नये गुण हमारे भीतर आते हैं। पुनरुत्थान का सामर्थ जब हमारे भीतर कार्य करता है तब बड़ी करूणा, भलाई, नम्रता, दीनता और सहनशीलता के गुण अपने आप आते हैं। (कुलु3:12)

मार्च 25

हर बात में धन्यवाद करो, क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।
1 थिस्स. 5:18

परमेश्वर का भक्त अपने सहकर्मियों के साथ सुसमाचार के लिये गया था। अचानक उसके सिर में तीव्र पीड़ा होने लगी। अतः उसने अपने साथियों को गांव में जाने के लिये कहा और स्वयं एक पेड़ के नीचे सो गया। जब सिर की पीड़ा बढ़ गई तब उसे स्मरण आया कि इस पीड़ा के लिये उसने परमेश्वर की स्तुति नहीं की। अच्छे स्वस्थ में नहीं, परन्तु यह व्यक्ति रोग में भी परमेश्वर की स्तुति करना जानता था। बुड़बुड़ाहट करने के बदले उसने परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति का गीत गाया। उस ओर से कई स्त्रियां जा रही थी।

इस व्यक्ति को ऐसी स्थिति में देखकर पेड़े के नीचे बैठ गई, वे सहानुभूति दिखाना चाहती थी। इस भक्त को समझ में आया कि इन स्त्रियों के कारण परमेश्वर ने उसे सिर में पीड़ा आने दी। इसलिये उसने उन्हें सुसमाचार और परमेश्वर का सन्देश दिया, और वे स्त्रियां उद्धार पाई। उसका साथी घंटों तक प्रचार करता रहा, परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। जब आप रोग में भूख या कोई भी स्थिति में परमेश्वर की स्तुति करना सीखते हैं तब आपको आनन्द और तृप्ति मिलती है।

एक व्यक्ति प्रत्येक बात के लिये परमेश्वर की स्तुति करता था। एक बार वह मीट खरीदने के लिए गया। वापस आते समय उसके जूते का बंध खुल गया, वह मीट को थैली में रखकर डोरी को बांधा। इतने में एक कुत्ता आकर मीट ले गया। उसी समय शैतान ने कहा, "अब प्रभु का उपकार मान। उसने कहा, मैं अब भी प्रभु का उपकार मानूंगा। कुत्ता मीट ले गया परन्तु वह मेरे स्वाद को ले नहीं जा सकता है"।

जब हम प्रत्येक परिस्थिति में, रोग में, निर्धनता में या सम्पन्नता में प्रभु की स्तुति करते हैं तब हम उसकी योजना में आते हैं। प्रभु के घर का एक हिस्सा बनने के द्वारा हम संयोग में धन्यवाद स्तुति कर सकते हैं।

मार्च 26

क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि हमने देखा और सुना है, वह न कहें। प्रेरितों. 4:20

धार्मिक प्रधानों ने प्ररितों को चितौनी देकर यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखलाना। "परन्तु उन्होंने मनुष्यों को नहीं किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में जो योग्य हैं वही करने का निर्णय लिया। मैं एक प्रश्न करूंगा परमेश्वर ने आप पर जिस आत्मिक सच्चाई को प्रगट किया उसके विषय में आपका चुप रहना क्या उचित है"? आपसे शायद ऐसा कहा गया होगा कि 'विशेष सिद्धान्तों के विषयों में हमारे आराधनालय में नहीं बोलें अन्यथा आपको दुबारा निमंत्रण नहीं देंगे। ऐसे समय में आप क्या करते हैं?

क्या आप बहुत होशियारी दिखाते हुए ऐसा कहते हैं, कि मैं आपके सभा स्थानों में कोई समस्या खड़ी करना नहीं चाहता हूँ। कदाचित आप यह समझते हैं कि इसी रीति से आपको सेवा करने का अधिक अवसर प्राप्त होगा। यदि आप ऐसा सोच रहे हैं तो यह आपकी भूल है। पवित्र-आत्मा के द्वारा अधिक अच्छा परिणाम आ सकता है। जब भी परमेश्वर आपको उसका वचन प्रगट करने का अवसर देता है और आपके हृदय में सन्देशों को देता है इससे उसकी इच्छा यह है कि आप मनुष्यों को नहीं परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये अविश्वासपूर्वक उसे प्रगट करें। यदि लोग परमेश्वर के वचन को स्वीकार नहीं करते है तो इसकी जिम्मेदारी उनके सिर पर होगी, परन्तु आप अपनी जिम्मेदारी से स्वतंत्र हो गये हैं। पवित्र-आत्मा के द्वारा, प्रेम और दीनता से आपको परमेश्वर का वचन देना चाहिये।

दक्षिण भारत में एक समय एक व्यक्ति ने मुझसे पंद्रह मिनट का सन्देश देने के लिये अवसर दिया। मैंने कहा, "मुझे खेद है। मैं केवल परमेश्वर का सन्देश दे सकता हूँ। यह केवल पंद्रह मिनट के लिये होना ऐसा भरोसा मैं नहीं दे सकता हूँ। "हम हर समय प्रार्थना करते हैं कि प्रभु अपने शब्दों और विचारों को लेकर उसके संदेशों को भेजें। फिर परमेश्वर के सामर्थ और भरपूरी के साथ बिना किसी रोक अड़चन के परमेश्वर का सन्देश दे सकते हैं।

मार्च 27

कि वे सब एक हों...।

यूहन्ना 17:20

जिस प्रकार गौरेया तिनको को बारम्बार मोड़कर घोंसला बनाती है, उसी प्रकार से हम भी जब प्रभु यीशु मसीह के हाथ में है। हमें भी मरोड़ कर जात-पात, धर्म, रंग-रूप के सभी मानव रचित भेदभावों को दूर किया जाता है। वह धनी और निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, बुद्धिमान-मूर्ख, सुन्दर-असुन्दर और अच्छे-बुरे लोगों को आपस में मिला देता है। प्रभु एक ही वर्ग के लोगों के प्रति केन्द्रित नहीं होता है। गौरेया के समान वह सभी लोगों को एकत्र करता है। साथ मिलकर प्रभु की आराधना करने के द्वारा हम उसे जो विश्राम दे सकते हैं वह स्वर्गदूत भी नहीं दे सकते। यह एक बड़ा भेद है। अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि उनको परमेश्वर की आवश्यकता है, परन्तु वे यह नहीं समझते कि परमेश्वर को भी उनकी आवश्यकता है।

जहाँ-जहाँ लोग मानवी भेदभावों पर जय प्राप्त किये हैं वहाँ-वहाँ अधिक आनन्द और सामर्थ प्रगट होती है। भजन. 84:7 के अनुसार वे बल पाते हैं, और सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखायेंगे। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में स्वतंत्रता मिलेगी। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव प्राप्त होता है और वे परमेश्वर के उद्देश्य को समझते हैं। अपनी सब आवश्यकताओं के लिये वे दृढ़ विश्वास से परमेश्वर को पुकारते हैं। जो परमेश्वर का भवन बने हैं, वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं (भजन. 84:4)। वे हर समय प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक संयोग में, निर्धनता में या सम्पन्नता में तंदुरूस्ती में, रोगावस्था में परमेश्वर की स्तुति करेंगे। आप विश्व के किसी भी भाग में क्यों न हो, प्रभु यीशु मसीह आपको उसके भवन का एक भाग बनाना चाहता है जिससे आपके द्वारा उसे विश्राम और संतुष्टि प्राप्त हो।

मार्च 28

और उसी के नाम ने... सामर्थ दी है। प्रेरितों. 3:16

प्रभु यीशु मसीह नाम से प्रार्थना करने में क्या है, इसे जानें। चेलों ने पहले अनेक वस्तुओं की मांग की थी, परन्तु प्रभु यीशु ने नाम के अधिकार को समझे नहीं थे। जब प्रभु यीशु को अति महान किया गया और पवित्र-आत्मा उन पर उण्डेला गया तब वे उसके नाम के अधिकार को समझे। "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार" प्रभु का है। (मत्ती 28:18)। यह तो ईश्वरीय भेद है। इस पृथ्वी पर हमें इस अधिकार और इस सामर्थ का उपयोग करना है। हमारी शक्ति प्रभु यीशु मसीह के नाम में है। इसे उपाधियों, सम्पत्ति और धन-दौलत के रूप में नहीं लेना चाहिए।

हममें से अधिकांश लोग प्रार्थना करते हैं, परन्तु उसमें केवल व्यर्थ शब्द ही होते हैं। हम सुन्दर भाषा में लम्बी प्रार्थना तो करते हैं, परन्तु जब मुसीबतें आती है और शैतान आक्रमण करता है तब हम कहीं छिप जाते हैं और आँसू बहाते हैं। ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिये?

ऐसे समय में हमारी शक्ति कहाँ है? वास्तव में, हमारे शब्दों में नहीं, परन्तु प्रभु यीशु मसीह के नाम में, जिसे अधिकार के साथ उपयोग में लेने से हमें शक्ति मिलती है। शत्रु बाढ़ की नाई आयें (यशा. 59:19) या गर्जनेवाले सिंह की नाई आयें (1 पतरस 5:8), हम उसे प्रभु यीशु मसीह के नाम से बांध सकेंगे। वही हमारा आनन्द और हमारा बल है। प्रभु यीशु मसीह में हमें विशेष जय प्राप्त होती है।

मार्च 29

और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी पूरी करेगा। फिलि. 4:19

आत्मिक रीति से बुद्धि पाने के लिये हमें उदारता से दान देने का महान रहस्य सीखना होगा। जिन्होंने इस रहस्य को नहीं सीखा वे आत्मिक रीति से बालक ही रहते हैं। फिलिप्पियों के विश्वासियों ने त्याग सहित जरूरतमन्दों की सहायता के लिये दान देना सीखा था। आनन्द से और स्वतंत्रता से दान देनेवाले शीघ्रता से वृद्धि पाते हैं।

यहाँ प्रेरित पौलुस अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए उन्हें सम्बोधन नहीं किया था। उसकी इच्छा मात्र यही थी कि उनका जीवन फलदायक बने। प्रभु उसे जिस स्थिति में रखा था, उसमें वह सन्तुष्ट था। वे खुशी से देते थे वह उनकी आत्मिक वृद्धि पा नहीं सकते।

जब हम प्रभु को उसका हिस्सा आनन्द में, भरपूरी से, प्रेम और त्याग से देना सीखते हैं तब हम निश्चयपूर्वक जान सकते हैं कि हमारी समस्त आवश्यकताओं को पूरी करेगा। कई लोग अपनी आवश्यकताओं के समय इस वचन का दावा तो करते हैं, पर वे स्वयं ही देना नहीं सीखे होते हैं, हमारे देने के आधार पर ही हमारा प्राप्त करना निर्भर करता है। हमने अनुभव से यह जाना है कि जैसे-जैसे हम अधिक देते हैं वैसे-वैसे हमें भी अधिक दिया जाता है। यदि हम अत्यन्त प्रसन्नता से उन्हें देंगे तो उसी आनन्द से हम प्राप्त भी करेंगे।

मार्च 30

मैंने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं। भजन. 119:101

लैव्य. 8:6 के अनुसार हारून और उसके पुत्रों को सारी मण्डली के आगे जल से नहलाया गया। वे गंदे थे इसलिये नहीं, परन्तु एक विशेष उद्देश्य के लिये ऐसा किया गया। पवित्र-शास्त्र में जल परमेश्वर के वचन को दिखाता है।

सारी मण्डली के आगे जल से नहलाने के द्वारा वे लोगों को यह बता रहे थे कि सारी प्रजा के लिये परमेश्वर की सेवा करने के लिए उनको अलग किया गया और प्रत्येक विषयों में उनको परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधीन में रहना है। उनको मनुष्यों द्वारा बनाई गई रीतियों का अनुसरण नहीं करना है, केवल परमेश्वर के वचन के आधीन होना है। अधिकांश लोग परमेश्वर के वचन के आधीन होने के बदले में रीति-रिवाजों के आधीन होते हैं। इसलिए वे आत्मिक रीति से वृद्धि नहीं पाते हैं। प्रत्येक देश में हमें यह परिस्थिति देखने को मिलती है। बच्चे के जन्म के समय, विवाह, या दफनाने की विधि के समय परमेश्वर के वचन का पालन करने के बदले वे मनुष्यों के द्वारा बनाई गई रीतियों को अपनाते हैं। परमेश्वर के वचन से अधिक वे इन बनाई गई रीतियों से बंधे होते हैं।

प्रत्येक आवश्यकता, समस्या और प्रवृत्ति के लिये परमेश्वर के वचन में हमारे लिये सन्देश है। यदि परमेश्वर के वचन को पूरी रीति से सम्मान न दें तो उसकी सम्पूर्णता में जो हमारा भाग है उसका दावा करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। परमेश्वर के वचन की अवगणना करने के द्वारा उसकी सम्पूर्णता में हमारा जो भाग है उसे हम खो रहे हैं। हमें एक दृढ़ निश्चय करना होगा, कि प्रभु मेरी प्रत्येक प्रवृत्ति, मार्ग और योजना में मैं आपके वचन के आधीन होऊंगा। यदि परमेश्वर की सेवा करनी हो तो प्रत्येक विषय में, सम्पूर्ण रीति से हमें परमेश्वर के वचन की आधीनता में रहना होगा। प्रतिदिन इस प्रकार से कहने का अभ्यास डालना होगा कि, "प्रभु, यदि मेरे जीवन में ऐसा कुछ है जो तुझे पसन्द नहीं, कृपा मुझे बता, सब कुछ सही रूप से करने के लिये मुझ पर अनुग्रह कर।" प्रत्येक विषय में, छोटी से छोटी बात में भी मैं तेरे वचन के आधीन होना चाहता हूँ।

मार्च 31

तुम जगत की ज्योति हो, ... तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके। मत्ती 5:14,16

जिस प्रकार दस कुंवारियों के पास मशालें थी, उसी प्रकार से, यह आवश्यक है कि जो प्रभु यीशु के दूसरे आगमन में विश्वास रखते हैं उनके पास भी मशालें हों। मशाल मण्डली का प्रतीक है। कई बार मशालें मैले चिथड़ों और मिट्टी से बनी हुई होती है। यह हमारे निमित एक चित्र है, क्योंकि पापियों के समान हमारे धर्म के कामों को मैले चिथड़ों के साथ तुलना की गई है। (यशा. 64:6) प्रभु की पवित्र मण्डली सभ्य होने के कारण हम उसकी जलती हुई मशालें हैं, और यदि हमारा प्रकाश चमकता रहेगा तो हम उसके साथ जाने के योग्य गिने जायेंगे।

पवित्र-आत्मा के नियंत्रण और अधिकार के नीचे रहने के लिये हमें तैयार होना पड़ेगा। परमेश्वर हमें उसकी आत्मा का पूरा-पूरा प्रमाण देना चाहता है। (यूहन्ना 3:34) हमें उसके पास जाकर मांगने में डरना नहीं चाहिये (2 तीमु. 1:7) लोगों की दृष्टि में आप चाहे कितने ही निम्न एवं तुच्छ समझे जाते हो फिर भी दिन हो या रात हो आपको प्रभु के पास जाने का अधिकार है।

जो लोग प्रभु के आगमन की बाट जो रहे हैं, उन्हें प्रभु यीशु मसीह के विशेष मित्रों में गिना जायेगा। जब प्रभु आयेगा तब आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उसने आपके लिये कितना कुछ तैयार किया है और आपको कितना कुछ देना चाहता हैं। हम जैसे लोगों के लिये प्रभु जिन महान बातों को तैयार कर रहा है उन्हें देखकर स्वर्गदूतों को भी आश्चर्य होगा। क्योंकि परमेश्वर के वचन में लिखा है, '...जो आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही है, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं"। (1 कुरिन्थियों 2:9)

अप्रैल 1

...मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।

इब्रा. 13:5

एक समय मैं कनाडा में एक एकान्त स्थान में था। मैं बहुत उदास था और स्वयं पर तरस खा रहा था। उस शहर में मैं बिल्कुल अपरिचित था। मैंने मन में कहा, यदि मैं बीमार हो जाऊं तो कौन मेरी देखभाल करेगा? मैं कहाँ जाऊंगा?

इन विचारों के साथ मैं एक बड़ी दुकान में गया। एक खाली बड़े कमरे को देखकर मैं वहाँ कुर्सी पर बैठ गया। मैं अत्यन्त दुःखी एवं निराश था। थोड़ी ही देर में मुझको नींद आ गई। अचानक मुझे लगा कि मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा और मैंने आवाज सुनी, 'क्यों तूने कहा कि तू अकेला है? क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा?' तुरन्त ही मेरी शंकाओं के लिये मैंने प्रभु से क्षमा मांगी। वह इतना निकट है इसकी कल्पना भी मैंने नहीं किया।

मैं दुकान से बाहर आया और एक कोने में खड़ा रहा। एक ऊंचे व्यक्ति ने आकर मुझसे पूछा कि क्या मैं भारतीय हूँ? मैंने 'हां' कहा, उसने मुझसे कहा कि उसके माता-पिता एक भारतीय व्यक्ति से मिलना चाहते हैं। वह व्यक्ति अपनी ही कार में अपने घर ले गया। उसके माता-पिता मुझे देखकर बहुत ही आनन्दित हुये और मुझे भोजन के लिये रुकने को कहा। उन्होंने (रोस्टेड वे तन्दूरी मांस लेम्ब) और लगोचा (मीट मांस) बनाये, जो बहुत ही स्वादिष्ट था। मुझे स्मरण आया कि मैं ऐसा विचार कर रहा था कि कोई मुझसे प्रेम नहीं करता। परन्तु परमेश्वर ने यह प्रमाणित करना शुरु किया कि उसने कई परिवारों का प्रेम मेरे लिये रखा है। संभव है कि परमेश्वर थोड़े समय के लिये हमारी कसौटी करे, परन्तु वह हमें कभी भी नहीं भूलेगा, वह हमें दुःखद परिस्थितियों में से इसलिए लेकर जाता है कि हम उस पर भरोसा रखना सीखें और सदैव उसकी स्तुति करें। प्रत्येक परिस्थितियों में और प्रत्येक कसौटी में उसकी स्तुति करें। वह विश्वासयोग्य और दयालु है। आपके प्रति वह कम नहीं होगा।

अप्रैल 2

...परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है। 2 इति. 32:8

इस्राएली यरीहो के पास आ पहुंचे थे। उसी समय यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू को दर्शन दिया। (यहोशू 5:13-15)। उस दर्शन के द्वारा परमेश्वर ने उसे यह भरोसा दिलाया कि वह स्वयं ही उसकी प्रजा के पक्ष में युद्ध करेगा। उसके बाद यहोशू ने कई युद्ध किये, परन्तु वह प्रधान फिर कभी उसे दिखाई नहीं दिया, और न ही उसके विषय में फिर से उल्लेख किया गया। उसके बाद अदृश्य रीति से परमेश्वर उनके पक्ष में युद्ध करता रहा (यहो. 21:43-45)। यही परमेश्वर हमारे संग भी रहने का वचन देता है। हमारी साँसारिक आँखें उसे नहीं देख सकती फिर भी वह हमारे संग रहकर हमारे लिये युद्ध करेगा। हमें अपने जीवनों को, योजनाओं और परिस्थितियों को सम्पूर्ण नियंत्रण के लिए उसे सौंपना होगा।

उस प्रधान ने यहोशू से कहा कि अपनी जूती पांव से उतार डाल। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक अशुद्धता से यहोशू के अलग होना था। हम अलग-अलग स्थानों में जाते हैं तब किसी न किसी रीति से अशुद्ध हुए बिना रह नहीं सकते। इस दुष्ट संसार में जो देखते हैं और जो सुनते हैं उसके द्वारा अशुद्ध होने के निरन्तर खतरे में रहते हैं। कोई भी विचार, शब्द का कार्य के द्वारा अशुद्धता आती है। उस समय में प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू का दावा करके शुद्ध होने से यहोवा की सेना का प्रधान सर्वदा हमारे संग रहेगा। इस प्रकार सरल विश्वास रखने के द्वारा हम अदृश्य परन्तु वास्तविक प्रभु की उपस्थिति का सुखानुभव कर सकेंगे।

अप्रैल 3

क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो। 1 कुरि. 6:20

सोना ईश्वरीय स्वभाव को दर्शाता है। हम जो कुछ भी करें वह मानवीय बुद्धि से नहीं, परन्तु ईश्वरीय ज्ञान से करना चाहिये। हम सबको ईश्वरीय ज्ञान, बुद्धि-शक्ति की आवश्यकता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र में पूरा किया है। इसलिये, जब हम प्रभु यीशु मसीह की ईश्वरीय योजना के अनुसार कार्य करते हैं, तब हम उसके लिए सोना इकट्ठा करते हैं। केवल मनुष्यों को दिखाने के लिये इन कार्यों को करें, तो जो कुछ भी हम करते हैं, उसे परमेश्वर स्वीकार नहीं करेगा। ईश्वरीय योजनानुसार तथा ईश्वरीय स्वभाव के सामर्थ से हम जो कुछ करें, उसे परमेश्वर के भवन के लिए सोना इकट्ठा करते हैं। इस प्रकार से स्वर्ग के राजा में नई सृष्टि का सोना लाने का हमें अधिकार है।

चांदी, उद्धार को दर्शाता है। आपको स्मरण होगा कि हमारा प्रभु तीस चांदी के सिक्कों में बेचा गया था। मिलापवाले तम्बू में उद्धार के विषय के लिए देखे तो हमें बचाने के लिये हमारे प्रभु ने जो कीमत चुकाई उसे दर्शाता है।

जब हम नया जन्म पाते हैं तब हम प्रभु यीशु मसीह के 'मोल लिए हुए' बनते हैं। हमारा आत्मा एवं शरीर अब उसका है। हमें 'दाम देकर खरीद लिया गया है।' (1 कुरि. 6:20)। अब मैं कह ही नहीं सकता कि मेरे हाथ, पैर, होंठ, मेरी आँखें मेरे अपने है। वे प्रभु यीशु मसीह के हैं, क्योंकि उसने मुझे खरीदा है, तथा अपने लहू का छिड़काव किया है। हमारी देह उसके पवित्र-आत्मा का मन्दिर है। इसी कारण से हमारे वस्त्र, आदम, रहन-सहन, वाणी द्वारा हमें परमेश्वर को महिमा देना चाहिये। अब मैं पहले की नाई वस्त्र पहन नहीं सकता। अब मैं सांसारिक वस्तुओं एवं सांसारिक महिमा के पीछे पैसे व्यय नहीं कर सकता। अब मुझे अपने वस्त्र, रहन-सहन, मार्गों के द्वारा अपने प्रभु को महिमा देना चाहिये।

पीतल न्यायशासन को दर्शाता है। ऐसा न्याय-दंड कि हमारा प्रभु यीशु मसीह क्रूस पर मारा गया। प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापों को लिया और शैतान पर विजयी हुआ। अब हम स्वयं पर घमण्ड कर नहीं सकते। हम केवल प्रभु यीशु मसीह के विषय में अभिमान कर सकते हैं। इसलिये, पीतल के द्वारा परमेश्वर कह रहा था, 'हे मनुष्य, मानवीय प्रयन्त, शक्ति या इच्छा-शक्ति से पाप या परीक्षाओं पर जय प्राप्त करने का प्रयन्त न कर, तू कभी भी सफल नहीं होगा।' इस प्रकार से हम स्वर्ग के राज्य के लिए सोना, चांदी और पीतल एकत्र कर सकते हैं।

अप्रैल 4

...तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले।
यूह. 20:1, 9:21

पुनरुत्थान की संध्या के समय चेले यरूशलेम में एक बड़े कमरे में एकत्रित हुये तब प्रभु ने उन्हें दर्शन दिया (यूह. 20:19-25)। द्वार बन्द होने के बाद भी प्रभु अन्दर आकर, और बीच में खड़ा हो गया। उसके प्रथम शब्द ये थे, 'तुम्हें शान्ति मिले' (पद 19)। यह बताता है कि अपने शांति बनाये रखने के द्वारा हम पुनरुत्थान के सामर्थ को अनुभव कर सकते हैं। शैतान हमारी शांति को भंग करने के लिये बहुत ही दृढ़ निश्चयी बना हुआ है। इसलिए वह हमारे हृदय में अनेक प्रकार से संदेह, डर एवं शारीरिक परीक्षाओं को लाता है। परन्तु जैसे-जैसे प्रभु की महान शान्ति जो सब समझ से बाहर है, उसका सुखानुभव कर सकते हैं। परमेश्वर का वचन बताता है, तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है। (रोमि. 16:20)।

जैसे-जैसे हम अधिक शान्ति बनाये रखते हैं वैसे-वैसे शत्रु के प्रत्येक हमले पर हम अधिक से अधिक विजय प्राप्त कर सकेंगे। परन्तु यह शान्ति हमारे हृदय में राज्य करे और नदी की नाई बहे, और शत्रु हमारी शान्ति चुरा न ले, इस कारण से बहुत ही दृढ़ रूप से अपने विश्वास का उपयोग करना चाहिये। परमेश्वर और मनुष्यों के साथ यदि हमें सही संबन्ध बनाना है तो वह परमेश्वर की कृपा के द्वारा नम्रतापूर्वक तुरन्त करनी चाहिये। इस बढ़ती हुई, दुगुनी आंतरिक शान्ति के द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी कर पाते हैं, क्योंकि 'धर्म का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा चैन और निश्चिन्त रहना होगा'। (यशा. 31:17)। और यूह. 20:21 में प्रभु अपने शिष्यों से कहता है, 'तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ'।

यदि हमारे भीतर यह आंतरिक शान्ति हो तब ही प्रभु हमें जहां भेजे वहाँ जाने के लिये और उसकी महिमा के लिये प्रभु जो मांगे, वह बिना प्रश्न किये देने के लिये हम तैयार रहेंगे। प्रभु ने शिष्यों से इस प्रकर कहने के बाद उन पर फूंका और उन से कहा, 'पवित्र-आत्मा लो'। (पद 22)। जब हम प्रभु के आधीन होते हैं तब वह पवित्र-आत्मा से हमें नवीन अभिषेक देता है जिससे उसकी आज्ञाओं का हम आनन्द-सहित पालन करें।

अप्रैल 5

यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ। भजन 96:1

यह भजनकार अनेक कष्टों में से होकर गया था। इन सब दु:खों के बदले में वह परमेश्वर की स्तुति करता था। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अत्यन्त भारी दु:ख होने के बाद भी वह महान, भरपूर और अदभुत आनन्द से आनन्दित था और प्रत्येक व्यक्ति को उसमें भाग लेने के लिये आमंत्रित करता है? किस प्रकार से भजनकार को ऐसा महान आनन्द और ऐसा अदभुत गीत मिला?

परमेश्वर के ज्ञान से और उसके महान उद्धार के अनुभव से उसे वह प्राप्त हुआ। प्रत्येक व्यक्ति, जिसने प्रभु यीशु मसीह को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है, उसे ऐसा स्वर्गीय आनन्द मिलेगा, जो दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। और वह एक नया गीत है। भाषा, अर्थ और संगीत में वह नया है। सांसारिक लोग बिल्कुल इससे अनभिज्ञ है। जब भजनकार को उद्धार का अनुभव हुआ तब उसे वह नया गीत मिले।

पूर्व के प्रत्येक सुखद अनुभव के लिये हमें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। परन्तु हम सदैव पिछले अनुभवों पर ही जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं। यदि ऐसा जीयेंगे तो हमारा गीत नया नहीं रहेगा। समय-समय पर मसीह के ताजा अनुभवों को प्राप्त करने के द्वारा नया गीत गा सकते हैं, और इस प्रकार हमारा आनन्द बढ़ जाता है। ऐसे जीवन अनुभव हमें प्राप्त होने के लिये परमेश्वर हमारे जीवन में कसौटियों और मुश्किलों को आने देता है, जिससे कि नए-नए रूप से हम परमेश्वर की विश्वास-योग्यता को परख सकें। ऐसे ही समय में कई लोग अति भय और निराशा में चले जाते हैं। वे शिकायतों और आंसुओं से भर जाते हैं। ऐसे लोग कभी नया गीत नहीं गा सकते हैं। जिन्होंने विश्वास से कसौटियों पर जय प्राप्त करना सीखा है, वे ही नया गीत गा सकते हैं।

अप्रैल 6

हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं वरन् अपने ही नाम की महिमा... के निमित्त कर।
भजन 115:1

परमेश्वर ने वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया (दानि. 2:19) और ऐसा करके उसे और उसके मित्रों के विश्वास को आदर दिया। अब दानिय्येल राजा के पास जाकर उसका स्वप्न तथा उसका भेंट बताने के लिए तैयार था। परन्तु वह आनन्द-विभोर होकर उतावला नहीं हुआ जब हम पद 20-30 में उसकी प्रार्थना को पढ़ते हैं तब जान पड़ता है कि वह परमेश्वर के प्रति स्तुति और धन्यवाद से भरा हुआ था। इस विषय में हम बार-बार चूक जाते हैं। परमेश्वर जब भी कुछ प्रगट करता है तब उसका पर्याप्त प्रमाण में आभार व्यक्त करने में हम निष्फल हो जाते हैं।

23 वें पद के इन वचनों पर ध्यान दें, 'जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझसे मांगा था'। वहाँ ऐसा कहकर वह यह स्वीकार करता है कि उनकी संयुक्त प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर ने उस स्वप्न को तथा उसका अर्थ प्रगट किया। वह स्वयं की रीति को अस्वीकार किया। राजा के समक्ष भी वह यश नहीं चाहता। उसने कहा 'मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूँ'। (पद 30)। 'परन्तु भेदों का प्रगटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है'।

यदि आप जयवन्त होना चाहते हैं तो आपको परमेश्वर की महिमा का श्रेय नहीं लेना चाहिये। प्रेरित पौलुस ने कहा, 'परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ' (1 कुरि. 15:10)। उसे परमेश्वर की ओर से कई प्रकाशन प्राप्त हुए थे, परन्तु उसने कभी भी स्वयं को महिमा नहीं दिया। बार-बार वह यही गवाही देता रहा कि केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही यह सब कर सका। आपको भी स्वयं को छिपाकर यह कहना चाहिये कि 'मैं नहीं, पर परमेश्वर'।

अप्रैल 7

तो मसीह का लोहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा। ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। इब्रा. 9:14

हमारा प्रत्येक पाप हमारे अंतःकरण पर एक चिन्ह छोड़ जाता है। इस टेप-रिकॉर्डर को परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर रखा है। हमारे विचार, कार्य और शब्द हमारे अंतःकरण में लिखे हुए हैं। वर्तमान में हम इन्हें दबाकर रखते हैं, परन्तु समय आता है, जब हमारे दोषित अंतःकरण के द्वारा हम परेशान होते हैं। मैंने अनेक लोगों को उनकी मृत्यु-शैय्या पर दोषित अंतःकरण द्वारा परेशान होते हुए देखा है। वे मृत्यु के लिए तैयार नहीं थे, वे कहते थे, 'दान, धर्म, उपवास, प्रार्थना कुछ भी करो', इनमें से कोई भी दोष को मिटा नहीं सकते। शुद्ध अंतःकरण हम स्व-प्रयत्नों द्वारा प्राप्त कर नहीं सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह का बहुमूल्य लोहू हमें शुद्ध अंतकरण देता है। इसका प्रमाण यह है कि हमें परमेश्वर के आगे हियाव होता है।

कल्पना कीजिए कि, किसी के विरुद्ध आप गलत बोल रहे हो, और उसी समय वह व्यक्ति वहाँ आ जाए तब तो उससे आंखें नहीं मिला सकते है। आपका मन आपको दोषी ठहराता है। तब पाप के कारण दोषित अंतःकरण होने के बाद आप परमेश्वर के साथ बात कर सकेंगे? यह असंभव है। परन्तु यदि मन (अंतःकरण) साफ हो, तब हम किसी भी समय और कही भी उसके पास जाकर बातें कर सकेंगे जैसे मित्र के साथ बात करते हैं। प्रभु यीशु के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हमें परमेश्वर को उपस्थिति में हियाव और स्वतंत्रता मिलती है। 'इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहसन के निकट हियाव बान्धकर चलें कि हम पर दया हो, और यह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे' (इब्रा. 4:16)। पवित्र हृदय हमें ऐसा हियाव और स्वतंत्रता देता है कि हम कहीं भी किसी भी आवश्यकता और विषय के लिए परमेश्वर के साथ बात कर सकते हैं।

अब मेरे अपने हाथों के सिवा भी परमेश्वर मेरे लिए अधिक वास्तविक है। रात या दिन हो, किसी भी समय में मैं उसके साथ बात कर सकता हूँ, प्रश्न पूछ सकता हूँ, अपनी समस्याओं, आवश्यकताओं, कठिनाईयें में उससे विवाद मुश्किलों को उसे विदित कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि वह मुझे उत्तर देगा, परन्तु यदि मेरा मन दोषी हो तो मैं प्रार्थना कर नहीं सकता हूँ।

कभी मैं क्रोध में आकर कुछ बोलूं, तब बाद में बेचैन हो जाता हूँ, और परमेश्वर के साथ बात कर नहीं सकता हूँ। तब मैं घुटनों पर जाकर कहता हूँ, 'प्रभु, मुझे माफ कर, मैंने क्रोध किया, इसलिये मैं खेदित हूँ। मैंने कुछ गलत कहा है। कृपया मुझे क्षमा कर'। मुझे क्षमा मिलती है और अब मैं स्वतंत्रता-पूर्वक परमेश्वर के साथ बात कर सकता हूँ। शुद्ध अंतःकरण परमेश्वर के साथ बात करने के लिये स्वतंत्रता और हियाव देता है और हम लम्बे समय तक परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकते हैं।

अप्रैल 8

...कि तुम जान लो... उसकी सामर्थ हमारी ओर से जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार, कि तुम जान लो।

इफि. 1:19,18

प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मरा इतना ही नहीं पर हमें उसके पुनरुत्थान में समानता दिलाने के लिये फिर से जी उठा। प्रभु के क्रूस की मृत्यु के द्वारा हम अपने पुराने स्वभाव में मर गये, जैसे ही हम यह ऐसा विश्वास करते है, वैसे ही हमें यह भी विश्वास करना चाहिये कि नए जीवन के लिये उसके पुनरुत्थान के जीवन के लिए हम उसके साथ जी उठे है। (रोमि. 6:5)। हम न केवल उसको मृत्यु का ही बपतिस्मा पाये हैं, उसके जी उठने में भी बपतिस्मा पाये हैं। जिस महिमामय सामर्थ्य द्वारा प्रभु कब्र में से बाहर आया, वह ही हमारे अन्दर आता है और कार्य करता रहता है। पुनरुत्थान का यह सामर्थ्य प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर द्वरा मसीह में रखा हुआ सबसे महान सामर्थ्य है।

यह सामर्थ्य हमें भीतरी मनुष्यत्व में नई सृष्टि के लिए बलवान करता है और हमारे कठिनाईयों और परीक्षाओं परीक्षणों पर जय प्रदान करता है। इसलिये विश्वासपूर्वक प्रतिदिन प्रत्येक आवश्यकताओं के लिए इस सामर्थ्य का दावा करना चाहिए। प्रेरित पौलुस की आतुरता यही थी कि मैं उसे तथा उसके पुनरुत्थान के सामर्थ्य को जानूं'। आप भी दिन का आरंभ जितना संभव हो उतना जल्दी करें। प्रभु के भजन से और स्तुति से इसकी शुरुआत करें। परमेश्वर के वचनों के साथ उसकी उपस्थिति में ठहरे रहें। बाद में प्रार्थना करें, 'प्रभु, मैं निर्बल हूँ'। मैं अनुभव से जानता हूँ कि मुझसे मूर्खताभरी बातें निकलती है और मूर्खता भरे कार्य होते हैं। मुझे पाप में पड़ना नहीं है। मैं अपने खालीपन और लाचारी को स्वीकार करता हूँ। क्या अपने पुनरुत्थान की सामर्थ्य को मुझ पर नहीं उंडेलोगे'? तब आप प्रभु की ढ़ाढ़स बंधाने वाली वाणी को सुनेंगे, हाँ, मेरे बच्चे, मुझसे अलग रहकर तू कुछ नहीं कर सकता'। इस प्रकार छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी प्रत्येक आवश्यकता के लिए प्रभु पर आश्रित हों, तब दिन-प्रतिदिन आप मसीह में अधिक दृढ़ और ज्ञानी बनते जायेंगे।

अप्रैल 9

क्योंकि मैंने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को नहीं जानूं। 1 कुरि. 2:2

आत्मिक विश्वासी बनने के लिए हमें प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अर्थ को समझना आवश्यक है। कुरिन्थि के विश्वासियों के पास अत्यधिक ज्ञान था और आत्मिक रीति से उन्हें किसी बात की कमी नहीं थी। उनमें आश्चर्यकर्म भी होते थे और प्रभु यीशु के दूसरे आगमन के विषय में भी वे लोग बातें करते रहते थे। इसके बाद भी उन्हें शारीरिक विश्वासी कहा गया, क्योंकि उनमें ईर्ष्या, झगड़े और फूट थी। केवल वचन और प्रचार ही आत्मिक बृद्धि के लिए काफी नहीं है। हमें अपने अन्दर प्रभु यीशु मसीह के मृत्यु की शक्ति को स्वीकार करने की आवश्यकता है।

प्रभु यीशु ने तीन वर्षों तक अनेक चमत्कार किये फिर भी अंत में उसके द्वारा जिन्होंने चंगाई को पाया वे भी चिल्लाकर कहे कि 'उसे क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर चढ़ाओ'। हम भी अनेक आश्चर्यकर्म देखकर अंधकार में ही रह सकते हैं। प्रभु यीशु के जी उठने की सामर्थ्य से अनेक जीवन परिवर्तित हुए थे। पौलुस इस सामर्थ्य के महत्व को जानता था। जब प्रभु मरा तब हम उसके साथ मरे, उसके गाड़े जाने के साथ हम भी गाड़े गये और जब वह जिलाया गया तब हम भी उसके साथ जी उठे। उदाहरण के रूप में यदि किसी स्त्री की गर्भावस्था के समय मृत्यु हो जाती है तो उसके गर्भ में पल रहे शिशु की भी मृत्यु हो जाती है और जब माता को दफनाया जाता है तब शिशु को भी उसके साथ दफनाया जाता है। यदि किसी चमत्कार के द्वारा माता पुनःजीवित हो जाये तब गर्भ में का शिशु भी पुनः जीवित हो जायेगा। परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रभु यीशु हमारा सृष्टिकर्ता है, (यूहन्ना 1:3)।

वह न केवल सृष्टिकर्ता ही है परन्तु उसने हमारे लिए अपना जीवन भी दे दिया। विश्वास से हमें स्वयं के उसके क्रूस पर देखना है। वह क्रूस पर चढ़ाया गया तब मैं उसमें समाया हुआ था। जब वह मरा, तब मैं भी मरा, वह गाड़ा गया तब मैं भी गाड़ा गया, वह जी उठा, तब मैं भी जी उठा। इस प्रकार के महत्त्व को समझने के द्वारा ही हमें पुनरुत्थान की शक्ति प्राप्त होती है। प्रभु के दु:खों के कारण आंसू बहाने से यह शक्ति प्राप्त नहीं होगी उसके साथ ही महत्त्व का अनुभव हमें जब दिलायेगा और हमारे जीवन को बदलकर हमें आत्मिक विश्वासी बनायेगा।

अप्रैल 10

...नम्रता और मन दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित हैं क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। 1 पत. 3:4

पतरस पवित्र-आत्मा से भरपूर था, इसके पहले कि कुरनेलियुस के घर में वह उपयोगी हो, प्रभु को सर्वप्रथम उसके अहंकार को तोड़ना पड़ा। पतरस को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उसके अन्दर इतना अहंकार है। वह स्वयं को परमेश्वर का धार्मिक एवं नम्र सेवक समझता था। परन्तु परमेश्वर उसके भीतर प्रजातंत्रीय या राष्ट्रीय घमंड को देख सका। उसके अहंकार को तोड़ने के लिए प्रभु ने उसे बेसुध किया (प्रेरितों9:43)। वहाँ एक व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को गया, वह तुरन्त ही वापस आ सकता था, परन्तु किसी उद्देश्य से प्रभु ने उसे वहाँ रोका था। उसके समझ से बाहर उसकी सभी योजनाओं को विफल किया।

जब तक प्रभु ने अपनी रीति से उसे तैयार नहीं किया, तब तक उसे कहीं भी जाने नहीं दिया। इसी रीति से हमारे घमंड को तोड़कर प्रभु हमें नम्र और दीन बनाने के लिये हमारी योजनाओं को विफल करता है। थोड़े दिनों के बाद प्रभु ने पतरस को दर्शन दिया। उसने एक बड़ी चादर को उतरते हुए देखा जिसमें सभी प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, कि 'हे पतरस उठ, मार और खा'। पतरस जानता था कि यह तो प्रभु की वाणी है। फिर भी उसने कहा, 'नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है'। वह ऐसा प्रगट कर रहा था जैसे वह परमेश्वर से अधिक जानता था उसे ऐसे कहना चाहिये था, 'प्रभु, तू कभी भी गलत नहीं करता। तू जो आज्ञा दे रहा है उसका मैं पालन करूंगा'। जब तक हमारे अहंकार को तोड़ा नहीं जाता है तब तक हम पूर्ण हृदय से प्रभु के आधीन हो नहीं सकते हैं। 2:11 में, पौलुस द्वारा पतरस को दूसरी ताड़ना मिली। अभी भी पतरस के अन्दर छिपा हुआ अहंकार था जिसे तोड़ने के लिए परमेश्वर ने पौलुस का उपयोग किया। पौलुस स्वयं भी आत्मिक घमण्ड के जोखिम में था। (2 कुरि. 12:7)

अपने ज्ञान, सेवा, दर्शनों स्वप्नों तथा वरदानों के संबन्ध में हम घमण्ड करते हैं। पौलुस को नम्र बनाये रखने के लिये प्रभु ने उसके शरीर में एक कांटा चुभाया। आज तब हम यह नहीं जानते कि वह कांटा क्या था। वह बहुत ही कष्टदायक एवं असहनीय रहा होगा। प्रभु सर्वाधिकारी होने के कारण हम आशिष पाते हों परन्तु अनेक उपायों एवं रीतियों का उपयोग करके हमें नम्र बनाए रखता है।

अप्रैल 11

तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और सारे प्राण... के साथ प्रेम रख। मत्ती 22:37

चिड़िया के घोंसले के समान परमेश्वर चाहता है कि आप और मैं उसके लिए एक सदाकाल का निवास-स्थान बनायें। परमेश्वर चाहता है कि उस स्वर्गीय और सदाकाल के निवास-स्थान में आपका और मेरा भाग हो। 'जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो'। (इफि. 2:22)। निवास-स्थान एक ऐसा स्थल है जहाँ लोग रहते हैं। वह व्यापार का केन्द्र नहीं है। परमेश्वर इसी अर्थ में हमें उसका निवास-स्थान के रूप में बनाना चाहता है, जहां प्रेम दिखा सके और प्रेम को प्राप्त कर सके और वह स्थान है घर। प्रेम से घर बनता है। सोना, चांदी की वस्तुओं या घर-बार की वस्तुओं से घर बना नहीं सकते। जिस घर में प्रेम नहीं वह घर नहीं। प्रेम के लिए ऐसे दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, जो समान स्वभाव और श्रेणी और समान श्रेणी के हो। आप कुर्सी या मेज से प्रेम नहीं कर सकते हैं।

यूहन्ना 4:8 के अनुसार 'परमेश्वर प्रेम है। उसी के समान अद्‌भुत स्वभाव रखने वाले लोग उससे प्रेम करें ऐसा वह चाहता है। वह हमारे द्वारा प्रेम पाना चाहता है। आप एक कुत्ते को बहुत वर्षों तक प्रेम करते रहें, परन्तु वह आपके प्रेम का पूरी रीति से सम्मान नहीं कर सकेगा। आप उस पर दया दिखाइये, परन्तु आपके हृदय में क्या है वह उसे नहीं जान सकेगा। समान स्वभाव का व्यक्ति ही प्रेम की पूरी कद्र कर सकता है। जिनका उद्धार हुआ है उन्हें ईश्वरीय स्वभाव व भागीदारी बनाया गया है। (2पत 1:4), जिससे हम परमेश्वर से प्रेम कर सकें। परमेश्वर हमसे सच्चा एवं भरपूर प्रेम रखता है और वह हमसे प्रेम पाना चाहता है।

परमेश्वर ने हमारे लिये सब कुछ दे दिया और इसलिये हमारे पास से सब कुछ पाना चाहता है। उसने हमारे लिए सर्वस्व दे दिया इसलिए हम भी उसे सर्वस्व दे दें, यही उचित है। माता-पिता, पत्नि, पति या बच्चों से भी अधिक उससे प्रेम करें ऐसा वह चाहता है। उसके द्वारा अनन्तकाल तक प्रेम पाकर और उसे प्रेम करके धन्य होने के लिए परमेश्वर हमें देता है।

अप्रैल 12

क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों का आदर सत्कार है। इब्रा. 13:2

परमेश्वर ने इब्राहीम से (उत्पत्ति 18) में भेट किया जब वह उसको सर्वश्रेष्ठ और भरपूर आशिष देना चाहता था। परमेश्वर हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहता है। इसलिए हमें भी उसे अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहिये। इब्राहीम परमेश्वर को सच्चे हृदय से आदर देना चाहता था और जब उसने सारा को काम सौंपा तब सारा ने भी प्रसन्नता से उसका साथ दिया। उसने यह नहीं कहा कि, 'इतने सारे नौकर हैं, उनमें से किसी एक को कह'। अथवा 'मैंने तो अभी स्नान किया और कपड़े बदले हैं। अब फिर से रसोई में जाऊं'? उन दोनों ने, आनन्द और नम्रता के साथ काम किया। कैसा सुखी घर। पति-पत्नि एक मन होकर प्रेम से और प्रसन्नता से अथितियों की पहुनाई की।

कई परिवारों में पति-पत्नि के मध्य निरन्तर झगड़े चलते रहते हैं। प्रत्येक बात में पत्नि बुड़बुड़ाहट करती है। पति की आज्ञा मानना उसे हीनता भरा हुआ लगता है। कई बार वह ताना भी मारती है, कि मैं आपकी नौकरानी नहीं हूँ। आप मुझको आदेश नहीं दे सकते'। एकता के बदले वहाँ पर झगड़े होते हैं। लूत के घर की दशा ऐसी ही थी क्योंकि उसने सदोम को पसन्द किया था। सांसारिक चका-चौंध और लाभ को उसने पंसद किया। इसी रीति से अधिकांश विश्वासी लोग परमेश्वर के प्रति प्रथम प्रेम को छोड़ देते हैं और संसार के लोगों की मित्रता, सांसारिक लाभ और आनन्द को खोजते हैं। परिणाम-स्वरूप पूरा परिवार लगभग नाश हो जाता है।

परमेश्वर ने लूत से भेंट की परन्तु उसने उसका योग्य स्वागत नहीं किया, इसलिए वह पूरी आशिष का भरपूरी से आनन्द मानेंगे। जब आप प्रेम से दूसरों की सेवा करेंगे और आपके पास जो है उसे प्रेम से बांटेगे तब आपका घर आनन्दमय मसीही घर, सेवा का घर, आराघना का घर बनेगा, जहाँ, परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के लिये प्रेम राज्य करता है।

अप्रैल 13

यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ। यूह. 7:17

उद्धार के सिद्धान्त को सही रूप से समझने का आधार परमेश्वर की इच्छा को जानना और उसे पूरा करने के लिए पर निर्भर होना है। लोगों ने प्रभु यीशु के अनेक आश्चर्यकर्मों को देखा। उन्होंने उसे अधिकार-सहित बोलते हुए सुना, परन्तु प्रभु जो कहता था उसको वे समझ नहीं सके, क्योंकि वे उसकी इच्छा पूरी करने के लिये नहीं थे। उन्होंने यह स्वीकार किया कि प्रभु एक अद्‌भुत उपदेशक था (यूह. 7:15)। परन्तु उसके उपदेशों का बहुत ही कम असर लोगों पर पड़ा। हम भी अच्छे संदेश सुनते हैं और अच्छी शिक्षा प्राप्त करते हैं, परन्तु वह उसे हमारे हृदयों में समाता नहीं है।

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए हम तैयार नहीं होते है। इसलिए जो सुनते हैं उससे हमको लाभ नहीं पहुंचता। परन्तु यदि आप प्रत्येक बात में परमेश्वर की इच्छा खोजने को तत्पर है, चाहे उसके संबन्ध में निश्चयता करने के लिए लम्बे समय तक रुकना पड़े, और उसकी इच्छा पूरी करने को तत्पर है, तो कई गुप्त मर्मों को समझने के लिए परमेश्वर आपको ज्ञान देगा और गलत शिक्षा से आपको बचायेगा।

परमेश्वर की इच्छा जानकर पूरा करने का अधिकार हमारे प्रार्थना के जीवन को अधिक प्रभावकारी और फलदायी बनायेगा। इसलिए वह ऐसी वस्तुओं को मांगने से बचाएगा जो हमारे लिए और दूसरों के लिए भली नहीं है। एक जैसी लम्बी प्रार्थना लोगों को थका देती है। परन्तु जब आप परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप प्रार्थना करेंगे तो वह एक शक्तिवर्धक और प्रेरणा बन जायेगी। आप और दूसरे बल प्राप्त करेंगे और स्वर्ग आपके लिए खोल दिया जाएगा (लूका 3:21)। यदि आप निरन्तर परमेश्वर की इच्छा में जीएंगे तो आप प्रार्थना के समय का आनन्द से बाट जोहेंगे। घुटनों पर आने में आपको कोई प्रयत्न या मंथन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लम्बे समय तक प्रार्थना करने के बाद भी आप शारीरिक रूप से नवीन दिखेंगे।

अप्रैल 14

अवसर को बहुमूल्य समझो।

इफि. 5:16

परमेश्वर हमको जो अवसर (समय) देता है उसका उपयोग हमें परमेश्वर की महिमा के लिए करना चाहिए, क्योंकि हमको जो कुछ भी दिया गया है उसका हमें हिसाब देना होगा।

उदाहरणत: कि आप रेलगाड़ी में सफर कर रहे हैं और आपकी गाड़ी किसी स्थान पर पांच से छ: घंटे तक रुकी हुई है। तब आप इस समय आप किस रीति से उपयोग करेंगे? अधिकांश लोग चुटकुले बोलकर-सुनकर, हंसी-मजाक में या मूंगफली के दाने खाने में अपना समय बिताते हैं। बहुत से लोगों को हर समय कुछ खाने की आदत होती है। सफर के समय मुंह में कुछ डालने की आदत होती है। सफर के समय मुंह में डालने के लिए कुछ न मिले तो वे बेचैन हो जाते हैं। विश्वासी होने के नाते हमें अपना समय उपयोगी बनाना चाहिये।

प्रभु हमें कभी-कभी अधिक समय किसी विशेष उद्देश्य के लिए देता है। हो सकता है वह समय प्रार्थना, वचन का मनन या आत्मा जीतने के लिये दिया हो। ऐसे समय में प्रार्थना करनी चाहिये, 'प्रभु, इस समय अधिक उपयोग करने के लिए मेरी सहायता करे। यदि आपके दस पैसे खो गये हों तो आप पूरा मैदान छान मारते हैं। आप खरीददारी के लिये बाजार जाते हैं और अनेक दुकानें में जाने के बाद दस पैसे बचाते हैं तो उसमें बहुत गर्व करते हैं। यदि पैसों के लिये इतना सोच-विचार रखते हैं तो परमेश्वर के समय के विषय में क्या है? आप कितना समय गंवाते हैं? परमेश्वर के वचन के अनुवार जो बचा हुआ समय आपको मिलता है उसका उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करना चाहिये, जिससे कि आप सत्यता से ऐसा कह सकें कि आपने समय का सदुपयोग किया है।

अप्रैल 15

पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं, वे ही आदर के योग्य हैं और उन्हीं से मैं प्रसन्न रहता हूँ।
भजन 16:3

अधिकांश विश्वासी जगत के लोगों से धोखा खा जाते हैं। वे सांसारिक रीति से व्यवहार करते हैं। वे प्रभु की बातों से अधिक भोज एवं पर्यटनों में अधिक रस दिखाते हैं। इसलिये ही वे आत्मिक वृद्धि नहीं पाते।

विश्वासी होने के नाते जगत के लोगों के साथ हमारी संगति हो नहीं सकती है। उनकी सांसारिक क्रिया-कलापों में हमारी किसी प्रकार की हिस्सेदारी नहीं हो सकती। हम उनके प्रति प्रेम और विवेक प्रगट कर सकते हैं, परन्तु हमारी संगति प्रभु के लोगों के साथ ही होनी चाहिये। चाहे वे निर्धन या अनपढ़ ही क्यों न हों, वे हमारे अपने लोग हैं।

कॉलेज के दिनों में मेरा एक अच्छा मित्र था। जब मैं कनाडा से भारत वापस आया तब उससे भेंट करने गया। इसी बीच में वह बहुत ही धनी हो चुका था। थोड़े दिनों के लिये उसके साथ रहने की उसने मुझसे विनती की। मैं उसके साथ रहा और उस समय उसने मेरे प्रति बहुत ही प्रेम दिखाया और वह मुझे पूरी सुविधायें भी देता रहा, फिर भी बुझे उसके घर में परायापन ही लगता रहा। मैं उसके साथ प्रार्थना नहीं कर सकता था और न ही उसको परमेश्वर के विषय में कुछ सुना सकता था। मन को शान्ति के लिए कोई योग्य स्थान भी नहीं मिला, इसलिए मैं प्रतिदिन सुबह मनन् के लिये साथ वाले एक खेत में जाता था।

एक दिन मनन् का समय पूरा होने के बाद उस खेत के सामने के साथ वाले खेत से मुझे गीतों की आवाज सुनाई दी। मैंने उस ओर जाकर देखा तो वहाँ मिट्टी और खपरैलों से बना हुआ एक झोपड़ी था। मैं वहाँ खड़ा रहा और देखा कि एक परिवार मसीही गीत गा रहा था। मुझे बाहर खड़े देखकर वह भाई बाहर आया और मुझसे पूछा 'श्री मान' क्या आप किसी से मिलने आये हैं? मैंने कहा, 'नहीं, मैं भी मसीही हूँ। मैंने आपको मसीही गीत गाते हुये सुना और मेरा अंतःकरण आपकी ओर आकर्षित हुआ है'। उसने कहा, 'कृपया, अन्दर आईये,' मैं अन्दर गया। वह छोटी सी झोपड़ी थी। उसमें घर जैसा सामान नहीं था। मैं जमीन पर बैठ गया पर मुझे बहुत ही आनन्द अनुभव किया। यहाँ मेरा मित्र मेरे प्रति बहुत ही भला व्यक्ति था, उसके घर में कीमती घर-बार की चीजें थी और सब कुछ अच्छा था, फिर भी मैं स्वयं को पराया अनुभव कर रहा था। इस गरीब भाई से मैं पहली ही बार मिला और इसके विपरीत मुझे उसकी संगति से अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ, यह इसलिये कि हम साथ मिलकर गीत गाये और प्रार्थना भी किये। मैंने अपने मन में कहा, 'मुझे मेरे लोग मिले है'। हम परमेश्वर के और उसकी प्रजा के है। जिनका आकर्षण उनके सांसारिक मित्रों की ओर है वे आत्मिक वृद्धि प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

अप्रैल 16

निदान, हे बालकों उसमें बने रहो, कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।
1 यूहन्ना 2:28

हम प्रभु की मेज के आसपास एकत्रित होते हैं। तब हम सूचनात्मक रूप से गवाही देते हैं कि हमारा प्रभु यीशु मसीह वापस आ रहा है और उसे आमने-सामने देखने की हम आशा रखते हैं। साथ ही साथ यह भी गवाही देते हैं कि जब वह आएगा तब किसी भी प्रकार के पाप या शर्म के बिना आनन्द से हम उससे मिलेंगे। प्रभु की जांच करनेवाला दृष्टि हमें देखेगी, तब क्या हमारे प्रभु के आगमन की आशा में हम उसकी पवित्र आँखों से परखे जाने के लिए समय बिताना चाहेंगे और सभी बातें यथास्थित करने के लिए अनुग्रह मांगना चाहिये।

प्रभु की मेज में भाग लेने से पूर्व हमें प्रभु से एक प्रश्न पूछना चाहिये, प्रभु मुझसे, मेरे आम जीवन से, मेरे व्यक्तिगत जीवन से, मेरे शब्दों, कार्यों और संगति से क्या तू पूरी रीति से सन्तुष्ट है'? इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद बहुत शान्ति से प्रभु की उपस्थिति में बाट जोहें, और देखें कि वह आपके साथ क्या बात करता है।

यदि आप नया जन्म पाये हैं तो वह आपके साथ अवश्य बात करेगा, क्योंकि आपके अन्दर रहने और आपमें और आपके द्वारा कार्य करने के लिए और अपना स्वरूप को पूर्ण रूप से आपके भीतर लाने के लिए वह फिर से जीवित हो उठा है। इसलिये यदि आप ऐसी प्रार्थना करेंगे तो अवश्य वह आपको उत्तर देगा। जो कुछ वह बताये, उसे स्वीकार करें, गन्दे कार्य छोड़ दें, क्षमा पायें, और पवित्र लहू से धुल जाइये। प्रभु अनुग्रहकारी और बहुत ही दयालु है, वह शीघ्रता से क्षमा करता है।

अप्रैल 17

सुन, जो पुरूष यहोवा का भय मानता हो, वह ऐसी ही आशीष पाएगा। भजन. 128:4

'अब्राहम कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था। वह गर्मी का समय था, जब सामान्य रीति से लोग आराम करते हैं। ऐसा लगता है कि मानो अब्राहम किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसके मन में ऐसा लगता था कि परमेश्वर उससे भेंट करेगा। परमेश्वर के साथ अत्यधिक निकट की संगति अनुभव करने की इच्छा अब्राहम के अन्दर इतनी तीव्र थी कि उसे पहले से ऐसा आभास हुआ कि, 'परमेश्वर से आज मेरी भेंट होगी'।

यदि आप नया जनम पाये हैं तो आपके अन्दर पवित्र-आत्मा वास करता है। निकट के भविष्य में क्या होने वाला है उस विषय में पवित्र-आत्मा आपको कभी-कभी सलाह देगा या चेतावनी देगा। परमेश्वर की धीमी कोमल वाणी सुनने की आतुरता क्या आपके हृदय में है? परमेश्वर का धीमे से धीमा शब्द भी परख सकें ऐसा संवेदनशील बनने की इच्छा आप में है क्या? परमेश्वर की वाणी और परमेश्वर की उपस्थिति अनुभव करने की गहरी इच्छा आपके अन्दर होगी तो आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा।

इस कारण से आपको दिन का आरंभ घुटनों पर आकर प्रार्थना द्वारा करना चाहिये 'प्रभु, अभी और दिन भर तेरी उपस्थिति को अनुभव करने के लिए मेरी सहायता कर। इसे जीवन भर के लिए आदत बनायें। यदि परिवार में पति-पत्नि दोनों के हृदय में ऐसी प्रार्थना होगी तो परमेश्वर अवश्य आपको सुखी पारिवारिक जीवन की आशीष देगा। देखें कि अब्राहम अपने भेंटकर्ताओं का किस रीति से आवभगत किया। वह न केवल उनकी ओर दौड़कर गया परन्तु नम्रता से धरती तक नीचे झुका (स्मरण रखें कि उस समय वह 99 वर्ष का था)। दीनता और नम्रता का आत्मा सुखी घर बनाता है। कई बार जब सम्पन्नता बढ़ती है तब लोगों में घमण्ड आता है जैसे-जैसे सोना, चांदी सांसारिक वैभव बढ़ते है वैसे-वैसे परमेश्वर के लिए समय कम होता जाता है। प्रार्थना के समय अब घुटने नहीं मुड़ते हैं।

उसने प्रेम से और उत्साह से अतिथियों का स्वागत किया। इसी रीति से आप भी प्रेम से लोगों की आवभगत करेंगे तो आपका घर सुखी होगा और आप यहोवा से आशीष पाएंगे। जैसे-जैसे आप अधिक देंगे वैसे-वैसे आप अधिक पायेंगे भी, जैसे प्रेम आप दूसरों पर दिखाएंगे, वैसे ही अधिक प्रेम पायेंगे।

अप्रैल 18

...दाउद ने फिर पूछा, किस नगर में जाऊँ? उसने कहा, हेब्रोन में।

2 शमूएल 2:1

हेब्रोन तथा सिय्योन द्वारा परमेश्वर प्रत्येक आत्मिक हानि को वापस पाने में हमारी सहायता करता है। हेब्रोन का अर्थ है संगति, परमेश्वर के साथ अर्थात पिता और पुत्र के साथ संगति और दूसरा, एक-दूसरे के साथ संगति (1 यूहन्ना 1:3,4,6)। प्रभु के साथ हम जितना अधिक चलें और उसके साथ जितना अधिक निकटता का जीवन बितायें उतना ही परमेश्वर के साथ और उसके लोगों के साथ संगति अनुभव करने की इच्छा हमारे अन्दर बढ़ती जायेगी। यह दोनों साथ-साथ होते हैं, वे अलग हो नहीं सकते। दूसरा हेब्रोन विश्वास को दिखाता है। यहोशू की पुस्तक में, यह जानते हुए भी कि हेब्रोन में नफीली जाति वाले रहते हैं। क्लेश ने उसकी मांग की। उसे परमेश्वर पर विश्वास था कि प्रत्येक नपीली के ऊपर परमेश्वर उसे जय दिलायेगा।

हेब्रोन में रहने के लिए हमें परमेश्वर में दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। हेब्रोन एक आश्रय-स्थल था, (देखें यहो. 21:10,11,27) इसमें हेब्रोन का तीसरा अर्थ है कि आत्मिक रीति से जो निर्बल है उनका बोझ हम उठायें और जब वे पाप में गिर जायें, या उनके जोखिम में तब, प्रसव-वेदनापूर्ण और अत्यधिक प्रार्थना के द्वारा उन्हें खड़ा करें। हम मसीही लोग कई बार बहुत ही कठोर हृदय के हो जाते हैं। निर्बल मसीहियों को देखकर हम उन्हें दोषी ठहराते हैं और टीका-टिप्पणी करते हैं तथा उनके विषय में बातें फैलाते हैं। हमारा प्रभु उत्तम चरवाहा है, जो खोए हुई भेड़ों को ढूंढ़ता है और निर्बल भेड़ को वह अपने कांधों पर उठा लेता है।

यदि आप भी सब कुछ वापस पाना चाहते हो तो गिरे हुओं को आश्रय देना सीखें। प्रार्थना के द्वारा उन्हें बल दें और प्रेम के द्वारा उन्हें उठाएं। चौथा, हेब्रोन परमेश्वर के ऊपर सम्पूर्ण निर्भरता के विषय में सिखाता है। 'प्रभु, मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं'? और प्रभु ने कहा, जा। इसलिए दाऊद हेब्रोन गया। अपने ज्ञान और शारीरिक बल पर या मानवीय वस्तुओं के ऊपर निर्भर न रहें। संपूर्ण आत्म-विश्वास से स्वयं को खाली करें और प्रत्येक बात के लिए परमेश्वर के पास जाना सीखें।

अप्रैल 19

...मैंने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिये फिरता रहूँगा; मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा। यशा. 46:4,5

परमेश्वर हमको यशायाह नबी के द्वारा दृढ़ निश्चयता देता है कि, वह हमें जीवन भर उठाए रहेगा। मनुष्य होने के कारण हम डरे हुए होते हैं। बहुत वर्षों तक परमेश्वर की भलाइयों का उपभोग करने के बाद, उसके महान पराक्रम के कार्यों को देखने के बाद और प्रार्थना का उत्तर प्राप्त करने के बाद हम डर से भरकर पूछते हैं, कि 'इसके विषय में क्या है'? 'आने वाले कल के विषय क्या हैं'? हमारे मन डर और चिन्ता से भरा होता है। अपने भविष्य, आरोग्य, बच्चों, वृद्धावस्था या इससे भी कम महत्व की बातों के संबन्ध में निरन्तर चिन्ता करते रहते हैं।

यदि आपकी सन्तान न हो तो सन्तान पाने की इच्छा रखते हैं, बच्चे हों तो उनका पालन-पोषण और भविष्य के विषय में चिन्ता करते हैं। बच्चे यदि बलवा करनेवाले हों तो, किस रीति से उन्हें सुधारे उस चिन्ता में रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार की चिन्ता रहती है। परन्तु प्रत्येक प्रकार की चिन्ता और आतुरता को ले लेने के लिए वह एक पद काफी है। वे वचन किसी मनुष्य के वचन नहीं हैं। परन्तु हम जो उसके स्वर्गीय मीरास बने हैं उनसे, जीवित और प्रेमी परमेश्वर इन वचनों को कह रहा है, कि 'तुम्हारे बुढ़ापे के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा।' जब वह हमारा उद्धार करता है, तब जीवनभर की दायित्व का बोझ वह स्वयं पर लेता है। जीवन के वर्ष 70, 90, या 100 ही क्यों न हो, परमेश्वर के लिए आयु कोई बाधा नहीं है। इसलिये वह हमसे कहता है, 'तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा'।

दूसरे शब्दों में कहें तो, 'तुम्हारे अन्तिम सांस तक मैं तुम्हारे लिए जिम्मेदार हूँ। आपकी जरूरतें, आत्मिक, शारीरिक या भौतिक आवश्यकताएं कुछ भी क्यों न हों, उसकी चिन्ता न करें; और ऐसा विचार न रखें कि मैं तुम्हारी थोड़ी ही आवश्यकताओं को संभाल लूंगा। नहीं, मैं तुम्हारी सभी आवश्यकताओं और सभी बोझ को संभाल लूंगा। हम जब बहुत ही वृद्ध हो जाते हैं तब कोई हमें उठाये उसकी आवश्यकता होती है, क्योंकि हम स्वयं अपने आप उठा नहीं सकते हैं, परन्तु प्रभु यीशु कहता है, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा, क्योंकि मैंने तुम्हें बनाया है। तुम मेरी निज सम्पत्ति हो, इसलिए तुम्हारा सारा बोझ तथा जिम्मेदारी उठाने की चिन्ता मैं ले लूंगा'। जिस रीति से एक माँ अपने बच्चे को हंसी खुशी से उठा लेती है उसी रीति से प्रभु यीशु हमें कुशलता से उठा लेगा। प्रभु कहता है, 'मैं तुम्हें उठाए रहूँगा, उतना ही आराम दूँगा और प्रत्येक कष्टों से तुम्हें छुड़ाऊँगा'।

अप्रैल 20

...मेरा विवेक भी पवित्र-आत्मा में गवाही देता है कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दु:खता रहता है। रोमि. 9:1,2

परमेश्वर ने नहेम्याह के जीवन में पहले काम शुरु किया और उसके द्वारा अनेक लोगों को परमेश्वर के काम के लिए तैयार किया गया। परमेश्वर के लोगों के इतिहास में हम देख सकते हैं कि किस रीति से बारम्बार परमेश्वर ने किसी एक विश्वासी सेवक को या फिर उसके लोगों के एक बचे हुए छोटे झुंड को खड़ा किया जिससे उसका कार्य फिर से आरंभ हो सके। थोड़े लोगों की विश्वास-योग्यता के कारण परमेश्वर न अपनी प्रजा के लिए हमेशा महान कार्य किये। प्रभु चाहता है कि हम सब ऐसे बचे हुओं के भाग (हिस्सा) बनें जिनकी विश्वास-योग्यता तथा मध्यस्थी द्वारा परमेश्वर अपने ईश्वरीय उद्देश्य और योजना को पूरा कर सके।

नहेम्याह अत्यन्त दु:खी हो गया था क्योंकि यरूशलेम शहर उजाड़ पड़ा हुआ था और उसके फाटक जल गये थे। इसी रीति से परमेश्वर के काम के विषय में जो गहरी चिन्ता रखते हैं वे जब परमेश्वर के लोगों के आत्मिक जीवन में निर्बलता और दरिद्रता देखते हैं, तब दु:खी हुए बिना रह नहीं सकते हैं। इन दिनों में संसार के अनेक भागों में विश्वासियों में हमें क्षीणता और आत्मिक बालपन के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता है। परमेश्वर के वचन के अनुसार उसका महान सामर्थ्य हमें मिल सकता है। यदि परमेश्वर के लोगों को दयनीय दशा के विषय में हम दु:खी हों और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करने के लिए यदि हम तैयार होते हों तब हमारा जीवन अत्यधिक फलवन्त हो सकता है। हमारा एक जीवन्त उद्धारकर्ता है, जो कल, आज और युगानुयुग एक सा है। (इब्रा. 13:8; प्रका. 1:18) जब हम परमेश्वर के वचन पर पूरी तरह से आधीन होने में निष्फल होते हैं तब हमारा जीवन वीरान बन जाता है और हमें लगातार असफलता, पराजय और आत्मिक बालपन का अनुभव होता है।

परमेश्वर के वचन और उसकी आज्ञा की ओर संपूर्ण रीति से आधीन होने से ही परमेश्वर हमारे पक्ष में कार्य कर सकता है। यूह. 15:7 के अनुसार हम स्वयं को प्रभु यीशु के अधिकार के नीचे रखकर परमेश्वर में बना रहना चाहिये। छोटी सी छोटी बात में भी परमेश्वर के आधीन रहकर हम उसके द्वारा चलाये चलना चाहिये और उसके अंकुश और अधिकार में रहना चाहिये। तभी उसका यह वचन हमारे अन्दर पूर्ण होगा कि 'तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा' (यूह. 15:7)।

अप्रैल 21

...वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं। यूह. 10:10

लहू में हमारा जीवन है। लहू हमारे अन्दर बहता है इससे हम जानते हैं कि हम जीवित हैं। जब हृदय का धड़कना बन्द होता है तब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है। जब तक हृदय धड़कता है तब तक शरीर जीवित है, भले ही दिनों और महीनों तक भोजन ठीक से न लिया हो और शरीर अत्यन्त निर्बल और रोग-ग्रस्त हो। इसी रीति से प्रभु का जीवन हमारे अन्दर कभी-कभी ही नहीं पर निरन्तर बहता रहता है उसकी चेतना में हमें रहना चाहिये (कुलु. 3:4)। यदि नाड़ी यदि क्रियाशील है तब हम जान जाते हैं कि व्यक्ति में अभी भी जीवन है। प्रभु यीशु का प्रेम हमारे अन्दर स्वतंत्र रीति से निरन्तर बहता हो तो हम जीवित रह सकते हैं। अहंकार, ईर्ष्या या दूसरा कोई भी पाप इस बहाव को रोक सकता है या धीमा करता है।

आपके अन्दर जीवन का बहाव कैसा है? क्या केवल थोड़ी सी बूंद ही हैं या भरपूर और स्वतंत्र बहाव है? परमेश्वर चाहता है कि हमें भरपूर जीवन मिले। वह सब कुछ भरपूरी से देना चाहता है। भरपूर जीवन, भरपूर शान्ति, भरपूर सामर्थ्य और परिणाम-स्वरूप हमें भरपूरी से फलदायक करना है। जब-जब हमें यह आभास हो कि बहाव धीमा हो गया है, शान्ति, आनन्द और सामर्थ्य कम हुए हैं तब हमें अपने हृदय को जांचना चाहिये। स्वयं की जांच करके नम्र होकर कहना चाहिये, 'प्रभु, किस कारण से मेरी शान्ति कम हो गई है? किस कारण से तेरी उपस्थिति को मैं गहराई से अनुभव नहीं कर रहा हूँ? जय पाने के लिए मेरे पास पहले जैसा सामर्थ्य नहीं है, परमेश्वर के वचन के लिए पहले जैसी भूख नहीं है, प्रार्थना के लिए पहले जैसा बोझ भी नहीं है। कहीं तो कुछ रुकावट आई है और वह दूर होनी चाहिये। उसके बाद हम दृढ़ता-पूर्वक कह सकते हैं, 'प्रभु यीशु, तुम मेरी धार्मिकता हो। मैं अविश्वास-पूर्वक तुझे ग्रहण करता हूँ'। अपने मनोबल पर आधार न रखे। उसके जीवन का दावा करते रहे। कहीं भी बाहर निकलने से पहले कहें, 'प्रभु, मैं स्वयं को तेरे हाथों में सौंपता हूँ'। साधारण रूप से लम्बी यात्रा करने से पहले हम इस रीति से प्रार्थना करते हैं, 'प्रभु, हम पवित्र सभा में भाग लेने के लिए जा रहे हैं। हमारे साथ रह और हमें तैयार कर'। परन्तु छोटी यात्रा के लिए और यात्रा के अन्त में हम प्रार्थना नहीं करते हैं। यह तो हमारा स्वभाव है। हम तो केवल बड़ी-बड़ी बातों के विषय में प्रार्थना करते हैं और इस रीति से शैतान द्वारा हम धोखा खा जाते हैं। हम असावधानी और बिना लक्ष्य के होकर शान्ति तथा आनन्द को खो बैठते हैं। प्रभु यीशु मसीह के जीवन को दिन-प्रतिदिन ग्रहण करने के द्वारा हम भरपूरी प्राप्त कर सकते हैं।

अप्रैल 22

...मनुष्यों की आज्ञा का पालन ही कर्तव्य कर्म है।
प्रेरितों 5:29

परमेश्वर ने योना को नीनवे जाकर पश्चाताप का उपदेश देने का बड़ा काम सौंपा (योना 1:1)। परमेश्वर का सहकर्मी बनना यह सच में एक गौरव है। परन्तु परमेश्वर योना को कैसा गौरव और कैसा बड़ा अधिकार दे रहा था वह उसे नहीं समझ सका। आभारी होने के बदले योना भाग जाता है। विचार करें कि एक मुंशी को अचानक किसी राज्य का राज्यपाल की पदोन्नति दिया गया है, तो क्या वह उसका इन्कार करेगा? नहीं, आनन्द से और आभार-पूर्वक वह उसे स्वीकार करेगा। फिर भी, परमेश्वर के द्वारा दिये गये सम्मान-पूर्वक काम से जैसे योना भाग, वैसे ही अधिकांश युवक तुच्छ सांसारिक लाभ या आनन्द के लिए परमेश्वर की आज्ञा से दूर भाग जाते हैं।

उस समय योना किस कारण से भागा इसका सही कारण हम जानते नहीं हैं। शायद उसने ऐसा विचार किया होगा कि लोग उस पर भरोसा नहीं रखेंगे। शायद दूसरे लोग उसे गलत सलाह दिये होंगे। परमेश्वर के कई सेवकों को समस्याओं से भरी जगहों में भेजा जाता है तब पत्नि के चढ़ाने से वे भाग जाते हैं।

कितने ही युवाओं को परमेश्वर ने अपनी सेवा के लिए बुलाया है, पर वे ऐसा समझते हैं कि नौकरी करने के द्वारा वे परमेश्वर की सेवा ज्यादा अच्छी रीति से कर सकते हैं। आगे चलकर उन्हें पता चलता है कि परमेश्वर की आज्ञा न मानने से उन्हें कितनी बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है।

परमेश्वर ने योना को बुलावा देकर आज्ञा दी थी कि वह नीनवे जाकर लोगों को मन फिराने का उपदेश दे। योना 1:9 बताता है कि वह परमेश्वर का दास था। फिर भी, वह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके भाग गया। जिन्हें परमेश्वर गहरा अनुभव नहीं होता वे, उसे समझने में विफल होते हैं जो परमेश्वर कहता है और उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं।

अप्रैल 23

...इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। मत्ती 19:6

एक सुखी मसीही परिवार के लिए यह पहली शर्त है। आप परमेश्वर के द्वारा जोड़े जाते हैं इस विषय पर दृढ़ता रीति से विश्वास करें। आप ऐसा सोचते होंगे कि सभी परमेश्वर द्वारा जोड़े जाते हैं, क्योंकि विवाह किसी न किसी प्रभु मन्दिर में होता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उनका जुड़ना परमेश्वर की ओर से हुआ है। केवल वे जिन्होंने अपने विवाह के लिए परमेश्वर की इच्छा को ढूढ़ा और हम जो कि परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं, और ऐसा विश्वास जिन्हें है, वे ही परमेश्वर द्वारा जोड़े जाते हैं।

परमेश्वर का वचन बताता है, कि 'जितने परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'। (रोमि. 8:14) परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए सामर्थी होना और उसे पूरा भी करना, वह हमारे, मन के लिये और विश्वासियों का सबसे बड़ा अधिकार है। इस आनन्द के साथ तुलना कर सकें ऐसा दूसरा आनन्द मैं नहीं जानता। कई कथाओं में जोड़े अपना व्यक्तिगत इच्छा के कारण या दूसरे गलत कारणों से विवाह में बन्धते हैं। अधिकतर तो धन-दौलत के कारण विवाह करते हैं। अन्य लोग तो श्वेत (गोरी) त्वचा, सुन्दर चेहरे को देखकर या अपनी ही जाति को देखकर विवाह करते हैं। कई लोग जिसे वे 'प्रेम' कहते हैं उसके कारण विवाह करते हैं। यह प्रेम नहीं केवल वासना है। आज वे प्रेम दिखाते हैं परन्तु आने वाले कल के दिन वे लड़ाई और झगड़ा करेंगे। अन्य कई लोग दलालों के द्वारा विवाह सम्बन्ध में जुड़ते हैं।

इन प्रत्येक कथा में उनका उद्देश्य गलत और अयोग्य होता है। परमेश्वर का वचन बताता है, कि जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उनको मनुष्य अलग कर नहीं सकता है। विश्वासी लोगों के पास विवाह के लिए सहमत होने से पहले परमेश्वर के खोजी होकर उसकी इच्छा जानने का अधिकार है। ऐसा करने में एक वर्ष, दो वर्ष या उससे भी अधिक समय भले ही लगे। समय और व्यक्ति का तय करना परमेश्वर का काम है। आप परमेश्वर को आदेश दे नहीं सकते हैं। पवित्र-शास्त्र द्वारा अगुवाई मिलने तक बाट जोहना अच्छी बात है। पवित्र-आत्मा आपको ऐसा करने में मदद करेगा कि, 'मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो। प्रभु, मैं तेरी इच्छाको स्वीकार करूंगा/स्वीकार करूंगा/करूंगी। कृप्या मुझसे बात कर'।

अप्रैल 24

...क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है। इब्रा. 10:23

कई बार हमें विद्यालय या महाविद्यालय में, कार्यालय या पड़ोस में शत्रुओं का सामना करना पड़ता है। जब प्रभु यीशु के नाम के लिये हम दृढ़ रहते हैं तब वे हमारा ठट्ठा उड़ाते है। प्रगट रूप से या गुप्त रूप से, हमें ऐसे लोगों का सामना करना पड़ता है। कई लोग ऐसी परिस्थिति में व्याकुल हो जाते हैं। उनकी भूख और नींद मिट जाती है। कई दिनों तक वे दुःखी रहते हैं। हम चिन्ता करके शैतान को पराजित नहीं कर सकते हैं। हमें घुटनों पर आकर प्रार्थना करनी है कि प्रभु, मैं मानता/मानती हूँ कि तू ही शैतान को हरा सकता है। इस परिस्थिति पर तू पूरा अधिकार ले'। यदि आप इस प्रकार से पूरी समस्या को उसके हाथ में सौंप देंगे तो वह आपकी चिन्ता को ले लेगा।

किसी भी परिस्थिति में हमें विश्वास के हाथों को लम्बा परमेश्वर की प्रतिज्ञा का दावा करना है। केवल परमेश्वर की विश्वास-योग्यता पर निर्भर रहें और प्रतिज्ञा को ग्रहण करें। यशा. 54:17 में उसने प्रतिज्ञा किया है, 'जितने हथियार तेरी हानि के लिए बनाए जाएं, उनमें से कोई सफल न होगा...'। उसके वचन के प्रति संदेह हो तो व्यव. 7:9 और गिन. 23:19 पढ़े। वह तो प्रतिज्ञाओं को पूरा करनेवाला विश्वासयोग्य परमेश्वर है। उसने जो प्रतिज्ञायें की है वह अवश्य ही पूरी करेगा। निःसन्देह इन प्रतिज्ञाओं को हम जानते हैं, अनेक बार पढ़े हैं, और उनके विषय ज्ञान भी है। परन्तु हाथ छोटे होने के कारण हम दावा नहीं कर पाते और उसके आनन्ददायक अनुभव कर नहीं पाते है। विश्वास के लम्बे हाथों से इन प्रतिज्ञाओं का दावा करके उसी विश्वास में बने रहना सीखना आवश्यक है।

अप्रैल 25

यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। गला. 5:25

मैं मानता हूँ कि मत्ती 25 वें अध्याय में, प्रभु ने जो दस कुँवारियों का दृष्टान्त दिया है, उसमें मूर्ख और बुद्धिमान दोनों नया जन्म पाए हुये लोगों के विषय में कह रहा है। कुंवारी शब्द का उपयोग अविश्वासियों के लिए नहीं कर सकते हैं।

दूसरा, अविश्वासियों के पास प्रकाश नहीं होता। तीसरा, अविश्वासियों के पास पवित्र-आत्मा नहीं हो सकता और चौथी बात अविश्वासियों के पास प्रभु यीशु के आगमन के लिए न तो कोई उत्सुकता या इच्छा होती है। जो नया जन्म लिये है, वे ही प्रभु को देखने की लालसा रखते हैं और उसका स्वागत करने के लिए तैयार रहते हैं। परन्तु अधिकांश विश्वासी लोग मूर्ख कुंवारियों के समान होते हैं। प्रभु से मिलने के लिए वे आवश्यक तैयारियां नहीं करते हैं।

इसलिए प्रभु हमें चिताता है कि वह किसी भी समय आयेगा, उनके पास प्रश्न करने का कोई भी अधिकार नहीं है। इसके विपरीत अपने दीयों में और कुप्पियों में भरपूर तेल रखकर उससे मिलने के लिए हमें सदैव तैयार रहना चाहिये। तेल पवित्र-आत्मा का प्रतीक है। पर्याप्त तेल होने का अर्थ यह है कि पवित्र-आत्मा के अधिकार और उसके अंकुश में जीवन बीताना, यही दो बातें उन्हें सदैव तैयार रख सकती है।

पवित्र-आत्मा की भरपूरी के विषय में कई लोग गलत विचार रखते हैं। वे मानते हैं कि पवित्र-आत्मा से भरपूर होने के लिए विशेष रूप से चिल्लाना होगा और अन्य भाषाओं में बात करना होगा कई बार, पवित्र-आत्मा कौन है। इसे नहीं जाननेवाले लोग ही अधिक शोर करते हैं। पंजाबी भाषा में एक कहावत है, 'खाली बर्तन अधिक खनखनाते हैं' और जितना अधिक वे खाली रहते हैं उतना ही अधिक खनखनाते हैं। केवल शोर करना ही सच्चा भजन नहीं है।

अप्रैल 26

जो मैं करता हूँ, तू अब नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा। यूह. 13:7

परमेश्वर ने एक कारणवश आंधी में से अय्यूब के साथ बातें की। उस समय अय्यूब ने अपने हृदय में सोचा होगा कि क्यों परमेश्वर ने इतने अधिक दु:ख, वेदना और पीड़ा उसके जीवन में आने दिया। उसे स्पष्ट और सरल उत्तर देने के लिए परमेश्वर ने आंधी में से बातें की। अय्यूब जिन दु:खों, कसौटियों, पीड़ा और कठिनाईयों में से होकर जा रहा था उसका यह आंधी सूचक था, आंधी में फंसा हुआ व्यक्ति लाचार हो जाता है, एक बार मैंने लकड़ी के एक बड़े गत्ते को आंधी के कारण हवा में ऊंचे पर उड़ते हुए देखा। बहुत ही तेजी से वह गोल-गोल घूमता रहा। मैं समझ सका कि आंधी में जो कुछ भी फंस जाता है वह तिनके के समान हो जाता है।

जैसे आंधी अचानक आती है। इसी रीति से अय्यूब पर अचानक दु:ख आ पड़े। क्रमानुसार दु:ख आयें तो उसके लिए हम तैयार रहते हैं, यदि अचानक से आ पड़ें तब हम उनके लिये तैयार रहते हैं। अय्यूब पर मृत्यु, बिमारी और सम्पत्ति जैसे हानि अचानक ही आ गए कि वह भारी व्याकुल और उलझन में फंस गया। यह सब क्या हो रहा है इन्हें वह समझ नहीं सका। इन दु:खों के द्वारा परमेश्वर उसके साथ बात कर रहा था परन्तु वह परमेश्वर की वाणी सुन नहीं सका। इसलिए अब परमेश्वर आंधी में से उसके साथ बात करने लगा। अय्यूब इस आंधी में फंस गया और वह गोल-गोल जोर से घूमने लगा। उसकी स्त्री ने भी कहा, 'परमेश्वर की निन्दा कर और चाहे मर जाए तो मर जा'। उसके मित्रों ने अनेक विषयों में उसे दोषी ठहराया और कहा कि शायद उस के पाप के कारण ही परमेश्वर उसे दण्डित कर रहा था।

अंत में अय्यूब को बहुत आशीषें मिली और पहले से दुगुनी सम्पत्ति उसने प्राप्त की। अय्यूब अपने समय में नैतिक, मानसिक और शारीरिक रीति से सबसे महान पुरुष था परन्तु परमेश्वर को उससे संतोष न हुआ। वह अय्यूब को बहुत अधिक आशीष और ज्ञान देना चाहता था, इस कारण यह आंधी उस पर आने दिया। इसी आंधी के द्वारा परमेश्वर ने उस पर प्रगट किया कि वह परमेश्वर के विषय में कुछ ज्ञान रखता था फिर भी उसे परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ्य का निश्चित अनुभव नहीं था। आंधी के द्वारा अय्यूब ने सीखा कि परमेश्वर सब कुछ कर सकता है और उसके विचार को कोई रोक नहीं सकता। परमेश्वर उसके लिये वास्तविक बना।

अप्रैल 27

भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास-योग्य निकलें।
1 कुरि. 4:2

प्रभु ने हमें जो धन दिया है उस विषय में हमें विश्वासयोग्य रहना चाहिये। लूका 16:10,11 पढ़ें। अपने मसीही जीवन के आरंभ में मैं विचार करता था कि यदि मैं विश्वास-पूर्वक अपना दशमांश प्रभु को दूं तो शेष पैसों को अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकता हूँ। परन्तु एक दिन प्रभु ने मुझसे साथ बात करते हुये कहा, 'तुम अपने नहीं हो'। (1 कुरि. 6:19) तलवार के समान इन वचनों में मेरे हृदय को चीर डाला। परमेश्वर ने कहा, 'तेरा देह मेरा मन्दिर है। मेरी आज्ञा के बिना उनका उपयोग करने का तुझे कोई अधिकार नहीं है'।

उस दिन से मैंने यह पाठ सीखा कि परमेश्वर की आज्ञा के बिना मैं एक पैसा भी खर्च नहीं कर सकता हूँ। मैं कंजूस था इस कारण नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे उसका भण्डारी बनाया था। यदि हम परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार पैसे खर्च करेंगे तो यह पैसे बहुत फल लायेंगे। परन्तु बड़े पैमाने पर हम पैसों का उचित उपयोग नहीं करते, इसलिए हम वीरान और फलरहित रहते हैं। तब प्रत्येक छोटी सी बात के लिए परमेश्वर की सलाह लेना संभव हुआ। परमेश्वर की अगुवाई में वस्त्र, बूट या कोई अन्य वस्तु खरीदेंगे तो दूसरों की तुलना से लम्बे समय तक टिकेंगे और आपके पैसों द्वारा दूसरों को आशिष मिलेगी।

एक बार पंजाब में बड़ी सर्दी में कोई मेरी चप्पल चोरी करके ले गया। मैंने प्रभु से नई चप्पल खरीदने के लिए आज्ञा मांगी। परन्तु प्रभु ने मना किया। पूरा सप्ताह मैं नंगे पैर घूमा, परन्तु एक समय आया जब परमेश्वर ने पहले से भी अच्छी चप्पल मुझे दी। इसी रूप से उसके द्वारा दिये पैसों के विषय में हमें विश्वास-योग्य रहना आवश्यक है। कई विश्वासी ऐसे हैं जो होटलों में जाकर नाश्ता करने में अपना पैसा बर्बाद करते हैं और उनका विवेक उनको दोषी भी नहीं ठहराता है। घर में पर्याप्त भोजन होने के बाद भी वे अपनी इच्छा को रोक नहीं सकते। सुसमाचार के लिए जो धन उपयोग होना था, इस रीति से बर्बाद होता है। यदि परमेश्वर ने आपको घर दिया है, तो उसका उपयोग परमेश्वर को महिमा के लिए करना चाहिये। हमें परमेश्वर का विश्वास-योग्य भण्डारी बनना चाहिए।

अप्रैल 28

याह ने... इस्राएल को अपना निज धन होने के लिए चुन लिया। भजन. 135:4

परमेश्वर की दृष्टि में हम चपरास के चमकते मूल्यवान पत्थरों से भी अधिक मूल्यवान बन जाते हैं। कोयले का काला टुकड़ा गर्मी और भार के कारण हीरा बन जाता है, तो प्रभु यीशु का लहू हमें कितना विशेष मूल्यवान मोती बनायेगा। परमेश्वर की दृष्टि में हम अत्यन्त ही बहुमूल्य है। लोग हमें कई नामों से बुलाए। हमारे पड़ोसी और सगे संबन्धी ठट्ठो में हमें अनेक नाम दें, और कहें कि हम मूर्ख और हठीले हैं। परन्तु प्रभु यीशु मसीह कहता है कि उसके बहुमूल्य से खरीदे हुए होने के कारण हम उसके विशेष धन हैं (व्यव. 14:2)। जो बहुमूल्य लहू से खरीदे गये हैं वे प्रभु के लिए अत्यन्त बहुमूल्य हैं क्योंकि उनको खरीदने के लिए प्रभु ने अपना सर्वस्व दे दिया है।

मत्ती 13:44-46 में खेत में गये एक मनुष्य के विषय में हम पढ़ते हैं। अनुभवी होने के कारण एक खेत में छिपे हुए धन को वह खोज निकालता है। उस खेत को खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ था वो सब का सब बेच देता है। उसकी आंखे इस गुप्त धन को देख सकी। इसी रूप से बैंगलोर के पास सोना मिला था। उस स्थल का नाम कोलार है। कई वर्षों तक वह केवल जंगल ही जंगल था। एक दिन भू-वस्तु-शास्त्र को थोड़ा बहुत ज्ञान रखने वाले एक मनुष्य ने यह खोज निकाला कि कोलार में सोना है। उसने खोदने का काम शुरु किया। एक दो स्थल में उसे सोना मिला इसलिए उसने इस जमीन को खरीद लिया। इसी प्रकार से प्रभु को हमारे अन्दर छुपा हुआ धन दिखाई देता है। हमारे साथी उसे देख नहीं सकते; वे तो केवल हमारी मूर्खता, निर्बलता और निष्फलता ही देखते हैं। परन्तु हमारा सृजनहार होने के कारण प्रभु यीशु मसीह को हमारे अन्दर छिपा हुआ धन दिखाई देता है। इसलिए हमें खरीदने के लिए उसने सर्वस्व दे दिया। उसने अपना स्वर्गीय सिंहासन और महिमा छोड़ दिया। एक छोटे बालक के रूप में चरनी में उसने जन्म लिया। उसने स्वयं को पूरी तरह से खाली किया। जब समय आया तब अपने हाथ और पैरों को कीलों से ठोकने, के लिए पीठ पर कोड़े खाने, बाल नोचे जाने और मुंह पर थूके जाने के लिए दे दिया। उसके बहुमूल्य लहू के द्वारा उसने हमें खरीद लिया और हम जो पाप और सड़ाहट से भरे हुए थे, उन्हें बहुमूल्य पत्थर के समान बनाया।

अप्रैल 29

तब हिजकिय्याह ने भीतर की ओर मुंह फेरकर यहोवा से प्रार्थना की। यशा. 38:2

कभी-कभी हमारे जीवन में अस्वस्थ होने के समय होता है। जब तक हम इस मिट्टी के शरीर में हैं तब तक प्रत्येक प्रकार की बिमारियों को भोगते हैं, परन्तु हम परमेश्वर की रक्षा उसी प्रकार उसके चंगाई के स्पर्श का दावा कर सकते हैं। मैं अनेक अवसरों के विषय में जानता हूँ, जिसमें प्रभु ने अपनी चंगाई का स्पर्श दिया है। प्रभु के पास उसकी अपनी सामर्थ्य है। परन्तु जिस प्रकार हिजकिय्याह ने प्रार्थना की और प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी उसी रीति से हमें सरल विश्वास से प्रार्थना करनी चाहिये।

एक बार उत्तर भारत में अंग्रेजी सिपाहियों के लिए आयोजित सभा में संदेश देने की मैंने प्रतिज्ञा की थी। उसी शाम को अचानक मैं तेज बुखार से पीड़ित हो गया और मैं उठ नहीं सका। मैंने उनको सन्देश पहुँचाना चाहता था, कि 'मुझे तेज बुखार आया है, मैं आ नहीं सकता'। परन्तु घर में रहने के लिये मुझे थोड़ी भी शान्ति नहीं थी। प्रभु मुझसे ऐसा कह रहा था, कि 'तुझे जाना ही है'। तेज बुखार में जाना यह एक मूर्खता ही थी। परन्तु प्रभु के वचन और प्रतिज्ञा को देखते हुए मैं उस पर पूरा भरोसा रख सकता था। मैं बुखार से काँप रहा था फिर भी मैं सभा में गया। उन्होंने दो गीत गाये। परन्तु मेरा बुखार तो वहीं का वहीं रहा। उसके बाद सन्देश देने का समय आया और जैसे ही मैं बोलने को उठा कि तुरन्त ही मेरा बुखार उतर गया।

मैंने ऐसे अनेक अवसरों को देखा है। बालक के समान यदि हम विश्वास से प्रभु को पुकारते हैं तो वह हमें उत्तर देता है। यह सभी कसौटियाँ हमें दृढ़ करने के लिए तथा हम विश्वास-पूर्वक उससे लिपटे रहें इसलिये आते हैं। परमेश्वर ने हिजकिय्याह की सहायता की और मुझे यह विश्वास है कि हममें से अनेक लोगों को इस रीति से सहायता मिली है। परमेश्वर के साथ चलने के लिए दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। यशायाह के 37वें अध्याय में प्रभु ने हिजकिय्याह के लिये जो किया, उसके कारण 38वें अध्याय में उसके विश्वास को अधिक दृढ़ होते हुए हम देखते हैं। इसी रीति से हम जिस किसी अनुभव में से होकर जाते हैं वे अनुभव हमें दृढ़ और टिकाऊ विश्वास दिलाते हैं। सरल विश्वास से प्रभु से लिपटे रहने के द्वारा हम उसकी विश्वास-योग्यता को जीवन भर अनुभव कर सकते हैं। इसी रीति से प्रभु हमको सिखाता है।

अप्रैल 30

यों बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा, और... विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और...प्रार्थना करता रहा। नहे. 1:4

यरूशलेम शहर तथा उसके फाटक जले हुए थे और शहरपनाह को तोड़ दिया गया था, ऐसा सन्देश कुछ यहूदियों के द्वारा नहेम्याह के पास पहुँचा। (नहे. 1:2-3) तब उसने आंसुओं तथा उपवास सहित प्रार्थना काना आरंभ किया। उसने परमेश्वर को उसके वचनों को स्मरण कराया जो उसने इस्राएलियों को दिये थे। उसने अपने पाप स्वीकार किये, उसके बाद पिता के घर के पाप तथा परमेश्वर को प्रजा के पापों को स्वीकार किया।

नहेम्याह के समय में जो स्थिति इस्राएलियों की थी वैसी ही स्थिति आज भी कई विश्वासियों की है। उनके जीवन में बहुत असन्तोष दिखाई देता है यह इसलिये कि उन्होंने परमेश्वर को, उसके वचन को तथा उसके घर को अपने जीवन में यथा-स्थान नहीं दिये। (1 कुरि. 3:1-6) जब हम नम्र बनते हैं और सच्चे पश्चाताप के साथ परमेश्वर की ओर फिरते हैं, तथा पूरे हृदय से उसको आदर देते हैं तब ही हम उसकी भरपूर आशीषें प्राप्त कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में काँपते हैं, और पाप स्वीकार करते हैं तब परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनता है, हमारे पाप क्षमा करता है और हमें आशीर्वाद देता है।

2 इति. 7:14 में परमेश्वर की जो प्रतिज्ञा है उस पर विश्वास रखकर नहेम्याह ने कुछ दिनों तक विलाप और उपवास के साथ प्रार्थना की। यही सिद्धान्त विश्वासियों पर भी लागू होता है। जब वे स्वयं को नम्र करके पाप स्वीकार करते हैं और परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना करते हैं तब ही वे अपने प्रथम प्रेम को प्राप्त करते हैं। तब परमेश्वर भी उनके पक्ष में काम करना आरंभ करता है, और उनके ऊपर प्रार्थना और मध्यस्थ का आत्मा उंडेलता है। (नहे. 1:5-11) इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वयं को नम्र करने के द्वारा, हमारे अपराध स्वीकार करने के द्वारा तथा परमेश्वर के साथ सब कुछ यशास्थित करने के द्वारा ही हमारा जीवन पूरी तरह से फलवन्त होता है। आरंभ में जो आशीषें हमने प्राप्त की थी उन्हें हम फिर से प्राप्त करते हैं।

मई 1

जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे उसी समय...जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे... वे मारे गये।
2 इति. 20:22

नया जन्म पाने के बाद पवित्र-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हमारे भीतर जागने लगती है। हम समझते हैं कि पवित्र-शास्त्र का ज्ञान जैसे-जैसे अधिक प्राप्त करेंगे वैसे-वैसे हम आत्मिक रीति से बढ़ते जाएंगे। हम चाहे कितनी ही पुस्तक पढ़ें और चाहे कितने ही पदों को याद करें, परन्तु केवल पवित्र-शास्त्र ज्ञान द्वारा कोई भी व्यक्ति आत्मिक रीति से वृद्धि नहीं प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक समय प्रत्येक वस्तु के लिए प्रभु का आभार मानने के द्वारा, भजन करने से, स्तुति करने से, उसकी महिमा करने से हम आत्मिक रीति में बढ़ सकते हैं। दिन के आरंभ के कुछ पल शुद्ध भजन में बितायें, किसी भी प्रकार की विनती या प्रार्थना नहीं करे। प्रभु से कहें कि 'प्रभु, मैं तेरे पास आता हूँ, तेरी उपस्थिति में केवल तेरे साथ रहना चाहता हूँ, तेरी उपस्थिति अनुभव करना चाहता हूँ, तेरी वाणी सुनना चाहता हूँ, और तेरा सौंदर्य और महिमा देखना चाहता हूँ'।

जब आप परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने लगते हैं तब उसका भजन गाएं क्योंकि वह राजाओं का राजा है, उसकी दया भलाई, प्रेम और कृपा के लिए उसकी स्तुति करें। प्रत्येक कठिनाईयों के लिए उसकी स्तुति करें। अपने जीवन के कठिन समयो के लिए उसकी स्तुति करें, उसके कारण दु:खी नहीं होंगे, क्योंकि परमेश्वर कभी भूल नहीं करता है। जो कुछ वह हमारे जीवन में आने देता है वह विशेष के लिए ही होता है। इसलिए प्रत्येक विषयों के लिए हमें प्रभु का आभार मानना चाहिए (फिलि. 4:6)। प्रभु हमें कठिन परिस्थितियों में, बिमारी की अवस्था में, दरिद्रता में या किसी भी कष्ट में रखे, तो भी हम उसकी स्तुति, उसका भजन और उसकी महिमा कर सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक परिस्थिति विशेष उद्देश्य से ही आने देता है। जैसे-जैसे हम उसका भजन करते जाते हैं वैसे-वैसे हम वृद्धि पाते जाते हैं।

स्तुति और आराधना विजय का प्रतीक है। एक समय एक बड़ी सेना यहूदा के विरुद्ध चढ़ आयी। सेना की संख्या देखकर ही लोग भयभीत हो गये थे। परन्तु परमेश्वर ने एक नबी को भेजा जिसने नबूवत की कि यहूदा

युद्ध में विजयी होगा। लोगों ने उसकी बात पर विश्वास किया और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते उन्होंने युद्ध के लिए कूच किया (2 इति. 20:21-22)। बिना युद्ध किये ही शत्रुओं का नाश हो गया।

इसी रीति से, जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों में प्रभु को भजन उसकी महिमा और उसका गुणगान करते रहेंगे, तो हमारे विरुद्ध शैतान के जितने भी आक्रमण हैं उनको हम नाश कर सकते हैं। अधिकांश लोग पवित्र-शास्त्र ज्ञान के द्वारा, उपवास और लम्बी प्रार्थनाओं के द्वारा शैतान को हराने का प्रयास करते हैं। परन्तु वे बहुत ही थोड़े समय में समझ जाते हैं कि ऐसे प्रयास शैतान के आगे नहीं चलेंगे और इस कारण वे विफल हो जायेंगे। आत्मा और सच्चाई से प्रभु की स्तुति और भजन करने के द्वारा हम शैतान को हरा सकते हैं।

मई 2

हे भाई... तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं। फिले. 7

सुखी मसीही के घर में सच्ची एकता होती है। कितने ही परिवारों में पति-पत्नि बार-बार झगड़ा करते रहते हैं, परन्तु किसी अतिथि के आने पर प्रसन्न होने का दिखावा करते हैं।

फिलेमोन का घर सच्चा मसीही घर था। उसके घर में परमेश्वर के वचन को प्रथम स्थान दिया जाता था। फिलेमोन सेवा के लिए कहीं नहीं गया हो, परन्तु वह अपने घर में प्रेम और विश्वास के द्वारा सेवा करता रहा। जो कोई उसके घर आता था वे परमेश्वर के प्रेम को पाते थे। यह उसके घर का मुख्य लक्षण था। जो कोई वहाँ जाते थे, उनके लिए वह आदर सत्कार, प्रेम, सांत्वना और संगति का घर था।

मसीही घर में सभी सदस्य एक दूसरे के साथ जुड़े हुए, प्रेम और सेवा के लिए एक मन रखनेवाले होते हैं। चाहे कितने ही अतिथि आयें उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती है। वे प्रत्येक को एक ही समान दृष्टि से देखते हैं। चाहे वे गरीब हो या धनी, उच्च या नीच, शिक्षित या अशिक्षित, वे चाहे किसी भी समय में आयें, उन्हें कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

अरखिप्पुस को सहकर्मी कहा गया है यह इसलिए कि वह पौलुस के साथ प्रत्येक जगह जाता था। वे साथ मिलकर सुसमाचार प्रचार करते थे। इसी प्रकार से पिता और पुत्र के जीवन में परमेश्वर के वचन को प्रथम स्थान दिया जाता था। प्रिय आफिया पूरा स्थान देती थी। इसलिए कई पवित्र लोग इस परिवार के द्वारा प्रोत्साहित हुए थे। यह घर क्षमा का घर और प्रभु के प्रति आधीनता का घर भी था। उनके त्याग के द्वारा कई लोग उनके मित्र बने। परमेश्वर का सामर्थ्य और उनका प्रेम वहाँ प्रगट हुआ, परिणाम-स्वरूप कई लोगों के जीवन बदल गये, और वे प्रभु का भजन करने लगे। इस प्रकार वह सच्चा मसीही घर था और प्रभु यीशु की मण्डली वहाँ स्थापित हुई।

मई 3

...मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है। 2कुरि. 12:9

मेरे मन परिवर्तन के बाद दो वर्ष तक मैं प्रार्थना करता रहा कि परमेश्वर मुझे उसके सामर्थ्य का रहस्य बताये, जिससे मेरा जीवन विजयी और फलवन्त बने। दो वर्ष के प्रार्थना के बाद एक रात परमेश्वर ने मुझसे कहा, तेरे पाप किस रीति से क्षमा किये गये? मैंने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैंने विश्वास किया कि मैं उससे बड़ा पापी हूँ और मैंने विश्वास किया कि तूने मेरे पापों के लिए अपना लहू बहाया और मेरे पापों को क्षमा किया'।

उसके बाद प्रभु ने मुझसे कहा, अब क्या तू ऐसा विश्वास करता है कि तू सबसे निर्बल व्यक्ति है, और तेरे पास किसी प्रकार की सामर्थ नहीं है? तुरन्त ही मेरी सब शंकायें अदृश्य हो गई, और समझ गया कि अपने प्रभु के बिना मैं कितना निर्बल और लाचार हूँ।

प्रभु अत्यन्त विश्वासयोग्य है और वह मेरी निर्बलता को जानता है, इसलिए वह कहता है, 'मेरा अनुग्रह काफी है...। प्रत्येक व्यक्ति के लिए भरपूर अनुग्रह है। पर्याप्त अनुग्रह है। हम कैसे भी क्यों न हो, यदि हम दीन और नम्र रहेंगे तो प्रभु के हाथ में हम अद्भुत हथियार बनेंगे। मैं कह सकता हूँ कि प्रत्येक कदम पर मैं निर्बल और लाचार हूँ। परन्तु मैं उसके अनुग्रह पर विश्वास रखता हूँ। ऐसा विश्वास ही हमें उसके राज्य के योग्य बनाता है।

मई 4

जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई, और उनका मुंह कभी काला न होने पाया। भजन. 34:5

देश के अगुओं ने स्तिफनुस के विरुद्ध झूठे गवाहों को खड़ा किया। वे उसके विरुद्ध झूठी बातें कहते थे, तब पूरी महा-सभा ने उसके मुख की ओर देखा और उनको आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसका मुँह परमेश्वर के दूत के समान चमक रहा था। एक ही व्यक्ति के विरुद्ध कितने लोग उठ खड़े हुये, पूरी महासभा के लोग उसके विरुद्ध उठ खड़े हुये थे। एक के बाद एक झूठे आरोप लगाये गये और इसके बाद भी उसका चेहरा परमेश्वर के दूत के समान चमक रहा था। ऐसे सताव के समय में वह अधिक चमक रहा था। कैसा उद्धार। कैसा पात्र। ऐसा ही चमकता हुआ चेहरा हो यह कैसा अधिकार है?

यदि कोई आपके विरुद्ध बात करे अथवा कोई झूठी और लज्जाजनक अफवाह फैलाये यह जानकर आप बहुत उदास होकर घर आते हैं। परन्तु यदि आप परमेश्वर के द्वारा चुने हुए, अभिषिक्त, आत्मा से भरपूर पात्र हों, तो लोग जितना भी बुरा व्यवहार करें उतना ही आपका चेहरा अधिक चमकता जायेगा। लोग आपको धिक्कारें, आपके विरुद्ध अनेक झूठी और गलत बातें करें तो भी आपका मुख परमेश्वर के दूत के समान चमकेगा। निर्धनता में या अन्य किसी भी परिस्थितियों में आपका मुख चमकता रहेगा। हम जब प्रभु यीशु के पास आते हैं तब उसका प्रकाश सर्वप्रथम हमारे हृदय में, उसके बाद मुख पर और बाद में, हमारे मार्ग पर चमकता है। 'त्रिकोणिय दिव्य ज्योति'। कोई प्रचारक या सेवक नहीं, परन्तु प्रभु ने, जीवित परमेश्वर ने आपको चमकता हुआ चेहरा दिया है, और यदि ऐसा है तो कसौटियों, कठिनाईयों, सतावों और कष्टों के होने पर भी आपका चेहरा दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक चमकता रहेगा। ऐसे चमकते चेहरे से हम शैतान को हरा सकते हैं।

स्तिफनुस का बचाव करने के लिये किसी वकील की आवश्यकता नहीं थी। उसका चमकता हुआ चेहरा ही उसका पक्ष था। आपके संबंध में भी ऐसा ही होना चाहिये। दूसरे आपको धिक्कारें, सतायें या दुर्व्यवहार करें तो भी एक साक्षी के रूप में चेहरे पर प्रकाश होना आवश्यक है। (2 कुरि. 4:6) प्रभु की उपस्थिति में जैसे-जैसे अधिक समय बिताएंगे वैसे-वैसे आपके चेहरे पर अधिक प्रकाश आयेगा। अन्य लोग परमेश्वर का प्रकाश आपके मुख पर देखेंगे और तभी आप दु:खों के लिए भी प्रभु का आभार मानेंगे।

मई 5

देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है'। भजन. 127:3

विश्वासी माता-पिता को बेटा या बेटी के जन्म होने पर, समान प्रेम से ग्रहण करना चाहिए। भजन. 144:12 में हम पढ़ते हैं 'जब हमारे बेटे जवानी के समय पौधों के समान बढ़े हुए हों, और हमारी बेटियां उन कोनेवाले खम्बों, पत्थरों के समान हो, जो महल के लिये बताए जाए। 'विश्वासी के लिए प्रत्येक सन्तान चाहे वह लड़का हो या लड़की, दोनों ही मूल्यवान है और एक जैसे आनन्द और आभार के साथ ग्रहण करना चाहिए। कई जगहों में बेटा के जन्म पर बड़ी दावत दी जाती है, परन्तु बेटी के जन्म पर सामान्य भोजन ही दिया जाता है। लगभग प्रत्येक माता की इच्छा ऐसी होती है कि पहला बच्चा बेटा हो और बच्चा गोरा हो। माता-पिता को बच्चों के प्रति पक्षपात नहीं करना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को एक समान प्रेम, देखभाल, आनन्द और आभार के साथ ग्रहण करना चाहिये।

प्रत्येक बच्चे के लिए परमेश्वर के पास निश्चित योजना होती है। यिर्मयाह नबी के विषय परमेश्वर ने कहा, गर्भ में रचनों से पहले ही मैंने तुझ पर चित्र लगाया और उत्पन्न होने से पहले ही मैंने तुझे अभिषेक किया, मैंने तुझे अभिषेक किया; मैंने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया' (यिर्म. 1:5) प्रार्थना के द्वारा विश्वासी माता-पिता अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है उसे खोज सकते हैं, और प्रार्थना के द्वारा बच्चों को उस योजना में मार्ग दर्शन करते हुए ले जा सकते हैं।

मई 6

...यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। 1 यूह. 5:14

पहले जब हन्ना ने बच्चे के लिए प्रार्थना की तब उसकी प्रार्थना में स्वार्थ की आवश्यकता और दु:ख की ओर उसका ध्यान था। यद्यपि वह निष्कपट होकर प्रार्थना करती थी। बाद में उसे यह समझ आया कि परमेश्वर की भी यही आवश्यकता है, और यह आवश्यकता उसकी स्वयं की आवश्यकता से भी अधिक बड़ी है। इसलिये तो परमेश्वर के उद्देश्य में स्वयं भी भाग ले सके।

इस कारण से उसने अलग रीति से प्रार्थना की 'प्रभु, मुझे पुत्र दे, कि मैं उसे वापस तुझे दूं'। इस रीति से प्रार्थना करने के द्वारा परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे पुत्र दिया जो उसके स्वयं के लिए ही नहीं, परन्तु परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने और पूरे जगत के लिए आशिषों का कारण बना।

कई बार हमारी प्रार्थना भी स्वार्थी होती है। हम अपने विषय में, अपने प्रियजनों के विषय में और अपने झुंड के विषय में ही विचार रखते हैं। इस रीति से अपने अन्धेपन और स्वार्थ से भरकर परमेश्वर को सीमित कर देते हैं। हम निष्कपट होने पर भी परमेश्वर के विचार को नहीं समझ सकते और परमेश्वर के लोगों के अध:पतन को नहीं जान सकते हैं। हन्ना के समान हम प्रार्थना कर नहीं सकते क्योंकि परमेश्वर द्वारा प्रगट विषयों के लिये स्वयं को संपूर्ण रीति से सौंप देने के बदले हम स्वार्थी प्रार्थनाएं करते हैं, जिसका उत्तर हमें नहीं मिलता।

हमें यह जानना आवश्यक है कि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं और परमेश्वर की इच्छा को जानकर और उसकी आवश्यकता को परखकर उसके उद्देश्य को पूरा करने में लग जाना चाहिये। हमारी योजनाओं और कार्यक्रमों पर परमेश्वर की आशीष मांगने के बदले हम पूरी रीति से परमेश्वर को उपलब्ध होना चाहिये, जिससे कि वह अपनी इच्छानुसार हमारा उपयोग कर सके।

मई 7

अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।
प्रेरितों. 22:16

बपतिस्मा की आवश्यकता और उसकी महत्वता के संबंध में अधिकांश विश्वासी लोग अनभिज्ञ है। यदि हमारे शरीर में किसी विटामिन की कमी हो जाती है तो हम बिमार पड़ जाते हैं। इसी रीति से यदि पानी में बपतिस्मा की साक्षी के आधीन न हों तो हम आत्मिक जीवन में वृद्धि नहीं प्राप्त कर सकते हैं। शैतान इस विषय के संबंध में विश्वासियों को अंधा रखने के लिए कई युक्तियां रचता है। कई विश्वासी लोग ऐसा तर्क करते हैं कि हम नया जन्म पाये हैं यही काफी है। बपतिस्मा की कोई आवश्यकता नहीं। नामधारी मसीहियों के लिए बपतिस्मा एक संस्कार है, परन्तु विश्वासियों के लिए यह एक गवाही है। बपतिस्मा के द्वारा प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में हमारी सहभागिता के रहस्य को हम पर प्रगटीकरणों द्वारा समझ सकते हैं।

मेरे मन-फिराव के बाद दो वर्ष तक मुझे बपतिस्मा का विचार तक नहीं आया। मैं प्रत्येक दिन पवित्र-शास्त्र पढ़ता था। कई बार तो मैं पूरा दिन पवित्र-शास्त्र पढ़ने में ही बिताता था, फिर भी बपतिस्मा की आवश्यकता नहीं ऐसा मानकर मैंने बपतिस्मा नहीं लिया। सन् 1932 के फरवरी महीने में एक शनिवार को सुबह जब मैं मनन कर रहा था। तब मत्ती 3:13 के वचन द्वारा प्रभु ने मुझ से बात किया, 'उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया'।

प्रभु ने बहुत ही स्पष्ट रीति से मुझसे पूछा, कि 'क्या अपने उद्धारकर्ता की तुलना में तू किसी भी रीति से अधिक उत्तम है'? मैंने कहा, प्रभु, ऐसा मैंने कभी नहीं कहा'। तब उसने सवाल किया कि, 'फिर बपतिस्मा के विषय में क्या'? प्रभु ने मुझसें बहुत स्पष्ट बात करते हुए समझाया कि स्वयं उसको बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी, परन्तु उसने तो मेरे लिये बपतिस्मा लिया। दूसरे ही दिन मैंने बपतिस्मा लिया। उस दिन मैंने स्वयं ही सभा लिया और सभा के मध्य मेरा बपतिस्मा हुआ। जब मैं पानी में से बाहर आया तब बहुत आनन्द से भर गया और उस दिन से पवित्र-शास्त्र मेरे लिए एक नई पुस्तक बन गई। प्रार्थना करने और गवाही

देने में मैंने बहुत ही स्वतंत्रता का अनुभव किया। मेरे लिए सब कुछ नया हो गया था। सुसमाचारों में और पत्रियों में बपतिस्मा के संबंध में 51 सदंर्भ है। बपतिस्मा, यह कोई धार्मिक विधि नहीं है परन्तु वह एक गवाही है। जो लोग बपतिस्मा के आधीन नहीं होते वे पराजित जीवन जीते हैं। विजय के लिये वे मनोबल, उपवास या लम्बी प्रार्थनाओं के ऊपर आधार रखते हैं, परन्तु वे हार जाते हैं।

प्रभु यीशु के साथ की एकता से हमें जय प्राप्त होती है। बपतिस्मा के द्वारा हम यह प्रगट करते हैं कि हम अपने प्रभु यीशु के साथ आत्मा में एक रूप हुए हैं। इसलिये मसीह की भरपूरी में अपना भाग पाने के लिए बपतिस्मा एक आधार (रूपी) सिद्धान्त है।

मई 8

वे बल पर बल पाते जाते हैं, उनमें से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा। भजन. 74:7

जब प्रभु यीशु का पुनरुत्थान हुआ तो उसने कफन को कब्र में ही रहने दिया, परन्तु लाजर कफन के साथ बाहर आया। (यूह. 11:44) इसके पीछे एक विशेष उद्देश्य था। यदि प्रभु चाहता, तो वह कफन के बिना उसे बाहर लाया होता। परन्तु उसके बाहर आने के बाद प्रभु ने कहा, 'उसके बंधन खोल दो'। दूसरे लोगों की सहायता की उसे आवश्यकता थी। हम सबको संगति की आवश्यकता है। संगति के बिना हम रह सकते हैं। अधिकांश विश्वासी लोग संगति के अभाव के कारण आत्मिक रीति से निर्बल रहते हैं।

प्रभु के साथ उन्हें थोड़ा अनुभव तो रहता है परन्तु विश्वासियों के साथ संगति रखना उन्हें पसंद नहीं। वे घर में ही रहते हैं, कई लोग केवल किताबें पढ़ते हैं और कहते हैं, क्यों वहाँ जाकर समय नष्ट करें। 'इस रीति से वे संगति को हल्की बात मानते हैं। पूर्ण वृद्धि के लिए हमें संगति की आवश्यकता है, जैसे की लाजर को कफन से मुक्त होने के लिए अन्य चेलों की आवश्यकता पड़ी।

हम देखते हैं कि प्रार्थना, आराधना और गवाही सब एक साथ होते हैं यदि हम अकेले प्रार्थना करें तो पूरा दिन प्रार्थना करने के बाद भी प्रत्येक विषय के लिए प्रार्थना कर नहीं सकते। जब दूसरे विश्वासियों के साथ प्रार्थना करते हैं तब अनेक विषयों के लिए प्रार्थना करने की छूट हमें मिलती है, और हमें अत्यन्त आनन्द होता है। परमेश्वर के वचन के संबंध में भी यही सत्य है। जब घर रहते हैं तब परमेश्वर के वचन में से विशेष प्रकाश नहीं मिलता है।

परन्तु जब पवित्र-शास्त्र के अभ्यास या अन्य सभाओं में जाते हैं तब बहुत प्रकाश मिलता है। सेवा के संबंध में भी साथ मिलकर वचन देने का अनुभव प्राप्त होता है। हमारी प्रत्येक आवश्यकता, कसौटी और परीक्षाओं के लिए पुनरुत्थान के सामर्थ का अधिक सुखानुभव करने के लिए हममें से प्रत्येक को विश्वासियों की तथा परमेश्वर के सेवकों को संगति की आवश्यकता है। मूसा परमेश्वर का भक्त था, परमेश्वर के साथ आमने-सामने

बातें करता था, फिर भी वह निर्बल मनुष्य ही रहा। निर्ग. 17 में पढ़ते हैं कि उसे बैठने के लिए पत्थर की आवश्यकता पड़ी और हारून तथा हूर ने उसके हाथों को टेक देकर उसे ऊँचा रखा। वह तो विश्वासियों की संगति के द्वारा प्राप्त की गई कृपा और शक्ति का यह अच्छा चित्रण है। युद्ध में शक्तिशाली होने के लिए हमें अन्य विश्वासियों की सहायता एवं संगति की आवश्यकता है।

जब हम नया जन्म प्राप्त करते हैं तब हम आत्मिक नहीं बन जाते हैं। हमारी दृढ़ता और वृद्धि हमें विश्वासियों की संगति के बिना नहीं मिलेगी। परमेश्वर के लोगों की संगति और प्रार्थना सभा को तुच्छ समझने की गलती, दोनों ही आत्मिक उन्नति को हानि पहुँचाती है।

मई 9

परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएंगे...। भजन. 60:12

उद्धार पाने के पूर्व हमारा चित्त धन और सम्पत्ति पाने में लगा हुआ था परन्तु परमेश्वर की सन्तान होने के कारण हमारा चित्त स्वर्गीय वस्तुओं पर लगा होना चाहिये (कुलु. 3:1)। इसी अध्याय में पौलुस लिखता है कि 'तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'।

(पद 9-10) यरदन नदी को पार करने के द्वारा भी यह दिखाया गया कि इस्राएलियों ने पुराने मनुष्यत्व को उतार डाला और बिल्कुल नये जीवन में वे प्रवेश कर रहे थे। हम भी इसी रीति से विश्वास से कहते हैं कि प्रभु यीशु ने हमारे पुराने मनुष्यत्व को उसके पापी स्वभाव सहित उतार डाला है और विश्वास से मसीह के पुनरुत्थान में जो जीवन की नवीनता प्रगट हुई उसका भी दावा करते हैं।

जिस रीति से हमारे दैनिक कामकाज के लिए शारीरिक शक्ति प्राप्त करने के लिये हमें भोजन की आवश्यकता है उसी रीति से अलग-अलग आत्मिक दायित्वों को निभाने करने के लिए और अनेक प्रकार की परीक्षाओं पर जय प्राप्त करने के लिए हमें प्रभु यीशु मसीह के जीवन की आवश्यकता है।

यदि हम उचित रीति से भोजन न लें तो हमारा शरीर हमारा साथ नहीं दे सकता और एक ही बार भोजन करके लम्बे समय तक शक्ति प्राप्त कर लेना यह भी संभव नहीं है। हमारे शरीर की रचना ही ऐसी है कि दिन में दो से तीन बार भोजन करना पड़ता है। आत्मिक रीति से भी शक्ति प्राप्त करने के लिए विश्वास-पूर्वक प्रभु यीशु मसीह के जीवन को अपनाना आवश्यक है। प्रतिदिन हम उससे कह सकते हैं, 'प्रभु, तेरा जीवन ही मेरा जीवन है। आज के दिन-भर का दायित्वों और कार्यों के लिए तेरे जीवन की मुझे आवश्यकता है'। इस रीति से हम बलवान होते हैं और अपने निर्बलताओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा हम अवश्य ही निष्फल होंगे और निर्बल ही रहेंगे।

मई 10

यीशु ने उनसे कहा, जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा। यूह. 6:35

सदोम का राजा अब्राहम के प्रति बहुत ही दयावान हो गया और कहने लगा कि, प्राणियों को तो मुझे दे, और धन को अपने पास रख'। यह अब्राहम के लिए बड़ी परीक्षा का समय था। सदोम के राजा की अशुद्ध सम्पत्ति में से अब्राहम कोई भी भेंट ले यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी इसलिए परीक्षा पर जय प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक बल अब्राहम को देने के लिए मलिकिसिदक रोटी और दाखमधु लेकर उसके पास आता है और अब्राहम को आशीष देता है। परीक्षा पर जय प्राप्त करने के लिये बल मिले इस उद्देश्य से अब्राहम को यह आत्मिक भोजन दिया गया था। मलिकिसिदक हमारे प्रभु यीशु मसीह की प्रतिछाया रूप है। क्योंकि प्रभु हमारे लिये जीवन की रोटी और उसी प्रकार महायाजक भी बना है। (इब्रा. 7:1-3)।

प्रभु यीशु मसीह हमारी जीवन की रोटी है यह विचार यूहन्ना के छठवें अध्याय में सात बार व्यक्त किया गया है। प्रभु यीशु को हम किस रीति से खा सकते हैं और किस रीति से पी सकते हैं? विश्वास से और पवित्र-आत्मा की सहायता के द्वारा हम कहीं भी और किसी भी समय उसे खा सकते हैं और पी सकते हैं। शारीरिक रीति से हमें जब भूख लगती है तब हम खाते हैं और प्यास लगती है तब पानी पीते हैं। वैसे ही आत्मिक रीति से यदि हम भूखे या प्यासे होते हों तब ही हम प्रभु यीशु को खा-पी सकते हैं और हम इस प्रकार से किसी भी परीक्षाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिदिन हममें से प्रत्येक को अनेक परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु प्रभु यीशु मसीह को हमारा प्रतिदिन की रोटी और जल बनाकर परमेश्वर ने प्रेम-पूर्वक विजय का प्रबंध किया है। विश्वास से कहें, 'प्रभु यीशु, तू ही मेरी रोटी और तू ही मेरा हल हो। तू ही मुझ पर कृपा कर, मुझे भीतरी बल दे और आज मेरे समक्ष जो-जो परीक्षायें आती हों उनका सामना करने के लिए मुझे बल दे। मुझे सदोम की वस्तुओं से भ्रष्ट होने से बचा। मुझे केवल तुझ पर ही पूरा भरोसा रखना सिखा। सभी आवश्यकताओं के लिए तुझ को ही देखना मुझे सिखा'। उसी समय, अवश्य ही वह आपके विश्वास से उत्पन्न होगा।

मई 11

स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। भजन. 73:25

कुछ लोगों को प्रार्थना करना कठिन दिखाई देता है। आरंभ में मुझे भी यह बहुत कठिन दिखाई दिया। मैं दिन में कई घंटों तक पवित्र-शास्त्र पढ़ता था। प्रभु ने सिनेमा और अन्य सांसारिक बातों की इच्छा ले लिया था। जिससे दूसरी सभी किताबों को छोड़कर मैं पूरे दिन पवित्र-शास्त्र ही पढ़ता था। मैं बारह घंटे या इससे भी अधिक समय तक पवित्र-शास्त्र पढ़ता हुए नहीं थका। परन्तु पांच मिनट से भी अधिक समय तक मैं प्रार्थना नहीं कर सकता था। मैं बहुत प्रयत्न करता था, परन्तु थोड़े मिनट प्रार्थना करने के बाद या तो मेरे विचार भटकने लगते या मैं सो जाता था। दो वर्ष से भी अधिक समय तक ऐसा ही चलता रहा। परन्तु उसके बाद, प्रभु की स्तुति हो, कि उसने मुझे उसके साथ बात करना सिखाया। यह तो मेरा सबसे मूल्यवान अनुभव रहा और प्रभु ने मेरे अन्तःकरण से दूसरी सब इच्छाओं को ले लिया। जब भी मैं प्रभु के पास गया हूँ मैंने कहा, 'प्रभु, पैसा, ज्ञान या अन्य किसी आवश्यकताओं के लिए तेरी कृपा प्राप्त करने मैं नहीं आया हूँ। तू चाहे मुझे कहीं भी रख, चाहे कहीं भी भेज, मैं केवल तेरे साथ ही रहना चाहता हूँ। तेरे साथ, हाँ तेरे ही साथ रहने का मुझे अधिकार और मान दे'।

इस रीति से जब आप उसकी ईश्वरीय उपस्थिति में आते हैं तब आपकी थकावट, भय और चिन्ता अदृश्य हो जाएंगी। आपको भय और कठिनाई चाहे कुछ भी क्यों न हो, चाहे घाव कितना ही पीड़ादायक क्यों न हो, प्रभु यीशु के पास जाकर अपनी चिन्ता, कठिनाईयों दुःखों के विषय में न कहें। आपके बोलने से पहले उसे वह जानता है। आप घुटने टेककर कहें, 'प्रभु, मैं तेरे साथ समय बिताना चाहता हूँ। मुझे तेरी उपस्थिति को जानने दे। 'कठिनाईयां दूर हो जायेंगी और जब घुटनों पर से उठेंगे तब आशीष और ताजगी का अनुभव करेंगे।

मई 12

जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार...कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो, और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ हो। 1 यूह. 1:3

प्रथम में हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारी सहभागिता है (1 कुरि. 1:9)। उसके बाद हमारे पिता परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता है। (1 यूह. 1:3)। अंत में हमारी सहभागिता एक दूसरे के साथ तथा जो परमेश्वर के प्रकाश में चलते हैं उनके साथ हैं (1 यूह. 1:7)। यह सहभागिता परमेश्वर पिता तथा परमेश्वर पुत्र से आरंभ होती है। उसके बाद पिता परमेश्वर तथा पुत्र परमेश्वर की ओर से हमें जो मिला है, उसे हम एक दूसरे के साथ बांटते हैं। प्रात:काल घुटनों पर रहते हुए हम पिता परमेश्वर के साथ बात करते हैं, रात्रि को आराम करने से पूर्व उसके साथ बात करते हैं, और वह हमारे साथ बात करता है। उसके बाद जब हम मुहल्लों में या घर में साथी विश्वासियों के साथ मिलते हैं, तब जो कुछ मिला है, उसके विषय में बात करते हैं। यह सच्ची सहभागिता है।

डींगे मारना, निंदा करना, कॉफी या चाय पीने के लिए एकत्र होने से कोई उन्नति नहीं होती है। यह कोई सहभागिता नहीं है। परन्तु परमेश्वर से संबन्धित बातों के विषय में तथा स्वर्ग के विषय बोलते हैं तब यह सच्ची सहभागिता है। दूसरों से कहें कि किस रीति से प्रभु प्रार्थना सुनकर उसका उत्तर देता है, किस रीति से परिवर्तित करता है और चंगाई देता है, इत्यादि आरंभ के विश्वासी लोग जब एकत्र होते थे तब वे अपने आत्मिक अनुभवों को बांटने से बल प्राप्त करते थे और इस रीति से वे एक दूसरे के द्वारा सांत्वना पाते थे। जब वे देखते थे कि प्रभु किस रीति से दूसरों के जीवन में कार्य करता है, तब अपनी कठिनाईयों तथा दु:खों को भूल जाते थे। सांत्वना पाने की यह स्वर्गीय योजना है।

हम सब कभी न कभी निराश तथा दु:खी होते हैं। परन्तु परमेश्वर हमें शान्ति देने, दृढ़ करने तथा आनन्दित होने के लिए साथी विश्वासियों को दिया है। प्रेम और संगति में पराक्रम तथा शक्ति है। एक देह के रूप में एकत्र होने से हम आना शोक तथा दु:ख भूल जाते हैं। एक दूसरे का बोझ उठाने के द्वारा हम मसीह का नियम पूरा करते हैं। उसके नाम में एकत्र होकर प्रार्थना करने के द्वारा हम शैतान को बांधते हैं। (मत्ती 18:18-19)

मई 13

और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें, और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना... और इनकी चर्चा किया करना...। व्य.वि. 6:6-7

नामान की पत्नि की दासी, इस्राएल की एक छोटी लड़की परदेस में, अपने घर से बहुत दूर थी। इसके बाद भी उसे नबी पर बड़ा महान विश्वास था। परिणाम-स्वरूप इस सेनापति को जीवित परमेश्वर के नबी के पास ले जाने का उसे सम्मान मिला। आगे चलकर नामान ने गवाही दी होगी कि 'इस छोटी लड़की के द्वारा मैं जीवित परमेश्वर को पहचान सका हूँ'। यह लड़की परमेश्वर की साक्षी बनी। उसके माता-पिता ने उसे जीवित परमेश्वर के संबंध में और नबी के विषय में सिखाया होगा इस कारण से यह सब कुछ संभव हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि माता-पिता की अपने बच्चों के प्रति बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। प्रत्येक बच्चा परमेश्वर का दान है। उनको परमेश्वर का वचन विश्वास-पूर्वक सिखाना यह माता-पिता की जिम्मेदारी है।

अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों के आत्मिक जीवन के विषय बहुत ही असावधान होते हैं। परिणाम-स्वरूप उनके द्वारा आनन्द और आशिष प्राप्त करने के बदले उन्हें दु:ख और निराशा ही प्राप्त होती है। और बाद में वे आंसू बहाते हैं। यदि बच्चे विपरीत मार्ग पर गए तो इससे सबसे बड़ी गलती माता-पिता की ही होती है। उनकी विशेष जिम्मेदारी में वे लापरवाह और असफल हुए हैं। बच्चों की भौतिक आवश्यकताओं को अवश्य ही उन्होंने पूरा किया होगा। उनको बहुत अधिक वस्त्र, खिलौने और मिठाई के पैकेट दिये होंगे। परन्तु परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए या बच्चों के साथ प्रार्थना करने के लिए उनके पास समय नहीं। वे दूसरें कामों में बहुत व्यस्त थे और इसलिए वे अपनी असावधानी की बड़ी कीमत अब चुका रहे हैं। यदि माता-पिता अपना दायित्व को पूरा करेंगे तो परमेश्वर अपना भाग पूरा करेगा। यह अपने सब वचनों को पूरा करेगा।

मई 14

हे धर्म पर चलने वालो हे यहोवा के ढूंढ़ने वालो कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खदान में से तुम निकाले गए उस पर ध्यान करो। यशा. 51:1

यह चट्टान प्रभु यीशु मसीह है (1 कुरि. 10:4)। जब हम अपने पापों से पश्चाताप करके प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तब हम उसके अपने स्वभाव के भागीदार बनते हैं (2 पत. 1:4)। स्वभाव से हम पापी हैं और पौलुस रोम. 7:18 में गवाही देता है कि हमारे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती। हमारे अन्दर ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे परमेश्वर उपयोग कर सकें। यह तो एक ऐसे सेब के समान है जो बाहर से तो लाल और सुन्दर दिखता है परन्तु काटने पर बिल्कुल सड़ा निकलता है।

एक बार मैं इसी रीति से धोखा खा गया था। यात्रा के दौरान सहयात्री ने मुझे एक बड़ा मूल्यवान, सुन्दर लाल रंग का सेब दिया। मैंने जब उसे काटा तब वह सड़ा हुआ निकला। वह महंगा था इसलिए मैं उसे फेंकना नहीं चाहता था। इसलिये मैंने उसे काट-काट कर देखा कि शायद कोई भाग अच्छा निकले। परन्तु पूरा सेब ही सड़ा हुआ था। मैं निराश हो गया। उसमें से मैं कुछ भी खा नहीं सका। परमेश्वर की दृष्टि में पापी की स्थिति ऐसी ही है।

जिन्दगी के हमारे नियम के आधार पर, परमेश्वर के वचन में बताये हुए नियम के अनुसार हमारा स्वभाव दुष्टता से भरा हुआ है और हमारे जीवन के नियम के आधार इसमें जुड़े हुए है। परन्तु जिस क्षण से हम प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करके स्वीकार करते है कि वह हमारे बदले में मरा और हमें धर्मी ठहराने के लिए जिलाया भी गया उसी क्षण से स्वयं उसका जीवन हमारे अन्दर उंडेला जाता है। हमें उसके स्वभाव का सम्भागी बनाया गया है। उपदेशक हमसे कहता है, ‘हम स्वयं की ओर न देखें। परन्तु जिस चट्टान को हमारे लिये तोड़ा गया उसे देखें। क्योंकि वह स्वयं हमारी धार्मिकता बना है। पवित्र-शास्त्र के ज्ञान द्वारा, सादे वस्त्रों के द्वारा या उपवास द्वारा हम धर्मी नहीं ठहरते। इनमें से कोई भी वस्तु हमें धर्मी नहीं ठहरा सकती। परन्तु हमारे अन्दर प्रभु यीशु मसीह के आने के द्वारा ही, हमें धर्मी ठहराते हैं (देखें 1 कुरि. 1:30)। हमें धर्मी ठहराये जाने के लिए वह जिलाया गया और हमारी धार्मिकता बनकर वह हमारे भीतर रहने आता है।

मई 15

'क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं...'। 1 कुरि. 3:9

आज हमें नहेम्याह जैसे लोगों की आवश्यकता है, जिनके विषय में लोग कह सके, 'सच में परमेश्वर की कृपा दृष्टि उस पर है'। (नहे. 2:8) जब लोगों ने देखा कि नहेम्याह के ऊपर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि है तब उन लोगों ने परमेश्वर के काम में उसकी सहायता की। परन्तु जब होरोनी सम्बल्लत, अम्मोनी तोबियाह और अरबी गेशेम यह सुना तब उन्होंने हंसी उड़ाई, उनका तिरस्कार किया और उनको तुच्छ गिना।

जब हम परमेश्वर के कार्य में कुछ भी हिस्सा लेना चाहते हैं तब परमेश्वर के शत्रु अवश्य ही हमारा विरोध करते हैं और हमारी हंसी उड़ाते हैं। शैतान का पहला हथियार यही है कि वह हमें निराश और भयभीत करे। नहेम्याह के समय में यह तीनों व्यक्ति उस शहर में सबसे अधिक पहुंच वाले लोग थे। प्रत्येक देश में हमें सम्बल्लत और तोबियात जैसे लोग मिलते हैं जो कठोर रूप से परमेश्वर के काम का विरोध करते हैं। परमेश्वर की सामर्थ के लिए यदि हम पर्याप्त प्रार्थना न करें तो ऐसे लोग हमें परमेश्वर के पीछे चलने में सफलता-पूर्वक रोकते हैं।

यदि हम प्रभु के लिए काई भी काम हाथ में लेते हैं तो वे हमारा ठट्ठा उड़ाते हैं। जिससे हम निराश हो जायें। इन सब बाधाओं पर नहेम्याह ने प्रार्थना के द्वारा विजय प्राप्त की। लोगों के ठट्ठों पर ध्यान न देते हुए उसने अपना मन परमेश्वर पर स्थिर रखा। इसलिये बड़े विश्वास से वह कह सका कि, 'स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिए हम उसके दास कमर बांधकर बनाएंगे (पद 20)।

जो लोग जनम नहीं पाये और सांसारिक मन रखते हैं वे भले ही बुद्धिमान दिखते हों परन्तु परमेश्वर के कार्य में उनका कुछ भी भाग नहीं क्योंकि वे उसके द्वारा बुलाये हुए नहीं है। कई लोग परमेश्वर के आधीन होते हैं, परन्तु जब कठिनाइयां आती हैं तब परमेश्वर पर भरोसा रखने के बदले धनी लोगों की सहानुभूति ढूंढ़ते हैं, और उनके ऊपर अधिक भरोसा रखते हैं। किसी भी परिस्थितियों में परमेश्वर के लोगों को अविश्वासी और सांसारिक लोगों पर आधार नहीं रखना चाहिये। यदि परमेश्वर चाहता तो यरूशलेम की दीवार को बनाने के लिए अन्य लोगों का उपयोग कर सकता

था। परन्तु परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया क्योंकि यह अधिकार और दायित्व परमेश्वर के अपने लोगों के लिए ही रख छोड़ा था। जो लोग सच्ची रीति से नया जन्म पाये हैं और जिनको अनन्त जीवन का दान मिला है उनको यह अधिकार मिला है कि परमेश्वर का घर बनाने में वे भाग लें।

कोई शाखा या समूह बनाने के लिए हमारा उद्धार नहीं हुआ। प्रभु ने नाम लेकर हमें बुलाया है जिससे हम परमेश्वर का निवास-स्थान, परमेश्वर का घर, स्वर्गीय भवन बनायें। इस भवन का निर्माण ईट, पत्थर, मिट्टी या लकड़ी से नहीं हुआ, यह तो सनातन स्वर्गीय निवास स्थान है। उसे बनाने का अधिकार सांसारिक लोगों को नहीं दिया गया है। स्वर्गदूतों को भी यह अधिकार नहीं दिया गया। केवल वे लोग जो प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से खरीदे गये हैं उनको यह सम्मान और अधिकार दिया गया है।

मई 16

'...हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला है'। 2 कुरि. 6:11

पौलुस का हृदय विशाल था। वह सभी लोगों पर, हाँ जो लोग उसके विरुद्ध कड़वाहट से भरे हुए थे, उनसे भी वह प्रेम करता था। वह स्वयं अनेक कष्टों और दु:खों में से होकर गया था। परन्तु स्वयं की चिन्ता करने के बदले वह विश्वासियों के लिए अधिक चिन्ता करता था। दु:ख में, निर्धनता में या कोई अन्य कठिनाईयों मुश्किलों में उनके लिये उसका प्रेम कम नहीं होता था और उसकी चिन्ता भी दूर नहीं होती थी, क्योंकि उसका हृदय खुला हुआ और विशाल था।

हममें से कई लोगों का हृदय बहुत छोटा होता है। छोटी सी बात के लिये क्रोधित हो जाते हैं और छोटी सी बात में हमें बुरा लग जाता है और ऐसी बातों को हम लम्बे समय तक हृदय में रखते हैं। किसी ने हमारे विरुद्ध हृदय को पीड़ा देने वाले थोड़े शब्दों को कहा हो तो हम वर्षों तक उसे नहीं भूलते हैं। इसलिये विश्वासियों में झगड़े और अज्ञानता देखने को मिलती है।

इसका मुख्य कारण यह है कि हमारा हृदय बड़ा होगा तो हम क्षमा करेंगे और सब भूल जाएंगे। उसी समय विशाल दर्शन प्राप्त होगा और हम बड़े स्थान में आकर आत्मिक मीरास को अनुभव कर सकेंगे। प्रभु हमें विभिन्न कसौटियों और परीक्षाओं में से लेकर ले जाता है जिससे कि बड़े स्थान में पहुँचाये जा सकें।

मई 17

'यीशु ने कहा: जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'। लूका 9:62

मुझे स्मरण है, कई वर्षों पूर्व जब मैं भारत आया तब मेरे माता-पिता मुझसे मिलने के लिए मुम्बई आये थे। मेरी माता जी रोते-रोते विनती कर रही थी, कि 'क्यों तू थोड़े दिनों के लिए घर नहीं आता है'? परन्तु मैंने उनकी विनती को स्वीकार नहीं किया क्योंकि, यदि मैं घर जाऊं तो उनके कहने के अनुसार मैं मसीही बन गया था। इस बात को मुझे दूसरों से गुप्त रखना पड़ेगा जिसमें कि गुप्त रीति से पवित्र-शास्त्र को पढ़ सकूं या प्रार्थना कर सकूं मैंने विनती को स्वीकार नहीं किया, जिसके कारण वे वापस लौट गये। मैं स्टेशन तक उन्हें विदा करने गया। मेरी माता बहुत ही रो रही थी। बारम्बार उन्होंने मुझसे कहा, 'तू मेरा सबसे बड़ा बेटा है। क्यों तू घर नहीं जाता'?

एक क्षण मैंने विचार किया। उनके साथ घर जाने की बहुत बड़ी परीक्षा मुझ पर आ पड़ी। मैंने मन में कहा, 'चाहे कुछ भी हो, वह मेरी माता है और उनका मुझ पर अधिकार है। यदि मैं घर जाऊं तो अवश्य उनको मसीह के लिए जीत सकूंगा'। इस रीति से शैतान हमें धोखा देता है। 'अच्छा, मैं आता हूँ'। ऐसा मैं कहने ही वाला था कि मैंने एक धीमी कोमल वाणी सुनी, 'जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'। इस वचन ने मुझे बहुत बड़ी परीक्षा से बचा लिया। उसके बाद मैंने अपनी माता से कहा, -मुझे क्षमा कर, मैं आ नहीं सकता। मुझे प्रभु यीशु मसीह को प्रथम स्थान देना होगा। वह मेरा सृष्टिकर्ता और मेरा उद्धारकर्ता है'।

मेरी आधीनता के कारण, प्रभु ने मेरे पूरे परिवार में काम करना आरंभ किया। आप जब बड़ी परीक्षा में से जा रहे हैं। तब आप देखेंगे कि कोई छोटा सा पद आपको स्मरण कराता है या फिर पवित्र-शास्त्र तब प्रभु आपसे बातें करेगा। सावधान रहें, क्योंकि शैतान आपको भरमायेगा कि आप सांसारिक हथियार को अपनाएं। आप शांति बनाए रखें, क्योंकि केवल शान्ति ही शैतान को हरा सकेगी। प्रभु की वाणी सुनने के द्वारा आंतरिक शान्ति प्राप्त होती है और तब हम शैतान को हरा सकते हैं, चाहे वह हमारे ऊपर बाढ़ या गर्जन वाले सिंह या ज्योर्तिमय दूत के समान आक्रमण करे।

मई 18

'...और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है?... स्थिर रहेगा वह मजदूरी पाएगा'। 1 कुरि. 3:13-14

परमेश्वर के सेवक होने के कारण हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिये कि परमेश्वर की सेवा में हम जो भी करते हैं वह सदाकाल तक टिके रहना चाहिये, क्योंकि हमारे प्रत्येक काम की कसौटी, परीक्षा और परख होगी। हम विशेष कार्य को अच्छा और ग्रहण-योग्य मानें, परन्तु अन्त में जब परमेश्वर उसकी परीक्षा करें तब उसे एक घर के समान टिका हुआ होना चाहिये। घर के ऊपर कौन-कौन से खतरे आने की संभावना है, या मकान के किसी भी भाग पर कितना भारी दबाव आ सकता है यह विचार पहले से किया जाता है। यह ध्यान में रख कर ही वे अपनी योजना को अन्तिम स्वरूप देते हैं।

लंदन शहर में थेम्स नदी पर बना हुआ प्रसिद्ध वॉटरलू पूल की बात मुझे स्मरण आती है। जब उसके बनाने की प्रक्रिया पूरी हुई तब वह बहुत सुन्दर था। प्रथम विश्व-युद्ध में जर्मन को सेना ने इस पुल के निकट बम्ब फेंका जिसके कारण पुल का एक स्तंभ बहुत नीचे धंस गया था। उसके मरम्मत के लिए वर्ष 20,000 पाउण्ड का खर्च होता था। उस स्तंभ में त्रुटि होने के कारण बम्ब का धमाका वह सह नहीं सका। पुल बनाने के समय मैं प्रत्येक स्तंभ को और उसमें उपयोग हुए खम्भों को बहुत ध्यान से मापा गया था परन्तु जब यह एक स्तंभ धंसने लगा तब मालूम हुआ कि उसमें उपयोग किये गये लकड़ी के खम्भों में से एक का व्यास 1/4 इंच कम था। यह पूल बनाते समय अनदेखी रह गयी।

परिणाम-स्वरूप सदियों तक मजबूत रहा पुल, सच्ची कसौटी के समय में टिक नहीं सका। परमेश्वर के कार्य में यह बात सच्ची ठहरती है। कई वर्षों तक काम करने के द्वारा हम में आशीष दिखाई देती है। परन्तु जब परमेश्वर की सच्ची कसौटी आयेगी तब क्या होगा? परमेश्वर स्वयं का कार्य योजना अन्तकाल को लक्ष्य में रखकर ही करता है।

मई 19

'...कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो'।
रोमि. 15:5

मिलापवाले तम्बू में लकड़ी के तख्ते जिनकी लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी, उन प्रत्येक, के नीचे सहारे के लिए चांदी की दो कुर्सियाँ थी। कुर्सियों के लिए परमेश्वर सोना उपयोग कर सकता था, परन्तु उसने चांदी का उपयोग करना पसन्द किया। क्यों? पवित्र-शास्त्र में चांदी उद्धार को दिखाता है। हमारे उद्धार के लिये प्रभु यीशु ने जो मूल्य चुकाया उसे दिखाता है। जब लोग प्राण के प्रायश्चित के लिये चढ़ाते हैं, तब धनी जैसे अधिक दे नहीं सकता, वैसे ही निर्धन कम दे नहीं सकता। इसलिए कोई भी ऐसा कह नहीं सकता कि, मैं अपने पड़ोसी से अधिक अच्छा हूँ'। क्योंकि हम सब प्रभु के मन के अनुसार एक समान मूल्यवाद है। उसके प्रत्येक के लिए एक ही मूल्य चुकाया है, और अपने राज्य में समान अधिकार तथा निर्भयता दिया।

पवित्र-शास्त्र में दो की संख्या सहभागिता और एकता को दिखाती है। (मत्ती 18:19)। प्रत्येक तख्ते को दो कुर्सियों के सहारे रहना था, नहीं तो वह स्थिर नहीं रह सकती थी। तख्ते को मजबूत, स्थिर, दृढ़ रखने के लिए कुर्सियों को लगाया जाता था।

आत्मिक जीवन में दृढ़ रहने का एक रहस्य यह है कि आत्मिक विषयों के लिये अपने साथी विश्वासियों के साथ एक ही नींव पर आप खड़े रहते हैं, मसीह में अखण्ड एकता, इकट्ठे रहना, पृथ्वी पर एक मन और एक ही को होना, एकता से प्रार्थना करना, एकता से आराधना करना यही पवित्र स्थान में आपके भागीदारी की साक्षी है। आंतरिक द्वेष, प्राय: ईर्ष्या, धिक्कार और झगड़ों को लाता है जब कि परमेश्वर के घर में कोई भी झगड़ा नहीं हो सकता है। चांदी की कुर्सियों के ऊपर के दो अंकड़ियां हमें यह बताती है कि हमें इसी उद्धार की कीमत से खरीदा गया है और हम सब प्रभु के लिए एक समान मूल्य रखते हैं।

मई 20

'कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं'।
2 कुरि. 2:11

जब हम परमेश्वर की योजना में रहकर परमेश्वर का काम करने की इच्छा रखते हैं तब शैतान उग्र रीति से हमारे विरुद्ध चलेगा। इसका प्रमाण निर्ग. 32:1-8 में हमें मिलता है। परमेश्वर सीने पर्वत पर मूसा को मिलाप तम्बू की योजना दे रहा था तब लोग पाप में गिरे। स्वयं के लिए देवता बनाकर परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किये। जब परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म किये तब शैतान शांत था, परन्तु जब परमेश्वर ने अपनी स्वर्गीय योजना को प्रगट किया तब शैतान ने बड़ा आक्रमण किया।

हम भी स्वर्गीय योजना में आना चाहेंगे तो शैतान हमें रोकने का प्रयास करेगा। हमें जो अच्छा लगता है उसे ही करते रहेंगे तो शैतान को थोड़ी भी आपत्ति नहीं होगी। परन्तु परमेश्वर की संपूर्ण योजना में काम करना चाहेंगे तो शैतान ऐसी कठिनाईयों को खड़ी करेगा, जिन पर जय पाना कठिन होता है। नया-नया उद्धार पाये हुए कई आत्माओं को गलत मार्ग में जाते हुए मैंने देखा है क्योंकि मण्डली के सामूहिक जीवन को वे नहीं समझे और उसका सुखानुभव नहीं किये। कलीसियाई जीवन में विश्वासी परमेश्वर के अनेक सेवकों की सेवा पाते हैं और परमेश्वर के अनेक सन्तानों के साथ सहभागिता करते हैं। वे परमेश्वर की सेवा करते हैं और परमेश्वर के पूरे परिवार में एक दूसरे की सेवा करना सीखते हैं। परन्तु कई तो केवल थोड़े लोगों की ही सेवा कर पाते हैं। इसलिए जब शैतान उन पर आक्रमण करता है तब वे उसका सामना नहीं कर पाते हैं। परमेश्वर के एक या दो सेवक उसे उठा नहीं सके। परमेश्वर ने यह बोझ पूरी मण्डली को दिया है।

इसीलिये, शैतान के आक्रमण से बचने के लिए परमेश्वर के सेवक को सामूहिक रूप से मण्डली में बने रहना अति आवश्यक है। आत्मिक अधिकार और परिपूर्णता मण्डली में, अर्थात उसकी देह जो सब बातों में सभों को भरपूर करता है, उसमें ही है। (इफि.1:22-23)। पवित्र-शास्त्र में हम देखते हैं कि अंत के दिनों में शैतान परमेश्वर के सेवकों के विरुद्ध आयेगा। इसलिये यह अति महत्वपूर्ण है कि मण्डली परमेश्वर की योजना को पूरी रीति से समझे अन्यथा हमारे मध्य में फूट होगी और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो जायेगा।

मई 21

यूसुफ ने अपने जीवन के आरंभ के थोड़े वर्ष उसने मिस्र में बिताये और मिस्र में ही उसकी मृत्यु हुई। परमेश्वर के लोगों के साथ एकता रखने की उसकी इच्छा मिस्र की महिमा के कारण नहीं हो सकी। उसकी मृत्यु के समय भी उसकी इच्छा यही थी कि उसकी हड्डियों को मिस्र में से कनान ले जाया जाए। उत्प. 50:24,25, यहोशू 24:32

यूसुफ मिस्त्र फिरौन के बाद दूसरे श्रेणी का सबसे महान पुरुष था परन्तु मिस्त्र की महिमा को उसने कभी भी वास्तविक महिमा नहीं माना। उसके अपने भाइयों ने उसे दूर करने के लिए बेच दिया इसको उसने ऐसा जाना कि इब्राहीम के सन्तानों के साथ की एकता ही सच्ची महिमा है। इब्राहीम को और उसकी सन्तान को परमेश्वर द्वारा दिए गये सात प्रकार के आशीर्वाद में भाग मिले यह यूसुफ के लिए अनन्त महिमा का प्रमाण था। यूसुफ ने इस आत्मिक आशीर्वादों को अपने लिए चाहा, इतना ही नहीं पर अपने पुत्रों के लिए भी उसने इसकी मांग की। पूरे मिस्त्र का अधिपति होने के बाद भी वह अपने पुत्रों को याकूब, जो की एक यात्री था, उसके पास आत्मिक आशीषों को प्राप्त करने के लिए लाया। इस रीति से उसने अपने पिता को आदर देते हुए विश्वास रखा कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की और उसकी आशीषों की चाबी याकूब के पास थी।

कई विश्वासी आर्थिक रूप से अच्छे होने पर गर्व करते हैं और साथी विश्वासियों तथा परमेश्वर के सेवकों को तुच्छ समझते हैं। अपने से नीचे श्रेणी के लोगों के साथ सहभागिता रखना उन्हें पसंद नहीं। वे धनी लोगों को सम्मान देते हुए उनके द्वारा आदर प्राप्त करना चाहते हैं। यदि कोई समीति का सदस्य बने तो उसका आनन्द नहीं मनाते। परमेश्वर के घर में, परमेश्वर के काम की या परमेश्वर के लोगों की उनको थोड़ी भी चिंता नहीं होती है। सांसारिक मित्रों और संगे-संबन्धियों की सहभागिता वे अधिक पसंद करते हैं। यूसुफ जानता था कि संसार की चका-चौंध और महिमा जाती रहेगी परन्तु परमेश्वर की विश्वास-योग्यता और स्वर्गीय मीरास में परमेश्वर की ओर से प्राप्त होने वाला भाग कभी भी नहीं टाला जाएगा। इसलिए अपने भाइयों के साथ उसने एकता की इच्छा रखी और उनके आत्मिक आशीर्वादों को चाहा। परमेश्वर के विश्वास-योग्यता पर भरोसा रखने के द्वारा, परमेश्वर तथा उसके साथ सहभागिता रखने के द्वारा हमें बहुत अधिक आशीषें प्राप्त होती है। प्रभु यीशु ने भी मत्ती 12:46-50 में यही पाठ सिखाया कि 'जो कोई स्वर्गीय पिता की इच्छा के अनुसार चलते हैं, वे ही उसके भाई, बहन तथा मां हैं।

मई 22

'धन्य है वह मनुष्य जो,
परीक्षा में स्थिर रहता है...'
याकूब 1:12

हम सभी को अनेक परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। वृद्धों के लिए विशेष प्रकार की परीक्षायें, युवाओं और प्रौढ़ अवस्था के लोगों के लिए अलग-अलग परीक्षायें होती है। निर्धनों के लिए विशेष परीक्षायें और धनवानों के लिए भी अलग परीक्षायें होती है। प्रत्येक को प्रतिदिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। उसका अंत नहीं होता है। उससे छुटकारा पाने की आयु नहीं है। परन्तु परमेश्वर की कृपा से उन पर जय प्राप्त कर सकते हैं।

जब हम परीक्षाओं पर जय प्राप्त करते हैं तब परमेश्वर का जीवन भरपूरी से हमारे अन्दर बहने लगता है। एक छोटे से छोटा पाप भी जीवन की धारा को रोक कर रखता है, जैसे कि जब कभी पानी की नाली में कचरा निकाल दिया जाता है तब स्वच्छ पानी स्वतंत्र रूप से बहने लगता है। कई लोग इस कचरे को नहीं जानने के कारण नल को खराब समझते हैं। आत्मिक जगत से भी ऐसा ही है।

यदि आप छोटी से छोटी परीक्षा के आधीन हो जाते हैं तो दिव्य जीवन का बहना बंद हो जाता है। परिणाम-स्वरूप परमेश्वर के वचन के प्रति भूख मर जाती है और प्रार्थना का बोझ कम हो जाता है परमेश्वर के वचन की ओर संदेश की समझ जाती रहती है। आप कहेंगे कि, 'सही प्रचारक नहीं है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है परन्तु हमेशा नहीं। यदि प्रत्येक सभा में आप परमेश्वर का वचन समझने में असमर्थ होते हैं और प्रचारक कितना भी अच्छा क्यों न हो आप सो जाते हैं, तो आपमें ही कुछ भूल या कमी है। परमेश्वर के सामने सब ठीक करें उसके बाद आप परमेश्वर के संदेशों को समझ सकेंगे। आप जयवन्त हुए हैं इसलिये, आप अपने अन्दर परमेश्वर के जीवन को भरपूरी से बहते देखेंगे।

जैसे-जैसे आप परीक्षा पर जय पायेंगे वैसे-वैसे परमेश्वर की उपस्थिति में आप अधिक से अधिक स्वतंत्रता का अनुभव करेंगे। आप विश्वास से परमेश्वर की उपस्थिति में जाकर कहेंगे कि, 'प्रभु, मैं तेरी सन्तान हूँ। तुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर देना ही होगा'। जयवन्त रहकर हम प्रभु के नाम से अंधकार को शक्तियों की शक्तियों को बांध सकते हैं।

मई 23

कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें। फिलि. 2:10

इसी विषय के लिये हम स्वयं को नम्र करते हैं और घुटने टेककर प्रार्थना करते हैं। पवित्र-शास्त्र में हम देखते हैं कि अनेक परमेश्वर के भक्तों ने स्वयं को नम्र किया और घुटने टेक कर प्रार्थना की। प्रभु ने उनके साथ बातें की और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। राजाओं ने, नबियों ने, और महान पुरुषों ने नम्रता से घुटने टेककर प्रार्थना की। (1 राजा 8:54)। नम्र और टूटे हृदय से प्रजा ने परमेश्वर के आगे स्वयं को झुकाया (एज्रा. 9:5)। दानिय्येल महान बेबीलोन राज्य का प्रधान था तो भी दिन में तीन बार घुटने टेककर वह प्रार्थना करता था (दानि. 6:10)। और तो और भजन संहिता 95:6 में हम पढ़ते हैं, 'आओ हम झुककर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें'।

नये नियम में भी हम इसी बात को देखते हैं। जिसका नाम हमने धारण किया और जिस नाम को हम चाहते हैं वह; अर्थात मतलब प्रभु यीशु मसीह स्वयं घुटने टेककर प्रार्थना रकता था। (लूका 22:41)। परमेश्वर का भक्त स्तिफनुस को लहू-लुहान अवस्था में और मरते समय भी घुटने टेककर प्रार्थना करते हुए देखते हैं'। (प्रेरितों के काम 7:60) प्रेरित पतरस ने भी घुटने टेककर प्रार्थना की (प्रेरितों. 21:5)। इफिसुस के पुरनियों को प्रेरित पौलुस के साथ घुटने टेकते हुए देखते हैं (प्रेरितों. 21:5)। स्त्रियों-पुरुषों, और बच्चों ने प्रेरित के साथ समुद्र के किनारे घुटने टेके। यह नम्र होने का एक कार्य है। परमेश्वर की दृष्टि में हम धूल के समान हैं। उसके निकट आने के हम योग्य नहीं हैं। प्रभावशाली प्रार्थना करने के हम योग्य नहीं हैं। प्रभावकारी प्रार्थना करने के लिए हमें परमेश्वर की उपस्थिति में नम्र होना सीखना आवश्यक है। रोमि. 14:11 के अनुसार 'प्रभु कहता है कि, ...हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा'। नम्रता के द्वारा हमें मसीह का मन प्राप्त होता है और हस रीति से हम उसकी सेवा कर सकते हैं तथा उसके पीछे चल सकते हैं।

मई 24

जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष करो, क्योंकि उसने आप ही कहा है कि, मैं तुझे कभी न छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा। इब्रा. 13:5

इस पद का पहला भाग बताता है कि लोग लोभ के कारण फलरहित हो जाने पर दु:खी रहते हैं। हमें संतोष रखने की शिक्षा दी गई है, इसके बाद भी हम वास्तव में संतोष नहीं रखते हैं। इसलिये यहाँ पर असन्तोष के लिए चेतावनी दी गई है। यदि आपके पास मांस खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं तो साग-सब्जी से तृप्त रहें, उधार में मांस न लें। परमेश्वर के सेवक यदि उधार लेते हैं तो वह लज्जाजनक बात है। असंतोष के कारण कई विश्वासी उधार लेते हैं और इस प्रकार परमेश्वर के प्रति फलरहित हो जाते हैं।

परमेश्वर की सन्तान होने के कारण कभी भी उधार न लें, क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है कि प्रेम को छोड़कर और किसी बात के कर्जदार न हों'। दूध खरीदने के लिए पैसे न हों तो जेवनार न करें। विवाह की साड़ी खरीदने के लिए पैसे न हों तो अच्छा यही है आप पुरानी साड़ी पहनें। जो सब परिस्थिति में संतुष्ट रहते हैं उनको परमेश्वर कहता है, 'मैं तुझे कभी न छोडूंगा और न कभी त्यागूंगा'।

लोभ न करें। संतुष्ट रहें। परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करना हो तो उधार न लें। अपने सास-ससुर या निकट के मित्र से भी उधार न लें। कई लोग तो ऐसा समझते हैं कि सास से उधार लेने में कोई आपत्ति नहीं। इस तरह से वे सास का गुलाम बन जाते हैं। कितनों को पैसे उधार लेने की कुशलता होती है और उन पैसों को वापस देने की भूल करने में भी चतुराई होती है। उधार लेना यह लज्जा की बात है और लौटा देने की बात पर गुस्सा करना यह दुष्टता है। आज ही परमेश्वर को वचन दें कि आप अपने सब उधार चुकाएंगे चाहे कैसी भी कठिनाईयों का सामना करना पड़े।

मई 25

सब पवित्र लोगों के साथ भली-भांति समझने की शक्ति पाओ, कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है। इफि. 3:18

प्रभु के लोगों को बांधनेवाला मुख्य और सबसे महत्वपूर्ण बंधन प्रभु यीशु मसीह का जीवन है। ध्यान-पूर्वक इफिसियों की पत्री के तीसरे अध्याय का अध्ययन करें। इस बात को समझ लें कि यह बातें इफिसियों के विश्वासियों को जो आत्मा में वृद्धि पाये थे, उन्हें लिखा गया था।

इसलिये पौलुस ने कहा, 'अब मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, और तुम जो दूर हो उनके लिए प्रार्थना करता हूँ कि विश्वास से प्रभु यीशु मसीह तुममें बसे। परन्तु पूछोगे कि क्या, प्रभु यीशु मसीह उनमें पहले से वास नहीं करता था? वहाँ! घर में आना और उसमें वास करके उस पर अधिकार करना इन दोनों बातों में बहुत अन्तर है।

आप किसी के भी घर में अतिथि के रूप में रह सकते हैं, परन्तु जैसा चाहे वैसा व्यवहार करने की वहाँ आपको छूट नहीं है। परन्तु जब आप घर के स्वामी बनते हैं तब घर के किसी भी भाग में किसी भी समय घूमने की आपको स्वतंत्रता है। इसी रीति से प्रभु को हमारे अन्दर रहना चाहिये। हमारे जीवन के हर एक भाग पर उसका अधिकार होना चाहिये। जब हम सभों का जीवन ऐसा बनता है तब परमेश्वर के प्रेम की संपूर्ण सीमा को हम जानेंगे और तभी 'सब पवित्र लोगों के साथ' हम इस प्रेम को समझ पायेंगे।

पौलुस कहता है कि हम परमेश्वर के प्रेम को तब ही संपूर्ण रीति से समझेंगे जब हम सब इकट्ठे मिलेंगे। अकेले रहने से, अपने लिये जीने से हम इसे समझ नहीं सकते। मसीही, आपमें से भेद रखते हैं ऐसे बंधनों में यदि आप फंस जायें तब परमेश्वर का प्रेम आपके मन में सीमित विषयों के लिये होगा। साथी मसीहियों के प्रति आपका व्यवहार भी संकुचित मन का हो जायेगा। विशाल अंतःकरण के द्वारा संसार के अन्य भागों में रहने वाले परमेश्वर की सन्तानों के प्रति प्रेम रखकर आपको ऐसी रुकावटों पर जय पाना होगा। परन्तु इसे संभव बनाने के लिए न केवल प्रभु यीशु को हमारे हृदयों ही में रहना चाहिये परन्तु हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व पर प्रभुत्व पाना चाहिये।

जब प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन का प्रभु बनता है, तब हम प्रत्येक को प्रेम किये बिना रह नहीं सकते, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह का प्रेम हमारे अन्दर में से उसके सब संतों की ओर बहता है, परन्तु ऐसा जब तक न होगा तब तक गुजराती भाई-बहन केवल दूसरे गुजराती भाई-बहनों से ही प्रेम रखेंगे। गोरे लोग गोरे लोगों को ही चाहेंगे। काले लोग काले लोगों को चाहेंगे। यह प्रेम 'सभी पवित्र लोगों' का प्रेम नहीं है। जब एक सच्चा विश्वासी किसी से मिलेगा तब ऐसा नहीं पूछेगा कि 'आपकी जाति या व्यवसाय क्या है'? मसीह का प्रेम तुरन्त ही उन्हें बांध लेगा, क्योंकि मसीह के जीवन ने उन दोनों के जीवन को सम्पूर्ण रीति से अधिकार में ले लिया है। हम सभों के जीवन में हम सबको बांधने वाला यह अदृश्य बंधन प्रभु दृढ़ करे।

मई 26

जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग-संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। यशा. 43:2

प्रभु अपना सामर्थ्य अपने लोगों के बीच अलग-अलग रीति से प्रेट करता है। इस्राएली लोग जब मिस्र में से निकले तब उन्हें लाल समुद्र पार करना पड़ा। निर्ग. 14:26-29 में हम देखते हैं कि प्रभु उन्हें किस रीति से लाल समुद्र में से कुशल-पूर्वक पार ले आया। शैतान चाहे किसी भी रीति से हमारे पीछे पड़े, अंत में उसकी युक्तियां विफल हो जायेगी।

विश्वासी होने के कारण हमें संसार के लोगों के द्वारा तिरस्कार, घृणा और सताये जाने के लिए तैयार रहना चाहिये। यूह. 15:19 में प्रभु यीशु हमें स्मरण दिलाता है कि पाठशाला में, दवाखाना में, और पड़ोसी लोग हमें धिक्कार ऐसी हमें अपेक्षा रखनी चाहिये। जो अंधकार में है उनके द्वारा अवश्य हमारा तिरस्कार होगा। वे हमारे अधिकार को छीन लेने का प्रयत्न करेंगे और कड़ुवे विरोध के साथ हमारे पीछे पड़ेंगे। परन्तु एक दिन आप देखेंगे कि परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा इन बातों को निगल लिया जाएगा।

दानि. 31:21 में हम तीन युवाओं के विषय में पढ़ते हैं। उनको धधकते हुए अग्नि की भट्ठी में डाला गया था फिर भी उनके एक बाल को भी आंच नहीं आई। शरीर के अन्य किसी भाग को छोड़कर बाल को आग जल्दी पकड़ लेती है, फिर भी इस घटना में एक बाल को आंच नहीं आयी थी।

विश्वासियों के लिए परमेश्वर का वचन यह है, कि हमें आत्मिक रीति से धोखा देने के लिए दुश्मन हमारे विरुद्ध आये तो फिर हमें चोट पहुंचाने में वे सफल नहीं होंगे। शायद वे कभी-कभी भौतिक रीति से हमें हानि पहुंचाये फिर भी आत्मिक हानि कभी भी नहीं ला सके। आगे चलकर उचित समय पर हमें पूरा बदला दिया जाएगा, इस प्रकार की प्रतिज्ञा हम सबके जीवन में हर समय पूरी हो सकती है।

मई 27

ईश्वर... जो मेरे अति आनंद का कुंड है। भजन. 43:4

परमेश्वर स्वयं हमारा आनन्द है, हमारी योग्यता, वरदान या सेवा आनन्द नहीं है। आत्मिक जीवन के आरंभ में हम पवित्र-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अथवा अनेक आश्चर्यकर्मों के लिये आतुर रहते हैं। चंगाई की सामर्थ जैसे साधारण दान को प्राप्त करने की लालसा रखते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है वैसे-वैसे हम समझ जाते हैं कि इनमें से कुछ भी अपने आप हमें सच्चा आनन्द नहीं दे सकता है। प्रभु स्वयं हमारा आनन्द है। उसकी उपस्थिति में रहना तथा उसके साथ बातें करने का हमें अधिकार है। दाऊद कहता है, 'तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है तेरे दायिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।' (भजन. 16:11) आपने देखा होगा कि घुटनों पर रहकर, आराधना, भक्ति और परमेश्वर के साथ सहभागिता अनुभव करना तथा उसके वचन को पढ़ने में जो पल आप बिताते हैं वह आपके जीवन का सबसे विशेष आनन्ददायक पल होते हैं। इस आनन्द का जगत के अन्य किसी भी आनन्द के साथ तुलना नहीं कर सकते हैं।

भारत के मन्दिरों को लूटने वाला एक राजा के विषय में एक सत्य कथा है। जब उसने सिंधू नदी को पार किया तब अपने सिपाहियों को कहा, 'आप लोगों की विश्वास-योग्यता के कारण मैं आप लोगों को बदला देना चाहता हूँ। पिछले वर्षों से आप लोग मेरे साथ दुःख उठा रहे हैं'। हीरे-मोती और जेवरातो से भरी हुई थैली को उसने खोला। उसके बाद सिपाहियों से कहा, 'आपको जो पसंद हो उसे लो'। सभी सिपाहियों ने अपना-अपना भाग लिया, परन्तु एक सिपाही राजा के पास ही खड़ा रहा। उसने भाग नहीं लिया। राजा ने उससे कहा कि 'जा और अपना भाग ले'। परन्तु उस सिपाही ने कहा, 'मैं आपको पसंद करता हूँ। इन वस्तुओं की मुझे आवश्यकता नहीं है। अपने साथ रहने का अधिकार मुझे दें'। कहा जाता है कि आगे चलकर इस सिपाही को सबसे अधिक भाग मिला, क्योंकि राजा की मृत्यु के पश्चात उसकी सब सम्पत्ति इस सिपाही को मिली।

अधिकांश लोग, स्वयं जो कुछ भी सोचते हैं अथवा प्राप्त करना चाहते हैं वे उन वस्तुओं को आशीष मान लेते हैं। वे कहते हैं, 'प्रभु मुझे यह दे या वह दे'। वे प्रभु यीशु मसीह को संपूर्ण हृदय से प्रेम नहीं करते हैं। वे समझते हैं कि वह सब अच्छे वरदानों को देने वाला है और उस पर विश्वास रखने के द्वारा हमें सब कुछ प्राप्त होता है। जैसे-जैसे हम उससे अधिक प्रेम रखते हैं और उसे आदर देते हैं वैसे-वैसे हम सब कुछ अपने आप प्राप्त कर लेते हैं। वह हमारा सच्चा आनन्द है।

मई 28

...हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। इब्रा. 10:19

जंगल में परमेश्वर ने मूसा को दर्शन दिया तब मूसा उसे देखने के लिए परमेश्वर ने उससे कहा, 'इधर पास मत आ, और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।' (निर्ग. 3:5) परमेश्वर मूसा को सिखा रहा था कि यदि वह जीवित और पवित्र परमेश्वर के साथ सहभागिता रखना चाहता हो तो उसे पवित्र बनना पड़ेगा। इस दुष्ट जगत में हम बहुत सरलता से अशुद्ध होते हैं, जो हमें परमेश्वर की सहभागिता अनुभव करने से रोकता है। इन सब अपवित्रता को छोड़कर परमेश्वर की उपस्थिति में पवित्रता की सुंदरता के साथ आना हमें सीखना होगा।

कई लोग सुसमाचार की सभाओं में प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लेते हैं। परन्तु परमेश्वर के साथ अटूट संगति अनुभव करने के लिए मसीह के लहू से दिन प्रतिदिन शुद्ध होने का अमूल्य पाठ उन्होंने नहीं सीखा, परिणाम-स्वरूप प्रार्थना सभा में और भजन सभा में दस मिनट बिताने के बाद वे लोग थक जाते हैं और व्याकुल हो जाते हैं। वे परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना सीखे नहीं हैं।

परमेश्वर के साथ संगति का मूल्य जानने के बाद आप अधिक से अधिक समय परमेश्वर के साथ बिताना चाहेंगे और यदि प्रभु की संगति से उठना पड़े तब दुःखी होकर आप कहेंगे, 'प्रभु मैं खेदित हूँ कि आवश्यक काम से मुझे तेरी उपस्थिति में से उठना पड़ा है।' ऐसे अनुभव के लिए सर्वप्रथम हर एक अशुद्ध करने वाला विचार, वाणी और व्यवहार से मसीह के बहुमूल्य लहू द्वारा निरन्तर शुद्ध रहना सीखें। दूसरे शब्दों में, पावों से जूतियों को उतार दें। उसके बाद परमेश्वर ने मूसा से कहा कि 'मैं इब्राहिम इसहाक तथा याकूब का परमेश्वर हूँ। (पद 6) मूसा जूती उतार कर परमेश्वर के साथ बातें करने लगा इसलिए परमेश्वर भी अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए तैयार हुआ।

मई 29

...और पवित्र-आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं...।
प्रेरितों. 5:32

तीसरे दिन जब प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान हुआ उस प्रातः कुछ स्त्रियाँ कब्र पर गईं। एक दूत ने उनसे कहा, '...तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढती हो। वह यहाँ नहीं है परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; ...शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है... वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गई। तब, यीशु उन्हें मिला और कहा; 'सलाम' (मत्ती 28:5-9)। आनंदपूर्वक तुरन्त आज्ञापालन पुनरुत्थान के सामर्थ को अनुभव करन का रहस्य है।

यदि प्रभु हमारे साथ किसी भी विषय पर बात करे तब बिना प्रश्न किए हमें उसकी आधीन रहना चाहिए। तभी हमें दिन प्रतिदिन इस सामर्थ्य को अधिक मात्रा में अनुभव करने का अधिकार मिलता है। अब इन स्त्रियों के स्पष्ट संदेश सुनकर शिष्यों को संदेह हुआ और यह बातें उन्हें खोखली लगी। यदि हमारे अंदर संदेह और अविश्वास होगा तब परमेश्वर के सामर्थ्य को अनुभव करने में विफल हो जाएंगे।

प्रभु यीशु ने अपने आपको तिबिरियास झील के किनारे शिष्यों पर प्रगट किया (यूह. 21) और इस सच्चाई को समझाया। यहाँ पर कोयले की आग प्रेम का प्रतीक है क्योंकि प्रेम से प्रभु ने उसे तैयार किया था, जिससे चेलों को गर्मी मिले। यह पवित्र-आत्मा की भरपूरी के विषय में भी बताता है। प्रभु की आज्ञा को मानने के द्वारा जो आत्माएं हमारे द्वारा उद्धार पाते हैं उसका प्रतीक यह मछली है। रोटी परमेश्वर के वचन को दिखाता है जिसे खाने के द्वारा हमें अधिक शक्ति प्राप्त होती है।

उसके बाद प्रभु ने पतरस से कहा, 'मेरे मेमनों को चरा; मेरी भेड़ों को चरा'। जब हम उसके मेमनों का और भेड़ों को चराना और उनका पालन-पोषण करना सीखते हैं तब हमारा प्रेम सच्चा होता है। आवश्यकता के समय दूसरों की सहायता करने से और प्रेम-पूर्वक बलिदान के द्वारा एक-दूसरे का बोझ उठाने से हम अपने महान और मुख्य चरवाहा प्रभु यीशु के प्रेमी हृदय को तृप्त कर सके है।

मई 30

इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिये; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करती है। रोमि. 8:26

हमें किस विषय में प्रार्थना करनी है यह नहीं जानते परन्तु जैसे ही हम पवित्र-आत्मा के आधीन होते हैं वैसे ही वह हमें स्मरण दिलाता है कि किनके लिये प्रार्थना करनी है।

'यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'। प्रतिदिन पवित्र-आत्मा आपको स्मरण दिलायेगा कि विशेष कर उन लोगों के लिये प्रार्थना करें। वे कहाँ है और किन आवश्यकताओं में है यह आप नहीं जानते।

परन्तु जब प्रभु की उपस्थिति में आप ठहरेंगे उस समय वह स्मरण दिलायेगा, कि किसके लिये प्रार्थना करनी है। उसके बाद चाहे वह भारत में हो या अफ्रीका में, आपकी प्रार्थना के द्वारा कितने ही लोग चंगाई सांत्वना, शक्ति, अगुवाई पाएंगे और खतरों से भी बच जाएंगे।

परमेश्वर के दास और सहकर्मी के रूप में यह हमारा अधिकार है कि जगत के सभी भागों के अनेक लोग हैं उनके लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना एक संगति और आनन्द है। प्रात:काल, दोपहर और संध्याकालीन चाहे किसी भी समय हो, प्रार्थना करने के द्वारा बल प्राप्त होता है। पूरे विश्व-भर में अनेक विषयों के लिए आत्मा स्मरण दिलाता है। कई लोगों को स्मरण रखने में सहायता करता है चाहे वो कहीं भी हो और उनकी आवश्यकताएं चाहे कैसी भी हों।

मई 31

और अपनी आंखों में लगाने के लिये सुर्मा ले, कि तू देखने लगे। प्रका. 3:18

पूर्वीय देशों में जब लोगों की दृष्टि कुछ धुंधलाने लगती है तब वे एक प्रकार का सुर्मा लगाते हैं। इस सुर्मा को लगाने के द्वारा चश्मे की आवश्यकता नहीं पड़ती है। 89 वर्ष की उम्र में भी मेरी माताजी चश्मा के बिना बहुत ही स्पष्ट रीति से देख सकती थी। वह भी सुर्मा का उपयोग करती थी। परमेश्वर के वचन में कई ऐसे विषय है जिनका अर्थ हम समझ नहीं सकते। इसलिए हम प्रभु के पास जाते हैं क्योंकि वह हमें आत्मिक सुर्मा देता है। उसके बाद हम उन विषयों के अर्थ को स्पष्टता से समझ सकते हैं। भजन. 119:18 में कहता है, 'मेरी आंखे खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं'। हमारा प्रभु और मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह जब हमारी आंखों को स्पर्श करता है तब उसके वचन के अनेक भेदों को हम समझ सकते हैं'। इस कारण मैं भी. ..अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ कि तुम्हारे मन की आंखे ज्योतिर्मय हो'। (इफि. 1:15-18)

हमारी स्वर्गीय मीरास को तथा महिमा को देखने के लिए हमें स्वर्गीय दृष्टि की आवश्यकता है। इसी रीति से मसीह का महान, उद्धार करने वाला ज्ञान तथा उसके पुनरुत्थान को समझने के लिए हमें स्वर्गीय दर्शन यह समझ ज्ञान द्वारा दर्शन की आवश्यकता है यह समझ ज्ञान द्वारा नहीं आयेगी। घुटनों पर रहें, लज्जा न करें, सुख न ढूंढ़ें और प्रार्थना करें, 'प्रभु, तेरा यह वचन मैं नहीं समझ रहा हूँ। मैं अज्ञानी हूँ, कृपा करके मेरी आंखों को स्पर्श कर, तेरी अद्भुत बातों को मैं देखना चाहता हूँ। और यह प्रभु का वचन है 'पर धन्य है तुम्हारी आंखे कि वे देखती हैं, और तुम्हारे कान की वे सुनते हैं'। (मत्ती 13:16) प्रभु को हमारी आंखों को स्पर्श करना ही चाहिये। ऐसा स्पर्श पाने के द्वारा ही, हम स्वर्गीय मर्मों को समझ सकते हैं। हम बार-बार प्रार्थना करें, 'प्रभु, अन्य किसी पुस्तक में से मैं न देखूं, किसी प्रचारक के पास से न सुनूं और अन्य किसी के द्वारा न सीखूं, प्रभु तू मुझे सिखा, उसके बाद स्पष्ट रीति से देखेंगे कि किस प्रकार से परमेश्वर ने अपने वचन में अनेक गुप्त भेद रखे हैं। विश्वास से इस का दावा करना चाहिये। तभी परमेश्वर विभिन्न माध्यमों द्वारा उनको गुप्त प्रगटीकरण रहस्यों पर प्रकाश डालेगा, जिनसे आपको बल, अगुवाई और पूरे मार्ग के लिए सामर्थ्य प्राप्त होगा।

जून 1

परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे। यशा. 40:31

परमेश्वर ने इब्राहीम को हेब्रोन में दर्शन दिया। इब्राहीम ने वहाँ वेदी बनाई और उसके द्वारा स्वयं को धर्मी ठहराने के लिये वह परमेश्वर का आभार मानने लगा। जैसे-जैसे हम परमेश्वर की उपासना करते हैं वैसे-वैसे उसकी संगति को हम विशेष रीति से अनुभव करते जाते हैं।

अनुभव करके देखें कि इसमें कितनी सच्चाई है। जब घुटनों पर जाते हो तब किसी प्रकार की विनती या प्रार्थना का विचार न करें, परन्तु उसे धर्मी ठहराने के अर्थ से उसने आपके लिए जो कुछ किया है उसके लिए उसका आभार मानें और उससे कहें, प्रभु मुझको कोई विनती नहीं करनी है, मुझे तेरी उपस्थिति यह अनुभव करनी है कि तू मेरे साथ है'। ऐसी संगति आपके लिए प्रेरणादायक होगी और परमेश्वर की इच्छा आपके लिए क्या है उसे आप जान सकते हैं।

जीवते परमेश्वर के साथ संगति रखने के द्वारा ही उसके ईश्वरीय मार्गों को समझ सकते हैं। अधिकांश विश्वासी परमेश्वर की संगति से अधिक पवित्र-शास्त्र के ज्ञान को अधिक महत्व देते हैं। वे पवित्र-शास्त्र पढ़ने या संदेश देते हुए थकते नहीं हैं। पवित्र-शास्त्र का अध्ययन करना बहुत ही अच्छा लगता है परन्तु परमेश्वर के साथ संगति को वे आवश्यक नहीं समझते हैं। वे अपने घुटनों या कमर की निर्बलता बताते, कृप्या करके आप अपने हृदयों को जांच कर इस बात की पुष्टि करें। जीवते परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करना कठिन है क्योंकि आपकी इच्छायें और विचार आपको सताते हैं और इधर-उधर भटकते रहते हैं। परन्तु जीवते परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करने से कितनी ताजगी और आशीर्वाद हमें प्राप्त होते हैं। और जीवते और प्रेमी परमेश्वर के साथ सच्ची संगति रखने के द्वारा हम अधिक से अधिक बलवान होते जाते हैं।

जून 2

क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। रोमि. 8:15

यूनानी देश में धनी लोगों में एक प्रथा है कि जब कोई युवा लगभग बाईस वर्ष का हो जाये तब पिता उसके मित्रों, सगे संबन्धियों तथा पड़ोसियों को एकत्रित करके कहता है कि मेरा पुत्र अब युवा अवस्था में आ गया है और मैं उस पर भरोसा रखता हूँ'। उसके बाद वह अपने पुत्र के हाथ में एक बड़ी चाबी देता है और कहता है कि, 'मेरे पुत्र, आज से मेरे व्यवसायिक दस्तावेज पर मेरे नाम से हस्ताक्षर करने का पूरा अधिकार मैं तुझको देता हूँ'। यही विचार इस पद में दिया गया है। परमेश्वर हमें युवा अवस्था का आत्मा देता है। हममें से अधिकांश आत्मिक रीति से बालक ही बने रहते हैं और कई वर्षो तक आत्मिक दायित्व उठाने में असमर्थ रहते हैं। हम केवल इतना ही जानते हैं कि सभा में आते हैं, और थोड़ी देर बैठकर भोजन के उपरान्त घर चले जाते हैं। गीत गाने में आनन्द लेते हैं परन्तु उपदेश के समय हम आधी निंद्रा की अवस्था में होते हैं। परमेश्वर के काम में हमें थोड़ी भी रूचि नहीं होती और परमेश्वर के घर में क्रियाशील दायित्व लेने की हमें इच्छा भी नहीं होती है।

परन्तु विश्वासी होने के कारण परमेश्वर ने हमें दायित्व उठाने के लिये बुलाया है। प्रत्येक विश्वासी को प्रभु यीशु मसीह के द्वारा कुछ न कुछ काम सौंपा गया है और उसे वह करना ही होगा। 'यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए और अपने दासों को अधिकार दे: और हर एक को उसका काम बता दे और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे'। (मर. 13:34)। एक लम्बी यात्रा में जाने से पूर्व प्रभु ने अपने दासों को अर्थात प्रेरितों, नबियों सुसमाचार प्रचार करनेवाले और उपदेशकों को अधिकार दिया है। परमेश्वर का वचन अधिकार-पूर्वक सिखाने का अधिकार उन्हें दिया गया है।

जब प्रभु वापस आयेगा तब हमें दिये गये भिन्न-भिन्न तोड़ों का चाहे वह पांच तोड़े हो या तीन या फिर दो या एक ही हो, का हिसाब देना होगा। अधिकांश विश्वासियों को परमेश्वर के भवन में काम करने की बिल्कुल इच्छा नहीं होती है परन्तु हमें युवा अवस्था का आत्मा इसलिए दिया गया है कि बोझ उठाने में वह हमारी सहायता कर सकें। विश्वास से हमें कहना चाहिये, 'प्रभु यीशु, तू मुझे कोई भी काम दे, मैं तेरे लिये करूंगा'।

यदि आपको आत्मिक रूप से वृद्धि पाने के लिये आपको परमेश्वर के घर में कोई काम करना होगा। प्रार्थना के द्वारा आप को ढूंढ़ना चाहिये, 'प्रभु मुझसे कहे, तेरे घर में मुझे क्या काम करना है, कौन सी सेवा मेरे लिये है, मैं उसे आनन्द-पूर्वक करूंगा'। वह जो कुछ कहे उसे करें। ऐसा करने से पवित्र-आत्मा के कार्य द्वारा हम आत्मिक वृद्धि पाते हैं।

जून 3

और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों तुल्य अनगिनित गुण दिए। 1 राजा 4:29

किसी मकान के निर्माण के समय एक इंजीनियर की आवश्यकता होती है। वह पूरे मकान की देखभाल करता है और यह भी कि निर्माण-कार्य योजनानुसार हो रहा है कि नहीं उस पर विशेष ध्यान देता है।

नया नियम में हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस एक कुशल कारीगर था और उसके द्वारा परमेश्वर की योजना को पूरा किया गया। परमेश्वर की योजना में हमें स्थिर करने के लिए केवल शिक्षा ही नहीं, परन्तु प्रेरितों भविष्यद्वक्ताओं, उपदेशकों और रखवालों की हमें आवश्यकता है। (इफि. 2:20) आरंभिक कलीसिया में बहुत से विश्वास-योग्य लोग थे जो विभिन्न स्थानों में गये और उनकी विश्वास-योग्यता के कारण परमेश्वर का कार्य दृढ़ नींव पर रखा गया। प्रत्येक युग में यह सच्चाई देखने को मिलती है। यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर का कार्य दृढ़ और मजबूत हो तब आपको परमेश्वर के द्वारा चुने हुए सेवकों की आवश्यकता होगी जो परमेश्वर की इच्छा को जानते हैं और एक तथा नमूना पाए हैं।

परमेश्वर ने जब सुलैमान को चुना (1 राजा 2:12; 3:11) तब उसने परमेश्वर से बुद्धि मांगी। (1 राजा 3:5,9)। इस रीति से वह कुशल कारीगर बना। उसने ईश्वरीय ज्ञान तथा समझवाला हृदय मांगा जिससे भले एवं बुरे को वह परख सके। उसने धन का अधिक उम्र या आरोग्य नहीं मांगा परन्तु ईश्वरीय ज्ञान मांगा जिससे वह कुशल कारीगर बन सके।

जिनके पास ईश्वरीय ज्ञान होता है वे उस ज्ञान के द्वारा परमेश्वर के मन को तथा विचार को स्पष्ट रीति से जान सकते हैं। यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर का कार्य शांतिपूर्वक आगे बढ़े तब हमें प्रेरितों के समान दर्शन एवं अनुभव रखने वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होगी।

जून 4

यहोवा को डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है। भजन. 34:7

प्रेरित को कारागृह से छुड़ाने के लिए परमेश्वर ने अलौकिक साधनों का उपयोग किया। उनकी आधीनता के कारण परमेश्वर ने उनके दायित्व को स्वयं अपने हाथों में लिया। प्रभु हर समय इस रूप से नहीं छुड़ाता परन्तु इस समय उसने अपने भक्तों को छुड़ाया।

सन् 1947 में पश्चिम पाकिस्तान में जातीय दंगे हुये तब एक अवसर पर उन्होंने मसीही लोगों को मार डालने का निर्णय लिया था। मुसलमानों ने अपने हथियारों से सुसज्जित होकर मार्टीनपुर गांव में रहने वाले मसीहियों पर तीन रात हमला करने आये। कितने ही मसीही लोग भय के कारण खेतों में यहाँ-वहाँ छिप गये। इन लोगों ने इन्हें आते हुये देखा था, परन्तु जब वे हथियार-बन्ध समीप आये तब ऐसा दिखाई दिया जैसे कि वे स्वयं ही भयभीत हो। चौथी रात को, मुसलमान पुरुषों ने क्षमाशीलता का सन्देश भेजा और कहा, 'आप लोगों पर हमला करने के लिए पिछले तीन रात से आपके गांव आ रहे हैं, परन्तु जब समीप आते हैं ऐसे में तलवार तानकर श्वेत घोड़े पर सवार एक ऐसा व्यक्ति हर समय दिखाई देता रहता है और इसलिये हम आगे बढ़ नहीं सके। हमें क्षमा कर दें'। यह एक सच्ची घटना है।

युद्ध के मध्य में कई लोगों को परमेश्वर ने बचाया है और आसपास बम गिरने के बाद भी वे अपने घरों में सुरक्षित रहे। एक बार पूरा शहर में बांध टूटने से तीस फूट ऊंचाई की स्तर का पानी एक घंटे में सैंतालीस मील की वेग से शहर में घुस आया था। हजारों लोग पानी में बह गये परन्तु जितने विश्वासियों को हम पहचानते थे, वे सभी कुशल थे। एक क्षेत्र में सभी घर गिर गये थे सिवाय एक घर को छोड़कर और वह एक मसीही अनाथ आश्रम था। आसपास के क्षेत्रों में पानी था परन्तु वे कुशल थे। यह सब कैसे हुआ हम इसे नहीं जानते, केवल इतना ही कह सकते हैं कि उसमें परमेश्वर का हाथ था।

भविष्य में कठिनाईया किसी भी प्रकार का संकट आ जाये तब हम पूरा विश्वास रखें कि परमेश्वर जानता है कि अपने लोगों को किस रीति से संभालना है। यदि हम उस पर भरोसा रखेंगे तब चिंतित या व्यकुल होने की आवश्यकता नहीं है, हमारा परमेश्वर हमारी देखभाल करना जानता है।

जून 5

'क्या ही उत्तम है... तेरे इत्रों का सुगन्ध सब प्रकार के मसालों के सुगन्ध से...'। श्रेष्ठ. 4:10

यदि परमेश्वर चाहता तो यूसुफ कठिनाइयों में से निकल आता। परन्तु परमेश्वर ने दुःख आने दिया। यूसुफ को उसके भाइयों ने धिक्कारा, त्याग दिया, गड्ढे में डाल दिया, उसे घर से दूर ले जाया गया, कई वर्षों तक दास बनकर रहा, उसके सभी शारीरिक परीक्षण हुए। त्यागा गया, झूठे आरोप से घिरा, कैद में रहा, उसके बाद परमेश्वर ने उसे ऊंचे सिंहासन पर बैठाया। इस सिंहासन पर से पूरे देश की सेवा करने का अधिकार था। जो ऊंट उसे मिस्त्र में ले गये उन पर लदे सुगन्धित मसालों के द्वारा परमेश्वर ने उसे यह सब दिखाया।

कितने ही सुगन्ध द्रव्य केवल निर्जन स्थानों में होते हैं। आपको आश्चर्य होता होगा, क्यों प्रभु ने मुझे ऐसी कठिन भूमि में रखा है? यहाँ पर किसी के साथ बातचीत मिलकर भजन अथवा प्रार्थना नहीं करना है क्योंकि मैं अकेला ही हूँ। अपने परिवार में मैं अकेला/अकेली हूँ। माता-पिता एवं परिवार के हर एक सदस्य मेरे विरुद्ध है। हे प्रभु, ऐसा क्यों होने दिया'? क्या आप ऐसे अनुभवों में से जा रहे हैं? क्या आपके भाई आपको बेच दिये हैं? क्या वे आपको धक्के देकर निकाल दिये हैं? क्या आप निर्जल गहरे कुएं में डाले गये हैं? क्या आप किसी एकांत स्थान में हैं? तो स्मरण रखें कि इस रीति से आप प्रभु के घर के लिये सुगंधित द्रव्य इकट्ठे कर रहे हैं। आपके वस्त्र इन सुगंधों से महक उठेंगे और आप स्वर्ग जाएंगे तब भी इन सुगंधों को अपने साथ लेते जायेंगे।

हाँ, सुगंन्धित द्रव्य अधिकांश रूप से जटिल एवं एकान्त स्थानों में ही होते हैं। महायाजक के अभिषेक के लिए जो तेल उपयोग होता है वही कोढ़ी के पवित्रीकरण के लिये उपयोग होता था। यह प्रमाणित करता है कि जगत में आपकी समर्पण भरी सेवा द्वारा आत्मिक कोढ़ी भी शुद्ध हो सकते हैं। उसकी सेवा करने तथा उसके लिये सुगंधित द्रव्यों को इकट्ठा करना प्रभु आपको सिखायें।

जून 6

'......यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें'। प्रेरितों. 6:2

हममें से अधिकांश को इन्हीं परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम कार्य को छोड़कर दूसरे कार्य में उलझे रहें ऐसा करने में शैतान सफल होता है। परमेश्वर की ओर से सुसमाचार प्रचार करने की बुलाहट और इस उद्देश्य से पवित्र-आत्मा का अभिषेक पाने वाले लोग भोजन परोस रहे हैं। वे कहते हैं, 'यह काम भी तो किसी को करना ही है, हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा'? अब मुख्य प्रश्न यह है कि, क्या परमेश्वर ने आपको भोजन परोसने के लिए बुलाया है? आप स्वयं ही इसे ढूंढ़े। यदि परमेश्वर ने आपको वचन की सेवा के लिए बुलाया है तो 'महत्वपूर्ण कर्त्तव्य' जैसी दिखाई देने वाली अन्य बातों की ओर झुकाव नहीं रखें।

विदेश में अध्ययन पूरा करने के पश्चात मैं भारत आया तब मुझे इसी समस्या का सामना करना पड़ा। पंजाब में मेरे पिताजी अदालती मामलों में फंसे हुये थे और एक लाख से भी अधिक रुपयों की हानि को उठाया था। उन्होंने मुझसे कहा कि 'तू सबसे बड़ा बेटा है। तेरी मदद पर पूरा परिवार निर्भर है। तू 6-8 महिनों के लिए नौकरी कर ले'। मैंने मेरे पिताजी से कहा- मैं निश्चय जानता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाया है। दो वर्ष के मंथन के बाद मैंने अपना जीवन, समय और शक्ति परमेश्वर को सौंप दिया हैं। और तब मैं परमेश्वर को अनाज्ञाकारी होता हूँ तो आपको अधिक हानि को उठाना पड़ेगा। मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, परन्तु परमेश्वर कर सकता है। मेरी आधीनता में ही आपकी सुरक्षा है। मैं यदि परमेश्वर के आधीन होता हूँ तो धीमे-धीमे आप और पूरा परिवार आशिष पाएगा। मैं परमेश्वर पर भरोसा रखता हूँ'। मेरी माता रोने लगी और मेरे पिताजी भी रोने लगे। उन्होंने अपनी पगड़ी निकालकर मेरे पैरों पर रखी और कहा, 'कुछ ही महीनों के लिए भी तू नौकरी नहीं करेगा'? मैंने फिर से दृढ़तापूर्वक कहा, 'नहीं, परमेश्वर को ही प्रथम स्थान मिलना चाहिये। मेरी आधीनता के द्वारा एक दिन आपकी कठिनाईयां दूर होगी'।

अब मैं जब कभी पंजाब जाता हूँ मेरे परिवार वाले परमेश्वर के प्रति मेरी आधीनता के लिए आभार व्यक्त करते हैं, क्योंकि उसके द्वारा उनको बहुतायत से आशीषें मिली। उन्हें सुसमाचार सुनाने की मुझे स्वतंत्रता है। मध्य-रात्रि तक बैठकर वे परमेश्वर का सन्देश सुनते हैं।

मुझे स्मरण है कि, प्रारंभ में उनके गिड़गिड़ाने और विनती के आधीन होकर परमेश्वर की बुलाहट को अस्वीकार करने की परीक्षा कितनी भारी होती और यह कितनी हानि की ओर ले आती।

जून 7

...जो कोई तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुममें प्रधान होना चाहे, वह सबका दास बने। मरकुस 10:43-44

'मनुष्य पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा'। (मत्ती 26:2)। प्रभु ने कई बार चेलों से यह बात कही परन्तु चेलों ने उसे न तो समझा और न ही उस पर विश्वास कर सके। इस विषय में वे आत्मिक रीति से बहरे बन गये थे। प्रभु के वचनों को नहीं समझने के कारण पतरस प्रभु को उलाहना देता है। मरकुस 9:34 में प्रभु के वचनों का अर्थ समझने के बदले वे वाद-विवाद करने लगे कि उनमें बड़ा कौन होगा अथवा प्रभु के बाद अगुआ कौन होगा। मैं मानता हूँ कि पतरस, याकूब और यूहन्ना ने प्रभु के सन्देश से अधिक उसके व्यक्तिगत सम्मान को अधिक महत्व देते थे। अधिकांश सेवकों में यही निष्फलता देखी जाती है। वे अनेक रीति से प्रभु की सेवा करें फिर भी स्वयं के लिये सम्मान, महिमा और आदर ढूंढ़ते हैं।

अनेक उपदेशकों के मन में यह विचार सबसे पहले आते हैं कि लोगों में या फिर अन्य रीति से उनका नाम पहले हो। अपनी शिक्षा और उपदेश में प्रभु यीशु मसीह को महान करने के बदले स्वयं को ऊंचा करते हैं। अन्य सेवक याकूब और यूहन्ना के समान अलग समूह इस विचार से बनाये कि प्रभु यीशु मसीह के पास गुप्त में जाकर विशेष स्वीकारात्मक पत्र पायें कि विशेष स्थान को प्राप्त कर सके। इसका अर्थ यह है कि एक प्रभु के बाएं हाथ और दूसरा प्रभु के दाहिये हाथ बैठ सकेगा। उनकी गुप्त इच्छायें प्रगट है। ऐसा पूछने के बदले कि 'प्रभु, क्यों दु:ख सहा?' स्वयं का क्या होगा और स्वयं ही प्रभु के पास जाने क पूर्व किस रीति से उससे कुछ प्राप्त करें उसकी ही उन्हें चिन्ता थी। प्रभु का दु:ख, मृत्यु और पुनरुत्थान का उद्देश्य समझने के बदले स्वयं किस रीति से महान हो सके यही उनकी चिन्ता थी। प्रभु ने उनसे जो कुछ पहले कहा था उसे वे भूल गये थे। उन्हें समझाया गया था कि यदि कोई बड़ा बनना चाहे तो वह नम्र बने। झगड़ा करके और सम्मान पाने के लिये सांसारिक रीतियों को अपनाने की भी आवश्यकता नहीं थी। उनसे स्पष्ट कहा गया था कि जो नम्र करेंगे उन्हें उठाकर उच्च स्थान पर ले जाया जायेगा।

परमेश्वर का वचन ऐसा स्पष्ट होने के बाद भी स्वयं उन्हें प्राप्त होने के लिए सांसारिक रीतियों का उपयोग करने से हम कैसे मूर्ख बनते हैं। सच्ची नम्रता के द्वारा प्रभु हमें ऊंचा स्थान दे सकता है।

जून 8

...तुम्हारे लिए जो विश्वास करते थे, वह तो बहुमूल्य है...।
1 पतरस 2:7

भजन का मतलब है। (Worship means worthship) भजन करते समय हम प्रभु से कहते हैं कि 'तू मेरे लिए सबसे बहुमूल्य है'।

पंजाब में अमृतसर के पास एक व्यापारी सुँदर ईरान की गलीचों का व्यापार करता था। एक दिन एक धनी व्यक्ति उस दुकान में आया उसे एक छोटा गलीचा पसंद आ गया। उसने उसका मूल्य पूछा। व्यापारी ने कहा, 'यह बेचने के लिए नहीं है'। धनवान व्यक्ति उसके लिये पांच हजार रुपये देने को तैयार हुआ, परन्तु व्यापारी ने कहा कि 'उसे बेचना नहीं है'। उसके बाद उस व्यक्ति ने दस हजार रुपये और थोड़ी देर बाद बीस हजार रुपये देने को तैयार हुआ परन्तु उस व्यापारी ने इन्कार करते हुए कहा, 'नहीं साहब, यह बेचने के लिए नहीं है। वह मेरे लिए अति-मूल्यवान है, क्योंकि मेरे पिताजी ने अपनी मृत्यु के पूर्व वह मुझे दिया था। और इसी रीति से, मेरे दादाजी ने मेरे पिताजी को दिया था, वह हमारे परिवार का खजाना है, इसलिऐ चाहे जितना भी पैसा मिले फिर भी मैं उसे नहीं दूंगा।

हमारा प्रभु हमारे लिये इससे भी कई गुणा अधिक बहुमूल्य है क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिये अपना प्राण दिया। इसलिये हम भी उसके लिए कितनी भी कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। हम अपने पिता, माता भाई-बहन, पत्नि, बच्चों या दूसरे किसी अन्य वस्तु से भी अधिक प्रेम करते हैं। यही सच्ची आराधना है। परन्तु इसे हमें अपने हृदय की गहराई से कहना चाहिये। आराधना की सभा में ऐसे शब्दों को बोलते तो हैं, परन्तु जब सचमुच कीमत चुकाना होता है तब हम तैयार नहीं है। इसलिए अनेकों बार हम प्रभु को दु:खी करते हैं। अनेकों बार मनुष्य के भय के कारण परमेश्वर के आधीन होने में विफल हो जाते हैं। हमारे मित्र पड़ोसी या संसार के लोग इस भय के लिये क्या कहेंगे जिसके लिये प्रभु ने कीमत चुकाई और उस पर विश्वास करने के द्वारा चुकाने की मांग कर रहा हूँ।

जून 9

परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों से सामने खड़े रह सको। इफि. 6:11

इब्रानियों 9वें अध्याय में प्रभु यीशु मसीह, हमारे प्रेमी उद्धारकर्ता को हम सनातन महायाजक के रूप में देखते हैं। महायाजक के रूप में मध्यस्थ की सेवा द्वारा संपूर्णता प्राप्त करने में वह हमारी सहायता करता है। हमारी प्रत्येक आवश्यकताओं के लिए अनुग्रह के सिंहासन के पास आने के लिये वह हियाव भी देता है, और कैसे वहाँ पहुंचे इसे सिखाता भी है।। (इब्रा. 4:6)

लूका 4:1-2 में हम देखते हैं कि प्रभु यीशु का बपतिस्मा होने के पश्चात उसे जंगल में ले जाया गया। उसके पास सब अधिकार एवं पराक्रम होने के बाद भी शैतान को क्यों उसके समीप आने दिया गया यह एक भेद है। पवित्र-शास्त्र में लिखा हुआ है कि 'यह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला'। (इब्रा. 4:15)। इसलिये हम किस प्रकार की परीक्षाओं का सामना करते हैं इसे प्रभु जानता है। हमारा प्रतिदिन का युद्ध है और जीवन के अंत तक चलता रहता है। हमारे आनन्द और शान्ति को छीन लेने के लिए शैतान के पास अनेक हथियार है। वह परमेश्वर के सेवकों में शंका, झगड़े, फूट और ईर्ष्या लाता है। परन्तु हमें एक बहुत ही मजबूत हथियार दिया गया है, जिसके द्वारा हम शैतान को पराजित कर सकते हैं। शैतान मित्रों, पड़ोसियों और सगे-संबन्धियों द्वारा सिंह, ज्योर्तिमय दूत और फाड़ खाने वाले भेड़िये के समान आता है। वह इस घड़ी की प्रतिक्षा करता है कि हम निर्बल, घर से दूर और अकेले हों परन्तु प्रत्येक बातों में हमारा हथियार केवल प्रार्थना ही है। शत्रु के प्रत्येक आक्रमण और हमारी सब आवश्यकताओं के लिए यह हथियार काफी है।

हमारा महान स्वर्गीय महायाजक के रूप में हमारे लिए अपने ही लहू को लेकर पवित्र स्थान में प्रवेश किया। (इब्रा. 9:1,2)। उस लहू की सामर्थ के द्वारा प्रभु की याजकीय सेवा का हम दावा कर सकते हैं और वह अनुग्रह के सिंहासन के समक्ष आने में हियाव देता है। इस्राएल पर हमला करने की अराम के राजा की हर एक गुप्त योजना परमेश्वर एलीशा पर प्रगट करता था। इसलिए वह इस्राएल के राजा को चेतावनी देता था और वे बच जाते थे। इसी रीति से शैतान हमारे ऊपर कौन से हथियार प्रयोग करने वाला है, कब और किस रीति से हमला करने वाला है यह सब प्रभु जानता है क्योंकि वह हमारा महान याजक है। हमें उसकी वाणी सुनना सीखनी ही चाहिए कि शत्रु के आक्रमणों के विषय में जानकर उसकी सब युक्तियों को नाश करने के लिए तैयार रह सकें।

जून 10

जब लोगों ने मुझसे कहा, आओ, हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित हुआ। भजन. 122:1

मलिकिसिदक न केवल इब्राहिम को आशीष दी परन्तु सिय्योन में से उसे भोजन भी दिया: उसने उसे रोटी तथा दाखरस दिया। अब्राहम युद्ध के मैदान में से आ रहा था इसलिए वह थका हुआ था। इसके बाद भी सदोम का राजा उसे मुर्गी या मांस या बिरयानी खाने के लिये दिया होता तो वह कहता 'नहीं' धन्यवाद। मुझे तेरे पास से मुझे कुछ भी नहीं चाहिये।

सदोम का राजा बहुत ही आनन्द से अब्राहम और उसके सेवकों को खिलाया होता क्योंकि इब्राहिम ने उसे शत्रु के हाथ से छुड़ाया था। परन्तु अब्राहम ने उसकी सभी उत्तम वस्तुओं में से कुछ भी नहीं लिया, क्योंकि परमेश्वर ने पहले भी सिय्योन के भोजन के साथ मलिकिसिदक को भेज दिया था। परम-प्रधान परमेश्वर का याजक उसके लिए रोटी और दाखरस लाया जिसके कारण उसकी थकान उतर गयी थी। परमेश्वर के सिय्योन में आने से आप देखेंगे कि आपका थकान उतर गया।

बहुत से लोग एक छोटी शारीरिक बहाने से भी परमेश्वर के घर से दूर रहते हैं। वे कहते हैं, 'हम परमेश्वर के घर नहीं जा सकते हैं। वहाँ बहुत लम्बी-लम्बी सभा होती है और हमारे लिये ठीक नहीं है। कल रात अच्छी नींद नहीं आयी, वे ऐसा विचार करते हैं कि घर में रहने से अच्छे हो जायेंगे इसलिए वे घर में रहते हैं। उनकी तबियत और अधिक बिगड़ती है। अन्य कई लोग निराशा और दु:ख में होने के कारण परमेश्वर के घर से दूर रहते हैं। शायद किसी ने कुछ कहा होगा जिसके कारण उन्हें बुरा लगा हो और परमेश्वर के घर से दूर रहते हैं। परन्तु ऐसा करने के द्वारा उनकी परिस्थिति और अधिक बिगड़ती है। परमेश्वर के घर में आने के द्वारा ही परमेश्वर के लोग स्वर्गीय भोजन, ईश्वरीय सामर्थ और आनन्द प्राप्त करते हैं। वे परमेश्वर के सामने नवीन, दृढ़ और अरोगी रहते हैं और इब्राहिम के समान हर एक परीक्षाओं का सामना कर सकते हैं।

परमेश्वर के घर से दूर न रहें और उसे तुच्छ नहीं जानें। परमेश्वर के पवित्र लोगों की संगति को भी तुच्छ नहीं जानें। परमेश्वर के घर में आकर भागीदार बनें और तब अपने जो कुछ भी खोया है उसे वापस पायेंगे।

जून 11

... और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं।

इब्रा. 10:22

जब प्रभु यीशु क्रूस पर था तब बहुतों ने उससे कहा, 'यदि तू मसीह है तो क्रूस पर से उतर आ और हम तुझ पर विश्वास करेंगे'। प्रभु यदि इच्छा रखता तो वह वहाँ से उतर आता परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। मुसलमान लोग अपने अनेक पुस्तकों में लिखते हैं 'प्रभु यीशु को कभी भी दफनाया नहीं गया। वास्तव में तो वह मरा ही नहीं था। वह क्रूस पर से उतर आया और अलौकिक रीति से स्वर्ग पर चढ़ गया। यह शैतान की शिक्षा है कि हमारे पापों का दण्ड भोगने के लिए प्रभु मृत्यु को चुना'। हम पापी स्वभाव के लिये जायें इसलिए वह मर गया और गाड़ा गया जिससे कि हमारे पाप गाड़े जायें और वह फिर से जी उठा जिससे उसका जीवन हमारे अन्दर आये।

मसीह के गाड़े जाने की सामर्थ को विश्वास से अपने अन्दर लेने के द्वारा हमारे पाप गाड़े गये हैं, और इस तरह से हमारा विवेक दोष-मुक्त होता है। प्रत्येक पाप का अंश जो हमारे विवेक को दोषी ठहराता है उसे मार दिया जाता है।

कल्पना करें कि जब कोई व्यक्ति जो झूठ बोलना चाहता है उसका विवेक उसे ऐसा करने से रोकता है, परन्तु उसे शान्त कर देता है। परिणाम-स्वरूप विवेक शान्त हो जाता है और मर जाता है। इसके विपरीत किसी भी समय विवेक सचेत हो जाता है तब वह उसे दोषी ठहराता है कि, 'मेरे मना करने पर भी तूने यह कार्य किया। मेरे विरोध का तूने सामना किया और मानसिक पीड़ा को सहा'। इस तरह उसका विवेक उसे पीड़ा देता है। ऐसी स्थितियों में कई लोग दान-पुण्य करके अपने विवेक को शांत करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु वह सांत्वना क्षणिक होती है।

सच्ची सांत्वना तभी प्राप्त होती है जब पाप क्षमा हाते है और मसीह के साथ उसे गाड़ दिया जाता है। हमारा प्रभु इसलिऐ मरा और गाड़ा गया कि हमारे पाप उसके साथ गाड़ दिये जाएं।

जून 12

मेरे भाइयों हमारे महिमा-युक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुममें पक्षपात के साथ न हो।

याकूब 2:10

यहूदी विश्वासियों के समान ही सामरी विश्वासी लोग प्रेम और दया प्राप्त करें क्या यह उचित है इस प्रकार का प्रश्न खड़ा करके शैतान फूट डालना चाहता था। यह समस्या प्रत्येक स्थान पर देखी जाती है।

आज भी शैतान इसी रूप से, अमेरिका निवासियों तथा भारतीय, शिक्षित तथा अशिक्षित, धनी तथा निर्धन और धर्मान्तरिक विश्वासियों और ईसाइयों के मध्य अनेक भेदभाव खड़ा करता है। यह समस्या खड़ी होगी ऐसा परमेश्वर पहले से जानता था। यही कारण है कि सामरियों ने विश्वास किया और उसके बाद परमेश्वर ने प्रेरितों को यरूशलेम से सामरिया भेजा कि वे स्वयं ही देखें कि सामरियों को भी वही पवित्र-आत्मा का दान दिया गया जो यरूशलेम के विश्वासियों को दिया गया था। उनमें कोई भेदभाव नहीं था।

हम भी इस बात से सावधान हो जाएं। प्रत्येक प्रकार की भेदभाव को दूर रखने की सावधानी करें। यदि आप जात-पात या देश की भिन्नता में रहेंगे तो अपना स्थान खो देंगे और झगड़े होंगे। हमें एक परिवार एवं एक संगति के रूप में रहने का प्रयत्न करना चाहिये। भारत में कई स्थानों में हिन्दी और अंग्रेजी में ऐसी सभाएं अलग-अलग होती हैं। मेरी दृष्टि में यह गलत है। इससे विभाजन होते हैं।

हमारे अनुभव में हम ऐसे भेदभावों को स्थान नहीं देते हैं और संदेशों को अंग्रेजी में देकर जितनी आवश्यकता हो उतनी ही भाषाओं में अनुवाद करने का प्रयत्न करते हैं। इस रीति से एकता बनी रहती है। इस प्रकार हम साथ में जी सकते हैं, साथ रहकर सेवा कर सकते हैं और भाषा और जात-पात की भेद भावना पर जय प्राप्त कर सकते हैं।

जून 13

...हम ...मनुष्यों को नहीं परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं। 1 थिस्स. 2:4

एली के समय में परमेश्वर का वचन मिलना दुलर्भ था परन्तु शमूएल के द्वारा परमेश्वर का संदेश पूर्ण रीति से, अधिकार, सामर्थ और पवित्रता के साथ लोग सुन सकें। इसलिए जब शमूएल आता था तब लोग कांपते थे। वह छड़ी लेकर आता था, ऐसी नहीं, परन्तु परमेश्वर के नबी के रूप में परमेश्वर के संदेशों के साथ वह आता था। मनुष्य के ढोंग से वह भरमाता नहीं था, परन्तु विश्वासपूर्वक परमेश्वर का संदेश दिया करता था।

जागृति के लिए यह एक शर्त है। परमेश्वर के दासों को परमेश्वर का संदेश संपूर्ण रीति से सामर्थ, अधिकार और पवित्रता के साथ देना चाहिए, बाद में चाहे लोगों को और अगुओं को अच्छा लगे या नहीं। अनेकों बार परमेश्वर का संदेश विश्वास-पूर्वक देने से डरते हैं। इसके विपरीत वे लोगों को प्रसन्न करने के लिए मीठी-मीठी बातें करते हैं। लोग परमेश्वर के मुख-पात्र नहीं हो सकते हैं। परमेश्वर की सेवा करते हुये वे गिर गये हैं।

यदि आप परमेश्वर के सच्चे मुख-पात्र होना चाहते हैं और परमेश्वर के सच्चे सेवक बनना चाहते हैं तो ऐसा नहीं सोचें कि एक ही दिन में यह संभव हो जायेगा। परमेश्वर के पास से संदेशों को प्राप्त करने के लिए आपको रात-दिन घुटनों पर रहना पड़ेगा। कितनी ही गृहणियां रात के रखे हुए भोजन में नमक, काली मिर्च इमली और अन्य मसाले डालकर तड़क देती है, जिससे की भोजन ताजा दिखे और स्वादिष्ट बने। कई प्रचारक लगभग इसी रीति से पुराने संदेशों का उपयोग करते हैं। परन्तु परमेश्वर की पूरा आशीष चाहते हैं तो हमें अधिकांश समय घुटनों पर रहकर परमेश्वर का संदेश प्राप्त करना चाहिए। प्रभु से विनती करें कि वह हमारा अभिषेक करे और प्रतिदिन अपना संदेश दें। संदेश तैयार करने के लिए अपनी समझ, सामर्थ या ज्ञान पर भी निर्भर नहीं रहना चाहिए।

शमूएल परमेश्वर के सिंहासन के संसर्ग में रहकर परमेश्वर के विचारों को जान लेता था और इस प्रकार परमेश्वर का मुख-पात्र बना। पूरी आधीनता में रह कर एवं नम्रता के साथ वह परमेश्वर की अगुवाई में बोलता था और काम करता था।

जून 14

और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह बहुतायत से दे सकता है जिस हर बात में और समय, सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। 2 कुरि. 9:8

परमेश्वर का अनुग्रह प्रत्येक परिस्थिति में संतुष्ट रहने में हमारी सहायता करती है और साथ ही साथ में परमेश्वर के लिये खर्च करने और खर्च हो जाने में विशाल हृदय भी देता है।

अधिकांश विश्वासी आनन्द-पूर्वक देना क्या है, इसे जानते नहीं है। यदि वे प्रभु को पन्द्रह रुपये देते हैं तो इस बारे में अनगिनत बार बदलते रहते हैं। परन्तु चप्पल के लिए उससे दुगने पैसों को आनन्द से खर्च कर देते हैं। कई बार जब वे एक रविवार को थोड़े रुपये देते हैं तब अगले रविवार को कुछ भी नहीं देते। यदि आपने परमेश्वर का अनुग्रह चखा है और वह किस रीति से सब कुछ भरपूरी से देखता है तब आप खुशी से दे सकेंगे। दशमांश देने में मुझे पूरे दो वर्ष लग गये। आरंभ में मेरे पास पैसे नहीं थे। कई सप्ताह के बाद मुझे एक छोटी रकम प्राप्त हुई। दशमांश देने में अपनी लाचारी को समझाने का प्रयत्न करते हुये मैंने प्रभु से कहा, प्रभु देख, मैं कितना निर्धन हूँ'।

उसके बाद प्रभु ने मुझसे बात करते हुए इस रीति से कहा: 'यदि तू एक रुपये से अपना भरण पोषण कर सकता है तब इन पैसों से तू अवश्य ऐसा ही कर सकता है'। इस पर मैंने प्रभु से क्षमा मांगा और दशमांश देना आरंभ किया। प्रभु को मैं, चौथा भाग, आधा भाग, तिहाई भाग और अन्त में सब ही देना सीखा। परमेश्वर की कृपा मुझे देना और वह भी प्रसन्नता के साथ देना सिखाता है। यह अनुग्रह अद्भुत है और यह हम सबको सिखाता है कि किस रीति से परमेश्वर के लिए खर्च और स्वयं खर्चा हो जाना चाहिए।

जून 15

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। गल. 3:28

भजन का अति महिमावन्त दृश्य की एक झलक हमें प्रका. 5:11-14 में दिखाया गया है। महिमामय मण्डली एवं स्वर्गदूतों की सेना एक होकर प्रभु की आराधना करते हुए कहते हैं कि 'वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है। यह तो सच्चाई से संपूर्ण हृदय-रूपी आराधना को चित्रित करता है। जब हम प्रभु को आमने सामने देखेंगे तब हम भी इसी रीति से उसकी आराधना करेंगे।

प्रभु की मेज के सामने हमें स्मरण दिलाया जाता है कि हमारा परमेश्वर एवं उद्धारकर्ता वापस आ रहा है। उसने जो काम आरंभ किया है वे उसके दूसरे आगमन के समय ही पूरा एवं सम्पूर्ण होगा। इसलिए प्रभु की मेज को आसपास जब हम प्रभु को स्मरण करते हैं तब विश्वास-पूर्वक इस बात को प्रगट करते हैं कि हम उस दिन की प्रतिक्षा कर रहे हैं। हम मानते हैं कि वह दिन अद्‌भुत होगा। जैसा वह है वैसा ही हम उसे देखेंगे, हम उसके समान होंगे और उसके साथ हम राज भी करेंगे। प्रभु के घायल शरीर और बहे हुए लहू पर जब ध्यान करता हूँ तब में विश्वास करता हूँ कि मुझे उसके ही समान बनाने के लिए उसने पूरा प्रबंध किया है। जब अपनी ओर देखता हूँ तब मुझे निर्बलता, भूख, असफलता और अपराध के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता है। परन्तु उसमें मैं अपनी संपूर्णता को देखता हूँ।

परमेश्वर के वचन में इकट्‌ठे मिलने के महत्व पर विशेष दबाव दिया गया है। व्यक्तिगत रीति से हम परमेश्वर के प्रेम को और उसके अभिप्रायों को पूर्ण रूप से समझ नहीं सकते हैं। सभी पवित्र लोगों की हमें आवश्यकता पड़ती है (इफि. 3:1,8,19)। यह एक बड़ा भेद है। एक परिवार के रूप में जब हम इकट्‌ठे मिलते हैं तब विशेष एवं पूर्ण-रीति से परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में बहाया जाता है। इस परिवार में यहूदी या सामरी, स्त्री या पुरुष, दास या स्वतंत्रता जैसी भेद-भावना नहीं है। अलग-अलग परिवार, देशों एवं जातियों से आने के बाद भी हम सब एक है। एक ही मेज में से भाग लेते हैं, एक ही प्रभु को स्मरण करते हैं। ऐसी संगति में जब हम इकट्‌ठे मिलते हैं तब, हम से प्रेम रखकर हमारे लिए स्वयं को दे देने वाले प्रभु के प्रति आराधना से हमारे हृदय छलक-छलक जाते हैं।

जून 16

....भवन के बनते समय हथौड़े, बसूली व और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी सुनाई नहीं पड़ा। 1 राजा 6:7

जब सुलैमान ने भव्य मन्दिर को बनाया तब हथौड़ी या ठोकने का शब्द सुनाई नहीं पड़ा। यह बात अति ध्यान देने के योग्य है, क्योंकि सामान्य रीति से जब एक छोटा घर बनता है तब भी हथौड़ी या दूसरे औजारों का शब्द सुनाई पड़ता है।

परन्तु परमेश्वर के मन्दिर का निर्माण कार्य शान्ति से, सरलता से एवं सौम्यता से हुआ। यह तो परमेश्वर के दासों, सहकर्मियों और परमेश्वर के लोगों के मध्य सच्ची आत्मिक एकता के विषय में बता रहा है। इसी बात से मण्डली अर्थात परमेश्वर का मन्दिर बना सकते हैं। इस सिद्धान्त का पालन करने में लोग विफल हो जाएं तब परमेश्वर का काम शांत रीति से, सरलता से और प्रसन्नता-पूर्वक होने के बदले उसमें गड़बड़ी शोर और अव्यवस्था दिखाई देती है। इन सब बातों को खड़े करने वाले ऐसे स्वार्थी एवं सांसारिक मन वाले लोग हैं, जो प्रभुत्व, स्थान, ज्ञान, मान और व्यक्तिगत लाभ पाने के लिए झगड़े करते रहते हैं। परमेश्वर के घर का निर्माण कार्य आत्मिक मन रखनेवाले, टूटे हृदय वाले लोगों द्वारा हो सकता है, जो प्रत्येक विषय में परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए संगति में रहकर प्रार्थना करें और अपने से अधिक दूसरों के उत्तम मानते हो। वे परमेश्वर के सच्चे सहकर्मियों के रूप में उपयोग हो सकते हैं। वे पवित्र उद्देश्य लिये हुये सच्ची आत्मिक एकता एवं मेल-मिलाप से परिश्रम कर सकते हैं।

इस प्रकार से सुलैमान सच्ची एकता का स्वभाव और उसकी आवश्यकता को प्रगट किया और ऐसे ही परमेश्वर का निवास-स्थान अर्थात उसकी मण्डली का निर्माण कार्य हो सकता है।

जून 17

...क्योंकि मैंने यह सीखा कि जिस दशा में हूँ, उसी में सन्तोष करूं।
फिलि. 4:11

परमेश्वर ने कौवों को आज्ञा दी कि वे एलिय्याह को खिलाएं। सभी पक्षियों में कौआ सबसे अधिक गंदा और लालची है। प्रत्येक में वह अपनी गंदी चोंच डालता है।

यदि परमेश्वर चाहता तो कबूतर का उपयोग करता। परन्तु एलिय्याह ने कौवों से नहीं, परन्तु परमेश्वर के हाथ से भोजन स्वीकार किया और उसके लिए परमेश्वर का आभार माना। परमेश्वर हमें चाहे कैसा भी भोजन दे, जब उसे हम धन्यवाद के साथ स्वीकार करते हैं तब प्रार्थना में अत्यन्त शांति मिलती है। कौवे समय पर भोजन लाए, वे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे। प्रतिदिन सुबह और शाम एक ही भोजन मिलता था। हमें यदि एक ही प्रकार का भोजन मिले तो ऊब जाते हैं और बुड़बुड़ाते हैं। परन्तु एलिय्याह ने प्रतिदिन इसी भोजन को परमेश्वर की ओर से स्वीकार किया। यह उसकी आधीनता को दर्शाता है।

कौवे बहुत लालची होने के बाद भी, छोटे से छोटा टुकड़ा भी स्वयं के लिए न रखकर सब एलिय्याह को देते थे। कई बार लोग रेल प्लेटफार्म पर भोजन लेकर जाते हैं, तब कौवे आकर उसे झपट जाते हैं। परन्तु यहाँ पर कौवे विश्वास-पूर्वक उनको दिया हुआ मांस ले गये और स्वयं के लिए कुछ भी रखे बिना सब एलिय्याह को दे दिया।

कई विश्वासी परमेश्वर को देने वाला भाग नहीं देते हैं और तो और, वे दुरुपयोग भी करते हैं। यदि परमेश्वर हमें एक रुपया भी दे तो हमें उसका भी दशमांश देना चाहिए। इससे भी अधिक देना और भी अच्छा है।

जून 18

...हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर है। 2 कुरि. 6:16

मेरा हृदय और मेरा शरीर परमेश्वर का निवास-स्थान होना चाहिए। मेरा घर और मेरी मण्डली भी उसका निवास-स्थान होना चाहिए। परमेश्वर का घर बनाना हो तो सर्वप्रथम हमारा शरीर परमेश्वर का मन्दिर बनना चाहिए। यह एक गंभीर चेतावनी है।

परमेश्वर का घर बनाने में हम भाग लेना चाहते हैं तो अपने शरीरों को शुद्ध एवं पवित्र रखना चाहिए, जिससे कि वह परमेश्वर के अनुरूप निवास-स्थान बन सके। अपने जीवन और शरीर के एक-एक अवयव को हमें पवित्र रखना पड़ेगा। तभी पवित्र-आत्मा हमारे अन्दर स्वतंत्र रीति से रह सकेगा और जीवन बिता सकेगा, अन्यथा हमारे परिश्रम को वह ग्रहण नहीं कर सकेगा। जब मन, वचन और चाल चलन द्वारा हम अशुद्ध होते है तब तुरन्त ही शुद्ध होने के लिए पवित्र लहू का दावा करना चाहिए। इस रीति से सम्पूर्ण देह को हम शुद्ध, पवित्र और उसके उपयोग के लिए निष्कलंक रख सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह के मुख्य आज्ञा का पालन, पुनरुत्थान की सामर्थ, परमेश्वर के वचन का अधिकार एवं सामर्थ एक-दूसरे के प्रति सेवा और सहायता और साथ मिलकर भजन करना सीखने के द्वारा परमेश्वर की मण्डली को बना सकते हैं। परमेश्वर के निवास-स्थान को बनाने में भाग लेने के द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति की समीपता का अनुभव कर सकेंगे।

परमेश्वर का घर बनाने में प्रत्येक विश्वासी का भाग है। हमारे शरीर जब परमेश्वर का मन्दिर बनते हैं तब उसकी और दूसरों की सेवा किस रीति से करनी चाहिए, इसे प्रभु अपने आप सीखाता है। इस प्रकार से स्वर्गीय मण्डली के लिए स्वर्गीय योजना प्रगट होती है, जिसमें प्रत्येक विश्वासी का भाग है। कई विश्वासी केवल संदेश सुनने के लिए या गीतों को गाने के लिए या किसी अन्य उद्देश्य से प्रभु के घर में जाते हैं। परन्तु बहुत थोड़े ही प्रभु की सेवा करने के लिए जाते हैं। प्रभु हम से कौन सी सेवा चाहता है इसे हम प्रार्थना द्वारा ढूंढ़ सकते हैं। आप प्रार्थना कर सकते हैं, कि प्रभु, क्या तू चाहता है कि आवश्यकमंदों की सहायता करूं या दु:ख और निराशा में पड़े हुओं को सांत्वना दूं? निर्बलता और निर्धनता, बिमारी और निराशा में पड़े हुओं के लिए तेरे अपने विचारों और संदेशों को मुझे दे'। परमेश्वर का निवास स्थान बनाने में हम भाग ले सकते हैं।

जून 19

यहोवा को अपने सुख का मूल जान और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। भजन. 37:4

जब हम नया जन्म पाते हैं तब हमें आनन्द प्राप्त होता है और परमेश्वर की उपस्थिति में जीने के द्वारा वह आनन्द और बढ़ाता जाता है। परन्तु खाना पीने मित्रों, समृद्धि, ख्याति और तो और, पवित्र-शास्त्रीय ज्ञान में प्रवीण होने की इच्छाओं से सदा के लिए दूर हो जाते हैं, और केवल यहोवा में ही आनन्द मनाते हैं, यह आनन्द अधिक दृढ़ बनता है। जब हम केवल यहोवा में आनन्द मनाते हैं तब जो वास्तविक आनन्द जो वस्तुओं से नहीं मिलता, इससे भी ज्यादा आनन्द हमें यहोवा देता है।

जो लोग पहाड़ों की सुन्दरता के विषय जानते हैं वे लोग एवरेस्ट की शिखर की एक झलक पाने के लिए बहुत समय एवं पैसे खर्च करते हैं और कुछ क्षणों के लिए यह झलक देखने को मिले तो उनको कितना आनन्द होता होगा। क्या हमारा प्रभु लाखों में शिरोमणी एवं श्रेष्ठ नहीं है? उसकी महिमा कभी कम नहीं होती है। हमें उसकी महिमा अधिक से अधिक देखने की इच्छा रखनी चाहिए।

मत्ती 17 में पहाड़ के ऊपर यूहन्ना ने प्रभु यीशु का रूपान्तर देखा, यह एक अद्‌भुत अनुभव था। परन्तु प्रका. 1 में यही यूहन्ना वृद्धावस्था में था तब यहाँ प्रभु को पुनरुत्थान की महिमा है और विशेष महा-प्रतापी में देखता है। यही हमारा आनन्द होना चाहिए। हमें जो वह देता है, उसके लिये नहीं, परन्तु वह स्वयं ही हमारा आनन्द है, हमारी चंगाई अथवा प्रार्थनाओं के लिए नहीं, परन्तु इसलिये कि हमने उसके मनोहर चेहरा की महा-प्रतापी की झलक देखी है और हमारा हृदय आनन्द से भरपूर हो जाता है।

जून 20

मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? भजन. 56:11

नहेम्याह को सम्बलल्त और तेबियाह ने शहरपनाह बनाने के दायित्व से रोकने का प्रयत्न किये जब परमेश्वर की संतान के रूप में हम उसके काम में मगन होते हैं तब सांसारिक लोग सांसारिक समारोह में हमें निमंत्रण देते हैं। उनका उद्देश्य यह होता है कि प्रभु का काम करने में हमें रोकें। कभी-कभी वे विश्वासियों को उच्च पद पर नियुक्त करते हैं, कि अपने गौरव के आकर्षण में फंस जायें। नहेम्याह को तंग करने की उनकी सभी युक्तियां एवं योजनाएं विफल हो गई तब हर प्रकार के झूठे दोषारोपणों से भरपूर एक ऐसा खुल्ला पत्र उन्होंने नहेम्याह को लिखा। आज भी हम देखते हैं कि कितने ही ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के दासों एवं लोगों के विरुद्ध गलत पत्र लिखते हैं। उनकी प्रेरक बुद्धि दोषी होने के कारण वे बिना अर्थ की बातों को गलत रीति से बड़ा स्वरूप देते हैं परन्तु हमारा सबसे प्रभावकारी हथियार प्रार्थना है जिसके द्वारा हम इस पूरी बात को आपने असफल न होने वाले परमेश्वर के हाथ में सौंप देते हैं। लोग जब हमारे ऊपर दोषारोपण करें तब अपना बचाव करने के लिए बहस करके समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं। हमें हानि पहुंचाने वाले शत्रु के सभी प्रयासों में केवल प्रार्थना ही उसकी धूर्तता और चाल का सामना कर सकता है और उसे पराजित कर सकता है। जब शत्रु हमारे ऊपर हमला करें तब यदि हम प्रार्थना के पवित्र-स्थान में छिप जाएं तो यह बिल्कुल शक्तिहीन हो जाता है।

सम्बल्लत और तोबियाह अपनी योजना एवं प्रयास में विफल हुए तब उन्होंने नहेम्याह के सहकर्मियों में से एक शमायाह को अपनी ओर कर लिया, जिससे कि वह नहेम्याह को गलत सलाह देकर अनुचित कराये। इस रीति से कई विश्वासियों ने प्रभु पर विश्वास खो दिए है। प्रार्थना द्वारा हमें परमेश्वर की स्वर्गीय इच्छा और सलाह प्राप्त हो सकती है। हमने ऐसे अनेक लोगों को देखा है, जो इस विषय में विफल हो गए है। प्रभु के काम के लिए, जैसे कि प्रार्थना घर के लिए जमीन खरीदना हो या निर्माण-कार्य करना हो तो प्रभु पर भरोसा रखने के बदले वे सांसारिक ज्ञान का उपयोग करके सांसारिक मित्रों से आर्थिक मदद मांगते हैं, वे ऐसा सोचते हैं कि यह तो प्रभु का काम है इसलिए रुपया उधार लेने में गलत क्या है, क्योंकि हम वापस करेंगे। परन्तु वे नहीं जानते कि धन प्राप्त करने के लिए ऐसी सांसारिक रीतियों को प्रयोग करने के द्वारा ही आत्मिक अन्धेरापन आता है।

जून 21

और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। कुलुस्सियों 2:12

इब्रा. 6:2 में 'बपतिस्मों की शिक्षा-रूपी नींव' ऐसा लिखा हुआ है। 'बपतिस्मों' ऐसा क्यों लिखा गया है? जब हमारा नया जन्म होता है, तब पवित्र-आत्मा द्वारा एक देह में हमारा बपतिस्मा होता है यह पहला बपतिस्मा है। 'क्योंकि यहूदी या यूनानी दास या स्वतंत्र हम सबने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया'। (1 कुरि. 12:13)।

पानी का बपतिस्मा है, दूसरा बपतिस्मा। यहाँ पर बच्चों को बपतिस्मा देने के विषय में नहीं। बपतिस्मा का अर्थ है; धोना, डूबाना या स्नान करना। जब हम स्नान करते हैं तब पूरे शरीर को भीगो कर धोते हैं। हम केवल हाथ पैरों को धोकर ऐसा नहीं कहते कि स्नान किये। इसी रीति से बपतिस्मा में हमें पानी में डुबाया जाता है, उसके बाद ही हम ऐसी गवाही देते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने मेरे सब पापों को संपूर्ण रीति से धो दिया है।

दूसरी बात यह है कि बपतिस्मा के द्वारा प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने की समानता में जोड़े गये हैं। (देखें रोमि. 6:3-5) जब हमारा उद्धार हुआ तब पवित्र-आत्मा के बपतिस्मा से मसीह देह में जोड़े गये इसका अर्थ यह कि उसके साथ एक हो गए। पानी के बपतिस्मा में उसके साथ इस आत्मिक एकता को हम प्रगट करते हैं। इसलिए जब वह मरा तब हम उसके साथ मरे, जब उसे गाडा गया तब हम उसके साथ गाड़े गए और जब वह जी उठा तब हम उसके साथ वापस जी उठे।

प्रतिदिन विश्वास से हम अपने विचारों के संबन्ध में मरने के लिए प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की सामर्थ, विचारों को भूलने के लिए है, उसके गाड़े जाने की सामर्थ पाप और परीक्षाओं पर जय पाने के लिए है और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ में हम नया जीवन प्राप्त करते हैं। इस कारण से हमें बपतिस्मा लेना चाहिए और प्रभु यीशु के साथ इन तीन प्रकार की आत्मिक एकता को अनुभव करना सीखना चाहिए। बपतिस्मा एक गवाही है कोई धार्मिक विधि नहीं।

जून 22

परन्तु जब एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाडी बेंट से निकलकर जल में गिर गई; इसलिये वह चिल्लाकर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु वह तो मांगी हुई थी। 2 राजा 6:5

एलीशा ने पूछा, कुल्हाड़ी कहाँ गिरी? वह स्थान मुझे दिखा'। युवक ने उस स्थान को दिखाया, एलीशा ने एक लकड़ी काटकर उसे पानी में डाला। तुरन्त ही कुल्हाड़ी पानी के ऊपर तैरने लगी। प्रत्येक आत्मिक हानि किस रीति से वापस प्राप्त कर सकें इसे सीखने के लिए गूढ़ अर्थ से भरपूर यह कहानी है।

सर्वप्रथम हम इस बात पर ध्यान दें कि चेलों ने एलीशा से अपने संग चलने के लिये विनती की। इसी रीति से, प्रभु यीशु मसीह, जो सच्चा एलीशा है, आपके संग किसी भी समय और कहीं भी चलें, इस बात की निश्चयता लें। अपनी आशीषों या सम्पन्नता के लिए अपने ज्ञान और शक्ति पर भरोसा न रखें। यदि प्रभु आपके साथ न आए, तब आप जो भी करें, वह सफल नहीं होगा।

दूसरा, जब आप कुछ खो बैठते हैं तब उसे स्वीकार करने से लज्जित न होयें। यह युवक कह सकता था, 'कि यह मेरी गलती नहीं है, बेंटा टूटा हुआ था'। परन्तु उसने अपनी गलती को ढांकने का प्रयन्त नहीं किया। आप भी अपने पापों को तुरन्त ही स्वीकार करें। अपनी गलती एवं लज्जा को नहीं ढांपे और सहायता के लिए दूसरे किसी के पास नहीं जाएं। सीधे प्रभु के पास जाएं, स्वयं को नम्र करें अपने हानि और असफलताओं को उसके समक्ष स्वीकार करें। जीवन में हानि का आरंभ कहाँ से हुआ यह उसे बताएं, और उसी स्थान पर जाएं और कहें, 'हां प्रभु, इस-इस दिन, इस-इस समय पर मैंने एक बुद्धिहीन के समान व्यवहार किया और इसीलिए ही मेरे जीवन में हानि आई है। ऐसी स्वीकृति के साथ यदि आप प्रभु के पास जाएं तो क्रूस की सामर्थ के द्वारा प्रत्येक हानि को वापस प्राप्त करने के लिए वह आपकी मदद करेगा। क्रूस परमेश्वर की सामर्थ है और हमें सामान्य एवं जीवित विश्वास की आवश्यकता है। एलीशा ने जिस लकड़ी को काटा वह प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का प्रतीक है। हमारे पापों के लिये ही लकड़ी पर लटकाया गया और मारा गया और इसी क्रूस के द्वारा अपनी हानियों को वापस प्राप्त कर सकते हैं। लोहे का पानी पर तैरना यह असंभव है, इसके बदले में लोहा पानी पर तैरने लगा। एलीशा के लिए यह बात साधारण थी। इसी रीति से विश्वास के द्वारा हम क्रूस को अपने जीवन में काम करने देते हैं उसके द्वारा जो कुछ हमने खोया उसे वापस प्राप्त कर सकते हैं।

जून 23

... उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया...। लूका 24:30

यरूशलेम से इम्माऊस जाते समय दो शिष्यों ने प्रभु का दर्शन पाया (लूका 24:13-55)। प्रभु यीशु मसीह उनके पास आया और उनके संग बहुत दूर तक चला और उस मध्य में बहुत अधिकार के साथ वह पवित्र-शास्त्र की कई बातों को समझाते गया, परन्तु जब संध्या हो चली तब चेलों के आग्रह से वह उनके घर गया और भोजन के समय यहूदी प्रथा के अनुसार उसने रोटी ली, धन्यवाद किया और जब उसे तोड़ी उन्होंने उसे पहचान लिया।

प्रभु ने स्वयं को हमारे पापों के लिये दे दिया, क्रूस पर स्वयं को बलिदान किया और पूरी देह को तोड़े जाने के लिए दे दिया, परिणाम-स्वरूप जब हम पूरे हृदय से आभार मानते हैं तब इस अद्‌भुत शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। इसीलिये रविवार की सुबह प्रभु की मेज के आसपास हम आराधना चढ़ाते हैं; यह समय अति-मूल्यवान एवं उपयोगी होता है। हमने देखा है कि जहाँ कहीं भी विश्वासी हर रविवार के दिन मेज के पासपास इकट्‌ठे होकर, प्रभु की सिखाई हुई रीति के अनुसार उसकी मृत्यु को प्रगट करते हैं, हृदय-पूर्वक शुद्ध भजन में पर्याप्त समय बिताते हैं, और अपने हृदयों की जांच करके सब ठीक-ठाक करने के बाद मेज में भाग लेते हैं, वहाँ-वहाँ आत्मिक वृद्धि और समृद्धि आती है। दु:ख की बात है कि प्रभु की मेज अनेक विश्वासियों के लिए प्रथा एवं नियम बन गई। प्रभु की मेज में भाग लेने से पहले शुद्ध आराधना का मूल्य वे नहीं समझते।

इसीलिये उनका जीवन असफल और दूसरों के जीवन की तुलना में सूखा ही रहता है। प्रभु की मेज के आसपास प्रभु का भजन करने के लिये सीखना, यह विश्वासियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। तभी उनमें बहुत शीघ्रता से वृद्धि होगी और वे परमेश्वर के अनुग्रह में तथा ज्ञान में बढ़ेंगे।

जून 24

जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है,
वह बहुत से भी सच्चा है, और
जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है,
वह बहुत में भी अधर्मी है।
लूका 16:10

सांसारिक प्रतिफल या किसी मनुष्य की कृपा नहीं ढूंढ़े। आप यदि कोई भलाई का काम करें, अथवा परमेश्वर के घर में कोई काम करें तो किसी मनुष्य के पास से बदले में पाने की आशा नहीं रखें, क्योंकि हमारा परमेश्वर स्वयं ही आपका प्रतिफल है। जो कुछ करें प्रभु के लिये करें। (कुलु. 3:23)

कई शिक्षक ऐसे हैं कि निरीक्षण के एक सप्ताह पूर्व बहुत परिश्रम करते हैं। पाठशाला का बड़ा कमरा बिल्कुल स्वच्छ रखते हैं, विद्यार्थियों को अच्छी रीति से पढ़ाते हैं और जब अधिकारी लोग उनसे प्रश्न पूछते हैं तब बच्चे उचित रीति के उत्तर भी देते हैं। परन्तु निरीक्षण के बाद पूर्व जैसी परिस्थिति आ जाती है, उनका परिश्रम केवल निरीक्षक महोदय के लिये होता है। कई लोग ऐसे होते हैं, कि सभाओं में लम्बे समय तक प्रार्थना करते हैं, परन्तु घर में केवल तीन मिनट के लिए प्रार्थना करते हैं। कई लोग खुश करने के लिए काम करते हैं, परिणाम-स्वरूप उनके लिए प्रतिफल नहीं होता है।

अपने कार्यालय या प्रभु के घर में जो भी कार्य करें वह प्रेम-पूर्वक, विश्वास-पूर्वक और श्रद्धा-पूर्वक करें। छोटी सी छोटी बात में भी विश्वासी बने रहना सीखें। आप जो कुछ कहें या करें केवल प्रभु के लिये और उसके नाम के लिये होने दे। सब काम विश्वास-पूर्वक करने के द्वारा प्रभु के अधिक समीप आ सकेंगे।

जून 25

...तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। यशा. 58:11

वाटिका को यदि सुन्दर रखना हो तो पूरे वर्ष प्रतिदिन उसे पानी देना पड़ता है। वाटिका की देखभाल की आवश्यकता होती है। खेत को ऋतु में पानी से सींचे तो काफी है, परन्तु वाटिका के लिए इस रीति से नहीं चलेगा। दिन में एक या दो बार पानी देना पड़ता है। प्रतिदिन इस रीति से करने के द्वारा फल या साग-सब्जी या फूल उत्पन्न होते हैं। यदि वर्षा नहीं हो तो माली दूर-दूर से भी पानी लेकर आता है, यदि कुआँ न हो तो दूर के कुएं से उसे पानी लाना पड़ता है। मध्य पूर्व का देश जैसे कि बहरीन, एक समय में बिल्कुल वीरान और उजाड़ था, जहाँ कुछ भी उगता नहीं था, परन्तु वहाँ एक हजार मील से अधिक दूरी से अच्छी मिट्टी लाई गई। पानी डालने के लिये अनेक लोगों को काम पर लगा दिया गया। उस वाटिका के घास को वर्ष भर नवीन एवं हरा-भरा रखने के लिए उन्हें बहुत दूर से पानी लाना पड़ता था। अब इस मरुस्थल में ऐसी वाटिका को देखना एक धन्य दृश्य है। दोहा-कतार में मेरे मित्र की एक वाटिका है, जो एक अद्भुत दृश्य है, यह स्थान पहले मीलों-मील एक केवल रेत से भरा हुआ था। बहुत परिश्रम से अलग-अलग स्थानों से मिट्टी लेकर आये और सुन्दर फूलों के बीज बोए गए। अब पूरे वर्ष, वहाँ एक सुन्दर वाटिका रहती है। जहाँ पर अनेक लोग टहलने के लिए जाते हैं। पूरे विश्व को एक जंगल, गरजनेवाले एवं सुनसान मरूभूमि के साथ तुलना की गई है (व्य.वि. 32:10)।

हमारे आसपास के लोग पराजित, पाप और अंधकारमय जीवन बिताते हैं; इसलिए उनका जीवन बहुत ही सुनसान है। पाप के सिवाय और कुछ भी नहीं; न ही शान्ति है और न ही प्रसन्नता। ऐसे लोगों के लिये प्रभु ने थोड़े विश्वासियों को यहाँ वहाँ रखा है, जो एक वाटिका के समान है। जैसे दूर-दूर से लोग ताजगी के लिए वाटिका में आते हैं, वैसे ही सुनसान मरूभूमि में विश्वासी लोग बगीचे के समान बन सकते हैं। परमेश्वर आपको किसी भी शहर में गवाही (साक्षी) के रूप में रख सकता है कि दूर-दूर से लोग आपके पास आकर कहें, 'भाई, मेरे लिए प्रार्थना करें। मैं दु:ख, कठिनाई और कठिन परिस्थिति में आ गया हूँ। इस रीति से जो आपके पास आयें उनको आप वचन दे सकेंगे और स्वयं को आत्मिक रूप से ताजा एवं स्वस्थ रख सकेंगे। परमेश्वर स्वयं हमें उसके जीवित वचन के द्वारा पानी पिलाता है, और प्रार्थना तथा मनन करने के द्वारा हमें यह सीखाता है कि अपने आस-पास के लोगों को किस-किस रूप की सांत्वना दें।

जून 26

हे प्रियों बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो क्योंकि लिखा है, बदला लेना मेरा काम है प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। रोमि. 12:19

विश्वासी होने के कारण हम, हमें तुच्छ समझने वाले, श्राप देने वाले और हानि पहुंचाने वाले लोगों से बदला नहीं ले सकते हैं। जब हमारे विरुद्ध झूठे आरोप लगाए जाएं तब हमें सामना करके बदला नहीं लेना चाहिए। लोग हमारे विषय में चाहे कैसी भी बातें क्यों न कहें, हमें परमेश्वर के हाथों में सब कुछ छोड़ देना चाहिए क्योंकि वह हमारा न्यायधीश है। कभी वह न्याय चुकाने में विलम्ब भी कर सकता है। उदाहरण के रूप में एलिय्याह ने सोचा की ईजेबेल उसे मार डालने का अवसर में थी, इसलिए परमेश्वर उसे जल्दी ही मार डालेगा परन्तु परमेश्वर का मार्ग ऐसा नहीं था उसने ईजेबेल एवं अहाब दोनों को पश्चाताप करने का अधिक अवसर दिया, अन्त में जब उसका समय आ गया तब उस दुष्ट रानी को परमेश्वर ने दण्ड दिया।

कई वर्षों पूर्व कराची में एक पासबान ने मेरे विरुद्ध झूठे आरोपों से भरा हुआ लेख लिखा। इस लेख को छाप कर भारत और विदेश में भी उसे बांटा। मुझे इस विषय में बताया गया परन्तु मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया। वास्तव में, जब कभी उस व्यक्ति से मेरी मुलाकात होती तो मैं उससे हाथ मिलाकर ऐसी मित्रता दिखाता जैसे कि, उसके प्रवृत्तियों की मुझे जानकारी नहीं है। मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा कि मैं उसे मानधीन करने का अधिकार दूं जिससे वह उस पासबान के विरुद्ध केस कर सके और उसके कामों को प्रगट करे। मैंने उससे कहा, 'पवित्र शास्त्र के अनुसार हमें कचहरी में जाने का अधिकार नहीं है, और न ही हमें हानि पहुंचाने वालों को हानि पहुंचाने का अधिकार है। उसके विपरीत हमें उस व्यक्ति के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए और उसे आशीष देना चाहिये। परमेश्वर हमारा न्यायधीश है। वह जानता है कि कैसे मेरा बचाव है और उसका न्याय किस रीति से करना है। बहुत समय के बाद वह पासबान गंभीर बिमारी के चपेट में आ गया और उसके पूरे शरीर पर दाने निकल आये। उसके होंठों पर भी दाने हो गये थे। मैं उससे मिलने गया और उसके लिए प्रार्थना किया। उसने मेरे हाथ पकड़ कर मुझसे क्षमा मांगी। इस तरह से परमेश्वर से अपने समय पर उसके साथ व्यवहार किया।

जब लोग आपके विरुद्ध गलत बातें करें तब सामना न करें और न ही उन्हें हानि पहुंचायें। परमेश्वर स्वयं आपका बचाव करेगा और उसके अपने समय पर न्याय करेगा। वह प्रेमी परमेश्वर है और आपको किसी भी रीति से निराश नहीं करेगा। हमें आपको परमेश्वर के अधिक निकट जाना चाहिए और दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए।

जून 27

और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिर कर उसे प्रणाम किया, और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना और लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाई। मत्ती 2:11

सच्ची आराधना के लिए ये ज्योतिषी किसी भी प्रकार के कठिनाईयों को उठाने के लिए तैयार थे। वे पूर्व के देश से बहुत लम्बी यात्रा तय करके प्रभु का भजन करने बैतलेहम आए थे। उन्हें कोई अन्य आवश्यकता या समस्या नहीं थी। वे केवल राजाओं का राजा और प्रभुओं का भजन करने के लिए ही आए थे। स्वयं को नम्र किये, भजन किये और सोना, लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाये। सोना, प्रभु यीशु के ईश्वरीय स्वभाव का प्रतीक है, लोबान उसकी मध्यस्थी की सेवा के विषय में बताता है और गंधरस उसके वेदना सहने और मृत्यु के विषय में बताता है।

हम कोई विनती, प्रश्न या प्रार्थना लेकर प्रभु के पास नहीं आएं। उसकी प्रशंसा और आराधना करके उसे ऊंचा स्थान देकर उसकी संगति को अनुभव करने के अलावा कोई अन्य इच्छा हमारे अन्दर नहीं होना चाहिये। इस रीति से हम आत्मिक वृद्धि पाना आरंभ करते है। प्रभु का भजन करते रहें। प्रभु का भजन करते रहे, उसकी स्तुति करते रहे चाहे आपके शब्द भले ही थोड़े और टूटे-फूटे हो। दिन का आरंभ हमें भजन से करना चाहिए। उससे हमारा विश्वास दृढ़ बनता है और प्रभु का अनुग्रह और उसके महान प्रेम की गहरी समझ प्राप्त होती है।

जून 28

...तुम्हारा छुटकारा मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।
1पत. 1:18,19

पुनरुत्थान की प्रातः प्रभु ने मरियम को दर्शन दिया। प्रभु यीशु मसीह उसक पास खड़ा था और उसके साथ बातें कर रहा था, परन्तु वह उसे पहचान नहीं सकी इसलिए वह रो रही थी।

आज विश्वभर में अनेक विश्वासी लोग दिखाई देते है जो हर एक छोटी कसौटी या परीक्षा के लिए रोते है। परन्तु प्रभु चाहता है कि हर एक परिस्थिति में वे जयवन्त से भी बढ़कर हो। उनके रोने का कारण यह है कि हर एक आवश्यकताओं के लिए पुनरुत्थान के सामर्थ को स्वीकार करना वे जानते नहीं है। प्रभु ने जब मरियम को नाम लेकर बुलाया, तब वह उसे पहचान गई। प्रभु ने उससे कहा, 'मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, इसलिए मुझे मत छू।

एक विशेष उद्देश्य से प्रभु ने उसे स्पर्श करने नहीं दिया। कोई उसे छूए, इससे पहले उसे पिता के पास जाना जरूरी था। हमारे सनातन महायाजक के रूप में हमारे पक्ष में अपना ही रक्त बहाने के लिए प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग पर जाने की जरूरत थी। इब्रा. 9:12 के अनुसार और बकरों और बछड़ो के लोहू के द्वारा नहीं पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार परम पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया'।

भजन. 16:10 के अनुसार उसकी देह को सड़ने नहीं दिया। हमारे सब पापों के प्रायश्चित के लिए तथा मन, वचन और चाल-चलन के द्वारा हमारे अंतःकरण पर आई अशुद्धता से हमें शुद्ध करने के लिए प्रभु यीशु मसीह हमारे सनातन महायाजक के रूप में अपने ही हाथों से अपने लहू को अर्पण किया।

जून 29

... उस सबसे अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना, चांदी के रूप में पास है, अपने परमेश्वर के भवन के लिए दे देता हूँ। 1 इति. 29:2

परमेश्वर ने जब दाऊद को मन्दिर का नमूना दिखाया तब उसे समझ में आया कि परमेश्वर की आवश्यकता क्या थी इस लिये प्रत्येक सामग्री को एकत्र किया। (1 इति. 26:27) 1 इति. 29:1-2, में हम देखते है कि परमेश्वर को सोना, चांदी, पीतल और अन्य सामग्री की जरूरत थीं यह दाऊद को समझ में आया। इसलिये उसने इन सामग्रियों को इकट्ठा किया।

अपने जीवनकाल में प्रत्येक दिन एवं प्रत्येक सप्ताह हमें अनेक युद्धों से सामना करना पड़ता है। हमारे हृदयों में भी युद्ध चलता है। शत्रु के द्वारा और कभी-कभी निर्धनता तथा अन्य समस्याओं द्वारा अनेक युद्धों का सामना हमें करना पड़ता है। परमेश्वर हमारे जीवन में ये युद्ध इसलिए आने देता है कि, परमेश्वर के घर में आवश्यक वस्तुएं लाने का अधिकार हमें प्राप्त हो। दाऊद अत्यधिक सामग्रियों को इकट्ठा कर सके इसलिए उसे अनेक युद्ध लड़ने पड़े। उसके द्वारा उसे बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। क्योंकि परमेश्वर की योजनानुसार परमेश्वर के भवन के लिए सभी सामग्री वह अर्पण कर सका। परमेश्वर को सामग्री चाहिए।

यदि आप परमेश्वर की योजना में कसौटी और कठिनाईयों में हैं तो आप निराश नहीं होंगे। आपकी स्थिति चाहें कितनी भी कष्टदायक हो तो भी आप उसमें निराश नहीं होंगे, क्योंकि आप जानते हैं कि इन दु:खों के द्वारा उसके भवन के योग्य सामग्री एकत्र करने में परमेश्वर आपकी सहायता कर रहा है। परमेश्वर के भवन की सामग्री इकट्ठा करने में दाऊद को कई वर्ष लगे; इस तरह हमें भी जीवन भर परमेश्वर के घर की सामग्री इकट्ठी करनी होगी। हम जब स्वर्ग में जाएंगे और स्वर्गीय यरूशलेम देखेंगे तब ही जानेंगे कि हमने क्या और कितनी सामग्री इकट्ठी की।

जून 30

तू यहोवा के हाथ में एक शोभायान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी। यशा. 62:3

अपने पापी दशा में हमने परमेश्वर के नाम को निन्दित और लज्जित किया। हमारे विषय में कितने ही लोगों ने कहा होगा, इस मसीही को देखो। वह कहता है कि वह मसीही है, परन्तु असका व्यवहार, चाल-चलन और जीवन तो देखो। इस रीति से प्रभु के नाम को निन्दित करते हैं। इसके बदले में प्रभु चाहता है, 'तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट ठहरेगी'।

हम प्रभु को बारम्बार दु:खी करते हैं तो भी उसके बहुमूल्य लहू के द्वारा हमें क्षमा प्राप्त होती है एवं बुद्धि भी मिलती है। हमारे अशुद्धता को संपूर्ण रीति से धोने के लिए और हमें राजमुकुट बनाने के लिए उसका बहुमूल्य लहू सामर्थ है। उसके बाद हमारे द्वारा उसकी महिमा देखी जा सकती है, हम तो ऐसे बदल जायेंगे, कि हमारी सुन्दरता और महिमा को देखकर दूत भी आश्चर्य चकित होंगे। उद्धार का कार्य पूरा होने के बाद प्रभु स्वयं हमें दूतों के समक्ष पेश करेगा (यूह. 24)। इस रीति से परमेश्वर की महिमा उसके दूतों के समक्ष प्रगट होगा (इफि. 3:10)। परमेश्वर का यह 'अनेक प्रकार का ज्ञान' स्वर्गदूतों द्वारा नहीं परन्तु हमारे द्वारा प्रगट होगा।

प्रभु हमें उसका मुकुट बनाने तथा उसकी स्वर्गीय योजना में रखना चाहता है। राज-मुकुट सुन्दरता के लिए मुकुट है। यहाँ विचार यह है कि प्रभु मसीह की सुन्दरता जिन स्वर्गदूतों ने नहीं देखी वह उस दिन प्रगट होगी। प्रभु यीशु हमें उस महिमा के लिए संपूर्ण रीति से तैयार कर रहा है और हमें प्रभु की अंगूठी भी कहा गया है, (हाग्गै 2:23) यह अंगूठी अधिकार दिखाती है। हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे। परमेश्वर का अधिकार प्रगट होगा, स्वर्गदूतों के द्वारा नहीं। हम प्रभु की महिमा दिखाने के लिए उसका मुकुट, उसकी सुन्दरता दिखाने के लिए राजमुकुट और उसका अधिकार दिखाने के लिए अंगूठी बनेंगे।

जुलाई 1

और मैं तुमसे कहता हूँ वही सबसे कहता हूँ जागते रहो।

मरकुस 13:37

मर. 13:34-37 में प्रभु ने जो दृष्टांत दिया वह उसके द्वितीय आगमन के विषय में है। उसने अपने दासों को अधिकार दिया है जिससे वे उसके गवाह बनें और उसकी इच्छा पूरी करें। प्रभु यीशु में विश्वास करने वाले प्रत्येक विश्वासी को कुछ न कुछ काम सौंपा गया है। जब वह वापस आएगा तब हमें अपना समय, पैसा और शक्ति का लेखा देना होगा। तभी हम जानेंगे कि हमने उसका सदुपयोग किया है कि नहीं। क्या हमारा समय, पैसा और शक्ति परमेश्वर की उपयोग इच्छानुसार हो रहे हैं? क्या हम ऐसा कर सकेंगे 'प्रभु हम ऐसा कह सकेंगे, 'प्रभु तूने मुझे पांच या दस तोड़े दिये थे। मैंने दूसरे पांच या दस तोड़े और कमाए हैं।'

प्रभु के आगमन की बाट जोहते हुए जागते रहने के लिए कहा गया है। 'जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा'। (इब्रा. 9:28)। पौलुस कहता है कि, 'भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सबको भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं'। (2 तीमु. 4:8)। यदि स्वर्गीय मीरास में हम पूरा भाग चाहते हैं तो प्रभु के आगमन की बाट जोहने में हमें जीवन बिताना चाहिये। प्रभु मेरे लिए आ रहा है, वह किसी भी समय आयेगा, इसलिए मुझे तैयार रहना चाहिये। उसे देखकर उससे मिलकर मैं आनन्द से कहूँगा। जब किसी समय हम किसी के घर अचानक जाकर दरवाजा खटखटाकर पूछते 'क्या अन्दर आ सकते हैं?' तब मित्र उत्तर देता है, 'थोड़ी देर ठहरें'। उनका सब कुछ व्यवस्थित हो जाने तक के लिये ठहरे रहते हैं। परन्तु प्रभु के आगमन के लिए हमें सदैव तैयार रहना चाहिए। उस समय एक पल का भी प्रश्न खड़ा नहीं होता है।

इसी कारण से हमें प्रभु की मेज में से उचित रीति से भाग लेना चाहिये। हमें स्वयं की जांच करनी चाहिये। 'प्रभु मेरी जांच करें।' क्या मैंने अपने शब्दों द्वारा तुझे दु:खी किया है? क्या लज्जाजनक या अयोग्य ऐसा कोई काम मैंने किया है? मुझ पर तो दया करके क्षमा कर? परन्तु अधिकांश विश्वासियों में दोषी ठहरानेवाला विवेक नहीं होता है। वे लज्जा का काम किये है, झूठ बोले, परमेश्वर के पौसों का दुरूपयोग किये है और इन सबके बाद भी परमेश्वर की मेज में भाग लेते हैं। सावधान रहें। प्रभु के आगमन के लिये जागते रहें और तैयार रहें।

जुलाई 2

...मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ
अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ।
यूह. 14:27

आंतरिक शान्ति द्वारा हम परमेश्वर की संपूर्णता तक पहुंच सकते है। इसी शान्ति के द्वारा हम शैतान पर जय प्राप्त कर सकते है। 'शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा'। (रोमि. 16:20) यदि हमारे जीवन और सेवा के प्रत्येक संयोग में हम आंतरिक शान्ति बनाए रखें तब हम शैतान को अवश्य पराजित करेंगे, क्योंकि हमारा मुख्य शत्रु चिन्ता, शंका और भय लाकर शान्ति में विघ्न डालता है, और इस प्रकार से दूसरों के लिए हमें आत्मिक रीति से मदद रूप होने से वंचित कर देता है। इसलिए किसी भी मूल्य में हमें आंतरिक शान्ति बनाये रखना आवश्यक है।

परमेश्वर के वचन में एक बहुमूल्य प्रतिज्ञा है। जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है'। (यशा. 26:3)। यदि आप परमेश्वर पर भरोसा रखें और किसी भी संयोग में चिन्तित नहीं होते तो आप विजय को अनुभव कर सकेंगे। आपको विश्वास से परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा का दावा करना होगा और किसी भी प्रकार के संदेह को अपने मन में प्रवेश करने से रोकना होगा।

परमेश्वर की शान्ति द्वारा ही हमारे जीवन में परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा को हम ठीक रूप से समझ सकते हैं। और धर्म का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चित रहना होगा। (यशा. 32:17) हम जब दुविधा में और चिंतित होते हैं तब मानसिक रीति से उलझे हुए और आत्मिक रीति से निर्बल होते हैं और इसलिए मार्ग को साफ-साफ नहीं देख पाते हैं। जब परमेश्वर की शान्ति को अनुभव करते हैं तब परमेश्वर की इच्छा की अधिक समझ प्राप्ति होती है और हमारा दर्शन साफ रहता है।

जुलाई 3

यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजें, उसके दर्शन के लगातार खोजी बने हो। भजन. 105:4

परमेश्वर चाहता है कि हम हर समय उसका आनन्द और उसकी आशीषों को पाएं परन्तु वह इस शर्त पर कि हमारे सब मार्गों में उसकी सत्यता को स्वीकार करें। दूसरे शब्दों में हर समय उसे आदर दें। आपको दिन का आरंभ करने के पूर्व उसके दर्शन का खोजी होना चाहिये। आप चाहे कितने भी धनी या कार्यरत क्यों न हों, अपने दिन का आरंभ का प्रथम भाग प्रभु को देना सीखना होगा। आप ऐसा विचार करते होंगे कि अपनी नौकरी में या प्रभु की सेवा में भी मुझ जैसा कोई व्यस्त नहीं है, तो भी आपको प्रभु को आदर देना होगा और उसकी उपस्थिति में पर्याप्त समय बिताना पड़ेगा। दिन का आरंभ आराधना एवं स्तुति से करें, आपको आरोग्य एवं बल के बदले में उसका आभार मानें।

मैं एक ऐसे महान व्यक्ति को पहचानता हूँ कि जो प्रभु की उपस्थिति में समय बिताते थे। आंखों के एक प्रसिद्ध डॉक्टर थे, जो एक दिन में 150, आँखों के ऑपरेशन करते थे। अनेक लोग ऑपरेशन देखने और सीखने के लिए आते थे। मैंने अपनी आंखों से देखा है कि प्रत्येक ऑपरेशन के पूर्व वे परमेश्वर से प्रार्थना करते थे। अपने ज्ञान या प्रवीणता को उन्होंने कभी आधार नहीं माना परन्तु प्रत्येक ऑपरेशन के लिए प्रभु से विनती करते थे कि वह उनके हाथों को स्पर्श करे, हाथ को पकड़े और ऑपरेशन करने के लिए उन्हें शक्ति और ज्ञान दे। परमेश्वर की महिमा के लिए उनका प्रत्येक ऑपरेशन सफल होता था।

यदि हम अपने अनुभव और ज्ञान पर आधार रखेंगे तो हमारा परिश्रम हमें कोई आनन्द नहीं देगा। हमें तो परमेश्वर की कृपा, ज्ञान और मार्गदर्शन पर आधार रखना चाहिये।

जुलाई 4

हे निर्बुद्धि गलतियों, किसने तुम्हें मोह लिया है...? गल. 3:1

'भरमाया' शब्द में विशेष अर्थ छिपा हुआ है। बहुत से सर्प पक्षियों को खाते है। इन सर्पों की चमकती हुई आँखें होती हैं वे सीधा फन उठाये बैठती है। छोटे पक्षी जब यहाँ वहाँ कूदते-फिरते हैं तब इन सर्पों की चमकती आंखों से तुरन्त ही आकर्षित होते हैं। सर्प तो बिना हिले-डुले स्थिर रहता है। इसलिये ये पक्षियों के बहुत समीप आ जाते हैं और सर्प तुरन्त ही झपट कर उसे पकड़ लेता है और उसकी कोमल हड्डियों को तोड़कर मार डालता है। इसी रीति से गलतियों के विश्वासियों को 'मोह लेने या भरमाया जाने' के अर्थ को लिए हुए है।

आजकल अनेक झूठे उपदेशक जैसे की सेवन-डे-एडवेन्टिस्ट जो परमेश्वर के लोगों को भरमाते हैं। वे भले लोग जैसे दिखाई देते हैं हमेशा पवित्र-शास्त्र साथ रखते हैं, परन्तु सच देखा जाए तो वे ऐसे सर्पों के समान है जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की कृपा से अलग करने के लिए विष लेकर फिरते हैं। वे कहते हैं कि सिर्फ शनिवार- सब्त का पालन करने से ही आपका उद्धार होगा। व्यवस्थाविवरण 5:14-15 के अनुसार इस्राएलियों को सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा इसलिए दी गयी थी कि वे मिस्र की कठोर बन्धुवाई के दिनों को स्मरण रखें। हम भी पाप के गुलाम थे। हमारा शरीर पाप की जंजीरों से बंधा हुआ था परन्तु परमेश्वर ने हमें संपूर्ण रीति से छुड़ाया है। प्रत्येक आंतरिक बन्धक को हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता यीशु मसीह द्वारा तोड़ा गया है, अब हम किसी प्रकार की गुलामी या बन्धन के नीचे नहीं हे।

प्रभु ने हमारे दण्ड को भोग लिया है। वह हमारे लिए श्राप के समान बना। व्यवस्था दुर्बल थी और कोई भी व्यवस्था के द्वारा धर्मी नहीं ठहर सकता था (रोमि. 8:1-3)। इसीलिए प्रभु मनुष्य बना कि जो धार्मिकता परमेश्वर व्यवस्था के द्वारा चाहता था उसको उसने सम्पूर्ण किया और यही अब हमें व्यवस्था से स्वतंत्र करता है। अब हम एक नये नियम के आधीन है और वह तो मसीह यीशु में जीवन की आत्मा का नियम है।

प्रभु यीशु मसीह ने हमारे दण्ड को भोगा, बंधन को तोड़ा और उसके बाद अपना विश्राम हमें देता है। यह सच्चा विश्राम है। (इब्रा. 4:1-6)

उसने क्रूस पर कहा कि 'पूरा हुआ' और उद्धार का कार्य पूरा किया। हमें धर्मी ठहरने के लिये कुछ करना नहीं पड़ा। हम सिर्फ हृदय से स्वीकार करें कि प्रभु हमारे लिए मरा इससे हम धर्मी ठहरते हैं। हमारा प्रभु हमारी धार्मिकता बना। वह हमारे सब्त, हमारा बलिदान और हमारा खतना बन गया है और इसलिये अब हमें सब्त, खतना और बलिदानों से स्वतंत्र किया गया है।

गल. 4:24-31 के अनुसार व्यवस्था से जुआ एवं दासत्व आये और मनुष्य को दोषी ठहराया गया। परन्तु अब हम एक नये नियम के आधीन है। इश्माएल इब्राहिम का पुत्र था, फिर भी उसे हाजिरा को निकाल दिया गया, और जो प्रतिज्ञा प्रभु ने इब्राहिम को दिया उसमें उसको कोई भाग नहीं मिला। जो दासत्व के नीचे आते हैं, खतना सब्त या अन्य मानवीय प्रयत्नों द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं, वे सब बाहर रखे जाएंगे। परमेश्वर की मीरास में उनका कोई भी भाग नहीं है।

जुलाई 5

...जब मैंने तुम्हें भेजा था, तो क्या तुमको किसी वस्तु की घटी हुई थी? लूका 22:35

मगरमच्छ के पेट में जाने के अनुभव द्वारा योना के हृदय में सच्चा पश्चाताप आया। जहाज के लोगों के समक्ष उसने अपना पाप नहीं छिपाया, तो परमेश्वर के समक्ष वह अपना पाप किस रीति से छिपा सकता है? जब पश्चाताप का काम गहरा और पूरा हुआ तब परमेश्वर ने मगरमच्छ को आज्ञा दी कि वह उसे ऐसी जगह पर फेंक दे जहाँ पर परमेश्वर उसे भेजना चाहता था। इसी रीति से परमेश्वर हमारे जीवन में तूफान आने देता है, जिससे हमारे जीवन में सच्चा पश्चाताप और सच्ची स्वीकृति उत्पन्न हो। इसी रीति से परमेश्वर प्रेम से हमें ऐसी जगह पर लाता है जहाँ पर वह हमको रखना चाहता है, और केवल वहीं पर वह हमारा उपयोग कर सकता है।

परमेश्वर ने योना को कई पाठ सिखाये उनमें से एक पुनरुत्थान की शक्ति के अर्थ के लिए है। इसलिए जब शास्त्रियों और फरीसियों ने प्रभु से चिन्ह मांगा तब उसने कहा, 'जैसे योना तीन रात-दिन मगरमच्छ के पेट में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन रात-दिन पृथ्वी के पेट में रहेगा'।

योना जब परमेश्वर की उपस्थिति से भाग गया तब उसे कर चुकाना पड़ा। परन्तु जब उसने पश्चाताप किया तब मगरमच्छ उसे मुफ्त में किनारे पर ले गया। योना के खर्च की जिम्मेदारी परमेश्वर की जिम्मेदारी बन गई। परमेश्वर के कितने ही सेवक रोते हैं और शिकायत करते हैं कि उनके पास पैसे नहीं हैं। परन्तु वे वह नहीं समझते कि, किसी बात में परमेश्वर के अनाज्ञाकारी होने के कारण यह घटी आयी है और उन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता है। जब हम सच्चा पश्चाताप करते हैं और संपूर्ण हृदय से परमेश्वर के आधीन होते हैं तब हमारी सभी आवश्यकतों को परमेश्वर पूरा करता है।

जुलाई 6

जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई...।
भजन. 34:5

प्रभु के दिन यूहन्ना आत्मा में आ गया। पीछे से आकर प्रभु यीशु ने उसे दर्शन दिया और उसके साथ बातें की। ऐसा करने के लिए मैं उसके हृदय में एक स्वर्गीय उद्देश्य था। मानों की वह अपने दास से कह रहा हो, तेरे प्रश्नों को मैं अच्छी रीति से जानता हूँ। तू निराश हुआ है यह मैं जानता हूँ। तू कई प्रश्न पूछना चाह रहा है यह भी मैं जानता हूँ परन्तु यूहन्ना तू गलत दिशा की ओर देख रहा है।

यूहन्ना बहुत श्रद्धावान होने के बाद भी उसकी दृष्टि प्रभु पर से हटकर अन्य बातों की ओर लग गयी थी। जब परेशानियां बढ़ जाती हैं, तब समस्याएं बहुत जटिल हो जाती हैं। चारों ओर विचित्र स्थिति दिखाई देती है, तब हम पर समस्याओं के ऊपर दृष्टि टिकाए रखने की परीक्षा होती है। जहाँ भी हम जायें वे समस्याएं हमारा ध्यान अपनी ओर खींचे रहती है और बातचीत में भी इन्हीं विषयों पर दबाव दिया जाता है। अचानक ही ये समस्याएं हमें घेर लेती हैं।

परिस्थितियां चाहे कैसी भी उलझन भरी क्यों न हों, प्रभु हमसे कहता है कि हम उनके पीछे अपना समय नष्ट न करें। प्रभु कहता है, 'मुड़ो और मेरी ओर देखो, समस्याओं की ओर नहीं। तुम मुझे नये रूप में देखोगे तब तुम्हारी सभी समस्याओं का हल हो जायेगा'। क्या आप अपनी सेवा क्षेत्र में निराश हो गये हैं? क्या आप अपने काम से निराश है? क्या अपने सहकर्मियों के मध्य में समस्याओं का सामना कर रहे हैं? तब मैं आपको यह सलाह दूंगा कि प्रभु से कहें कि 'वह अपनी महिमा को दिखाए। जय पाने के लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है'।

जुलाई 7

...पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। इब्रा. 4:2

परमेश्वर के वचन का सबसे अच्छा शिक्षक प्रभु यीशु है। लूका 24:13-27 में पुनरुत्थान के दिन दो शिष्य यरूशलेम से इम्माऊस की ओर जा रहे थे। जो स्त्रियां कब्र पर गई थी उनके द्वारा उन्होंने सुना था कि उसकी कब्र खाली थी और दो स्वर्गदतों ने उनसे कहा था कि प्रभु जी उठा है। शिष्यों ने इस बात पर विश्वास नहीं किया। जब वे घर वापस जा रहे थे तब प्रभु यीशु स्वयं उनके संग हो लिया और मूसा से लेकर और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ कर के सारे पवित्र-शास्त्रों में से अपने विषय की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। परन्तु वे न तो प्रभु को पहचान सके और न उसने जो कुछ कहा विश्वास किया। वे अंधे ही रहे, कारण कि उनके पास विश्वास नहीं था।

आप भी किसी महान और प्रख्यात उपदेशक के संदेशों को सुन सकते हैं पर यदि आपमें विश्वास नहीं हो तो आप उन संदेशों को समझ नहीं सकेंगे और आप अंधे ही रहेंगे। परमेश्वर के वचन को विश्वास से ग्रहण करना पड़ता है। हम जब चावल-दाल या सब्जी खाते हैं तब उसे समान रूप से मिलाने के बाद खाते हैं। हम उसे अलग-अलग नहीं खाते हैं। इसी रीति से, जब-जब आप परमेश्वर का वचन पढ़ते या सुनते हैं तब उसे विश्वास के साथ ग्रहण भी करना हैं। विश्वास से, अपने हृदय में कहें, प्रभु मैं विश्वास करता हूँ कि यह आपका वचन है, मैं विश्वास करता हूँ, आप मेरे साथ बात करेंगे'। उसके बाद वह आपसे क्या कह रहा है उसे आप समझ सकेंगे।

जुलाई 8

उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया और उसे तोड़कर उनको देने लगा। तब उनकी आंखें खुलवाई और उन्होंने उसे पहचान लिया। लूका 24:30,31

प्रभु के दिन, प्रभु की मेज के आसपास हम प्रभु की इच्छानुसार उसके स्मरण के लिए इकट्ठे होते हैं, तब वह प्रभु की आराधना में हृदयों को उण्डेल देने का समय होता है। हम उसके महान प्रेम को और हमारे लिये क्रूस पर किये गये उद्धार के महान कार्य को स्मरण करते हैं।

जैसे-जैसे हम प्रभु को निरन्तर स्मरण करते हैं और उसे अधिक से अधिक पहचानते हैं, वैस-वैसे हम उसकी स्तुति भी विशेष रीति से करते हैं। हमारा प्रभु इतना महान सामर्थी और अद्‌भुत है कि हम अपनी आंखों से उसे देख नहीं सकते। वह मानवीय समझ से परे है। हमारी ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच से बाहर है। फिर भी एक मार्ग है जिसके द्वारा हम उसे पहचान सकते हैं। हमारे निकट के प्रिय जनों से भी अधिक वास्तविक वह बन सकता है। जब हम उसकी सच्ची महिमा में उसे पहचाते हैं तब वह इस संसार के किसी भी व्यक्ति से अधिक बहुमूल्य हो जाता है।

हम अच्छे उपदेशकों द्वारा परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाएं। श्रेष्ठ लेखकों द्वारा लिखे गए कई अच्छी किताबों को पढ़ें और प्रभु के साथ चलते हुए अनेक अद्‌भुत अनुभवों को प्राप्त करें और उसके बाद भी प्रभु को जिस रीति से पहचानना चाहिए हम उस रीति से शायद न पहचान पाएं। हम स्वीकार करते होंगे कि हम उसे पहचानते हैं, फिर भी हम गलती करते रहें क्या यह संभव है?

जब प्रभु की इच्छानुसार प्रभु की मेज के आसपास इकट्ठे होते हैं, और उसके आगमन तक उसकी मृत्यु को स्मरण करके रोटी तोड़ते हैं तब प्रभु को पहचानने के लिए आंतरिक दृष्टि प्राप्त होती है, जो कि अन्य किसी रीति से प्राप्त नहीं होती है। परमेश्वर का घर उपासना का घर है। वहाँ हम आत्मिक वृद्धि पाते हैं, और प्रभु का मूल्य समझते हैं। हमारे होठों का अर्पण चढ़ाकर हम प्रभु की उपासना करते हैं। तब हम टूटे-फूटे शब्दों में ऐसा कहते हैं कि, 'प्रभु, तू मेरा सर्वस्व है, अपना सब कुछ और स्वयं को भी तुझे सौंपता हूँ।

जुलाई 9

तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें।
प्रेरित. 4:19

वर्षों के बाद, दाऊद परमेश्वर की वाचा का सन्दूक वापस लाने का विचार किया तब उसने पहले पलिश्तियों की नकल की। परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा थी कि परमेश्वर की वाचा का सन्दूक लेवीय पुत्र, कहातियों के पुत्र ही अपने कंधों पर उठायें, गाड़ी में उसे कभी नहीं लाना था। परन्तु 1 इति. 13:1 में हम पढ़ते हैं कि दाऊद अपने उत्साह में लेवियों की सलाह लेने के बदले में सहस्त्र-पतियों और शत-पतियों और सब प्रधानों से सम्मति ली। मार्ग में बैलों ने ठोकर खाई और सन्दूक को थामने के लिए उज्जा ने हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर का कोप उज्जा पर भड़क उठा और वह मर गया। परन्तु जब दाऊद ने परमेश्वर के वचन के अनुसार ईश्वरीय क्रम के आधीन होते हुए तथा उसका पालन करना आरंभ किया तब अत्यन्त आनन्द के साथ सन्दूक को, वह और उसकी प्रजा यथास्थान में ला सके। (1 इति. 15:28)।

जब हम निरन्तर परमेश्वर के खोजी न हों और प्रत्येक बात में उसकी स्वर्गीय योजना को ढूंढ़ने का प्रयत्न न करें, और कार्य में, कर्तव्य में और प्रबन्ध में चाहे वह पारिवारिक या कलीसियाई हो, परमेश्वर के क्रम का अनुसरण करना न चाहें तब तक हम आवश्य ही, अत्यन्त भारी हानि उठायेंगे।

आजकल परमेश्वर के लोग उसके वचन का अनुसरण करने में विफल हो जाने के कारण उनमें ही भारी हानि आई है। उदाहरण के रूप में, वचन बहुत ही स्पष्टता से सिखाता है कि परमेश्वर प्राचीनों एवं अध्यक्षों को चुनाव निर्वाचन के द्वारा नहीं करना है। परन्तु बहुत प्रार्थना एवं हृदयों की एकता के द्वारा करना चाहिये और उनका सभी रीतियों से जांच करने के बाद ही उन्हें अलग करना चाहिये। प्रार्थना के द्वारा प्राचीनों का चुनाव होना चाहिए इस तरह का विचार रखनेवाले भी ऐसे महत्वपूर्ण कार्य में असावधान और अलग रख देते हैं और इस तरह से परमेश्वर के दास एवं अपने सहकर्मियों के साथ प्रार्थना किये बिना ही व्यक्त के मानवीय योग्यता, बोलचाल, अथवा अन्य प्रभावों को देखते हैं, इस कारण से कई भागों में लड़ाई, झगड़े एवं ईर्ष्या देखे जाते हैं।

विवाह संबन्धी बातों में भी यही बात लागू होती है। अनेक लोग विवाह संबन्धी बातों पर विचार करते समय भी मानवीय ज्ञान का उपयोग करते हैं। वे स्वयं इच्छा एवं भावनाओं द्वारा चलाये चलते हैं, अथवा जो उनको आदर देते हैं ऐसे मित्रों अथवा प्रिय-जनों की सलाह लेते हैं। परिणाम-स्वरूप, अनेक दु:खी परिवार देखे जाते हैं। वैवाहिक जीवन का प्रारंभ तो ऊंची आशाओं के साथ होता है, परन्तु थोड़े ही समय के बाद वे देखते है कि एक साथ नहीं रह सकते हैं। परिवार में झगड़े होने लगते हैं और उनके हृदयों में दु:ख ही दु:ख होता है।

जुलाई 10

और मैंने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और प्राचीनों के बीच में, मानों एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा; उसके सात सींग और सात आंखें थी, ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। प्रका. 5:6

सात सींग इस बात को दिखाता है कि हमारा प्रभु राजा है, क्योंकि सींग राजपद को दिखाता है (प्रका. 17:12) वह स्वर्गीय राजा है और उसका राज्य सदाकाल का है (1 तिमु. 6:15, दानि. 2:44, 78:14)। इस राज्य में उसके साथ राजा बनने का निमंत्रण हमें दिया गया है। जैसे-जैसे हम बहुमूल्य लहू से शुद्ध होते रहेंगे वैसे-वैसे हमारी आत्मिक दृष्टि अथवा समझने की शक्ति अधिक स्पष्ट होती जाएगी।

सात आंखें पवित्र-आत्मा की भरपूरी के महान भेद के विषय में कह रही है। प्रभु यीशु मसीह के क्रूस में एकाकी की यह भरपूरी प्राप्त होती है। क्रूस के बिना भरपूरी नहीं। जैसे-जैसे आप क्रूस में एकता रखते हैं, वैसे-वैसे आप अधिक भरपूर होते जाते हैं। इस पृथ्वी पर सबसे निर्बल मनुष्य आप हैं यदि आप अपनी इच्छाओं के प्रति मृत्यु नहीं पाए है। आप स्व-प्रयत्न से मर नहीं सकते। आप आत्म-हत्या कर सकते हैं परन्तु स्वयं को क्रूस पर चढ़ा नहीं सकते। किसी और के द्वारा ही आपको कीलों से ठोंका जाता है। मुझे प्रभु से कहना पड़ता है कि उसके क्रूस की सामर्थ्य द्वारा उस अधिकार को प्राप्त करने की इच्छा, अपनी कोई इच्छा अथवा कोई योजना मुझसे अलग करे। कुलु. 2:9-10 में हमसे कहा गया है कि हम उसमें परिपूर्ण हो। यह सच्ची भरपूरी है।

हम प्रभु यीशु मसीह के राज पद के आधीन होंगे तो हमें पवित्र-आत्मा की भरपूरी मिलती है। अपने समस्त व्यक्तित्व का एवं संपूर्ण जीवन का अधिकार उसे सौंपना होगा।

हमारे लिए उसकी भरपूरी को प्राप्त करने का चिन्ह प्रभु की प्रसन्नता का शब्द है। प्रतिदिन प्रातःकाल घुटनों पर प्रभु के समक्ष धीरज से ठहरे रहें, वचन का मनन करें और कहें, 'मुझसे बात कर, मैं यहाँ हूँ'। जब वह कहे, 'हाँ, मेरे बेटे, मेरी सन्तान मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। तू चिंता न कर शान्ति से जा, मैं तेरे साथ हूँ'। उसके बाद आप अपने दिन एवं दैनिक कार्य का आरंभ करें।

जुलाई 11

क्योंकि जो खोजे मेरे विश्राम दिन को मानते हैं और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूँ उसी को अपनाते और मेरी वाचा का पालन करते हैं, यहोवा यों कहता है, मैं अपने भवन और अपनी शहरपनाह के भीतर उनको ऐसा नाम दूंगा जो पुत्र-पुत्रियों से कही उत्तम होगा, मैं उनका नाम सदा बनाए रखूंगा और वह कभी न मिटाया जाएगा। यशा. 56:4-5

हर एक वर्ग के लोग चाहे उनमें कैसी भी निर्बलताएं क्यों नहीं हो परमेश्वर के घर में वे सत्कार पाते हैं। खोजे, अम्मोनी एवं अमालेकियों, यहूदियों के मन्दिर में जा नहीं सकते थे। परन्तु इस वचन में प्रभु कहता है कि सभी वहाँ होंगे। आपकी निर्बलता असफलता या सीमा रेखा ही क्यों न हो, आप किसी भी देश या परिवार के ही क्यों न हो, शिक्षित या अशिक्षित, निर्धन या धनी, संस्कृत या असंस्कृत किसी भी अपवाद के बिना, हर एक को प्रभु के घर में सत्कार किया जाता है। प्रत्येक को पापों की क्षमा प्राप्त कर परमेश्वर के घर का सदस्य बनने का एक समान अधिकार है। परमेश्वर के घर में होना यह महत्वपूर्ण है। पिछले पापों के कारण अनेक सीमा रेखा हो फिर भी परिवर्तित होकर आप परमेश्वर के घर में आ सकते हैं और उपयोगी बन सकते हैं।सन 1993 में मैं कराची में था। मैं प्रार्थना कर रहा था कि प्रभु मुझे शिक्षित सहकर्मी दे जिससे हम बाहर जाकर सुसमाचार प्रचार कर सकें। परन्तु इसके विपरित परमेश्वर ने मुझे अनपढ़, झाड़ू लगाने वाले को दिया। यह मेरा चुनाव नहीं, परन्तु उसका चुनाव था।

प्रात:काल मैंने झाड़ू लगाने वालों के साथ प्रार्थना सभा शुरु किया। वे तो अपनी टोकरियां एवं झाड़ू साथ लेकर आते थे। क्योंकि वे अपना काम सुबह जल्दी चार बजे शुरु करते थे। प्रार्थना के बाद वे अपने-अपने कार्य-स्थल पर जाते थे। इस प्रकार वे मेरे सहकर्मी बने। उनमें से कोई स्नातक नहीं था। मेरे पास एक अंधा व्यक्ति था, जो मेरे लिये बाजा बजाता था, इन लोगों की सहायता से मैं पूरे विस्तार से सुसमाचार प्रचार कर सका। कांटे और कटीलों से भरपूर ऐसा यह सुनसान स्थान था। परन्तु थोड़े ही समय में आत्मिक रीति से फलवंत हो गया। इन झाड़ू लगाने वालों में कैसा परिवर्तन हुआ इसे सब लोग देख सकते थे। उनके गीतों एवं प्रार्थना के द्वारा उन्होंने जाना कि वे परमेश्वर के लोग थे। परमेश्वर के घर में जाति या धर्म, शिक्षित या अशिक्षित या फिर सीमा-रेखा का प्रश्न नहीं उठता है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र से आप आते हों, यदि आपका मन परिवर्तन हुआ है तब दूसरों के लिए आप उपयोगी बन सकते हो। (1 कुरि. 1:26-28) में 'तुच्छ लोगों को परमेश्वर ने चुना। विश्व भर में इस प्रकार के लोग, पापी एक अपराधी स्वभाव वाले लोगों को परमेश्वर ने चुना है, जो अंत में परमेश्वर के महान भक्त बने हैं। प्रभु ऐसे लोगों को चुन करके उन्हें पवित्र लोगों में बदल सकता है।

जुलाई 12

टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता। भजन. 51:17

पुनरुत्थान के दिन प्रभु शमौन पतरस को दिखाई दिया (लूका 24:34)। मरियम और दूसरी स्त्रियों ने दूतों से सुना की प्रभु मरे हुओं में से जी उठा है और इसलिए उन्होंने चेलों से कहा कि कब्र खाली है। यह सुनकर शमौन पतरस खाली कब्र को देखने के लिए क्यों दौड़ा होगा, उसकी कल्पना हम कर सकते हैं (लूका24:12) के अनुसार वह कब्र से वापस अपने घर जा रहा होगा तभी प्रभु यीशु मसीह पतरस से मिला होगा, और तीन बार इन्कार करने के बदले क्षमा मांगने का अवसर उसे दिया होगा। प्रभु की अधिक कृपा और क्षमा प्राप्त करने से प्रेरित पतरस को कैसा महान आनन्द प्राप्त हुआ होगा। जैसे-जैसे हम प्रभु के चरणों में स्वयं को अधिकाधिक नम्र करते हैं और टूटे मन से तथा नम्र मन से उसकी उपस्थिति में रहते हैं वैसे-वैसे हम पुनरुत्थान की सामर्थ्य को अनुभव कर सकते हैं। यही पतरस सभी विश्वासियों को लिखता है, 'तुम दीनता से कमर बांधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है, इसलिए परमेश्वर के बलवंत हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए (1 पत. 5:6)।

मत्ती 23:12 में हम पढ़ते हैं, 'जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा'। प्रभु यीशु मसीह स्वयं ही क्रूस पर चढ़ाये जाने से पूर्व अपने चेलों के पांव धोए थे और इस रीति से हमें नमूना दिया, कि किस रीति से सच्ची नम्रता और टूटे हुए मन से एक दूसरे से प्रेम रखें और एक दूसरे की सेवा करें। यशा. 57:15 के अनुसार हमारा पवित्र और सामर्थी परमेश्वर केवल दो ही स्थानों पर निवास करता है'। मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूँ, और उसके संग भी रहता हूँ, जो खेदित और नम्र है'। मनुष्य के हाथों से बनाए हुए स्थान में वह नहीं रहता और मत्ती 11:29 में हमारे प्रभु ने कहा है कि '...मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ और तुम अपने मन से विश्राम पाओगे'। परमेश्वर की उपस्थिति में नम्र रहने का पाठ हमें जीवन भर सीखना पड़ता है। परमेश्वर हमारे अन्दर और हमारे द्वारा बड़े काम करता है। इसे देखकर अभिमानी होने का स्वभाव सरलता से हमारे अन्दर आसानी से आ जाता है। प्रभु ऐसा करे कि हम दीन बनें और परमेश्वर की महिमा चुरा लेने की भारी परीक्षा में से बचें।

जुलाई 13

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। इफि. 2:20

इसके पूर्व की नहेम्याह टूटी पड़ी हुई शहरपनाह का निर्माण प्रारंभ करे, उसने उसके चारों ओर घूमकर देखा कि वह किस रीति से टूटा है और उसके फाटक किस रीति से जल गये हैं। हम भी परमेश्वर के भवन का फिर से निर्माण करें इसके पूर्व, सबसे पहले सुनसान दशा का कारण क्या है उसको ढूंढ़ना चाहिये। यरूशलेम की शहरपनाह टूटी पड़ी हुई थी क्योंकि इस्राएलियों ने पाप किया था। प्रजा चेतावनी की ओर ध्यान नहीं देने के प्रति कठोरता से बे-दरकार बने और न ही परमेश्वर के आधीन हुए। अनेक अवसर देने के बाद परमेश्वर ने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को भेजा जिसने उनके शहर को नाश किया। शहरपनाह को तोड़ दिया और फाटकों को जला दिया। इन दिनों में, कई स्थानों पर हम देखते हैं कि विश्वासी लोग और पासबान परमेश्वर के लोगों में जागृति आने के लिए प्रार्थना करते हैं। परन्तु लोगों में आत्मिक वीरानता का कारण है उसे जानने के लिए वे थोड़ी सी भी उत्सुकता नहीं दिखाते हैं'। प्रभु हमने पाप किया है, ऐसे वाक्यों को दोहराने के द्वारा परमेश्वर अपनी प्रजा के मध्य काम नहीं कर सकता है। इन दिनों में विश्वासियों की दशा वीरान है क्योंकि वे मानवीय रीति रिवाजों और नियमों को मानने में दृढ़ रहते हैं परन्तु परमेश्वर के वचन की अवहेलना करते हैं। उनकी कठिनाईयों का मुख्य कारण यह है कि इसे समझने में वे असफल होते हैं।

जब कोई मनुष्य एक मजबूत घर बनाने की इच्छा रखता है, तब सबसे पहले वह मजबूत नींव डालता है। आत्मिक अर्थ में भी हमारे प्रभु ने कहा कि यदि हम अपना घर चट्टान पर बनाएं तो वह आंधी, तूफान या बाढ़ से भी गिरेगा नहीं। यीशु मसीह स्वयं हमारा चट्टान है। हमें उस चट्टान पर घर बनाना है, अर्थात हमारा निर्माण कार्य उसकी शिक्षा, सलाह, स्वर्गीय इच्छा, स्वर्गीय योजना, स्वर्गीय ज्ञान और स्वर्गीय शक्ति के आधार पर होना चाहिये। हमें मजबूत आत्मिक नींव पर आत्मिक घर बनाना है। अधिकांश लोग इस पहले नियम को भूल जाते हैं और परमेश्वर का घर बालू पर अर्थात जिन वस्तुओं को परमेश्वर का सहारा नहीं, उस पर बनाते हैं। इससे हम देखते हैं कि ऐसा घर टूट कर गिर जाता है। इब्रा. 12:26 में परमेश्वर हमें गंभीर चेतावनी देता है कि मनुष्य के कामों को परमेश्वर हिलाने वाला है। यदि हम चाहते थे कि हमारा कार्य फलवंत हो और विरोधी शक्तियों की कसौटियों के समक्ष खड़े रहना है तो हमारा प्रत्येक कार्य परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिये।

जुलाई 14

तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूँ। उत्प. 15:10

विश्वास पर प्रतिफल आधारित है। सच्चे क्रियाशील विश्वास के बिना हमें प्रतिफल या बदला नहीं मिल सकता। हमें विश्वास दिलाने के लिए प्रभु सताव और कसौटी का उपयोग करता है। (1 पत. 1:7) परमेश्वर ने इब्राहिम के साथ बहुत ही स्पष्ट रीति से बात किया। इसके बाद भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था। कई वर्षों तक प्रतीक्षा करने के बाद भी नि:सन्तान रहने के कारण इब्राहीम अपनी सभी सम्पत्ति का वारिस अपने प्रमुख दास को बनाना चाहता था। परन्तु परमेश्वर ने दर्शन देकर उसे ऐसी भूल करने से बचाया।

अपनी सीमा-रेखा के कारण हम कई बार शंका करते हैं। चाहे हम विश्वास में दृढ़ हों फिर भी शंका हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। ऐसी परिस्थिति में परमेश्वर बारम्बार उसके प्रेम एवं दया के कारण हमारे पास आता है। अब्राहम को बाहर ले जाकर उसने कहा, 'अब्राहम आकाश की ओर दृष्टि कर। अपनी निर्बलता या अपनी पत्नी की निर्बलता की ओर मत देख। अपने संयोगों की ओर भी मत देख, केवल ऊपर देख। तभी तेरा विश्वास दृढ़ होगा' 'तू आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा'। (उत्पत्ति 15:5)

आकाश के तारों को आज भी कोई गिन नहीं सकता है। वे अनगिनित हैं और दूर-दूर तक फैले हुए हैं। परमेश्वर जानता था कि अब्राहम तारों को गिन नहीं सकता। परन्तु उसके विश्वास को दृढ़ करने का उद्देश्य से ही उसने उसे ऊपर देखने के लिए कहा है। सचमुच ऊपर दृष्टि करने से ही हमें दृढ़ विश्वास प्राप्त होता है। शत्रु तो चाहता है कि हमारी दृष्टि नीचे ही लगी रहे, इसलिए कि, हम अपनी सीमा रेखा, निष्फलताएं और अपूर्णता ही को देखें। परन्तु हमारी दृष्टि निरन्तर प्रभु पर लगी रहनी चाहिए जिससे हम विश्वास-पूर्वक उसके वचनों का दावा कर सकें।

जुलाई 15

क्या मसीह बट गया?
1 कुरि. 1:13

पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को दोष देते हुए कहता है कि आत्मिक रीति से बालक थे। जैसे बच्चे भारी भोजन को पचा नहीं सकते और उन्हें दूध ही दिया जाता है वैसे ही ये विश्वासी गूढ़ आत्मिक सच्चाई को पचा नहीं सकते थे। यह वृद्धि नहीं होने के कारण 1 कुरि. 3:3-4 के अनुसार उनमें डाह, झगड़े एवं विभाजन हुए। शत्रु से उनको अपने वश में कर लिया और उनकी वृद्धि को रोक दिया था। हमें ऐसे विचारों को थोड़ा भी स्थान नहीं देना चाहिये, अन्यथा वे वहाँ घर करेंगे और हमारी वृद्धि रुक जायेगी।

हम अपने भाईयों, बहनों और मित्रों के प्रति ईष्यालु हो सकते हैं। जब वे परीक्षा में सफलता प्राप्त करें, उनकी भौतिक सम्पत्ति बढ़े, वे अधिक आत्मिक हों या हमसे अधिक वे प्रभु कार्य में अधिक उपयोग होते हों तब हमें ईर्ष्या होती है। शत्रु के इन चालाक तीरों से बचने के लिए हमें निरन्तर जानते रहना चाहिए अन्यथा ईर्ष्या से शत्रुता और शत्रुता से अंधापन आयेगा।

उनमें झगड़ा और विभाजन, गलत स्वामि-भक्ति के कारण हुए। कई तो पौलुस के नाम से, कई तो अपुल्लोस के नाम से और कई तो कैफा से पहचाने जाते थे। इन अलग-अलग नामों के कारण उनमें विभाजन हुआ। आज भी शत्रु इसी युक्ति का उपयोग करके मसीहियों में विभाजन लाता है। आजकल लूथरन, ब्रदरन, वेस्लीयन, बेप्टिस्ट और पेन्टीकास्टल जैसे नामों से कलीसियाओं को पहचाना जाता है।

प्रभु यीशु मसीह से अधिक इन नामों को बनाए रखने में शत्रु आज बहुत सफल हुआ है। परिणाम-स्वरूप लड़ाई एवं विभाजन होते हैं। पौलुस, अपुल्लोस और कैफा अच्छे मनुष्य थे परन्तु इनमें से कोई भी विश्वासियों के पाप के लिए नहीं मरा और न उनका उद्धार किया। हम सभी केवल मसीह के है। दूसरा कोई नाम हमें धारण करने का अधिकार नहीं है।

जब मैंने विवाह के अधिकार पत्र के लिए आवेदन दिया तब मुझसे पूछा गया कि, 'आप किस समुदाय (डीनोमिनेशन) के हैं? मैंने उन्हें बताया कि 'मसीह की देह'। हमारा कोई विशेष नाम नहीं है, हम केवल मसीही है'। तब दूसरा प्रश्न ऐसा किया गया कि 'आपके यहाँ कितने सदस्य हैं'? मैंने कहा कि हमारे यहाँ सदस्यता नहीं है। हम सभी समान है जैसे कि हम सब एक हैं। जो नया जन्म पाते हैं उन सबका हम स्वागत करते हैं। यह एकता बनी रहनी चाहिए। हम सावधान रहें कि किसी प्रेरित, देश, प्रचारक या सिद्धता के नाम को महत्व देकर मसीहियों में विभाजन न लाये।

जुलाई 16

कि परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो। 1 पत. 5:2

परमेश्वर ने मूसा को मिलाप वाले तम्बू में सूईयों (मछली) की खालों का उपयोग करने की आज्ञा दी। सुइस मछली अपने बच्चों को अत्यन्त सावधानी से रखती है। उसकी हमेशा रखवाली करती है और दूसरे किसी भी प्राणी को उनके पास आकर हमला करने नहीं देती। इसलिए सुइस मछली को खाल द्वारा हम यह पाठ सीखते हैं कि जैसे सुइस अपने बच्चों की रखवाली करती है, उकाब अपने बच्चों पर पंख फड़फड़ाता है और चखाद्य अपनी भेड़ों की रक्षा करता है, वैसे ही प्रभु यीशु हमारी रक्षा करता है।

प्रभु यीशु मसीह हमारा सच्चा एवं महान चरवाहा है। यहाँ पर अध्यक्ष होते हैं 'परन्तु अध्यक्ष के लायक बहुत ही थोड़े होते हैं। केवल परमेश्वर द्वारा दिये गये रखवालों को परमेश्वर के झुण्ड की रक्षा करने की शक्ति तथा सामर्थ होती है। इस संसार में झूठे उपदेशक एवं झूठे शिक्षक परमेश्वर की सन्तानों के लिए कई कसौटियों को लाते हैं। परन्तु जैसे सुइस मछली अपने बच्चों की रखवाली करती है, वैसे ही सच्चे अध्यक्ष को परमेश्वर की सन्तानों की रखवाली करनी चाहिए। जंगली जानवरों एवं फाड़ खाने वाले भेड़ियों से उन्हें बचाना होगा। प्रभु के झुण्ड को नाश करने के लिए अनेकों बार भेड़ों के भेष में भेड़िये आते हैं।

प्रेरित पौलुस ने अध्यक्षों को चेतावनी दी कि परमेश्वर की सन्तानों के मध्य कई फाड़ने वाले भेड़िए उठ खड़े होंगे। वे परमेश्वर के झुण्ड को तितर-बितर करना चाहेंगे, इसलिये उसने उनकी रखवाली करने की आज्ञा दी और यह भी स्मरण दिलाया कि किस रीति से रात-दिन उसने उनकी सेवा की थी। (प्रेरितों. 20:28-33)।

उसके बाद उसने कहा, 'मैंने किसी की चांदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया'। जो परमेश्वर के झुण्ड का अध्यक्ष बनना चाहते हैं, उनको सब प्रकार के लालच से मुक्त रहना चाहिए, चाहे वह सोना, चांदी, जेवरात, भोजन या जीवन संबन्धित कोई भी अच्छी वस्तु ही क्यों न हो। इसलिए कि सभी परिस्थितियों में प्रभु की सेवा आनन्द एवं प्रसन्नता से करें। पौलुस को जो कुछ भी प्राप्त होता था उन्हें वह बांट देता था। उसने कहा, लेने से देना धन्य है'। और तो और आवश्यकमन्दों की कभी घटी पूरी करने के लिए वह हाथों से परिश्रम करता था। हम समझते हैं कि हम

उपदेशक हैं इसलिए हमें सब वस्तुएं मिलनी चाहिए, जो कुछ मिले वह हमारे जेबों में जाना चाहिए। यदि हम ऐसे विचार रखते हैं तो हम सच्चे अध्यक्ष नहीं है। जो परमेश्वर को देना चाहते हैं, और प्रभु के लिए व्यय करना चाहते हैं, वे ही सच्चे अध्यक्ष बन सकेंगे।

निर्बल, पीड़ित आवश्यकमन्दों दरिद्र, निर्धन लोगों की रखवाली करनी चाहिए, परन्तु परमेश्वर के सच्चे अध्यक्ष बनने के लिए ऐसे व्यक्ति कहा मिलते हैं। हमें प्रार्थना करनी चाहिए, 'हे प्रभु अपनी मण्डली के लिए सच्चे अध्यक्ष दे जैसे सुइस मछली अपने बच्चों की रखवाली करती है वैसे ही हमारी रखवाली करें'। तभी प्रत्येक जंगली जानवरों से हमारी रखवाली होगी।

जुलाई 17

तू उन्हें दर्शन देने के गुप्त स्थान में मनुष्यों की पुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा। भजन. 31:20

आप पर चाहे कितनी भी कठिनाईयां आयें तो भी आपको चोट नहीं पहुंचेगी (अय्यूब 5:19-24)। दुष्ट चाहे किसी भी हथियार का उपयोग करे तो भी वह सफल नहीं होगा। भजन. 27:5 में लिखा है कि 'क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा'। कितने ही पक्षी एक विशेष प्रकार का घोंसला बनाते हैं, यह पद उसका स्मरण दिलाता है। ये अत्यन्त चालाक पक्षी अपने छोटे बच्चों के लिए ऐसे घोंसले बनाते हैं, कि उसमें रहने के द्वारा दूसरे पक्षियों, प्राणियों और सांपों से उनकी रक्षा होती है। दुष्ट इन घोंसलों को देख न सकें ऐसी कुशलता के साथ इन घोंसलों को बुना जाता है, यह घोंसला अत्यन्त मजबूत दिखाई देता है, परन्तु वास्तव में वह कमजोर होता है, और मात्र तिनकों से बना हुआ होता है। परन्तु कुशलता और बुद्धिमानी से बने होने के कारण बच्चों को सुरक्षा मिलती है। हमें हानि पहुंचाने में लोग चाहे कैसी भी बुद्धिमानी एवं चालाकी से प्रयत्न करें फिर भी जीवते परमेश्वर और उसके वचनों पर हम भरोसा रखने और अपने हथियारों का उपयोग न करें तो हम सुरक्षित रहेंगे।

भजन. 31:20 में लिखा है कि, तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपाए रखेगा'। ऐसा करने के लिए प्रभु कई बार हमें आने वाले संकट के विषय में पूर्व से ही चेतावनी देता है। जब तक हम उसमें है तब तक वह हमारी रक्षा करेगा। पिछले कई वर्षों से संसार के कई देशों में इस वचन के सत्य को अनुभव किया गया है। परमेश्वर के वचन के कई भागों में ऐसा भरोसा दिया गया है। जक. 2:8 'जो तुमको छूता है वह मेरी आंख की पुतली ही को छूता है'। आंख बहुत ही नाजुक होती है, और यदि उसे थोड़ा धुआं लगे तो पानी निकलता है और पलकें फड़फड़ाते हुए धूल के कण जब तक न निकल जायें तब तक पानी बहता रहता है। इसी रीति से प्रभु हमारी रक्षा करेगा। किसी भी प्रकार के हथियार को वह हमारे विरुद्ध सफल होने नहीं देगा, परन्तु शर्त यह है कि हम उस पर विश्वास रखें, उसकी स्तुति करते रहें और उसके वचनों का दावा करते रहें।

जुलाई 18

वह मृत्यु को सदा के लिए नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा; और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा, क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है। यशायाह 25:8

प्रभू यीशु मसीह ने हमें मृत्यु पर संपूर्ण जय दिलायी है और इस कारण से अब हम कह सकते हैं कि, हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा? परन्तु जीवन भर जिन्हें उद्धार की आशा नहीं होती उनको अपना जीवन आंसुओं एवं दु:ख में बिताना पड़ता है। मृत्यु के पश्चात क्या होगा उसे वे नहीं जानते। केवल जो प्रभु यीशु मसीह को व्यक्तिगत अनुभव द्वारा जानते हैं वे ही लोग मृत्यु एवं कब्र का आहवान करते हुए इन वचनों को उच्चरित कर सकते हैं। उनके लिए मृत्यु केवल क्षण भर का वियोग है। कल्पना करें कि किसी को नौकरी में पदोन्नति होती है; किसी सामान्य मुंशी को राज्यपाल की पदवी मिल जाती है और किसी को दूर स्थान में स्थानांतरण कर दिया जाता है, क्या वह रोने लगेगा? बिल्कुल नहीं, इसके विपरीत वह आनन्द करेगा। इसी रीति से सच्चा विश्वासी कह सकेगा, कि 'हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा? हे कब्र तेरी जय कहाँ रही? पूर्ण शांति के साथ वह मृत्यु का सामना कर सकता है।'

जब हमसे हमारे प्रिय जनों को ले लिया जाता है तब हमें बारम्बार यह विचार आता है कि महिमावान अविनाशी देह में हम फिर से मिलेंगे और उसके बाद फिर कभी भी अलग नहीं होंगे। पृथ्वी की इस शक्ति से मनुष्य भी मृत्यु के भय से मुक्त नहीं है। मृत्यु के द्वारा जो चोट लगती है उसे मानवीय शब्द भर नहीं सकते। कई भेंट कर्ता सांत्वना देने आयें परन्तु विश्वासी अनुभव से जानता है कि यह केवल क्षण भर का वियोग है। मरणसन व्यक्ति भी पूर्ण शांति से कहता है प्रभु, मैं तेरे पास आता हूँ'। ऐसा कह कर विदा लेता है। उनके मुख पर शांति छाई हुई होती है। जबकि दूसरों के मुख पर भय एवं डर के सिवाय कुछ नहीं होता। हम कह सकते हैं कि पहला व्यक्ति तो प्रभु की उपस्थिति में गया है, और हम फिर से मिलेंगे। हम प्रत्येक परिस्थिति में, हाँ मृत्यु का सामना करते समय भी, प्रभु के पास जा सकते हैं, और पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्ग का स्वाद चख सकते हैं। ऐसा व्यक्ति अवश्य कह सकता है कि 'हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है। हे कब्र तेरी जय कहाँ है'।

जुलाई 19

परमेश्वर यहोवा ने हमको-अपनी महिमा दिखाई है। व्यव. 5:24

परमेश्वर का बड़ा अभिप्राय अपने सब कामों में यह है कि उसकी ही महिमा हो। परन्तु हमारे समान पतित प्राणियों को परमेश्वर की महिमा कैसे दिख सकती है। मनुष्य की आंख एक ही ओर नहीं है, वह एक ओर अपने आदर के लिए भी देखता रहता है।

अपनी शक्तियों को वह बहुत बड़ा समझता है और इस प्रकार परमेश्वर को महिमा को देखने के योग्य नहीं है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वार्थ को अलग करना है इसलिए कि परमेश्वर की महिमा के लिए स्थान मिल जाए। और यही कारण है कि परमेश्वर क्यों अपने लोगों को अक्सर सकरी और कठिन जगहों में लाता है। कि वे अपनी मूर्खता ओर निर्बलता को पहचाने और परमेश्वर की महिमा देखने के योग्य हों, जब वह उनका उद्धार करने के लिए आता है। जिस का जीवन चौरस और सीधा मार्ग है, वह बहुत थोड़ी परमेश्वर की महिमा देख सकता है क्योंकि उसको अपने को खाली करने के बहुत कम अवसर आते हैं।

इसलिए वह परमेश्वर के प्रकाश से भरे जाने के योग्य नहीं है। जो लोग छोटी नदियों और उथले नालों में नाव चलाते हैं सो तूफान के परमेश्वर के विषय में बहुत कम जानते हैं। पर जो लोग महा-समुद्रों में से जाते हैं वे गहराव में उसके आश्चर्य कर्म देखते हैं। अटलान्टिक सागर की लहरों के समान जुदाई, गरीबी, परीक्षा, निन्दा में हम परमेश्वर की सामर्थ्य को सीखते हैं क्योंकि उनमें हमें दिखाई पड़ता है कि मनुष्य कितना छोटा है। इसलिए परमेश्वर का धन्यवाद करो, यदि तुम्हें बुरे मार्ग से होकर जाना पड़ा है। इसी से तुम्हें परमेश्वर के महत्व और करुणा का अनुभव मिला है। तुम्हारे कष्टों ने तुम्हें बहुत ज्ञान से धनी किया है जो किसी और रूप से तुम्हें नहीं मिल सकता था। तुम्हारी जांच व कष्ट चटट्ान की वह दरार हो गई है जिसमें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें रखा है।

जिस प्रकार उसने मूसा से किया था इसलिए कि तुम उसकी महिमा देखो जो तुम्हारे पास से जा रही है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम अन्धकार में और अज्ञानता में नहीं छोड़ दिए गए हो जो बराबर अच्छी दशा में रहने के कारण से होता है। परन्तु दुःख की बड़ी लड़ाई में उसकी महिमा को चमकाने के योग्य बनाए गए हो उन आश्चर्यजनक कामों के कारण जो वह तुम्हारे साथ करता है।

जुलाई 20

परन्तु वे चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उसको उत्तर न देना।
यशा. 36:21

जब हम कठिनाई में हो और अपने उद्धारकर्ता पर हम भरोसा रखते हैं, तब शैतान हमारे समक्ष ऐसी परीक्षा लाता है कि संसार के लोग ठट्ठा उड़ा कर शायद वे कहेंगे कि 'अपने विषय में बात तो करते हो, परन्तु हम देखेंगे कि वह तुम्हारी मदद करता है कि नहीं'। संसार के लोग जब ठट्ठा करते हैं तब कई लोग अपना विश्वास, शान्ति और आनन्द खो बैठते हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन द्वारा हम जानते हैं कि हमें धोखा देने तथा परीक्षा में डालने के लिए शैतान अवश्य ही बाढ़ की नाई आएगा। परन्तु हमारा राजा कहता है कि 'उसे उत्तर मत दो'। यही हमारा हथियार है। शत्रु को पराजित करने के लिए सांसारिक हथियारों की हमें आवश्यकता नहीं है। कई मनुष्य इसी रीति से जगत के हथियारों द्वारा शैतान को हराने का प्रयत्न करने से धोखा खा गए (2 कुरि. 10:4)।

ऐसा करने के बदले प्रभु की उपस्थिति में शांत रहें और उत्तर प्राप्त करें। यहोशू के समय में इस्राएलियों ने यरीहो को किस रीति से जीता उसे स्मरण रखें (यहो. 5:1-6)। यरीहो की दीवार ऊंची एवं दृढ़ थी। उसे देखकर इस्राएली डरते थे क्योंकि उनके हथियार एवं सेना की संख्या को देखते हुए तो शत्रु उनसे अधिक ताकतवर थे। परन्तु परमेश्वर ने उसे स्पष्ट बता दिया था कि जो हथियार वह उन्हें देने वाला है उसके द्वारा वह दुश्मनों को जीत सकेगा। उनको केवल सुझावों को मानना और पालन करना था। जब वे प्रभु के आधीन हुए तब दीवार टूटकर गिर पड़ी। भूकम्प के समय जब मकान एवं दीवार टूटकर गिरते है, तब पत्थर और ईंट इधर-उधर गिर पड़ते हैं मुझे स्मरण आता है, जब क्वेटा में भूकम्प आया तब कई ऐसे बड़े घर ढेर हो गए थे कि चलना भी कठिन हो गया था। परन्तु पवित्र-शास्त्र बताता है कि यरीहो की दीवार सीधी टूटकर गिर पड़ी और लोग सरलता से चलकर अन्दर जा घुसे।

यहाँ पर प्रभु हमसे कहता है, शैतान को हराने के लिए सांसारिक हथियारों का उपयोग न करें। घुटनों पर रहने के द्वारा आप प्रभु की वाणी सुनेंगे कि क्या करना है और उस विषय में सुझावों को प्राप्त करेंगे। तब ही आप प्रतिदिन शैतान को हरा सकेंगे। शत्रु चाहे किसी भी रीति से आपके समक्ष चढ़ आए, विश्वास-पूर्वक प्रार्थना करते हुए प्रभु से कहें, 'प्रभु, आपकी सामर्थ पर एवं आपकी जय पर मैं विश्वास रखता हूँ। अब प्रभु ने मुझसे कहा कि मेरा हथियार किस रीति से उपयोग करना है'। उसके बाद प्रभु किसी न किसी रीति से अपना प्रोत्साहन और सामर्थ्य देने के लिए वचनों को देगा और आश्चर्य रूप से थोड़े ही वचनों के द्वारा शैतान कैसे हार जाता है।

जुलाई 21

क्योंकि हमारा पल भर का
हल्का सा क्लेश हमारे लिए
बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त
महिमा उत्पन्न करता जाता है।
2 कुरि. 4:17

प्रत्येक काम के लिए दाहिना हाथ अति उपयोगी है। बहुत कम लोग बांये हाथ का उपयोग करते हैं। इसलिये जब याकूब ने 'मेरे दाहिने हाथ का पुत्र' अथवा 'मेरे सामर्थ्य का पुत्र' ऐसा नाम दिया तब इसका मतलब था कि जिस दु:ख में बिन्यामीन जन्म लिया था उसके द्वारा अंत में उसे अधिक बल एवं अधिक आनन्द प्राप्त होगा। बिन्यामीन की माता का प्रसूती में ही मृत्यु हो गई थी, इसलिए माँ का प्रेम क्या है, इसे वह नहीं जानता था। परन्तु बिन्यामीन के कारण ही, आगे चलकर यूसुफ की कृपा उसके भाइयों पर हुई। उसके भाई यूसुफ से डाह करते थे, परन्तु बिन्यामीन को देखते ही यूसुफ का मन पिघल गया और उसने अपने भाईयों को केवल क्षमा ही नहीं किया बल्कि उनको उपहार भी दिया।

इस रीति से जो दु:ख हमारे ऊपर परमेश्वर के दाहिने हाथ से आते हैं, उसी के विषय में बिन्यामीन यहाँ कह रहा है। दु:ख एक मूल्यवान एवं अमूल्य अनुभव है जो हमें परमेश्वर के समीप लाता है और उसकी सामर्थ का उपयोग करने का आनन्द हमें देता है। प्रभु हमें ऐसे अत्यन्त भारी दु:ख के अनुभव में होकर ले जाए, कि उस दु:ख के द्वारा स्वर्गीय अनुग्रह को हम प्राप्त कर सकें।

हमने अनेक घटनाएं देखी हैं जिसमें परमेश्वर के सेवकों को छोटी उम्र में ही महिमा में बुला लिया गया है। प्रेरितों के कार्य में हम पढ़ते हैं कि युवा अवस्था में स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार डाला गया तब तरसुस का शाऊल गवाह और सहायक रहा। चमकते हुए चेहरे से स्तिफनुस ने जब कहा, कि हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा' तब जो दृश्य उसने देखा उसे वह कभी भी भूल नहीं सका। आगे चलकर पौलुस ने खुद मसीह की खातिर अनेक दु:ख उठाए (2 कुरि. 11:24-28)। हम कह सकते हैं कि स्तिफनुस की जयवन्त मृत्यु ही पौलुस को प्रभु की एक दृढ़ गवाही में बदल गई। जब खुद उसके ऊपर पत्थरवाह किया गया तब पौलुस इसे आनंन्द-पूर्वक झेल लिया। इसी प्रकार से यीशु के पवित्र लोगों के दु:ख सहने और मृत्यु द्वारा यीशु ने अनेक लोगों को उद्धार एवं अन्य आशीषों को दिया है।

जुलाई 22

और पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख... वह यह कहता है कि मैं यह जानता हूँ कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विश्वास करने से... पीछे नहीं हटा। प्रका. 2:12-13

हमें यहाँ पर सीखने की बहुत ही आवश्यकता है कि किस रीति से हम संसार से, सांसारिक बातों से तथा सारी अन्य धार्मिक रीतियों से स्वयं को अलग रख सकें। इन दिनों में अनेक मसीही लोग संसार की नकल करते हैं। उनका मानना है कि उनके पास बिल्कुल सही दलील है। वे कहते हैं कि 'हम किस रीति से अलग हो सकते हैं'। परन्तु यदि हम स्वर्गीय मीरास चाहते हैं तो हमें अलग रहना होगा क्योंकि हम परमेश्वर की निज प्रजा एवं चुना हुआ वंश है। (1 पत. 2:9)।

हम अलग किये हुए लोग हैं और इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं। हम इस जगत में रहते हैं परन्तु हम जगत के नहीं हैं। हम चुने हुए लोग हैं और सांसारिक रीति-रिवाज, पहनावा, बालों का गुंथना अन्य अनेक बातों से हमें स्वयं को अशुद्ध नहीं करना चाहिए। 'तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। (1 यूह. 2:15) इन लालसाओं और अपवित्र इच्छाओं के कारण लोग सांसारिक भूषाचर को अपनाते हैं। ये आधुनिक भूषाचार है ऐसा कहकर स्वयं को निर्बुद्धि बनाने की आवश्यकता नहीं है। यह भूषाचार नहीं है, यह तो लालसा ही है और जगिक वस्त्रों, हावभाव और रीतियों के लिए यह अपवित्रता ही जिम्मेदार है। सांसारिक लोगों का हृदय अपवित्रता एवं दुष्टता से भरा हुआ है।

आधुनिक संगति, आधुनिक पुस्तकें पत्रिकाएं, व्यवहार एवं अर्ध-नग्न पोशाक शर्मनाक रीति से वासनापूर्ण है। यदि हम संसार के पीछे चलेंगे तो परमेश्वर के राज्य के योग्य बनने की आशा हम नहीं रख सकते, सांसारिक लोगों के द्वारा हम ठग लिये जाएंगे परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हमें अनुग्रह दिया है जिसके सहारे हम स्वयं को शुद्ध रख सकते हैं। संसार का अनुसरण करेंगे, हम स्वतंत्रता से वचन और हियाव-पूर्वक गवाही भी नहीं दे सकते और परमेश्वर के वचन पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेंगे।

प्रभु हमें सच्चा सौंदर्य देता है। सुन्दरता के लिए हमें साबुन, पाऊडर, लेप और आभूषणों की आवश्यकता नहीं है। यदि हम परमेश्वर के आधीन होंगे तो सच्चा सौंदर्य हमें प्राप्त होगा। परमेश्वर हमें स्वर्गीय महिमा और स्वर्गीय सुन्दरता देता है। वह स्वयं मेरी सुन्दरता है। (यशा. 61:10) प्रभु यीशु मसीह, जीवित मनुष्य प्रतिदिन मेरे मार्ग की ज्योति बनता है।

जुलाई 23

चुप हो जाओ और जान लो,
कि मैं ही परमेश्वर हूँ।
भजन. 46:10

1 राजा 17:3 में परमेश्वर ने एलिय्याह को छिप जाने की आज्ञा दी। प्रभावकारी प्रार्थना के लिए यह पाठ सीखने की जरूरत है। परमेश्वर के अनेक नबियों को मार डालने वाले आहाब और ईजेबेल जैसे शत्रुओं से परमेश्वर एलिय्याह को इसी रीति से छिपाना चाहता था। परमेश्वर अपने लोगों को किसी भी रीति से बचा सकता है। केवल परमेश्वर ही जानता था कि 650 ई.पू. झूठे नबियों एवं पूरी इस्राएली प्रजा के सामने खड़े रहने का अति दुर्लभ काम वह एलिय्याह को देना चाहता था, इस कारण से वह एलिय्याह को इस रीति से तैयार कर रहा था।

हमें भी स्वयं को प्रभु के पास छिपाना है और उसके साथ बहुत बातें करनी है। हममें से अधिकतर लोगों को समय निकालकर परमेश्वर के साथ अकेला रहना कठिन लगता है। कई बार हम अत्यधिक काम से उलझ जाते हैं। अनेकों बार हमारे विचार भटकते फिरते हैं और तो और बहुत से लोगों को अकेले रहने में डर लगता है। इसलिए वे दूसरे लोगों की संगति खोजते हैं। वे पूरी रात बत्ती जलाए रखते हैं। यह मानवीय निर्बलता है। परन्तु परमेश्वर के साथ अकेले रहने का महान रहस्य हमें सीखना ही है। यदि अधिक काम के कारण दिन में हमें समय नहीं मिलता हो तो रात्रि में थोड़ा समय निकालना चाहिए। प्रभावशाली प्रार्थना, जीवन के लिए किसी भी प्रकार की विनती या प्रार्थना किये बिना परमेश्वर की उपस्थिति में रहना यह अनोखी बात है। अनेक बार हम इतना अधिक बोलते हैं कि परमेश्वर हमसे जो कहने का प्रयत्न कर रहा है उसे हम सुन नहीं पाते। इसीलिए ही परमेश्वर कहता है, 'चुप हो जाओ, निश्चय जानों, कि मैं ही परमेश्वर हूँ।

जुलाई 24

वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता और तेरे सब रोगों को चंगा करता है। भजन. 103:3

बैतनिय्याह शब्द का अर्थ 'अंजीर का घर है'। पवित्र-शास्त्र में अंजीर स्वास्थ को सूचित करता है हिजकिय्याह राजा ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था। तब यशायाह नबी उसके पास आता है और कहता है, अंजीरों की एक टिकिया लेकर फोड़े पर लगा लो। ऐसा करने के द्वारा हिजकिय्याह चंगा हो गया (2 राजा 20:7)। दाऊद के पुरुषों ने एक अमालेकी को अंजीर और सूखा द्राक्ष दिए और वह होश में आया, यहूदी लोग सामान्य भोजन में भी अंजीर का उपयोग करते हैं। 1 शमू. 25:18 में हम देखते हैं कि दाऊद को प्रसन्न करने के लिए अबीगैल उत्तम खाद्य पदार्थों को लेकर जाती है जिसमें अंजीरों की टिकियां भी थी।

1 इति. 12:38-40 में दूसरी घटना को देखते हैं जिसमें योद्धा पुरुष दाऊद को राजा बनाने के लिए एकत्र होते हैं। उस समय पूरे राज्य में लोगों ने बहुत आनन्द मनाया। उत्तम भोजन वस्तु तैयार की गई और ऊंट पर लादकर लाए जिनमें अंजीर की टिकिया थी। यहूदी लोगों में भोजन एक स्थान रखता था उसे हम देख सकते हैं। बैतनिय्याह 'अंजीर का घर' था, इसलिए वह स्वास्थ का घर भी था। प्रभु यीशु मसीह सच्चा स्वास्थ देने के लिए इस संसार में आया। संसार के सभी लोगों को पाप का रोग लगा है और इस रोग को कोई दूर नहीं कर सकता। दूसरे रोग दवा और उपचार से मिट जाते हैं। परन्तु पाप के रोग से कोई चंगा नहीं कर सकता है। इसलिए मानव जाति के लिए मसीह इस संसार में आया।

यिर्म. 33:6-8 में हम पढ़ते हैं कि पाप और बलवा करने के कारण इस्राएलियों को दण्डित तो करना ही पड़ा फिर भी उनके प्रति प्रेम के कारण परमेश्वर ने वचन दिया कि सत्तर वर्ष के बाद वह उनको छुटकारा देगा। उसने कहा 'मैं उनको चंगाई एवं शांति दूंगा'। प्रभु यीशु मसीह इस जगत में इसलिए आया कि हमारे पाप, अधर्म एवं अपराध को क्षमा करे और आत्मिक चंगाई दे। हमारे दु:ख एवं पीड़ा का कारण हमारे पाप है। इसलिए जब हमारे पाप क्षमा होते हैं तब सुखी, आनन्द से भरपूर और आत्मिक रीति से सम्पन्न होते हैं।

जुलाई 25

हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट है। 2 कुरि. 4:10

हमारा पुराना मनुष्यत्व हमें बहुत सताता है। जब तक हम इस भ्रष्ट और अशुद्ध स्वभाव के अधिकार के नीचे रहते हैं तब तक हमें स्वर्गीय जीवन की मीरास प्राप्त होती है। इसलिये हमें पुराने स्वभाव को छोड़ने के लिये मार्ग ढूंढ़ निकालना है। परन्तु कठिनाई यह है हमारे अन्दर छिपा हुआ यह मानवी स्वभाव इतना भ्रष्ट है उसे हम समझ नहीं सकते और इसलिए उससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए हम आतुर नहीं होते। जब तक हम इस भ्रष्ट स्वभाव एवं पुराने जीवन के संबंध में मृत्यु नहीं पाते तब तक प्रभु यीशु मसीह का जीवन हमारे अन्दर नहीं आता है।

गेंगरीन (हाथी पांव) जैसे कितने ही रोग है जिनका डॉक्टर इलाज नहीं कर सकते हैं। पैर के किसी भी भाग में गेंगरीन हो तो उस भाग को काटकर फेंकने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है। परमेश्वर का वचन स्पष्ट कहता है कि हमारा मानवीय स्वभाव इतना भ्रष्ट है कि कोई भी मानवीय शक्ति सुधार नहीं कर सकती है। (यिर्म. 17:9) अधिकांश लोग उपवास, देह पर अधिकार और लम्बी प्रार्थनाओं के द्वारा भी इस स्वभाव को बदलने का प्रयास किये हैं परन्तु वे निष्फल रहे हैं। केवल एक ही उपाय है कि इसे मरना होगा। तभी स्वर्गीय जीवन हमारे अन्दर बहने लगेगा। इसी उद्देश्य से प्रभु यीशु मसीह, मृत्यु को ग्रहण किया। हम भी पाप के लिये मर जाएं इस कारण वह मरा। उसने पाप नहीं किया था और न ही पाप से जान-पहचान थी, उसके पास सब अधिकार था फिर भी उसने दुष्ट लोगों के हाथों से मृत्यु को ले लिया। हमारे पापों के दण्ड को दूर करने के लिए वह मरा, इतना ही नहीं, हमें नई सामर्थ देने के लिए मरा। हमारी इच्छा-शक्ति या ज्ञान द्वारा आपका पापी स्वभाव दूर नहीं होगा। केवल इसी रीति से पाप के ऊपर जय प्राप्त होगी। उसकी मृत्यु की शक्ति हमारे अन्दर पल-पल कार्य करेगी। और इस रीति से हमें संपूर्ण रूप से पुराने स्वभाव से छुड़ाएगी। यह तो दैनिक प्रक्रिया है।

जुलाई 26

मेरे दास को देखो... न वह चिल्लाएगा और न ऊँचे शब्द बोलेगा, न सड़क में अपनी वाणी सुनायेगा। यशा. 42:1,2

ये वचन मसीह के संबंध में, यहोवा के दास के संबंध में है। किसी भी प्रकार के सांसारिक हथियारों के बिना, चिल्लाए बिना और न ऊंचे शब्द से बोले बिना वह अपना राज्य स्थापित करेगा। प्रेम, दया और सत्यता से वह संसार को जीत लेगा। यूह. 12:32 के अनुसार वह किसी सांसारिक हथियार से नहीं, परन्तु केवल प्रेम से लोगों को खींचता है। जब लोग यह समझते हैं कि वह उनके पापों के लिए मरा तब वे उसकी ओर खिंच जाते हैं। केवल शुद्ध एवं ईश्वरीय प्रेम के द्वारा लोग उद्धार पाते हैं, मानवीय प्रेम या सहानुभूति से नहीं। नेपोलियन के विषय में एक बात मुझे स्मरण आती है। सेंट हेलेना में जब वह कैदी बना तब उसने पवित्र-शास्त्र पढ़ना शुरु किया। अपनी मृत्यु के पूर्व उसने इस प्रकार लिखा, 'कैसर, सिकंदर महान, फ्रैडरीक महान और स्वयं मैं भी महान राज्यों को स्थापित करने का प्रयत्न किये, परन्तु हम सब विफल हुए। परन्तु गलील के बढ़ई ने एक राज्य को स्थापित किया जो कभी भी टलने वाला नहीं और इस बढ़ई ने मेरा दिल ले लिया है'। ये उसके अन्तिम वचन थे। यशा. 25:13-15 में यही विचार हमें देखने को मिलता है, कि दुःखों को सहने के द्वारा और क्रूस के प्रेम द्वारा परमेश्वर लोगों को अपनी ओर खींच रहा है।

बहुत से लोगों ने दबाव या अधिकार का सहारा लेकर अथवा धन देकर मसीही बनाने का प्रयत्न किए हैं परन्तु वे सब विफल हो गये। इसी कारण से अनेक देशों में परमेश्वर के कार्य में बहुत हानि पहुंची है। कई लोग ऐसा विचार करते हैं कि गरीबों को नौकरी या वस्त्र देने के द्वारा वे मसीही बनेंगे। हजारों लोगों को बपतिस्मा भी दिया जाता है, परन्तु परिणाम-स्वरूप उलझन ही पैदा होती है। हम देखते हैं कि पाप के कारण असफलता और उजाड़ आता है। हमें मसीह को यहोवा का दास के रूप में प्रगट करना चाहिये जो हमारी सेवा करने और मरने के लिए आया।

लूका. 9:51,56 में देखें- सामरियों ने उसका स्वागत नहीं किया, क्योंकि उसका मुंह यरूशलेम की ओर था। यह देखकर उसके चेले याकूब तथा यूहन्ना ने पूछा कि, हे प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिराकर उन्हें भस्म कर दे'। परन्तु उसने फिर कर उन्हें डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन बचाने के लिए आया है'। चेलों ने सोचा कि वे लोग दण्ड के योग्य थे। परन्तु प्रभु ने उन्हें डांटा। इस प्रकार से हम देखते हैं कि प्रत्येक स्थान पर नम्रता एवं सेवा द्वारा हमारे प्रभु ने लोगों को जाना, किसी सांसारिक पद्धति, बल या अधिकार और धन-दौलत के द्वारा नहीं।

जुलाई 27

छोटे से छोटा एक हजार हो जाएगा और सबसे दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा। मैं यहोवा हूँ, ठीक समय पर यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूंगा। यशा. 60:22

शारीरिक अथवा मानसिक रीति से हम चाहे कितने ही निर्बल तथा गरीब हों तो भी हम स्वर्ग में आत्मिक रीति से बलवान नहीं बन सकते हैं। एक सभा में एक लड़का था जो हमेशा हंसा करता था। एक सामान्य बच्चे जितनी समझ भी शायद ही उसमें थी। परन्तु हर सभा में वह आता था और प्रत्येक सभा में वह हाथ ऊंचा करता था। परमेश्वर का वचन सचमुच इस लड़के के हृदय में प्रवेश किया। उसके पिता की शराब की दुकान चलती थी और उसमें वह अच्छा पैसा कमा लेता था। एक दिन वह लड़का घर गया और उसने अपना सामान बांधा। उसकी माँ ने उससे पूछा वह कहाँ जा रहा है। उसने उत्तर दिया, 'मेरे हृदय में प्रभु आया है, और इस दुष्ट घर में मैं रहना नहीं चाहता हूँ।'

धन पाने के लिए आप शराब बनाते हैं। इसलिए इस दुष्ट घर में रहने के बदले सड़कों पर रहना मैं ज्यादा पसंद करता हूँ। तब माँ ने उत्तर दिया तेरे लिए ही हम धन कमा रहे हैं। हम लोगों को इन रुपयों की जरूरत नहीं है। हम तो थोड़े दिनों में मारे जाएंगे, उसके पश्चात सारा धन तेरा ही है। लड़के ने कहा, 'मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। तब मां ने पिता से बात की और पिता ने पुत्र से विनती की कि वह घर में रहे, आरंभ में तो उसने मना किया परन्तु अन्त में उसने कहा यदि वे शराब के मटकों को फेंक देंगे तो ही वह घर में रहेगा। पिता ने कहा, 'कितनी बड़ी हानि। परन्तु ऐसा करने के बदले हम उसे बेच देंगे। हमें समय दे, हम नये घर में रहेंगे'। पुत्र ने कहा, ये वस्तुएं बुरी हैं शराब को तो फेंकना ही पड़ेगा। उन्हें बेच कर दूसरे घरों को क्यों नष्ट करें? यदि आप उन्हें नहीं फेंकेंगे तो मैं नहीं रहूँगा'। वह बहुत दृढ़ था, और एक ही पुत्र होने के कारण वे उससे बहुत प्रेम करते थे। अन्त में पिता ने शराब को बहा दिया और सामने की नदी में फेंक दी। उसके बाद उनके हृदयों में जागृति आई। इसी रीति से परमेश्वर निर्बुद्धि लोगों के द्वारा बड़े काम करता है। 1 कुरि. 1:31 में देखें कि तुच्छ लोगों के द्वारा वह संसार को उलट-पुलट कर डालता है। हमारी क्षीण-बुद्धि और सीमाएं होने पर भी प्रभु हमें महिमा के पात्र में उपयोग कर सकता है। परन्तु शर्त यह है कि हमारा उपयोग होने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए और इस रीति से हम महान आशीष का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

जुलाई 28

...हे यहोवा तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा। भजन. 27:8

यदि हम विश्वासी हैं तो हमें पवित्र-आत्मा मिली है और हमें निरन्तर प्रभु की स्तुति करनी चाहिये। छोटी से छोटी बात भी हमें उससे पूछनी चाहिये। प्रभु तेरी इच्छा क्या है? अधिकांश लोग बड़ी बातों के विषय में परमेश्वर की इच्छा से चलना चाहते हैं, परन्तु छोटी बातों के लिए विचार करते हैं, कि प्रभु की इच्छा को जानने की क्या आवश्यकता है? अपने सामान्य बुद्धि का उपयोग न करें? इस प्रकार से वे बड़ी बातों के लिए ही प्रभु के पास जाते हैं। ये लोग निर्बुद्धि कुंवारियों के समान है, (मत्ती 25) प्रभु के दूसरे आगमन के समय उसका स्वागत करने के लिए ऐसे लोग तैयार नहीं रहते हैं। इतना ही नहीं, विजयी लोगों के द्वारा उनका ह्रार्दिक स्वागत नहीं होगा।

एक दिन स्नानगृह में मुझसे बोतल का ढक्कन गुम हो गया। ढक्कन तो बहुत छोटा था परन्तु तेल न गिरे इसलिए उसका मिलना जरूरी था। मैंने प्रार्थना किया, प्रभु वह छोटा ढक्कन कहाँ मिलेगा यह मैं नहीं जानता। मैं तीन दिनों तक इसे चारों ओर ढूंढ़ा। इसका मूल्य तो कुछ भी नहीं था परन्तु मेरे लिए वह मूल्यवान था। मैंने प्रभु से कहा- कृपा करके उसे ढूंढ़ पाने में मेरी सहायता करें। थोड़ी ही देर बाद वह मुझे मिल गया। यह अनुभव मेरे लिए अति मूल्यवान हो गया। मैंने फिर से सीखा कि हमें किस-किस छोटी-छोटी वस्तुओं की आवश्यकता होती है उसमें भी प्रभु रूचि दिखाता है। इसलिए हमें बारम्बार उसके पास जाना चाहिए एवं उसके साथ निकपटता बनाए रखनी चाहिए। उसके बाद ही हमारा जीवन वास्तव में मशाल लिए हुए प्रभु के आगमन के लिए तैयार रह सकेगा।

जुलाई 29

और वे... संगति रखने में... लौलीन रहे। प्रेरितों. 2:42

आने वाले समयों में हमारे मीरास को पूरी रीति से अनुभव करने के लिए हमें जयवन्त जीवन जीने की आवश्यकता है। जयवंत जीवन जीने के लिए इस पृथ्वी पर प्रभु की मण्डली के स्थापन कार्य में हमें भाग लेना चाहिए। दिन भर प्रार्थना करने के द्वारा हम जयवंत नहीं बन सकते हैं। जो ऊंची या छोटी पहाड़ियों पर बड़े मकान बनाकर एकान्त में जीते हैं वे अधिक से अधिक पाप के दास बनते हैं; लालची, हठीले एवं आत्मिक रीति से अंधे हो जाते हैं। परन्तु संगति में रहकर प्रभु की उपासना करने के द्वारा और परमेश्वर की स्वर्गीय योजना को जानने के द्वारा हम जयवंत बन सकते हैं।

एक दूसरे के द्वारा हमें प्रोत्साहन और सलाह लेने से उन्नति करने में सहायता प्राप्त होती है। अकेले रहने के द्वारा लोगों को कई खतरों एवं परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इस रीति से शैतान कई विश्वासियों को भरमाता है। वह ऐसा विचार लाता है कि अधिक व्यस्त होने के कारण प्रार्थना और संगति करने का समय उन्हें कभी नहीं मिलेगा और सलाह देता है कि कभी-कभी भजन करने के लिए जाएं, यही काफी है। और वह ऐसा भी विचार लाता है कि वे मण्डली के प्राचीनों के समान नहीं बन सकते हैं। प्रार्थना करना केवल मण्डली के प्राचीनों का काम है। प्राचीनों का अनुकरण करने से उनका जीवन नष्ट हो जायेगा। वे धन कमा नहीं सकेंगे और यदि पर्याप्त रीति से न कमाएं तो बच्चों को योग्य शिक्षा प्राप्त नहीं होगी। वे फटे पुराने कपड़े पहनेंगे और वे उनका विवाह करा नहीं सकेगा। इसलिए बहुत सख्त चेतावनी देता है कि सभा में एवं पवित्र-शास्त्र अध्ययन के लिए जाकर समय नष्ट न करें। पैसा कमायें बच्चों की रखवाली करें और उन्हें ऊंचे स्थान तक पहुंचाएं। इस रीति से बहुत से लोग परमेश्वर के घर से दूर रहते हैं। परिणाम-स्वरूप वे दुःखी हो जाते हैं। उनके बच्चे पाप में गिरते हैं। वे शिष्टता सीखते ही नहीं। उनकी वृद्धावस्था में वे उनको छोड़कर चले जाते हैं, उनकी चिन्ता नहीं करते। परन्तु संगति में रहकर प्रार्थना, सेवा एवं धन के द्वारा परमेश्वर के घर को बनाने में भाग लेने से परमेश्वर की आशीषों का पूरा भाग मिलेगा। आपके बच्चों की चिन्ता वह करेगा। आपके बच्चों के लिए परमेश्वर की योजना ही श्रेष्ठ है।

जुलाई 30

मूसा के ससुर ने उससे कहा,... मैं तुझको सम्मति देता हूँ... तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छांट ले, जो गुणी और परमेश्वर का भय माननेवाले, सच्चे और अन्याय के लाभ से घृणा करने वाले हों; और उनको. ..मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे। निर्ग. 18:17,19,21

मूसा ने यित्रों की सलाह मानकर वैसा ही किया, परन्तु यह परमेश्वर की योजना नहीं थी। परमेश्वर की योजना यह थी कि सत्तर पुरनियों को नियुक्त किया जाए जिनमें पवित्र-आत्मा निवास करती हो। (70) की संख्या संपूर्णता को दर्शाती है। सात (7) की संख्या भी संपूर्णता की है और दस की संख्या कसौटी-परीक्षा को दिखाती है। सात को दस गुणा करें तो सत्तर होता है। इस रीति से सत्तर व्यक्ति ऐसे थे जो कसौटी व मुश्किलों में से पार उतरे थे और उसके बाद परमेश्वर का आत्मा उनमें समा गया था। संसार का नियम है कि अमुक व्यक्ति बहुत पढ़ा लिखा है, चलो इसे प्रधान नियुक्त करें, अमुक व्यक्ति बहुत धनवान है, चेलो इसे खजांची बना दें, अमुक व्यक्ति बहुत सेवा-भाषी है, चलो इसे सेवादार बना दें।

इसी कारण से आज परमेश्वर के लोग बहुत निर्बल है। प्रभु के काम में यित्रों का ज्ञान एवं बुद्धिमानी चल नहीं सकती। यित्रों ने अच्छी सलाह दी थी इसके बावजूद वह परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं था। यित्रों कैसे परमेश्वर के मन की बात जान सकेगा? परमेश्वर के साथ उसका जीवित संबंध नहीं था। मन-फिराव या नया जन्म के बिना कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की योजना में आ नहीं सकता। मनुष्य की बुद्धि अनुसार योजना तो भ्रष्ट होती है। मूसा स्वयं बोझ उठा रहा हो ऐसा लग रहा था। परन्तु वास्तव में तो परमेश्वर का आत्मा उसमें रहकर यह बोझ उठा रहा था। आज इस संसार में यित्रों जैसे व्यक्ति परमेश्वर के घर में पाए जाते हैं और परमेश्वर के कार्य में बाधा डालते हैं। सांसारिक बातों में सांसारिक ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकते। जब परमेश्वर के वचनों के अनुसार लोग नहीं चलते, जब परमेश्वर को आदर नहीं दिया जाता, जब मनुष्यों की योजना परमेश्वर में आ जाती है तब परमेश्वर का झुण्ड बिखर जाता है। यित्रों की सलाह न मानें।

जुलाई 31

...तुम सब मसीह यीशु में एक हो। गल. 3:28

हम चाहे किसी भी परिवार में से आते हो, किसी भी देश के हों या जीवन-प्रवत्ति किसी भी स्तर की हो, परन्तु जब नया जन्म पाते हैं तब परमेश्वर की दृष्टि में एक समान, मूल्यवान, एक समान आवश्यक और एक समान महत्व के हो जाते हैं। बपतिस्मा के बाद हाथ रखने की साक्षी द्वारा यह सत्य प्रगट होता है। भारत में विश्वासियों के मध्य भी ऊंच और नीच की भेदभावना देखने को मिलती है। ऐसी ही एक बात यहाँ है कि कितने तो ऐसा मानते हैं कि प्रभु भोज के बनाने की विधि न हो तब तक कोई प्रभु भोज में भाग नहीं ले सकता है, ऐसी शिक्षा से विभाजन होते हैं। नया जन्म पाए हुए सब एक हैं और उन्हें एक ही रहना चाहिए। विश्वासी होने के नाते हम परमेश्वर के लोगों में विभाजन लाने वाली कोई भी प्रवृत्ति, आयोजन या विधियों में भाग लेने से इन्कार करना चाहिए। प्रेरितों. 13:2,3 में बरनबास और शाऊल पर हाथ रखा गया और मण्डली ने उन्हें विदा किया। वे अपनी इच्छानुसार नहीं गए, हाथ रखने के द्वारा प्राचीन लोग ऐसा कहते थे कि तुम लोग हमारी ओर से जाओ। हम तुम्हारे साथ जा रहे हैं। प्रार्थना एवं संगति के द्वारा हम तुम्हारे संग खड़े हैं।

हाथ रखना, यह धार्मिक विधि नहीं है। हाथों में कोई चमत्कार नहीं है। जब हम किसी के साथ हाथ मिलाकर वन्दना करते हैं तब यह दर्शाते हैं कि हम अच्छे मित्र हैं। हमारी आत्मिक समानता, एकता और एकरूपता प्रगट करने के लिए विश्व-व्यापी मण्डली की ओर से हाथ रखते हैं। और ऐसा प्रकट करते हैं कि हम सब एक ही परिवार के अर्थात प्रभु यीशु मसीह की मण्डली के हैं। एक ही बहुमूल्य लहू से हमें मोल लिया गया है और इसलिए उसके समक्ष हम सब एक समान महत्व के और एक समान ही बहुमूल्य है। 1 कुरि. 12:18-21 में हम मसीह की देह के मर्म के संबंध में पढ़ते हैं। जैसे मनुष्य के शरीर में एक छोटी से छोटी अवयव और मांस-ग्रंथि का उपयोग किया गया है इसी रीति से स्वर्गीय कुटुम्ब में एक-एक विश्वासी व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में एक समान और उपयोगी है। इसलिए किसी विधि के अनुसार नहीं बल्कि साक्षी के कारण हाथ रखना चाहिए। बपतिस्मों एवं हाथ रखना ये दोनों साथ-साथ होते हैं। यदि हम परमेश्वर के क्रम को सच्ची रीति से अपनाना चाहते हो तो बपतिस्मा के बाद जिन्होंने बपतिस्मा लिया है उन पर हाथ रखकर उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हम इन ईश्वरीय सत्यों की अवगणना करना नहीं चाहिए।

अगस्त 1

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। प्रेरितों. 2:42

विश्वासियों की देखभाल के लिए परमेश्वर ने प्रेरितों के काम 2:42 में आत्मिक नियम दिए हैं। प्रभु हमारे द्वारा तीन आत्माओं को या तीन हजार आत्माओं को बचाए परन्तु संख्याओं के द्वारा चलाए नहीं चलना है। पवित्र-शास्त्र का सिद्धान्त एक ही है और इसी रीति से परमेश्वर का काम स्थिर होगा और विश्वासियों की वृद्धि के लिए योग्य प्रबन्ध होगा।

प्रेरितों से शिक्षाः आप नियमित पवित्र-शास्त्र अध्ययन की आवश्यकता पर भार डालें; गृह सभाओं को शुरु करें; सुसमाचार प्रचार करें; प्रार्थना आयोजित करें; लोगों से कहें कि आपके कर्ज चुकाएं। एक दूसरे के समक्ष पाप कबूल करें, सिगरेट, अश्लील पुस्तकों, मूर्तियों को फेंक दें। ऐसा करने के बाद भी आप देखते हैं कि विश्वासी लोग आत्मिक वृद्धि नहीं पाते हैं। तब आप ईश्वरीय क्रम का पालन करने में चूक गए हैं। उन्हें प्रेरितों से शिक्षा पाने में दृढ़ता से बने रहना है। प्रेरितों की शिक्षा का अर्थ है परमेश्वर का शुद्ध वचन। उसमें मानवीय ज्ञान व मिलावट नहीं होनी चाहिए। इसीलिए हम लोगों से विनती करते है कि मसीही साहित्य से अधिक परमेश्वर का वचन पढ़ें। मसीही साहित्य की विशेषता के विषय हम तर्क नहीं करते हैं। वे अच्छी एवं उपयोगी है, परन्तु हमारी सलाह यह है कि पवित्र-शास्त्र को प्रथम स्थान दें। परमेश्वर के वचन से एक विश्वासी परिचित हो जाए यह आवश्यक है। परमेश्वर के वचन में दी गई परमेश्वर की योजना को उन्हें जानना चाहिए। प्रेरितों ने विश्वासियों का ध्यान व्यवस्था नबियों और भजन संहिता की ओर फिराया जिससे प्रभु यीशु मसीही के विषय लिखा गया था।

संगतिः प्रेरितों ने सच्ची संगति के लिए विश्वासियों को प्रोत्साहित किया। संगति ही प्रार्थना की जड़ है। इसलिए विश्वासियों को जितना हो सके उतनी बार संगति में मिलना एवं गवाहियों को एक दूसरे के साथ बांटें। परमेश्वर की विश्वास-योग्यता को एक-दूसरे के साथ बांटने से हम आत्मिक दृष्टि पाते हैं। बहुत से लोग सभा में आते तो हैं, परन्तु सभा के समाप्त होते ही घर चले जाते हैं और दूसरे विश्वासियों के साथ संगति नहीं करते। परन्तु सच्ची संगति आत्मिक सामर्थ्य देती है।

अगस्त 2

...और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।

प्रेरितों. 2:46

विश्वासियों की वृद्धि के लिए प्रेरितों के काम 2:42 में दिए आत्मिक नियम के दो और पहलू हैं, रोटी तोड़ना और प्रार्थना।

रोटी तोड़ना: प्रेरितों ने नए विश्वासियों के साथ तुरन्त ही रोटी तोड़ना आरंभ किया। आप प्रभु के लिए चाहे कितना भी परिश्रम करते हो, आप संख्या में थोड़े हों, हो सकता है कि आपके सहकर्मियों, मित्रों और सेवक ही हो, तो भी प्रभु के दिन रोटी तोड़ने की सभा अवश्य ही रखें। ऐसी संगति का समय ऐसा अद्भुत होता है। कई बार मेरी ऐसी इच्छा होती है कि यह पूरा दिन चले तो कितना अच्छा लगेगा। यह मेरा अनुभव एवं सेवा है कि जब विश्वासी प्रभु की मेज के आसपास भजन में भाग लेना सीखते हैं तब प्रभु के लिए उदारता से दान देते हैं, और आनन्द से प्रभु के लिए दु:ख सहते हैं। इस रीति से उपदेशकों एवं संदेशों पर आधार न रखते हुए प्रभु पर आधार रखना सीखते हैं। उनकी दृष्टि मनुष्य और सांसारिक बातों पर से दूर होती रहती है।

कई गांवों में भजन की सेवा का आरंभ करने के बाद थोड़े ही समय में विश्वासी आत्मिक वृद्धि पाए हुए, प्रभु के आनन्द से भरपूर होते हुए देखे गए हैं। आरंभ में तो अशिक्षित होने के कारण वे पवित्र-शास्त्र को पढ़ नहीं सकते थे। परन्तु बाद में उन्हें पवित्र-शास्त्र पढ़ने प्रार्थना और भजन सुनने से एक अनोखा ही आनन्द आया है। वे निर्धन होने के बाद भी प्रभु के काम के लिए दान देना सीखते हैं। दशमांश के विषय संदेश सुनने के द्वारा लोग दान देना नहीं सीखते हैं। प्रभु का भजन करना सीखते हैं तब ही वे आनन्द-पूर्वक सामर्थ के बाहर भी दान देना सीखते हैं और भजन करने के कारण शर्म के ऊपर भी उनको जय प्राप्त होती है। सुसमाचार प्रचार में भी वे हिम्मत से गवाही देते हैं। परमेश्वर के सेवकों से मेरी विनती है कि प्रभु भोज के आरंभ के कारण मित्रों या दूसरे लोगों की टिका-टिप्पणिओं से डरें नहीं। संभव है कि वे आपके इस कदम को समझ नहीं सकेंगे। और फिर से संदेश देने के लिए आपको न भी बुलाएं। यह सब कुछ परमेश्वर के वचन और उसकी गवाही के लिए है; इसलिए प्रभु की स्तुति करें। अपनी सेवा के लिए हम किसी स्थान या पद से बंधे हुए नहीं है। प्रभु के द्वारा खोले गये द्वार को कोई भी बन्द नहीं कर सकता है।

प्रार्थना: अंत में प्रेरित एक दूसरे के साथ और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना सीखें। प्रार्थना और विनतियों के द्वारा हमें अपनी सभी आवश्यकताओं को प्रभु को जानकारी में लाना चाहिये।

अगस्त 3

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास-योग्य और धर्मी है। यूह. 1:9

गिलगाल का अर्थ 'लुढ़कना'। इस्राएलियों के लिए मिस्त्र का जीवन निंदा का जीवन था परन्तु गिलगाल में उनकी निन्दा दूर की गई। परमेश्वर ने उनकी बीती असफलताओं, पराजय, शर्म और निन्दा को लुढ़का दिया और दूर किया।

हमें हराने के लिए शैतान जो शक्तिशाली हथियारों का उपयोग करता है उनमें से एक यह है कि बीते दिनों की हमारी असफलताओं को निरन्तर हमें स्मरण दिलाए। वह हम से कहता रहता है कि, 'उस पाप के विषय में क्या? उस असफलता के विषय में क्या? इनकी बातों के कारण हम निराश होकर कहते हैं, मसीह में जो मीरास है उसे प्राप्त करने का विचार मुझ जैसा व्यक्ति किस रीति से रख सकता है? इस रीति से कई विश्वासी दण्ड और न्याय के नीचे आ जाते हैं।

परन्तु इस रीति से पाप के दोष के नीचे रहने की आवश्यकता नहीं है। पापों के दाग धुलने के लिए हम प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू का दावा निरन्तर कर सकते हैं। उसके लहू पर विश्वास रखने के द्वारा हम शुद्ध एवं पवित्र रह सकते हैं। प्रेरितों. 15:9 के अनुसार विश्वास के द्वारा हम सब प्रकार की गंदगी से घुलकर शुद्ध हो सकते हैं। जब भी हम मन, वचन या व्यवहार से अशुद्ध होते हैं तब इस रीति से कह सकते हैं कि 'प्रभु यीशु, मैं अशुद्ध हुआ हूँ। कृपा करके मुझे क्षमा कर और अपने लहू से मुझे धोकर शुद्ध कर'। उसके बाद वह हमें शुद्ध करेगा।

परन्तु यदि हम उसके लहू के नीचे नहीं आते तो दंडाज्ञा और न्याय के नीचे रहेंगे। विश्वास के साथ प्रभु के पास आएं और वह आपकी निन्दा को लुढ़का देगा। यदि हम स्वयं को नम्र करेंगे, पापों को स्वीकार करेंगे और बहुमूल्य लहू के छिड़काव के नीचे आएंगे तो प्रभु हमें क्षमा करेगा और हमारे सब पापों को धो डालेगा।

अगस्त 4

...मुझे परखो।
मलाकी 3:10

जब मैं अमेरिका में था तब एक प्रश्न मुझसे बार-बार पूछा जाता था: 'भारत में आपके कार्य के लिए हम आपको क्या दें, आपकी क्या इच्छा है' मेरा उत्तर यह रहता, 'कुछ भी नहीं'। अपनी आवश्यकताओं के लिए मैं परमेश्वर के पास ही जाऊंगा, अमेरिकियों, कनाडियों, अंग्रेजों या भारतीय लोगों के पास भी नहीं। लोगों से अधिक परमेश्वर मेरी आवश्यकताओं को अच्छी तरह से जानता है। कितने तो बहस करते हैं कि, भाई अन्तत: हम प्रभु का कार्य ही करते हैं ना। इसलिए हम साथी विश्वासियों से कह सकते हैं। परन्तु यह पवित्र-शास्त्र के आत्मा के विरुद्ध है। इसमें विश्वास का अभाव दिखाई देता है। वह हमें मनुष्यों के समक्ष भिखारी बनाता है। सर्वप्रथम हम परमेश्वर को परखें? यदि वह असफल हुआ तो मनुष्यों के पास से सहायता मांगने में हम सही ठहरेंगे।

कई वर्षों पूर्व चेन्नई में सभाएं आयोजित करने के लिए हमें मकान किराये पर लेना था। उसका मासिक किराया 300 रुपये महीना था। हमने अपनी आवश्यकता को किसी के साथ नहीं बांटा परन्तु चुपचाप परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह इतनी रकम का प्रबन्ध करें। थोड़े समय के बाद मालबार से एक पत्र आया, उसमें इस प्रकार से लिखा हुआ था, 'भाई, मैं रुपये 275/-का मनी-ऑर्डर भेज रहा हूँ। मेरी छोटी बेटी बीमार थी और चौदह दिनों तक बेहोशी की अवस्था में थी। जब वह होश में आई तब उसके पहले शब्द यह थे। बख्त सिंह भाई को थोड़े पैसे भेज दें। मैंने अपनी बेटी से कहा, 'बेटी हमारे पास पैसे नहीं है'। तब उसने अपने गले में से सोने की चेन निकालकर मुझे दी और कहा, 'इसे बेचकर पैसे भेज दें। इसलिए मैंने उस चेन को बेचा और उसके पैसे आपको भेज रहा हूँ'। इस रीति से पहले किराया की रकम ही हमें समय पर मिल गयी। इस रीति से पिछले कई वर्षों से हमें परमेश्वर की विश्वास-योग्यता को देखते आए। स्मरण रखें परमेश्वर देता है, वह अधिकतम देता है। वह न कभी सोता है न कभी भूलता है। वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है और उचित समय पर वह हमारी आवश्यकताओं को पूरी करता है।

अगस्त 5

धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है.. वह.. जीवन का मुकुट पाएगा। याकूब 1:12

पोतीपर की पत्नि के द्वारा यूसुफ को बहुत भारी परीक्षा का सामना करना पड़ा। इसी रीति से शैतान कई प्रकार की युक्तिओं का प्रयोग करेगा जिससे हमारी गवाही बिगड़े और ईश्वरीय अनुग्रह को पाने में असफल हो जाए। जीवनभर हमें अनेक प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना होगा। ऐसे समय में हमें प्रतिदिन अधिकाधिक अनुग्रह सामर्थ और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और परीक्षाओं पर जय प्राप्त करनी चाहिए। यहाँ हमारे लिए चेतावनी है। शैतान ने यूसुफ की परीक्षा की और प्रत्येक विश्वासी को वह चालाकी और कष्ट से परीक्षा में लाएगा। परन्तु हमें जागते रहना होगा। प्रभु यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान में स्वयं को ही उसके साथ एक करना होगा और फिर उसके द्वारा जो शुद्धि प्राप्त होती है उसका दावा करना सीखना होगा।

लूका 22:31-46 में इसी कारण से प्रभु अपने चेलों को गंभीर चेतावनी देता है कि वे निरन्तर जागते रहें और प्रार्थना करें। हम भी इसी रीति से अर्थात जागृतावस्था में प्रार्थना करने के द्वारा परीक्षाओं पर जय पा सकते हैं। हम बीते दिनों की आशीषों, ज्ञान या विजयों पर निर्भर नहीं रह सकते। यह चेतावनी प्रतिदिन के लिए है।

यूसुफ को कैदखाना में डाला गया। तब उसे बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर अत्याधिक अनुग्रह किया। ऊंचे स्थान पर पहुंचाए जाने के लिए परमेश्वर ने इन परिस्थितियों का उपयोग एक प्रशिक्षण के रूप में किया। उसके विशेष और उच्च स्थान के लिए परमेश्वर ने उसे ईश्वरीय ज्ञान दिया। सात वर्षों तक किसी भी प्रकार के पक्षपात किए बिना सब लोगों को भोजन देने की बड़ी जिम्मेदारी के लिए बल की आवश्यकता थी। ऐसा ज्ञान केवल परमेश्वर ही दे सकता है। परमेश्वर का भय रखनेवाले, विश्वासयोग्य और सच्चे अधिकारी के रूप में यह ज्ञान उसे प्रशिक्षण या पुस्तकों का अध्ययन या अन्य मानवीय रीतियों को अपनाने से प्राप्त होने वाला नहीं था। दु:खद अनुभवों, कसौटियों और परीक्षाओं द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होता है।

अगस्त 6

मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है इसलिए कि वह मेरे दाहिने रहता है, मैं कभी न डगमगाऊँगा। भजन. 16:8

विश्वासियों के जीवनों में आनेवाली परीक्षाओं और कसौटियों की हम मेंह, बाढ़ और आंधियों के साथ तुलना कर सकते हैं। (मत्ती 6:24-26) लोग वर्षा ऋतु के समय को जानते हैं इसलिए उसके लिए तैयार रहते हैं। परन्तु बाढ़ बिना चेतावनी के, अचानक और कई वर्षों के बाद आती है। ऐसी मुसीबत के लिए लोग तैयार नहीं रहते हैं। बाढ़ से बचने के लिए दूरदर्शी और पूर्व तैयारी की आवश्यकता होती है। आंधी और तूफान का भी मौसम नहीं होता है और वह भी अचानक आ जाते हैं और हुल्लड़ मचाते हैं। हमारे आत्मिक घर को इस नाश करनेवाली शक्तियों से बचाना हो तब उसे चट्टान पर बनाने की आवश्यकता है। और वह चट्टान तो मसीह है। इस मजबूत ठोस चट्टान के साथ स्थिरता से जुड़ने के द्वारा कैसी भी मुसीबत के सामने हम टिके रह सकते हैं।

पहला आवश्यक कदम यह है कि 'मसीह मुझमें वास करे' उसकी निश्चयता होनी चाहिए। थोड़े समय के लिए अथवा बारम्बार प्रभु आकर रहे ऐसा नहीं परन्तु निरन्तर और हमेशा वास करना चाहिए। प्रभु के साथ ऐसी घनिष्ठ संगति का अनुभव करने के द्वारा हम खतरों में से बच पाते हैं। कई पुरुष छोटी वस्तुओं से ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं। दूसरे कितने ही लोग केले के छिलके के कारण फिसलकर गिरते हैं या बाथरूम में फिसलकर गिर पड़ते हैं, और हड्डियां टूट जाती है। अचानक आनेवाली सरल परीक्षाओं के कारण समर्थ लोग भी पाप में गिर जाते हैं। हमारे मार्ग में अनेक परीक्षाएं छिपी हुई होती हैं। हम असावधान रहते हुए ठोकर खाकर गिर पड़ें ऐसी संभावना बनी रहती है। ऐसे खतरों में से बचने के लिए प्रत्येक क्षण प्रभु की उपस्थिति की चेतना में रहना आवश्यक है।

क्या दिन के हरेक पल हम प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करते हैं? प्रात:काल के शांत ध्यान के समय में प्रभु की समीपता का हमें अनुभव होता है। प्रार्थना करते समय प्रभु की उपस्थिति का ऐसा अनुभव हमें मिलता है? प्रभु ही हमें छिपे हुए खतरों से बचा सकता है और हमें जय में थामे रख सकता है। हमारी प्रार्थनाओं की लम्बाई या उसमें होने वाली चिल्लाहट नहीं परन्तु प्रभु की उपस्थिति का शांत अनुभव मुख्य है। यदि यह हमारा अनुभव है तो शत्रु हमला करे तब हम प्रभु के हाथों में युद्ध सौंप कर कहें कि प्रभु, मेरे लिए शत्रु का सामना कर, मैं जानता हूँ, कि मैं निर्बल हूँ। दुश्मन का सामना करने की शक्ति मेरे पास नहीं। कृपया करके दुश्मन को मेरे लिए नहीं हरा? शैतान के आक्रमणों का सामना करने की यह सरल पद्धति है। इस रीति से हम अवश्य जय प्राप्त कर सकते हैं।

अगस्त 7

...तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। मत्ती 16:23

मत्ती 16:21-23 में प्रभु यीशु ने अपने चेलों से स्पष्ट रीति से कहा था कि उसके दु:ख उठाने का समय आ पहुंचा है, जब उसका ठट्ठा उड़ाया जाएगा, और उसे कोड़ों से मारा जाएगा, उस पर थूका जाएगा और उसे मार डाला जाएगा। परन्तु यह सब बातें वे समझ नहीं सके। वे अन्दर ही अन्दर कहने लगे, 'हमारे प्रभु यीशु के पास इतना सब अधिकार और इतना अधिक सामर्थ है तो क्यों उसे यह दु:ख उठाना पड़ेगा'? और मानवीय उत्सुकता के कारण पतरस प्रभु को चिताता है, 'हे प्रभु परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा'। (मत्ती 16:22)। पतरस बहुत प्रेम से और आदर से इन शब्दों को कह रहा था, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि वह दुश्मन के हथियार के रूप में उपयोग किया जा रहा था। पतरस मानवीय उत्सुकता से खिंच गया था। प्रभु यीशु को क्रूस पर जाने से रोकने में स्वयं प्रभु के प्रति प्रेम दिखा रहा है ऐसा वह समझ रहा था। परन्तु शैतान उसका उपयोग कर रहा है उसे वह नहीं समझ सका। इसलिए प्रभु को ऐसा कहने की आवश्यकता पड़ी कि, 'हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो'। हम भी जब परमेश्वर के कार्य में रुकावट लाते हैं, तब मानवीय उत्सुकता के कारण ऐसी परिस्थिति में आ फंसें, ऐसी संभावना है।

उदाहरण के रूप में प्रेरितों. 21:10-14 में पौलुस यरुशलेम की ओर जा रहा था, तब अगबुस ने ऐसी भविष्यवाणी की कि पौलुस को बांधा जायेगा। उसके साथी यह सुनकर रोने लगे और कहने लगे कि वे पौलुस को यरूशलेम नहीं जाने देंगे। परन्तु परमेश्वर की इच्छा क्या थी इसे पौलुस जानता था, इसलिए उसने कहा, 'तुम क्या करते हो', कि रोकर मेरा मन तोड़ते हो'? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बांधे जाने ही के लिए वरन मरने के लिए भी तैयार हूँ'। तब उन्होंने कहा, 'प्रभु की इच्छा पूरी हो। वे समझ रहे थे कि पौलुस के मित्र होने के कारण उसके प्रति प्रेम और सम्मान दिखाने के द्वारा उसे यरूशलेम जाने से रोक सकेंगे। इस रीति से अनजाने में वे परमेश्वर की योजना में रुकावट ला रहे थे। क्योंकि वे जानते नहीं थे कि परमेश्वर ने पौलुस को यरूशलेम जाने को कहा है कि नहीं। कई माता-पिता, मित्र और अन्य लोग इसी रीति से अपने प्रियजनों को परमेश्वर की योजना को पूरा होने से रोकते हैं। वे अपने उत्साह और मानवीय प्रेम-भाव से खिंच जाते हैं, और अपनी संतानों को या प्रियजनों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने नहीं देते हैं।

अगस्त 8

और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से लिजाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपनी आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।
रोमि. 8:11

पुनरुत्थान की आत्मा एक दिन हमारे देहों को अविनाशी बनाएगा'। जब यह नाशमान अविनाश को पहन लेगा और वह मरनहार अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया'। (1 कुरि. 15:54) वो दिन आ रहा है जब हमें अविनाशी महिमा (वित्त) स्वर्गीय और आत्मिक देह दिया जाएगा और इस देह के साथ हम पुनरुत्थान की आत्मा के पराक्रम द्वारा प्रभु को देखेंगे और समान होंगे।

वर्तमान में भी पृथ्वी पर इस पुनरुत्थान की आत्मा का स्वाद हम चख सकते हैं। शारीरिक रीति से जब हम निर्बल होते हैं तब प्रभु की सेवा करने के लिए परमेश्वर हमें अधिक बल देता है। अमेरिका में पूरे दो वर्षों तक मैंनें रसोईया का काम किया परन्तु एक बार भी रसोई बिगड़ी नहीं थी। यह मेरी शक्ति, ज्ञान या कुशलता के कारण नहीं पर केवल परमेश्वर का अनुग्रह था। उस समय मेरे पास किसी प्रकार की कुशलता नहीं थी। इस रीति से परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि इस संसार में रहते हुए हम जिलाए जाने वाली आत्मा द्वारा अत्यधिक बल एवं ज्ञान का दावा कर सकते हैं।

उसके बाद जब मैं भारत आया तब कई बार दिन के तीस मीलों तक चलकर हम सुसमाचार प्रचार करते थे। हमारे पास मोटरगाड़ी नहीं थी। हम पैदल चलकर जाते और सुसमाचार सुनाते थे। भोर को आरंभ करके पूरा दिन इस रीति से सुसमाचार का काम करते हुए लगभग मध्य-रात्रि को बिल्कुल बिना भोजन किए हम वापस आ जाते थे। परन्तु हमारा प्रभु हमें सामर्थ देता था। यह कैसे होता था? हर दिन हम प्रार्थना करते थे, 'प्रभु, हम तेरी सेवा करते है, और सब कुछ सिर्फ तेरी महिमा के लिए है। आपकी योजना क्या है इसे हम जानते नहीं हैं। पैदल चलने के लिए तू हमें अधिक से अधिक सामर्थ दे'। अपने शरीर के अनुसार मैं दिन में इतने मीलों तक चलने के उपरान्त दिन की पांच सभाओं को चला नहीं सकता इसे मैं जानता हूँ, परन्तु परमेश्वर सामर्थ देता था। अनेकों बार एक या दो सप्ताहों तक हम निरन्तर रात भर प्रार्थना करते रहे। यदि हम प्रार्थना करें तो परमेश्वर हमें बल देता है। जब आप शारीरिक निर्बलता को अपने ऑफिस, स्कूल घर, कारखाना में भारी बोझ उठाने से अनुभव करो तो प्रभु से कहें, 'प्रभु, मुझे अधिक बल दो। मैं काम कर नहीं सकता। मेरी हड्डियों, नसों और मेरे शरीर को स्पर्श कर'। वह ऐसा करेगा। इस पृथ्वी पर जिलाए जाने वाली आत्मा का यही स्वाद है, और यही आत्मा एक दिन मुझे अविनाशी देह देगा जिससे मैं महिमा (विन्त) शरीर में अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ अनन्तकाल तक राज्य करूंगा।

अगस्त 9

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। 2 कुरि. 5:17

'सो यदि कोई मनुष्य मसीही है' इस प्रकार से लिखा हुआ नहीं है, अपितु 'परन्तु सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, ऐसा कहा गया है।

इस दुनियां में स्वयं को मसीही कहलाने वाले लोग अनेक हैं, परन्तु वे सब मसीह में नहीं हैं। उदाहरण के रूप में, मेरी उंगली मेरे शरीर का एक भाग है ऐसा मैं कह सकता हूँ। मेरी उंगली को खींचने के द्वारा आप मेरे पूरे शरीर को खींचेंगे। परन्तु यदि मैं, अपने हाथ में पवित्र-शास्त्र पकड़ूं तो वह मेरा भाग नहीं है। यदि कोई व्यक्ति आत्मिक रीति से मसीह के साथ जुड़ता है तो वह नई सृष्टि बनता है। अनेक लोग जिन्होंने कभी भी सुसमाचार नहीं सुना वे उद्धार पाने के बाद नया मनुष्य बने हैं और तुरन्त पूरी रीति से बदल गए हैं। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर का वचन उनके जीवन में प्रवेश करने के द्वारा वे बदल गए हैं।

प्रभु यीशु मसीह के बिना हमारी दशा कैसी होती है यह जानेंगे तभी हमें समझ में आयेगा कि उसे हमारे जीवित और व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के द्वारा संपूर्ण रीति से बदल जाने की आवश्यकता है। आप काले या सूखी लड़की हैं, तो भी फोटो खींचनेवाला आपकी फोटो में गोरा और भरावदार दिखाए तो आप प्रसन्न हो जाते हैं। परन्तु परमेश्वर का वचन ऐसा नहीं है। यशा. 1:6 कहता है, 'नख से सिर तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं, जो न दबाए गये, न बांधे गए, न तेल लगाकर नरमाये गए हैं'। और यिर्म. 17:9 इस प्रकार कहता है, मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?

मत्ती 15:19-20 में प्रभु यीशु के वचनों को पढ़ें। बाहर से हम बहुत ही अच्छे एवं मधुर बोलने वाले दिखाई देते हैं; कितने तो सद्गृहस्थ एवं सुसंस्कृत, परन्तु अन्दर में केवल सड़ाहट है। यह सब जानते हुए भी प्रभु हमें निमंत्रण देता है कि हम उसके पास आएं। परमेश्वर जब पाप प्रकट

करता है तब उसे लज्जित करने के लिए नहीं इसके विपरीत मनुष्य हमें लज्जित करने के लिए पाप प्रगट करते हैं। प्रभु हमें बचाने के लिए हमारे पाप हमें दिखाता है। परमेश्वर हमें क्षमा करके या मनुष्य बनाना चाहता है। अन्धकार में जीवन बिताते हुए शर्मनाक मृत्यु पाकर अनन्तकाल तक दु:ख भोगने से, तो अच्छा है कि अपनी दशा परमेश्वर के समक्ष स्वीकार कर लें। परमेश्वर जब ये सब बातें आपमें दिखाए तब यह न समझें कि परमेश्वर आप पर दण्ड की आज्ञा ला रहा है। वह आपसे प्रेम करता है।

यूहन्ना 3:17 बताता है कि, 'परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए की जगत उसके द्वारा उद्धार पाए'। आपका न्याय करने की दृष्टि से वह आपकी स्थिति का आभास नहीं कराता, परन्तु आप उद्धार पायें, धुल जायें, शुद्ध हो जाएं, बदल जायें और सदाकाल तक जीने के लिए नया जीवन पाएं इसलिए ऐसा करता है। इसी कारण से परमेश्वर आप पर प्रेम रखता है।

अगस्त 10

...देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है।
1 कुरि. 12:12

पवित्र-आत्मा का एक आंतरिक काम यह है कि मसीह को देह में मुझे बपतिस्मा दें, जोड़ें और एक करें; मुझे स्वर्गीय कुटुम्ब का सदस्य बनाएं, प्रभु यीशु के सिर के नीचे मुझे ले आएं और परमेश्वर की एक संतान के साथ मुझे समान तथा एक ही अनुभव को पाने में सहायता करें। यह तो एक आश्चर्यकर्म है। हमारी एकता का यही अर्थ है। यह प्रयत्न से नहीं परन्तु आत्मा के द्वारा होता है, मैं सत्य के साथ तथा बहुत हिम्मत के साथ कह सकता हूँ कि जिस दिन से प्रभु यीशु मसीह मेरे जीवन में आये उस दिन से अमेरिका, कनाडा, फिरंगी, यूरोपी, चीन, जापानी, अफ्रीकी नागरिकों और दूसरे अनेक लोगों के साथ स्वयं को एक होने का अनुभव कर सकता हूँ। इससे मेरे हृदय में आनन्द आता है। मैं विचार करता हूँ कि 'हम सब एक हैं'। काला या गोरा, निर्धन या धनी, ऊँच या नीच का सवाल नहीं। क्यों? पवित्र-शास्त्र बताता है कि, 'हम सबने... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया'। (1 कुरि. 12:13-18)।

हम कैसे भी विश्वासियों के साथ संपूर्ण रीति से एकता अनुभव कर सकते हैं। कोई भी लालच, घमंड या लोभ अथवा स्व-प्रयत्न से यह कभी भी नहीं है। एक ही आत्मा हम में निरन्तर बहता है, इसका हमें आभास होता है। परमेश्वर अपनी इच्छानुसार हमें सेवा सौंपता है। 1 कुरि. 12:4 के अनुसार 'वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है' इनमें से हमें कोई न कोई काम सौंपा जाता है। जैसे देह में हाथ-पैर होते हैं और एक अंग आवश्यक है। उदाहरण के रूप में हमारे कान के पीछे कितनी ही बारीक ग्रंथियां होती हैं, वे बहुत छोटी एवं बिना आकार की होती हैं, परन्तु यदि उसमें रोग लगे तो देह में भारी खराबी आ जाती है। इसी रीति से देह में यहाँ-वहाँ विविध ग्रंथियां होती हैं वे बहुत जरूरी है और महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। आपके नाक के अन्दर के बाल कभी भी घुलते नहीं जब कि सिर के बाल बारम्बार घुलते हैं परन्तु वे दोनों आवश्यक हैं। आपके नाक के बाल न हो तो शायद आपको क्षय रोग लग जाएगा। उनका कार्य कितने महत्व का है। आप जो काम कर सकते हैं उसे मैं कर नहीं सकता हूँ। हम सब साथ मिलकर एक आत्मिक देह बनते हैं। इसीलिए परमेश्वर की हर एक सन्तान के साथ हम एकता को अनुभव करते हैं और जहां कहीं भी जाएं, वहाँ हम संगति में आनन्द प्राप्त करते हैं। जब मैं यहाँ-वहाँ जाता हूँ तब मैं यह नहीं पूछता हूँ, 'आप क्या काम करते हैं। मैं इतना ही पूछता हूँ, क्या आप नया जन्म पाए हैं? हां, भाई, प्रभु की स्तुति हो'। ऐसे उत्तरों से कितना अधिक आनन्द आता है।

अगस्त 11

जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।
1 कुरि. 3:5

सुलैमान के पास धन और सामग्री थी और उसके अपने राज्य में निपुण कारीगर थे तो भी वह जानता था कि परमेश्वर का भवन बनाने के लिए वह पर्याप्त नहीं था। इसलिए उसने सारे नगर के राजा हीराम को लिखा 'लबानोन पर से देवदारू काटकर उसकी लकड़ियां मुझे भेज और लकड़ी तथा पत्थर के काम करने वाले मनुष्य भी भेज दे'।

अब परमेश्वर के काम के लिए सभी प्रकार के कारीगरों की जरूरत है। संसार के प्रत्येक भागों में से निपुण कारीगरों की जरूरत है। जैसे सुलैमान ने अन्य देशों में से कारीगरों को बुलाया जो पत्थर का काम एवं लकड़ी का काम कर सकते थे वैसे ही परमेश्वर के काम के लिए विश्व के हर एक कोने में से स्त्रियों एवं पुरुषों की जरूरत है। क्योंकि कोई भी देश स्वयं ही परमेश्वर का भवन बना नहीं सकते हैं। वह देश चाहे कितना भी ज्ञानी और धन सम्पन्न हो तो भी स्वयं ही परमेश्वर का भवन बना नहीं सकता। हमें विश्व के अन्य भागों में से 'लकड़ी' एवं 'पत्थर' की जरूरत है। जब परमेश्वर का भवन बनाना आरंभ करते हैं तब ही हम समझने लगते हैं कि हमें विश्व के सभी भागों में से सहकर्मियों की आवश्यकता है। तभी परमेश्वर का काम सरलता से आगे बढ़ सकता है।

निर्माण कार्य के लिए वे वजनदार पत्थर और बड़े और मजबूत लकड़ियां उपयोग करते थे तो भी मन्दिर में किसी भी प्रकार के हथियार की आवाज सुनाई नहीं देती थी। कारीगर शान्ति से और सरलता से अपना काम करते जाते थे क्योंकि प्रत्येक को अपना काम अच्छी तरह से आता था और परमेश्वर का दिया हुआ नक्शा भी वे जानते थे और वहाँ पर आने वाले पत्थर बराबर ठीक बैठने वाले आते थे क्योंकि उनहें विश्वास-योग्य रीति से तैयार किया जाता था।

हम स्पष्ट रीति से परमेश्वर का नमूना जानें और हमारे पास स्वर्गीय सामग्री, निपुण मिस्त्री और तैयार किये गये कारीगर हों तो परमेश्वर का काम शांतिपूर्वक और सरलता से होता रहेगा। जहाँ नमूना नहीं होता वहाँ अत्यधिक झगड़े और लड़ाई रहेगी। परमेश्वर का काम संपूर्ण सुसंगति और एकता में आगे बढ़े इसीलिए परमेश्वर का नमूना जानना बहुत ही आवश्यक है।

अगस्त 12

प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो। कुलु. 4:2

परमेश्वर ने नहेम्याह और उसके सहकर्मियों का उपयोग किया जिससे वे यरूशलेम की टूटी हुई शहरपनाह को और उसके जले हुये फाटकों को फिर से बनाये। जो परमेश्वर के आधीन होकर इस बचे हुए भाग को बनाना चाहते थे, उन्हें सब प्रकार के विरोध, ठट्ठा और व्यंग के लिए तैयार रहना था।

हम शत्रु को अपने स्वयं के ज्ञान, बुद्धिमानी, योग्यता, दान, बल के सामर्थ से जीत नहीं सकते हैं। हमें प्रार्थना एक प्रभावकारी हथियार दिया गया है, जो शत्रु को हराने में सामर्थी है। जब नहेम्याह और उसके साथियों पर शत्रुओं ने हमला किया तब वे प्रार्थना करने लगे। जैसे-जैसे शत्रुओं के हमले बढ़ते गए वैसे-वैसे वे अधिक प्रार्थना करने लगे। यदि हम धीरज से सब ठट्ठा व्यंग को झेल लेते हैं तो उचित समय पर प्रभु हमारी मदद करेगा और जिन्होंने पहले हमारा हंसी-मजाक उड़ाया, उनके लिए हमें आशीष के योग्य बनाएगा। हमारा कर्तव्य यह है कि हम स्वर्गीय दर्शन में बने रहें और सदैव प्रार्थना करते रहें। कई कहानियों में हम देखते हैं कि शत्रु विश्वासियों के बीच लड़ाई और झगड़े लाता है जिससे परमेश्वर का काम रुक जाये। हमारे बीच आत्मा की एकता बनाये रखने के लिए हमें अत्यधिक प्रार्थना करने की आवश्यकता है।

जब ठट्ठों और हास्य द्वारा सम्बल्लता और तोबिय्याह दोनों परमेश्वर के काम को रोक नहीं सके तब वे अधिक क्रोध से भर गए और शक्ति का उपयोग करने लगे। परन्तु शत्रु को हराने के लिए हमारे पास यही एक साधन है, अर्थात प्रार्थना। यही कारण है कि रात्रि प्रार्थना और दूसरी सभाओं को रखने का बोझ हमें मिला। बोझ से की गई आग्रह-पूर्वक प्रार्थनाओं के द्वारा हम शत्रु को पराजित कर सकें।

शत्रु परमेश्वर के लोगों और सेवकों के विरुद्ध कड़ा विरोध खड़ा कर सकता है। प्रार्थना में कष्ट उठाकर और बोझ-पूर्वक प्रार्थना में लगे रहने के द्वारा हम अवश्य शत्रु के आक्रमणों को असफल कर सकते हैं। लूका 22:31,32 में प्रभु यीशु मसीह स्वयं शमौन पतरस के लिए प्रार्थना करता है, 'शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूँ के समान फटके। परन्तु मैंने तेरे लिए विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे: और जब तू फिर, अपने भाइयों को स्थिर करना'।

अगस्त 13

मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है, और मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ। यशा. 43:4

परमेश्वर की दृष्टि में हम बहुत अनमोल है। हाँ, अत्यधिक बहुमूल्य है; यद्यपि हमारे साथियों के समक्ष तो हम सामान्य, निर्बल और मूर्ख मनुष्य ही है। हम इतने निर्बल है कि लोग जब हम पर क्रोध से भर जाते हैं, तो हमें मूर्ख कहते हैं। पत्नियों का कहना है जब पति लोग नहीं मानते तब उन्हें भी मूर्ख कहा जाता है। परन्तु हमारा प्रभु हमें कभी भी उपनाम से नहीं बुलाएगा, प्रभु के समक्ष हम बहुमूल्य हैं।

हमारा उद्धार करने के लिए प्रभु यीशु मसीह ने बहुत बड़ा मूल्य चुकाया है। मत्ती 13:44-46 के अनुसार हमें अपने खजाने के रूप में खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ था उसे वह बेच दिया। इसी रीति से हमें बहुमूल्य मोती बनाने के लिए उसके पास जो कुछ था उसे उसने दे दिया। इसलिये चाहे हम कितनी भी गलती को करें उसकी दृष्टि में हम अत्यन्त महान हैं, और वह कभी भी बदलता नहीं है। हमारे उद्धार के लिए प्रभु यीशु मसीह ने मूल्य चुकाया है। उसके पास जो कुछ था उसे उसने दे दिया।

अन्ततः उसकी दृष्टि में हम बहुमूल्य हैं। इस पृथ्वी पर रहते हुए अपने अलग ज्ञान के कारण हम अवश्य ही भूल कर बैठेंगे, परन्तु प्रभु हमसे कहता है कि 'मेरी दृष्टि में तू अति अनमोल है'। और हमारी त्रुटियों को दूर करने में मददगार होने के लिये वह हर संभव प्रबन्ध करेगा।

अगस्त 14

तब वे बहुत-काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे, पूर्व-काल से पड़े हुए खण्डहरों में वे फिर घर बनाएंगे, उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी-पीढ़ी में उजड़े हुए हों वे फिर नए सिरे से बसाएंगे।... पर तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, वे तुमको हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे। यशा. 61:4-6

याजक की दुगनी जिम्मेदारी होती है। किसी भी आवश्यकता के लिए परमेश्वर को पुकारना; और परमेश्वर का संदेश लोगों को देना। दूसरे लोगों के लिए उनकी आवश्यकता के अनुसार संदेशों को प्राप्त करने के लिए, याजक परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता था। अब विश्वासी लोग परमेश्वर के याजक है। अब हमें किसी मध्यस्थ की जरूरत नहीं है क्योंकि मसीह यीशु हमारा मध्यस्थ है। किसी भी समय पर हम घुटनों पर जाकर अपनी, अपने मित्रों या शत्रुओं की आवश्यकता के लिए परमेश्वर को पुकार सकते हैं और हमारे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए अथवा उसकी इच्छा खोजने के लिए उसके मुख की ओर देख सकते हैं, परमेश्वर के याजकों के रूप में हमें यह विशेषाधिकार मिला है। हर समय हम परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकते हैं। परमेश्वर के याजकों को रूप में हमें किसी भी समय किसी भी विषय या समस्याओं के लिए परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में जाने का विशेषाधिकार और हियाव है।

चौथा पद कहता है कि, वे खण्डहरों को बनाएंगे'। आत्मिक रीति से परमेश्वर के याजकों को, जो पाप में जीवन बिता रहे हैं उनके प्रति यह अधिकार दिया गया है। प्रथम हम परमेश्वर की कृपा से उद्धार पाते हैं और उसके बाद उद्धार नहीं पाए हुए मित्रों, पिता, माता, भाई बहन, पति-पत्नि या बच्चों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और प्रभु आश्चर्य-जनक रीति से उनके जीवन को बदल डालेगा। जमशेदपुर में हम एक बार पूरी रात प्रार्थना के लिए इकट्ठे हुए थे और प्रभु इस सभा में आश्चर्यपूर्ण सामर्थ से कार्य कर रहा था। एक नर्स ने अपनी साथी अमेरिकी साथी लेडी डॉक्टर के लिए प्रार्थना लगभग आधे घंटे तक की, 'प्रभु, अमुक-अमुक का जीवन बदले'। ऐसा कहते हुए बहुत ही आग्रह-पूर्वक वह प्रार्थना करती थी। उसकी प्रार्थना पूरी होने के पश्चात उसने पीछे से एक धीमी आवाज सुनी। 'नर्स, परमेश्वर का धन्यवाद हो, आज शाम ही मैंने नया जन्म पाया है। नर्स को मालूम नहीं था कि डॉक्टर सभा में आई है और उसके पीछे ही बैठी हैं। जब नर्स प्रार्थना कर रही थी तब पीछे वह घुटने टेकी हुई थी और पीछे से बहुत नम्रता-पूर्वक आगे आकर उसने गवाही दी, 'कि मैं डॉक्टर हूँ'। मैंने अपने पाप स्वीकार किये हैं और मेरा नया जन्म हुआ है'। कई खण्डहर जीवन बदल जाते हैं। पाप में व्यतीत होने वाले अनेक जीवन जिनको, थोड़ा भी आनन्द नहीं होता वे किसी की प्रार्थनाओं के द्वारा बदल गए है और खण्डहर स्थल अद्‌भुत स्थल बन गये हैं।

अगस्त 15

यह भेद तो बड़ा है, पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। इफि. 5:32

पति अपनी पत्नि पर जो प्रेम दर्शाता है, उसे उसकी माता, बहन या अन्य किसी के प्रति दर्शा नहीं सकता। प्रभु यीशु भी हमारे प्रति अनोखा प्रेम रखता है, इसलिए कि हम उसकी दुल्हन हैं। स्वर्ग में अनेक दूतगण होने के बावजूद भी, प्रभु यीशु जैसा हम से प्रेम रखता है वैसा अनेक से रख नहीं सकता। यह बड़ा अधिकार हमें दिया गया। इसी रीति से ऐसी अनेक बातें हैं जिन्हें पति अपनी पत्नि के साथ ही बांट सकता है, दूसरे लोगो के साथ नहीं। यदि वे सच्ची रीति से एक मन के हो तो किसी भी प्रकार के भय बिना वे सभी मर्मों को एक दूसरे के साथ बांटेंगे। मसीह भी अपने सभी मर्मों को हमारे साथ बांटना चाहता है। उत्प. 18:17 में परमेश्वर कहता है, 'यह जो में करता हूँ उसे क्या अब्राहम से छिपाए रखूं'?

यूह. 15:15 में भी हम पढ़ते हैं, मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनी वे सब तुम्हें बता दी'। प्रभु यीशु हमें उसकी दुल्हन कहता है, यह इसलिए कि हम उसके मर्मों को जाने ऐसा वह चाहता है। यह अधिकार स्वर्गदूतों को नहीं दिया गया है। प्रभु हमारे प्रति कैसी मेहरबानी दिखाता है। उसके मर्मों को जानें ऐसा वह चाहता है। यह अधिकार स्वर्गदूतों को नहीं दिया गया है। प्रभु हमारे प्रति कैसी मेहरबानी दिखाता है। उसके मर्मों को जानने के लिये हमें स्वतंत्रता-पूर्वक उसकी उपस्थिति में जाना पड़ेगा, और अपने मर्मों को उससे कहना पड़ेगा। पति जब अपने काम के लिए दूर स्थान पर जाता है तब पत्नि को याद करके कई दुकान घूमकर उसके लिए कोई अच्छी वस्तु लाता है। हमारा प्रभु यीशु हम पर किसी पति से भी अधिक और अत्याधिक प्रेम रखता है। वह हमें ऐसी वस्तुएं देता है जो हम ने कभी भी उससे मांगी नहीं हो। उसके अनोखे प्रेम एवं दया के हम पात्र हैं इस रीति से भी हम उसकी दुल्हन है।

प्रकाशितवाक्य 21:4 के अनुसार 'परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा'। उसने हमें उसकी दुल्हन के रूप में स्वीकार किया है। प्रभु हमें जो प्रेम और सांत्वना देता है वह एक पति से भी अधिक अति उत्तम है। वह हमारे आंसुओं को पोंछता है और हमारे घावों को चंगा करता है; वह कहता है कि, मैंने तेरे आंसुओं को कुप्पी में भर रखा है। तेरी कठिनाईयों और दु:खों को जानता हूँ। आ मैं तुझे सांत्वना दूंगा। ऐसे प्यारे वचन हमारे भूतकाल को भुला देते हैं।

पंजाब में एक रीति है कि विवाह के बाद दुल्हन पुराने वस्त्रों को नहीं पहनती। अपने पति के दिए हुए वस्त्र ही वह पहनती है। प्रभु भी हमारी कुरुपता को ढांपता है, और अपने सद्गुणों और अपनी महिमा को हमें देना चाहता है। उसका ऐसा प्रेम अद्भुत है।

अगस्त 16

हे मेरे मन, परमेश्वर के सामने चुपचाप रह। भजन. 62:5

प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के बाद चेले, जो संख्या में थोड़े थे, आकाश की ओर देख रहे थे। प्रभु ने उसके जाने के पूर्व उन्हें आज्ञा फरमाई थी कि पृथ्वी ने कोई चिन्ह, योजना या ब्यौरा नहीं दिया था। वे कहाँ से प्रारंभ करें और क्या करना है इसे वे नहीं जानते थे। प्रभु ने सिर्फ इतना ही कहा था कि वे पवित्र-आत्मा का सामर्थ पाएं तब तक उन्हें यरूशलेम में रुके रहना है।

कदाचित् आपके सिर पर भी बड़ी जिम्मेदारी होगी। अनेक कठिनाईयों का सामना आप कर रहे हैं। आप उलझन में हैं, और कहाँ से आरंभ करें, किस रीति से आगे बढ़ें इसे आप नहीं जानते। आपके सुझाव, (लिखित हो तो ज्यादा अच्छा) चाहिए परन्तु परमेश्वर ने इस रीति से काम नहीं किया और आप दुविधा में पड़े है।

हम जो परमेश्वर के काम में लगे हुए हैं, हमें ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए कि प्रभु ने इंग्लैंड, अमेरिका या मद्रास में अमुक रीति से काम किया इसलिए दूसरे स्थानों में भी इसी रीति से करेगा। परमेश्वर के काम के लिए कोई भी योजना को स्थिर नहीं बनाया जा सकता। प्रभु को स्थिर नहीं बनाया जा सकता। प्रभु कोई एक ही विचार या योजना के अनुसार काम नहीं करता। वह हरेक समय नई रीति से कार्य करता है। आप धीरज जोहेंगे तो प्रभु को कार्य करते हुए देख सकेंगे।

हम परमेश्वर के लिए योजना नहीं बना सकते। परमेश्वर के कार्य के लिए धीरज रखने की जरूरत है। हरेक कार्य के लिए परमेश्वर के पास योजना है और उसके लिए परमेश्वर के पास खास समय भी है। परमेश्वर जब तक स्पष्ट रीति से आगे बढ़ने की आज्ञा नहीं देता तब तक हम बिल्कुल आगे नहीं जा सकते। वहाँ मनुष्य की आज्ञा नहीं चलेगी। किसी बात के विषय में परमेश्वर आपके साथ बोले ऐसी आप इच्छा रखते हैं तो प्रार्थना करें और धीरज से यीशु की उपस्थिति में रहें। अपने सहकर्मियों के साथ उस विषय के संबंध में चर्चा करने का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि इसमें वे मदद नहीं कर सकते। हमारी व्यक्तिगत विषयों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रभु की ओर से व्यक्तिगत अनुभव की जरूरत है। इसलिए परमेश्वर की इच्छा को जानने तक धीरज से प्रभु की उपस्थिति में बाट जोहते रहें।

अगस्त 17

यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। यूहन्ना 14:15

प्रभु यीशु मसीह के साथ जब हम जुड़ते हैं तब हम उससे प्रेम करना सीखते हैं, और जैसी-जैसी रीति से वृद्धि पाते जाते हैं वैसे-वैसे हमारा प्रेम भी बढ़ता है। प्रारंभ में हम ऐसा कहते हैं कि, प्रभु मुझे अमुक-अमुक चीजों की जरूरत है। आप मेरे प्यारे उद्धारकर्ता है, इसलिए यह सब मुझे दीजिए और मेरी इच्छाओं को तृप्त करें। आत्मिक समझ में वृद्धि पाने के बाद हमारी प्रार्थनायें बदलती है।

अब हम कहते हैं, 'प्रभु, आपकी इच्छा क्या है? आपको क्या पसंद है वह मुझे बतायें मैं वैसा ही करूंगा'। हमारे प्रभु को खुश करने में और उसे संतुष्ट करने में हमें बहुत ही आनन्द आता है। हम सिर्फ उसके फर्ज को पूरा करने के कारण नहीं परन्तु राजी-खुशी से आधीन होते हैं। हमसे ज्यादा प्रभु अधिक आज्ञान हो जाता है। वह आरंभ से अन्त को जाता है। उसका मार्ग सच्चाई में परिपूर्ण है (भजन संहिता 18:30) और, मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। (भजन संहिता 18:32)।

हम जैसे-जैसे प्रभु के आधीन होते हैं वैसे-वैसे हम उसके समान बनते जाते हैं। उसका अनुग्रह एवं उसकी शांति, उसके सद्‌गुण हमारे अन्दर आते जाते हैं। नवविवाहित युगल अपने विवाह के पश्चात फोटो खिंचवाते हैं। यह सर्व सामान्य बात है। परन्तु कई वर्ष प्रेम और एकता में बिताने के बाद जब वे फिर से फोटो खिंचवाते हैं तब चेहरा मिलता-जुलता है ऐसा प्रतीत होता है। अलग-अलग परिवारों से आने के बावजूद वे भाई-बहन जैसे दिखते हैं। इसी रीति से प्रभु यीशु मसीह के साथ जुड़ने के बाद विचार, बातचीत, चाल-चलन में हमें उसके समान बनना चाहिये क्योंकि अन्त में उसकी दुल्हन बनेंगे।

अगस्त 18

परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर... विवेक सदा निर्दोष रहे।
प्रेरितों. 24:16

क्रूस की सामर्थ द्वारा जब किसी मनुष्य का जीवन बदलता है, तब वह जिनकी भावनाओं को उसने दुःखी किया हो, उन सबसे क्षमा मांगने की इच्छा उसमें जागृत होती है। नेसिमुस दूर रोम से कुलेस्सि आया, इसलिए कि वह फिलेमोन से कहे, कि मैं अंधकार में था इसलिए मैंने तुम्हारी चोरी की, आपको दुःखी किया क्षमा मांगने आया हूँ प्रभु यीशु मसीह ने मेरा जीवन बदला है, मेरे सब पापों को क्षमा किया है, मैं आपके पास क्षमा मांगने आया हूँ। 'ऐसे कहने के लिए बहुत ही नम्रता की जरूरत है।'

फिलेमान के पास मांफी मांगने के लिये उनेसिमुस सैंकड़ों मील चलकर आया। कई लोग ऐसे होते हैं कि क्षमा मांगने के लिए एक कदम तक भी नहीं जाते हैं। इसके विपरीत वे ऐसा कहते हैं कि आगे वाला व्यक्ति ही मेरे पास आना चाहिए। पवित्र-आत्मा द्वारा पाप का आभास होता है तब ही शुद्ध अन्तःकरण प्राप्त करने के लिए जो कुछ करने की जरूरत हो उसे वे करेंगे।

कई बार लोगों के अन्दर छिछले काम होने का कारण उपदेशक का दोष होता है। यदि हमें परमेश्वर का वचन स्पष्ट होता है। यदि हम परमेश्वर का वचन स्पष्ट रीति से दें तो लोगों को अपने पाप का आभास होगा ही। वे अपने पड़ोसियों सगे-संबन्धियों या अधिकारियों के पास जाकर ऐसा कहने के लिए तैयार होंगे कि 'मेरे झूठे विधान के लिए क्षमा करें। मैंने गलत उम्र लिखाई है; कितने शिक्षक गलत उपस्थिति भरते हैं, कितने इन्सपेक्टर झूठी रिपोर्ट लिखते हैं। वे सब ही अपने पापों के विषय में जागृत होंगे और कैसे भी हो मूल्य चुकाकर भी ठीक-ठाक करने के लिये तैयार होंगे। यदि आपने उधार लिया हो तो आपको जाकर क्षमा मांगनी होगी। शब्दों से या अपने कार्य से किसी को हानि पहुँचाये हो तो अपना दोष मानकर क्षमा मांगनी होगी। गलत रीति से वस्तुएं ली हों तो उन्हें जला दें या उनका नाश करें। यदि क्रूस का ऐसा काम आपके अन्दर हुआ हो तो परमेश्वर भवन बनाने में आप परमेश्वर के उपयोगी सामग्री बन जायेंगे।

अगस्त 19

परमेश्वर की संतान होने के नाते हम पैसे या भोजन के लिए भीख नहीं मांग सकते।

भजन. 37:25

जवान सिंहों को तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं, परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होवेगी'।

हम भीख मांगेंगे तो परमेश्वर हमसे प्रसन्न नहीं होगा और हम सिर्फ भिखारी ही रहेंगे। इसलिये हमें अपनी जरूरतों के लिए प्रार्थना करनी सीखनी चाहिए।

मेरे मसीही जीवन के प्रारंभ के वर्षों में परमेश्वर ने सबसे पहला पाठ मुझे सिखाया वह यह, कि मेरी आवश्यकताओं के लिये शब्दों से या संकेत के द्वारा मुझे किसी मनुष्य से कहना नहीं है, सिर्फ प्रभु को ही मेरी आवयकताओं की जानकारी देनी है।

एक वक्त ऐसा हुआ जब मुझे कई दिनों तक भोजन नहीं मिला था। इसके उपरान्त मुझे कई लम्बी दूरी तक चलना पड़ता था। एक दिन मुझे बहुत ही भूख लगी थी। तब मैंने मेरे मन में विचार किया। 'मुझे बहुत भूख लगी है। मैं भीख मांग नहीं सकता। परन्तु यदि मैं भोजन के समय अपने मित्र के यहाँ जाऊं तो वह अवश्य मुझे उसके साथ खाने के लिए बैठाएगा'। इन विचारों के साथ मैं अपने मित्र के घर गया और जैसा मैंने सोचा था वैसा ही हुआ। उस दिन उसके साथ मैंने खाना खाया। कुछ हफ्तों के बाद फिर से वहीं परीक्षा मेरे सम्मुख आई। मैं बहुत ही भूखा था। लगभग डेढ़ बजे मैं उसके घर की ओर जा रहा था तब प्रभु ने मुझे उलाहना देते हुए कहा, 'तेरा विश्वास कहाँ है'?

मैंने उत्तर दिया 'प्रभु मैं भोजन की मांग नहीं करूंगा वह आग्रह करेगा तो ही मैं खाने के लिए बैठूंगा'। इसके प्रत्युत्तर में प्रभु ने मुझसे पूछा, 'तेरे मित्र के घर जाने में तेरा उद्देश्य क्या है? मैं शर्मिंदा हुआ। तुरन्त ही मैंने प्रभु के आगे क्षमा मांगी। मैंने उसे वचन दिया कि मेरी जरूरतों के लिये, मैं कभी भी किसी मनुष्य के पास नहीं जाऊं क्योंकि वह स्वयं ही मेरी भरपूरी है।

अगस्त 20

फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देगा कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल लाना, जिससे दीपक नित्य जलता रहे।
निर्गमन. 27:20

तम्बू में अखंड जलते हुये दीपक के द्वारा प्रभु अपने लोगों को यह बताना चाहता था कि, 'मेरा कार्य एक ही रीति से हो सकता है, मेरी आत्मा के द्वारा'। प्रभु कैसी स्पष्टता से एवं सुन्दरता से कह रहा था। फिर भी कितनी ही बार हम समझते हैं कि मानवीय बल, सम्पत्ति या सामर्थ से प्रभु का कार्य हो सकता है।

सोने के दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष थे, और उनके द्वारा परमेश्वर जकर्याह से कह रहा था। 'जाकर सब जगहों पर मेरे अनुग्रह का संदेश दे, यदि मैं पाप का न्याय करूँ तो भी मेरी दया और अनुग्रह कम नहीं होगा और न ही बदलेगा'। और जकर्याह 4:7 देखें, 'दया अनुग्रह'। हमें परमेश्वर का यह सन्देश फैलाना है। हमें जाकर परमेश्वर के अनुग्रह बताना है।

यहोवा कहता है, 'न तो बल से और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा'। क्या आप आत्मा में प्रार्थना कर सकते हैं? क्या आप आत्मा में गा सकते हैं? क्या आप आत्मा में संदेश दे सकते हैं? क्या आप आत्मा के मार्गदर्शन में चल रहे हैं? क्या आप आत्मा के अनुसार चल रहे हैं? इस रीति से ही आप आत्मा के अधिकार में हैं? इस रीति से ही प्रभु का कार्य हो सकता है। पैसों से नहीं, मकानों से नहीं, तालीम से नहीं, मानवीय प्रेम से नहीं। कितने ही लोग परमेश्वर के कार्य के वास्ते बहुत पैसे देते हैं; परन्तु अपने जीवन में कितने ही पाप छिपाते हैं। केवल पवित्र-आत्मा के द्वारा परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ सकता है। परमेश्वर को केवल सोने के दीवट से ही संबंध है, जो प्रकाश देते हैं वे ही परमेश्वर के दीवट कहलाने के योग्य है। आप बहुत ही निर्धन हो, तो भी आपके अन्दर से प्रकाश चमक सकता है। यदि पवित्र-आत्मा आपमें प्रतिदिन कार्य करता हो तो, इसी रीति से परमेश्वर के कार्य हो सकते हैं; यह तो पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों की स्वर्गीय बुलाहट, प्रकाशित होना है, हमें परमेश्वर के आत्मा-रूपी जीवित तेल से जलते रहना है। सातों दीपक एक ही टुकड़े से बनाया जाता था। वह तो परमेश्वर के बच्चों में की सच्ची एकता को बता रहा है। जब ऐसा होता है, तभी परमेश्वर का संदेश बाहर जायेगा। 'आप जगत की ज्योति है'। क्या आप ऐसा कह सकेंगे, 'मुझ में से मनुष्य की नहीं परन्तु परमेश्वर की ज्योति प्रकाशित होती है'? दीपक में जलता हुआ जैतून का तेल परमेश्वर की आत्मा को सूचित करता है। जिन्होंने परमेश्वर का आत्मा पाया है और आत्मा में चलते हैं, वे ही परमेश्वर के प्रकाश से प्रकाशित हो सकते हैं।

अगस्त 21

तीन सुन्दर चलने वाले प्राणी हैं; वरन् चार हैं, जिनकी चाल सुन्दर है। नीति. 30:29

नीतिवचन 30:29-31 में चार प्राणियों के विषय में पढ़ते हैं कि जिनकी चाल सुन्दर है। सिंह की चाल, शिकारी कुत्ते की मोहक चाल, बकरे की दृढ़ चाल, अन्त में सब प्रतिद्वन्द्वियों पर जय प्राप्त करने के बाद की विजयी राजा की गर्विष्ठ चाल। अपनी चाल के विषय में वे समान रीति से सुन्दर है।

नदी के वेग से बहते हुए पानी में सिंह को तैरते हुए देखना यह सुन्दर दृश्य है, क्योंकि बहाव कैसा भी हो, तो भी सिंह तैरकर सीधा पार जायेगा और प्रवाह को अपने आप में हस्तक्षेप करने नहीं देगा। ऐसे ही हरेक मसीहियों को चलना चाहिये। सीधे मार्ग में चलते हुये किसी भी परीक्षा के द्वारा खिंच नहीं जाना है। जब हमने धार्मिकता का मार्ग देखा है, तब उसी पर चलना भी चाहिये। मुसीबतें आयें, कई रुकावटें आयें तथा कसौटियां आयें, परन्तु हमें सीधे एवं उसके पार जाना है। इस प्रकार की चाल मोहक तथा प्रभु को पसंद आती है।

शिकारी कुत्ता अपने शिकार को पकड़ने तक उसके पीछे दौड़ता ही रहेगा। प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर हमको सेवा तथा सेवकाई सौंपी है, और चाहे कितनी भी सेवा से आकर्षक पैसे या रिश्वत हो तो भी इसे सेवा खुद को अस्थिर न करें। अपना सेवा कार्य पूर्ण करने के लिये शिकारी कुत्ते के समान दृढ़ता से आगे बढ़ना है। ऐसी चाल भी प्रभु को पसंद आती है।

बकरा सीधे ऊंचे टीले पर चढ़ सकता है। टीले की सीधाई तथा ऊंचाई उसे निराश नहीं करते, क्योंकि चोटी पर चढ़ने का वह आदी है। मसीही जीवन ऊंचे टीले पर चढ़ने जैसा है। क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना चाहते हैं? तो आपको कठिनाईयों की चोटियों पर चढ़ना है। निराश नहीं होना है। वापस नहीं जाना है। जब कठिनाइयों तथा समस्या आयें तब निराश नहीं होना है। वापस नहीं जाना है। परन्तु चोटी पर पहुँचने तक आनन्द तथा हर्ष के साथ आगे बढ़ें। आपको हरेक कसौटी तकलीफों, परेशानियों का मुकाबला करके विश्वास रखना है कि, 'मेरा प्रभु मुझे सुरक्षित रीति से पार ले जायेगा'।

अंत में विजयी राजा, जिसका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं वह भी दूसरे तीन प्राणियों के समान देखने में प्रसन्न-कारक है। उसकी चाल खानदानी तथा शाही है। वो सब राज जानता है वह खुद दुश्मन के सैनिकों को पराजित करेगा, वह विजय-सहित दुश्मन के नगर में से गुजरता है। आपको इस प्रकार के ही मसीही होना चाहिये। हमारा प्रभु चाहता है कि आप विजय का, जयवन्त जीवन जीयें। इसी के लिये वह संसार में आया। आपको फुटबाल जैसे मसीही नहीं होना चाहिये।

कई मसीही भाई सभा में बहुत ही प्रसन्न होते हैं, आत्मा में ऊंचाई पर उछलते हैं, आनन्द से गाते हैं, परन्तु सभा पूरी होती है। किसी स्थान पर कोई कांटा आये, तो नीचे आकर सपाट हो जाते हैं, और महीनों तक वही पर पड़े रहते हैं, जब तक कोई दूसरा उपदेशक जाकर उन्हें जोड़कर हवा भरे। परमेश्वर हमें ऐसे राजा के समान बनाना चाहता है कि जिनका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं। वह हमको शिकारी कुत्ता, सिंह, बकरा जैसे बनाना चाहता है।

अगस्त 22

तब उसने पवित्र-शास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी। लूका 24:45

विश्वासियों में एक प्रकार का आत्मिक अंधापन होता है जिसके कारण उन्हें परमेश्वर का वचन समझने में कठिनाई होती है। वे अच्छे और श्रद्धालु लोग हैं परन्तु उन्हें ऐसा अंधापन लगा है कि वे बाइबल तो पढ़ते हैं परन्तु उन्हें कुछ समझ में नहीं आता और इसलिये ही उन्हें बहुत जल्दी निंद्रा आ जाती है। कुछ लोगों को लैव्यवस्था, गिनती और प्रकाशितवाक्य जैसी पुस्तकें नीरस और समझने में कठिन लगती हैं इसलिये वे उन्हें छोड़ देते हैं और कुछ मनपसंद अध्यायों को ही पढ़ते हैं, उसके सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं पढ़ते। इसलिये उन्हें पवित्र-शास्त्र की भी उचित समझ प्राप्त नहीं होती। स्वर्गीय रहस्यों को वे समझ नहीं सकते। बाइबल परमेश्वर का वचन है, मनुष्य का वचन नहीं। अतः जब-जब हम बाइबल पढ़ें तब तब भजनकार के समान हम प्रार्थना करें, 'मेरी आंखे खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातों को देख सकूं। (भजन संहिता 119:18)

सन 1929 के वर्ष में पहली बार मैंने बाइबल पढ़ना शुरु किया तब मुझे वह समझ में नहीं आई बारम्बार मैंने इन शब्दों में पढ़ा, 'परमेश्वर ने कहा, परमेश्वर ने दर्शन दिया। मैंने कहा, 'यह सामान्य किताब नहीं है। यह तो परमेश्वर का वचन है। इसे पढ़ते समय मुझको नम्र एवं भक्ति भावना के साथ रहना चाहिए। मैंने प्रार्थना की कि हे प्रभु मैं विश्वास करता हूँ कि यह आपका वचन है। मैं अपने आप इसे समझ नहीं सकता। कृपा करके मेरी आंखे खोलिये और मुझे समझ दीजिये। उसके बाद यह किताब मेरे लिये वास्तविक बन गयी और पढ़ना मुझको आनन्ददायक लगने लगा।

आप आत्मिक अंधेपन और मूढ़ता को स्वीकार करें और प्रभु से विनती करें कि आपको प्रकाश दे। उसके बाद समय निकालकर उत्पत्ति से मलाकी और मत्ती से प्रकाशितवाक्य तक पढ़ें। अपने घुटनों पर रह कर पढ़ें। धीमे-धीमे पढ़ें। आप पढ़ते हैं उस भाग में से प्रभु आपके साथ बात करे, इसके लिये प्रार्थना करें। उसके बाद वह आपको समझने में सहायता करेगा नहीं तो आप आत्मिक रीति से अंधे रहेंगे।

अगस्त 23

हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ।
भजन. 40:8

जब हमने पहली बार प्रभु को पहचाना, तब हम यह जानते थे कि उसकी इच्छा को किस प्रकार से खोजें, उसकी वाणी को किस प्रकार से सुनें और वह किस प्रकार से कार्य करता है। जब हम प्रभु के साथ चलना प्रारंभ करते हैं, और उसके अधिक से अधिक निकट जाते हैं। तब हमें मालूम होता है कि हम जो उसके सहकर्मी हैं। (2 कुरि. 6:1) जब परमेश्वर का वचन प्रगट होते हुए सुनते हैं, प्रभु यीशु का नाम ऊँचा होते हुए और ग्रहण करते हुए देखते हैं, परमेश्वर का काम होते हुए देखते हैं तब हमारे हृदय आनन्द से कूदने लगते हैं। चमकदार वस्त्रों, घर, मित्रों और जीवन की दूसरी अच्छी-अच्छी चीजों से ज्यादा ये बातें हमें बहुत ही आनन्दित करती है।

प्रभु जब हमारा आनन्द बनता है। उसका नाम, उसकी उत्तमता और महिमा हमारा अत्यधिक आनन्द बनते हैं तब हम उसकी इच्छा को जानने के लिए और पूरी करने के लिये आतूर होते हैं। जब हम खुशी से कह सकते है, 'प्रभु मुझे यही रखिये या दूसरे किसी स्थान पर भेजिये। जब हम सच्चाई से हृदय-पूर्वक कह सकते हैं, 'प्रभु, आपकी इच्छा पूरी हो', तब ही वह आनन्द हमको परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की शक्ति देता है।

यहोवा का आनन्द आपका बल बने ऐसा आप चाहते हैं? तो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये सहमत हों और उसकी इच्छा खोजने के लिये समय निकालें। ऐसा करने के लिये आपकी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े तो भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से आपको संपूर्ण आनन्द और संतोष मिलेगा।

अगस्त 24

निदान प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। इफिसियों 6:10

सामान्य रीति से हम विश्वास का संबंध चंगाई, नौकरी, बच्चे, जमीन, मकान, समृद्धि लड़ाई में जीत वगैरह के साथ रखते हैं। परन्तु परमेश्वर को उससे तृप्ति नहीं होती। पुनरुत्थान की शक्ति के लिये विश्वास प्राप्त करें ऐसा वह चाहता है। पुनरुत्थान की शक्ति के द्वारा हम सभी सीमाओं, कसौटियों और परीक्षाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं। पुनरुत्थान की शक्ति द्वारा ही हम कहते हैं कि वह हमारा उद्धारकर्ता है, अद्‌भुत है, सर्व-शक्तिमान परमेश्वर है। परन्तु क्या हम उसे गहरी रीति से पहचानते हैं? जब हम उसे समीपता से पहचानते हैं तब जैसे मित्र के साथ बात करते हैं वैसे ही उसके साथ बात कर सकते हैं। जिसके साथ हमारा गहरा संपर्क हो उसके साथ ही हम किसी भी प्रकार की रुकावट के बिना विचारों को आदान-प्रदान कर सकते हैं। हमारे विचारों एवं बोझ को बांटने के द्वारा हमको बहुत ही आनन्द होता है और हमारी पहचान अधिक गहरी होती जाती है। ऐसी पहचान पुनरुत्थान के सामर्थ्य के द्वारा आती है।

हम प्रतिदिन बाइबल पढ़ते हैं तो भी कसौटी आती है। तब हमें विश्वास नहीं होता और परीक्षाओं पर जय प्राप्त नहीं होती। हम खुद पर आधारित होते हैं और दूसरी जरूरतों के लिये मदद मांगने के वास्ते लोगों के पास जाते हैं। परन्तु जब असफल हो जाता है तब हम प्रभु यीशु को पुकारते हैं। यह दिखाता है कि हममें जीवित विश्वास नहीं है। हम अपने स्वभाव में अनेक असफलतायें, सीमाओं और अराजकता को देखते हैं। प्रारंभ में हम जब संदेशों को सुनते हैं तब समझते हैं कि हमारे हृदय कपटी एवं दुष्ट है और हम घोरभाषी हैं। प्रतिदिन की प्रार्थना हरेक कार्य पर, जय प्राप्त करने और मदद के लिये हैं। हमारी हरेक प्रवृत्ति, हरेक योजना और आवश्यकताओं के लिए हमको नये स्वभाव की जरूरत है। प्रतिदिन प्रातः उठकर कहें, 'प्रभु यीशु, आप मेरे जीवन है।' आप मेरी शक्ति और मेरा ज्ञान, शक्ति या दूसरी किसी भी बात के लिये मैं पुराने स्वभाव पर आधार नहीं रखता। अब प्रभु पूरे दिन के लिये मुझे अधिक शक्ति दीजिये। जय प्राप्त करने के लिये अपने मनोबल पर मैं आधार नहीं रखता। मैं पूरी तरह से निर्बल हूँ। मेरी सभी जरूरतों के लिये अपने पुनरुत्थान की शक्ति मुझे दीजिये।

अगस्त 25

निदान हे भाईयों, आनन्दित रहो. .. एक ही मन रखो, मेल से रहो। 2 कुरि. 13:11

फिलिप्पी में परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस और उसके सहकर्मियों को बहुत सामर्थ का उपयोग किया जिसके परिणामस्वरूप विश्वासियों की संख्या बढ़ गई और वे प्रभु में बलवन्त हो गये। उन्हें अध्यक्षों एवं सहकर्मियों को भी दिया गया। अनेक रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह में बढ़ने लगे। परन्तु पौलुस पहले से ही जानता था कि शत्रु अनेक रीति से ऐसी परिस्थितियों को खड़ा करेगा और ऐसे लोगों को भी लायेगा जिससे उनका आनन्द घट जाये और वृद्धि रुक जाये।

फिलिप्पी की कलीसिया में लुदिया युओदिया सन्तुखे जैसी बहनें थी, जिनको प्रभु बहुत ही उपयोग किया था। वे कठिन परिश्रम करती थी, बहुत त्याग करती थी और प्रचार में परिश्रम करती थी। परन्तु युओदिया और सन्तुखे को एक ही मन के रहने में बहुत मुश्किल लगती थी। इसी रीति से हमारे अन्दर भी शत्रु क्रमानुसार प्रवेश करके काम कर सकता है। हमारी एकता को बनाए रखने के लिये हमें सावधानी बरतनी होगी। सामान्य रीति से बहनें चुगली करने में और बड़ी परीक्षा में गिरती है। बस, यही पर शत्रु प्रवेश करता है। और परमेश्वर के लोगों में विभाजन ला देता है।

विश्वासियों के मध्य एकता बनाये रखने के लिये प्राचीनों की जिम्मेदारी है। प्रारंभ में ही ऐसी बातों को ठीक-ठाक करना चाहिये जिससे हमारे मध्य एकता बनी रह सके। हमारे अन्दर सच्ची एकता ना हो तो हमारा आनन्द घट जायेगा। यदि हम इच्छा रखते हैं कि हमारा आनन्द बढ़ता जाये तो हमें सदैव एक मन के रहना चाहिये। इसलिये ही हम को याद दिलाया गया है कि प्रभु में सदैव एक मन के रहना चाहिये। इसलिये ही हम आनन्दित रहें। जब हम आत्मिक रीति से वृद्धि पाते हैं तब शत्रु अनेक रीतियों को अपनाकर हमारी वृद्धि को रोकने का प्रयत्न करता है। इसीलिये हमें उसकी युक्तियों के विषय सावधान रहना है।

अगस्त 26

अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो क्योंकि अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या नाता? और मूर्तों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या संबंध?
2 कुरि. 6:14-16

विश्वासी होने के नाते हमें अलगता का जीवन जीना ही चाहिये। हम संसार की नकल नहीं कर सकते और अविश्वासियों के साथ असमान जुए में नहीं जुत सकते। सांसारिक मित्रों, पड़ोसियों और सगे-संबन्धियों से अशुद्ध न होते हुये हमें खुद को अलग रखना चाहिये। हम खास लोग, स्वर्गीय लोग हैं और सांसारिक लोग नहीं हैं। लोग जब हमारे घर मुलाकात के लिए आए तब उन्हें यह जानना चाहिये कि यह परमेश्वर का घर है सांसारिक घर नहीं। वे आसपास देखते हैं और पहली छाप में पा लेते हैं कि परमेश्वर यहाँ पर जी रहा है कि नहीं।

'वरन उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है'। (यहूदा 8,12,20,21,23) यह संपूर्ण अलगता का जीवन है। हमारी आदतों में हमारे वस्त्रों, रीति-रिवाजों आचार और बातचीत में, हमें अलग रहना चाहिये। और हमारा वार्तालाप, पहनावा, अभिरूची, संगीत या किसी भी प्रकार के रस द्वारा हमें दिखाना पड़ेगा जिससे प्रभु के नाम को महिमा मिले।

गणना 31:16 और 25:1 में बिलाम ने गलत सम्मति दी और बहुत चालाकी से उसने कितने ही इस्त्राएल को मिश्रित विवाह के लिये बहकाया। परिणाम-स्वरूप मूर्ति-पूजा करने लगे और इस्त्राएलियों ने बालपोर के साथ एकता अर्थात विश्वासियों और अविश्वासियों के मध्य का विवाह संबंध कह सकते हैं। किसलिये अविश्वासियों के साथ का संबंध खतरनाक है? ऐसी दलील करना कि, मेरी मित्रता के द्वारा मैं उसे जीत लेने का प्रयत्न करता हूँ'। यह गलत है। आत्मिक अंधापन लाने के लिये दुश्मन का यह दृढ़ हथियार है; एक विश्वासी एक अविश्वासी के साथ विवाह में या व्यवसाय में किस रीति से सहमत हो सकता है? आमोस 3:3 में हमको जवाब मिलता है, कि 'यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों तो क्या वे एक संग चल सकेंगे'?

एक दिन एक बालक मेरे पास आया। उसने मुझसे पैसे मांगे। मैंने पूछा, तुझको किसलिये पैसे चाहिये'? उसने कहा, 'मुझको सिनेमा देखने

जाना है'। मैंने कहा, ठीक है तो पैसों के लिये प्रार्थना करो। जब वह प्रार्थना करने लगा तब उसने कहा, अपनी जीभ से जो गलत है उसके लिये हम प्रार्थना कर नहीं सकते। वह केवल छोटा बालक था परन्तु वह जानता था कि वह गलत था। हम पूछ सकते हैं, 'प्रभु क्या मेरे जीवन के द्वारा आपको महिमा मिल रही है? हमारी हंसी हो, मजाक हो और लोग हमारी हंसी उड़ायें तो भी हमको अलगता का जीवन जीने के द्वारा हमें परमेश्वर की महिमा प्रकट करनी चाहिये।

अगस्त 27

नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिये।

लूका 18:1

कई विफलताओं का अनुभव करने के बाद ही हमें विश्वास प्राप्त होता है, यह सरलता से प्राप्त नहीं होता। अनेक वक्त विफल होने के बाद हम कहेंगे कि, 'हे प्रभु मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं बिल्कुल निकम्मा हूँ'। प्रारंभ में तो हम कहते हैं, किसलिये बारम्बार प्रार्थना करनी? सुबह दस मिनट प्रार्थना करें तो काफी है। इस प्रकार हमारे विश्वास का उपयोग हम अपने सामर्थ ज्ञान और बुद्धि पर आधार रखते हैं। पौलुस ने कहा, 'मैं प्रतिदिन मरता हूँ'। (1 कुरि. 15:31)

मानवीय रीति से हमारे पास बाइबल का ज्ञान, समझदारी और पिछली आशीषें हों इसके बावजूद हम निर्बल रहते हैं। हमारे पुराने स्वभाव से हम विचार करते हैं कि हम परीक्षणों पर जय प्राप्त कर सकेंगे। विचार, वचन या आचरण के द्वारा शैतान कोई न कोई रुकावट हमारे मार्ग में लाता है।

प्रभु हमारे जीवन में कोई निराशा, कोई दु:खद संयोग, कसौटी या परेशानी लाकर हमको सिखाता है कि किस रीति से हमें निरन्तर उसके ऊपर भरोसा रखना चाहिये। 'मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'। (यूहन्ना 15:5) हरेक बात के लिये आप प्रभु पर आधार रख सकते हैं। सामान्य रीति से बड़ी बड़ी बातों के लिये हम प्रभु के पास जाते हैं परन्तु छोटे विषयों के लिये नहीं जाते। ऐसा रुख हमको अनेक विफलताओं में ले जाता है। हरेक बोझ, हरेक सेवा और हरेक आवश्यकता के लिये हमें पुनरुत्थान के सामर्थ का अनुभव करना चाहिये।

अगस्त 28

और पिता यह कहता है, जो वाचा मैंने उनसे बांधी है वह है कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुँह में डाले है, अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से और तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे।

यशायाह 59:21

प्रभु ने हमें जो कुछ दिया है वह सदाकाल के लिये है और वह हमारे पास से उसे कभी भी वापस नहीं ले लेगा। जब हम विफल हो जायें तब वह हमें उलाहना दे, शिक्षा दे और दंड दे तो भी उसने हमको जो दिया है उसे वह कभी भी नहीं लेगा। वह कहता है, 'मैंने अपना आत्मा तुझे दिया है जो तुझ पर है'। आत्मा ने आपके साथ कितनी बार बात की है? सचमुच नया जन्म पाने के बाद भी सांसारिक मित्रता एवं मसीह मोह को पाने के बाद भी सांसारिक मित्रता एवं मोह के कारण बहुतेरे पीछे हट जाते हैं। परन्तु निरन्तर वे एक वाणी सुनते हैं कि 'मेरी बेटी मेरे बेटे, वापस आओ'। इस रीति से आत्मा हमारे साथ बहस करता है। स्मरण रखें, यह तो परमेश्वर का वचन है। 'मेरा आत्मा तुझ पर से हटनेवाला नहीं'। पाठशाला कॉलेज या विश्वविद्यालय में आप जो सीखते हैं उसे आप एक दिन भूल जायेंगे, परन्तु सभा में या व्यक्तिगत शांत मनन के समय में आप जो सीखते हैं वह आपका सदाकाल की मीरास बन जाती है। ये बातें हमारे मन पर अंकित रह जाती है। हमें जब महिमामय देह दिया जायेगा तब हमें संपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा और जब हम प्रभु को आमने सामने देखेंगे। तब जैसे हम प्रभु को आमने सामने देखेंगे तब जैसे हम पहचाने गये हैं वैसे पूरी रीति से पहचानेंगे (1 कुरि. 13:12)। इस संपूर्ण ज्ञान के कारण पूरे स्वर्ग में क्या चल रहा है उसे हम समझ सकेंगे। परन्तु इस पृथ्वी पर रहते हुए हमारा ज्ञान अधूरा रहता है।

आप किसी कारखाने में जाते हैं तो वहाँ जो सब बन रहा है उसे आप समझ नहीं सकेंगे। वस्तुएं किस रीति से बनती हैं। उसकी थोड़ी समझ शायद आपको मिले। परन्तु स्वर्ग में हमको पूरा ज्ञान रहेगा। परमेश्वर अनेक रीतियों और उपायों के उपयोग करके हमारे अन्दर ज्ञान उण्डेलता है और उसके पवित्र-आत्मा के द्वारा यह ज्ञान हमारे लिये वास्तविक बनता है और इसी आत्मा की सामर्थ के द्वारा हम उसका भी उपयोग कर सकते हैं। हमें जिस आत्मिक कुशलता की जरूरत है उसे हमारे भीतर छोड़ने के लिये प्रभु अनेक तरीकों का उपयोग करते हैं। दु:ख और कसौटी द्वारा आप जो सीख रहे हैं वह स्वर्ग में की सेवा के संबंधी हमारा ज्ञान संपूर्ण होगा।

अगस्त 29

लड़के के मन में मूढ़ता बंधी रहती है, परन्तु छड़ी के द्वारा वह उससे दूर की जाती है। नीति. 22:15

यशायाह के लड़के खुद उसके लिये और पूरे देश के लिये चिन्ह-स्वरूप बने (यशा. 8:18)। हरेक लड़के को ऐसा नाम दिया गया था, जिनका विशेष अर्थ होता था। ये नाम यशायाह को स्मरण दिलाते थे की इस्राएल देश को परमेश्वर की ओर से कौन सा संदेश, परमेश्वर का संदेश दे सका। इस रीति से उसके लड़के स्वर्गीय बुलाहट को समझ सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह माता-पिता और बालकों के साथ का प्रतिदिन के अनुभव आपको परमेश्वर का प्रेम, विश्वासयोग्यता, दया वगैरह के विषय में कई सत्यों को प्रगट करेगा।

विश्वासी माता-पिता को अपने बालकों को शिक्षित करने से झिझकना नहीं चाहिये' क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है... वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता'। (इब्रा. 12:67) समय-समय पर बालकों को ताड़ना करके उन्हें परमेश्वर के भय में परवरिश करना यह अच्छा है। यदि आप उसे बचपन में ताड़ना देंगे तो बड़े होने के बाद वे आपके आभारी रहेंगे।

अगस्त 30

तब उन्होंने उन पर हाथ रखे।

प्रेरितों. 8:17

बाइबल में विविध हेतुओं जैसे कि संबंध ऐक्य, साम्य और समानता दर्शाने के लिए हाथ रखा हुआ देखते हैं। याकूब ने यूसुफ के दो बेटों पर अपने हाथ रखे इसमें यह भावार्थ था, कि 'तुम मिस्र में जन्मे हो तो भी तुम मेरी सन्तान हो। परमेश्वर में इब्राहीम और तुम्हारा समान हिस्सा है। तुम मिस्र और उसकी महिमा से डिग मत जाना। इब्राहिम के अन्य सन्तानों के साथ परमेश्वर ने तुम्हें भी महान, आत्मिक और सनातन मीरास दिये हैं।' इस प्रकार बपतिस्मा के बाद हाथ रखने के द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह के लहू से मोल लिये गये परमेश्वर के बालकों के हाथ अपनी आत्मिक एकता और संबंध को प्रकट करते हैं।

आप जहां रहते हैं, वहाँ पर अन्य लोग भी होंगे ही आपके भाई एवं बहन। वे चाहे किसी भी देश या संस्कृति के हों पर हम सब एक हैं। अब संसार और उसके आर्कषण से हम ठगेंगे नहीं। इस प्रकार हाथ रखना प्रथम महत्वता अन्य विश्वासियों के साथ आत्मिक समानता को दर्शाने के लिए है।

और हाथ रखने के द्वारा हम यीशु मसीह के बलिदान में हमारी एकता प्रकट करते हैं। (लैव्यवस्था 1:4) जब कोई मिलाप तम्बू के द्वार के पास बलिदान लाते हैं तब वह अपना हाथ उस पशु पर रखकर ऐसा प्रगट करते हैं कि 'यह पशु मेरे एवज में मरेगा'। इसी रीति से विश्वास के द्वारा हम यह प्रगट करते हैं कि प्रभु यीशु मेरे ऐवज में मरा।'

और प्रेरितों 8:14-17 में पतरस तथा यूहन्ना ने सामरियों के विश्वासियों के सिर पर हाथ रखकर इस बात को कबूल किया कि वे समान थे। इसके पूर्व तो वे खुद को सामरियों से भी महान समझते थे। परन्तु अब आत्मिक समानान्तर बताने के लिए उन्होंने हाथ रखे।

बपतिस्मा के बाद हाथ रखने की सेवा द्वारा यह सब प्रगट होते हैं।

अगस्त 31

जो कोई उसमें बना रहता है,
वह पाप नहीं करता।
1 यूहन्ना 3:6

बहुतेरे मसीह कहलाने वाले सांसारिक वस्तुओं की लालसा रखते हैं। वे ऐसा मानते हैं कि प्रसंग वश सांसारिक मौज-शौज में हिस्सा लेने में कोई हानि नहीं है। वे अच्छे चलचित्र साल में दो-तीन बार देखना चाहते हैं। परन्तु वे नहीं जानते कि विष की एक बूंद हो या पूरी बोतल हो, वह हानिकारक है। रोग का एक ही सूक्ष्म हिस्सा पूरे शरीर को नष्ट कर सकता है। एक बार एक व्यक्ति को दूध में कड़वाहट महसूस हुई। उसकी जांच करने के बाद डॉक्टरों को मालूम हुआ कि गांव के पास एक नदी में जहरीला सांप रहता था। गायें उस नदी का पानी पीती थीं, इसलिए उनका दूध भी विषवाला होता था। इस प्रकार बहुतेरे नाश हुए थे। इसी रीति से एक छोटा पाप भयंकर पाप उपजाता है।

कोई भी व्यक्ति स्व-प्रयत्न से सांसारिक मौज-शौक की इच्छा छोड़ नहीं सकता। प्रभु यीशु मसीह के उसके हृदय में प्रवेश करने के द्वारा ही वह मुक्ति पा सकता है। हमारे बंधनों में हम को करने वाला वह अकेला ही है। उसके हाथ हमको सभी सांसारिक आर्कषणों से और शैतान से छुड़ा सकते हैं। इसके विपरीत वे जो स्व-प्रयत्न से छूटना चाहते हैं वे बहुत शीघ्र उन बंधनों में वापस खिंच जाते हैं।

प्रेरणात्मक संदेशों को सुनने के बाद सिगरेट फूंकनेवाला कहता है, "सिगरेट पीना छोड़ दूंगा।" बड़ी मुश्किल से तीन-चार दिन अपने निर्णय पर बना रहता है। परन्तु बाद में उसका पेट उससे आजिजी करता है और कहता है, "प्रिय मालिक, मुझे तो सिगरेट चाहिये। अच्छे भोजन से, दूध मिठाई से मुझे तृप्ति नहीं है। मुझे तो धुआं चाहिये।" अन्त में वह पुरानी आदत की ओर खिंच जाता है और पहले से भी ज्यादा बुरी हालत में आ जाता है। दूसरे, कितने तो अश्लील किताबों और सामायिकों के गुलाम है, तो दूसरे पैसों के गुलाम हैं। धन प्राप्त करने के लिए अनेक झूठी बातें गढ़ते हैं और गलत रीतियों को अपनाते हैं। परन्तु जब भी यीशु मसीह हृदय में आते हैं तब अपने बड़े सामर्थ के द्वारा उन सब बंधनों से उनको मुक्त करते हैं। हमारा प्रभु संसार, पाप, मृत्यु, नर्क और शैतान पर जय प्राप्त किया है। उसमें, उससे और उसके द्वारा ही हमको जय प्राप्त होती है। पौलुस कहता है, "मैं सब कुछ कर सकता हूं। किस रीति से? जो मुझे सामर्थ देता है उसकी सहायता से।" (फिलि.)।

सितम्बर 1

परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। इफि. 6:11

प्रकाशित 12:1-13 के अनुसार शैतान हमारे विरूद्ध तीन हथियारों का इस्तेमाल करता है।

1. वह भरमाता है, पद 6।
2. वह दोष लगाता है, पद 10।
3. वह सतानेवाला है, पद 13।

1) हरेक प्रकार की झूठी शिक्षा से वह पूरी दुनिया को भरमाता है। 2 कुरिन्थियों 11:14 के अनुसार वह ज्योर्तिमय स्वर्गदूत का रूप धारण करके यह कार्य करता है।

2) वह भाइयों पर दोष लगाने वाला है। जैसे साम्यवादियों के द्वारा हुआ वैसे विश्वासियों की गिरफ्तारी की जायेगी। उनके विरूद्ध मुकद्दमा चलेगा और अनेक आरोपों का उन्हें सामना करना पड़ेगा।

3) जैसे चीन, रूस और अन्य देशों में हुआ वैसे ही सतानेवाले के कारण विश्वासियों को पीड़ा और वेदना सहनी पड़ी।

शैतान पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें भी तीन हथियार दिए गए हैं। (प्रकाशितवाक्य 12:11)

यदि हम बहुमूल्य लहू का दावा करते रहें और हमारे विवेक पर उसका छिड़काव कर लें तो हमको परमेश्वर की उपस्थिति में हियाव है, और आंतरिक शुद्धि है। विश्वास द्वारा प्रभु यीशु मसीह में हमको अनंत जीवन है। जैसे हमारे दौड़ने वाले रक्त द्वारा हमारा शारीरिक जीवन है वैसे ही यदि लहू नहीं तो जीवन भी नहीं। (इब्रा. 10:22;9:14 और यूहन्ना 6:41-47 तुलना करें।) जो जीवन की रोटी खाता है उसका लहू पीता है वे अनन्तकाल तक जीयेंगे। विश्वास से हम उसके लहू को पीते हैं। विश्वास द्वारा हम दुष्ट के अन्तःकरण के ऊपर छिड़काव मांग सकते हैं। बहुमूल्य लहू के द्वारा हम शत्रु और उसकी युक्तियों से बच जाते हैं।

दूसरा हथियार हमारी गवाही के वचन है। हम बहस के द्वारा शैतान को पराजित नहीं कर सकते। जब-जब अवसर मिले तब-तब परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ किया हमें उसकी गवाही देनी चाहिये।

तीसरा हथियार यह है कि हमारे प्राणों को हमारी मृत्यु तक प्रिय नहीं समझना चाहिए। हम हिम्मत से प्रभु की खातिर दृढ़ होकर खड़े रहें तो हम शत्रु को पराजित कर सकेंगे। प्रकाशितवाक्य 12:13-16 में विश्वासियों को सताया जाता है, और जयवन्त लोगों को ऊपर उठाया जाता है। दानिय्येल और उनकी घटनायें इन पदों में पूरी हो रही हैं। पवित्र लोग और विजयी लोग राज्य की मीरास को भोगते हैं।

सितम्बर 2

....जिस मार्ग से मुझे चलना है, वह मुझको बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ओर ही लगाता हूं। भजन संहिता

विवाह के विषय में जैसे माता-पिता, वैसे ही जवान कई दुःखद गलतियां कर बैठते हैं; परिणाम स्वरूप हम अनेक दुःखी परिवारों को देखते हैं। विवाह के विषय में भूल करने के पश्चात् पूरी जिंदगी इब्राहिम अपने दास को गंभीर चेतावनी के साथ इसहाक को खोजने के लिए भेजता है। "और मुझसे आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में शपथ खा, कि तू मेरे पुत्र के लिए कनानियों की लड़कियों में से जिनके बीच मैं रहता हूं, किसी को न ले आएगा।" विश्वासियों के लिए यह पहली चेतावनी है कि विवाह के विषय में प्रथम बात ध्यान में रखें कि अविश्वासी के साथ आप कभी भी रिश्ता न जोड़ें। जिसके साथ उनका लड़का या लड़की विवाह के द्वारा जुड़ने वाले हैं, वह व्यक्ति उद्धार पाया है कि नहीं। इस विषय में अनेक विश्वासी माता-पिता जरा भी देखभाल नहीं करते। उनकी दृष्टि दूसरी बातों पर जैसे कि शिक्षा, धन, चमड़ी का रंग, परिवार वगैरह पर होती है। परन्तु इब्राहिम ने सबसे पहले कनानी लड़कियों के विषय में स्पष्ट और गंभीर चेतावनी दी। उसने दास से कहा, कि कदम-कदम पर स्वर्गीय ज्ञान से ही तुझ को मार्ग-दर्शन पाना है। अनुभव से ही इब्राहिम जानता था कि उसका दास काबिल और भरोसेमंद था। वह विश्वासपात्र दास था। कई लोग विवाह के लिए काका, मामा पर भरोसा रखते हैं, परन्तु लोगों पर आप निर्भर नहीं रह सकते। इस बड़ी जिम्मेदारी को विश्वासयोग्य आत्मिक लोगों को सौंपना चाहिए।

आपके बेटे या बेटी या तो खुद अपने लिए जीवन साथी की खोज में है तो ईश्वरीय ज्ञान, अनुग्रह और मदद के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए हरेक कसौटी को काम में लगायें। आपकी अपनी भावनाओं या अपने ज्ञान, बुद्धि पर भरोसा न रखें।

एलीएजेर लड़की की खोज में था। उस वक्त इसहाक इस विषय के लिए प्रार्थना करने खेत में गया। वह कहता होगा कि, "प्रभु, योगसंगिनी के चुनाव के लिए एलीएजेर की मदद करें।" इब्राहिम ने प्रार्थना की, एलीएजेर ने प्रार्थना की और इसहाक की इच्छा की खोज की। यह आदर्श सदैव आपके समक्ष रहे। जीवन साथी को खोजने का विषय बहुत ही महत्व का है। इसलिए उसमें भूल न करें। कई जवान विश्वासी अपने लिए और कई माता-पिता अपने बच्चों के लिए इस विषय में भूल कर बैठते हैं। बाद में समय बीतता है, तब पछताते हैं और दुःख उठाते हैं। आपके आसपास अनेक टूटे और दुःखी परिवारों को देखें और सावधान हो जाइये।

सितम्बर 3

और जो कुछ तुम करते हो, तन-मन से करो, यह समझकर मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते रहो। कुलुस्सियों 3:23

परमेश्वर की अगुआई के अनुसार नहेम्याह ने पूरे कार्य को लोगों में बांट दिया, चाहे वे निर्धन हो या धनी, वृद्ध हो या जवान; परमेश्वर के मार्गदर्शन के सिवाय दूसरे किसी बात पर उसने ध्यान नहीं दिया। हम जानते है कि परमेश्वर का क्रम और उसकी योजना श्रेष्ठ है। मार्ग में यदि कोई कठिनाईयां होंगी तो उन पर जय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर स्वयं सामर्थ देगा। जो कोई भी बाधायें होंगी तो परमेश्वर स्वयं उन्हें संभव करेगा। जो कोई आवश्यक होगा तो परमेश्वर स्वयं पूरा करेगा। सब लोग पूरे हृदय से काम पर लग गये और उन्हें दिये गये शहरपनाह के हिस्से को आनंद से और विश्वासपूर्वक बनाने लगे। विश्वासी के जीवन के लिए यह एक बड़ा रहस्य है। विश्वासी होने के नाते घर या बाहर जो कुछ काम हमें दिया जाए वह हृदयपूर्वक और राजीखुशी से करने में हमको चूकना नहीं चाहिए।

यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाने के लिए जो लोग नहेम्याह की मदद करने आये उनमें से कई लोग बढ़ई या लोहार का काम सीखे हुए नहीं थे। परिणामस्वरूप इस काम के लिए आवश्यक निपुणता और ज्ञान परमेश्वर ने उन्हें दिया। और याजकों, धनिकों, व्यापारियों, अधिकारियों या सुनारों हरेक को कोई न कोई काम दिया गया। हम चाहे कैसे भी हो, हमारा परिवार कैसा भी हो, तो भी हम में से हर एक को परमेश्वर के काम में हिस्सा लेना चाहिए। परमेश्वर के भवन में हमें स्वयं चुनाव नहीं करना है परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अधीन होना है। हमारा उद्देश्य परमेश्वर की आज्ञा पालन करना और उसकी योजना को पूरी करना होना चाहिये।

प्रभु यीशु मसीह हमारा नहेम्याह है। नया यरूशलेम बनाने के लिए उसके पास संपूर्ण योजना है। परमेश्वर के भवन में यदि हम परमेश्वर का क्रम बनाये रखें, उसकी योजना पूरी करें, प्रभु यीशु के सिरपद के नीचे हैं और जो कुछ हम करें प्रभु की खातिर है ऐसा समझकर करें तो उसके सहकर्मी के रूप में हमारी सेवा द्वारा जीवन की नदियां चारों ओर से बहते हुए देखेंगे। परमेश्वर के जिस काम को हम हाथ में लें उसके लिए परमेश्वर अधिकाधिक सामर्थ, अनुग्रह और ज्ञान से पूरा करेगा, जिसे देखकर हमको केवल आश्चर्य होगा। और अपने मध्य में आत्मिक एकता और प्रेमभाव का अनुभव करेंगे। (यूहन्ना 13:35)

सितम्बर 4

उनके पुकारने से पहले मैं उनको उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुनूंगा। 34:24

चिन्ह और प्रमाण को बाट देखने की जरूरत नहीं। परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखें और परमेश्वर ने आपकी प्रार्थना सुनी है, उसका उत्तर दिया है, इसलिये उसकी स्तुति करें। प्रभु ने स्वयं कहा है, "इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीती कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जायेगा।" (मरकुस 11:24) प्रभु सुनता है और उत्तर देता है ऐसा विश्वास रखे। यही असरकारक प्रार्थना का रहस्य है। परमेश्वर पर संदेह न करें। हमें असंभव लगने वाली बातें भी परमेश्वर कर सकता है। विश्वास का जीवन प्रसन्नता का जीवन है। हरेक चीज के लिए आप परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं।

अनेकों-अनेक बार इस सत्य का अनुभव हमने किया है। एक बार मैं बम्बई से हैदराबाद गाड़ी में यात्रा करने के लिए एक बर्थ की जांच करने के लिए मैं कार्यालय गया। क्लर्क ने कहा, 'एक भी बर्थ खाली नहीं है'। परन्तु मैंने उससे कहा, 'मैं टिकट खरीदता हूँ, बर्थ मिलेगा तो ले लूंगा।' जब गाड़ी आई तब दो डिब्बों में मैंने जांचा परन्तु स्थान नहीं था। पर परमेश्वर ने मेरे लिए जगह रखी थी। मैं गाड़ी के अगले हिस्से की ओर गया और दो बर्थ वाले डिब्बे में एक सीट खाली थी। अन्दर प्रवेश करते ही मैंने पूछा कि 'क्या सीट खाली है'? इसकी खबर आपको कहां से हुई। हंसते-हंसते उन्होंने कहा, "मैंने एक टिकट और एक बर्थ की मांग की थी और पैसे भी उसी के अनुसार ही भरे थे। मुझे समझ नहीं आता कि किस लिये उन्होंने मेरे नाम से दो सीटें रखी थी। मैं मानता हूँ कि एक सीट मेरे लिए है।" यह बताता है कि परमेश्वर किस रीति से हमारी हरेक जरूरतों को पूरा करता है।

प्रभु पर शंका मत लाइये। कोई भी विलंब के लिए उससे सवाल न करें और न ही व्याकुल हों। परन्तु परमेश्वर ने आपकी प्रार्थना सुन ली हैं ऐसा विश्वास रखें। प्रभु आपका विश्वास देखेगा और उसके अनुसार आपको प्रतिफल देगा। कई लोग प्रार्थना करते हैं परन्तु उनका चेहरा उदास ही रहता है। यह बताता है कि प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी है ऐसा वे नहीं

मानते। ऐसे लोग विश्वास में निर्बल हैं। प्रभु ने आपकी सुनी है, ऐसा आप सचमुच विश्वास करते हो तो प्रार्थना के उत्तर के लिए उसकी स्तुति करें।

हमने अनुभव से साबित किया है कि परमेश्वर हमारा प्रेमी है, जो कभी असफल नहीं होता। हम परमेश्वर पर संदेह करते हैं, और मनुष्य की ओर देखने के द्वारा नुकसान उठाते हैं। यदि हम विश्वास रखते हैं कि हमारा प्रभु हमारे पापों के लिए मरा। हमें बचाने के लिए और हमारा उद्धार करने के लिए उसने सर्वस्व दे दिया, तो अवश्य वह कभी भी विफल नहीं होगा। प्रभु ने कहा 'देखो मैं... सदैव तुम्हारे संग हूँ।' (मत्ती 28:20)। 'मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा।' (इब्रानियों.13:5)

सितम्बर 5

तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। यूहन्ना 3:7

परमेश्वर का एक भक्त सुसमाचार प्रचार के वास्ते एक शहर में गया। उसे एक अच्छे मसीही परिवार में उतारा गया था। जब इस शहर और इस घर को छोड़ने का वक्त आया तब उसने प्रार्थना की कि, "हे प्रभु इस प्रेमी दम्पत्ति के लिए मुझे कुछ संदेष दीजिए। वे मेरे प्रति बहुत ही अच्छी रीति से व्यवहार किये हैं।" उनके लिए एक अच्छा सन्देश मिला, "तुझमें एक बात की घटी है"। परमेश्वर के भक्त ने कहा, "प्रभु इन लोगों ने मेरे साथ उत्तम बर्ताव किया है और ऐसा सन्देश मैं उन्हें किस रीति से दे सकता हूं?" परन्तु जैसे-जैसे वह प्रार्थना करता गया वैसे-वैसे यह सन्देश प्राप्त होता रहा, "तुझमें एक बात की घटी है।" (मरकुस 10:21)

अपने आश्रयदाता को यह संदेश सीधे-सीधे देने की उसमें हिम्मत नहीं थी। इसलिए उसने एक कागज में इन शब्दों को लिखा और खिड़की के परदे पर टांके से उसे टांक दिया। बाद में नीचे आकर उसने आश्रयदाता दम्पत्ति का आभार माना और चल पड़ा। उसके जाने के बाद गृहिणी ऊपर गई तो खिड़की के परदे पर इस कागज को देखा। खोलकर पढ़ा तो उसमें लिखा था, "तुझमें एक बात की घटी है।" उसके बाद उसने अपने पति को ऊपर बुलाया और कहा, "हमारे लिए परमेश्वर के भक्त की ओर से यह सन्देश मिला है।" तुरन्त ही उन दोनों ने खिड़की के पास घुटने टेके और प्रार्थना की, "हे प्रभु तेरे दास की ओर से लिखे इन शब्दों का अर्थ मुझे समझा।" इस रीति से प्रार्थना करने के बाद प्रभु ने उन्हें समझाया कि वे उस समय तक उद्धार पाये हुए नहीं थे और स्वर्ग जाने के लिए अपनी धार्मिकता पर भरोसा रखते थे। अनुभव सहित उन्होंने कभी प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया था। बाह्य रीति से वे बहुत अच्छे मसीही थे। सब अच्छे कामों से भरपूर हरेक मीटिंग में नियमित उपस्थिति, प्रभु के कार्य के लिए नियमित दान, ये सभी कुछ थे फिर भी नया जन्म का अनुभव नहीं था। मित्रों, आपका ज्ञान या आपकी सहानुभूति आपको धोखा न दे, इसलिये सावधान रहें, खुद को मसीही कहने वाले हरेक व्यक्ति ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी नहीं होंगे। बाह्य जीवन कितना भी अच्छा होने के बावजूद नामधारी मसीहियों की उसमें हिस्सेदारी नहीं होगी। हां, कई नामधारी मसीही लोग स्वभाव से बहुत अच्छे और प्रेमी होते हैं। परमेश्वर के काम के लिए बड़ा त्याग करते हैं। और बहुत धन खर्च करते हैं। परन्तु दुःख की बात यह है कि वे उद्धार पाये हुए नहीं होते। उद्धार के लिए वे अपनी धार्मिकता पर विश्वास रखते हैं।

सितम्बर 6

उनके पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं। रोमियों 10:15

कई वर्षों पूर्व भारत में हम सुसमाचार के जुलूस में जाते थे। एक छोटे लड़के ने एक आर्य समाजी को सुसमाचार की किताब दी; उसने उस किताब को लेकर फाड़ दिया, परन्तु लड़के ने कहा, 'महाशय, आपने कागज को तो फाड़ डाला परन्तु उसमें जो सुसमाचार और संदेश है उसे आप फाड़ नहीं सकते।' वहाँ से एक मुसलमान गुजर रहा था। उसने इन शब्दों को सुनकर आर्यसमाजी से कहा, 'आपमें भी इस लड़के से अधिक समझ है। अंत: उसने क्षमा मांगी और सुसमाचार खरीदा। सुसमाचार देने के लिए प्रभु छोटे बच्चों और अशिक्षित लोगों का भी उपयोग कर सकता है। थोड़े शब्दों के द्वारा ही सुनने वाला अपने पाप को देख सकता है और प्रभु के पास क्षमा माँगकर प्रभु यीशु का गवाह बन सकता है। क्या आपके पांव सुहावने हैं? यदि नहीं तो प्रभु से मांगें। हमारे आसपास जो लोग कसौटी दु:ख और कठिनाइयों में से गुजर रहे हैं, उन्हें हम जीवते और सच्चे परमेश्वर का संदेश दे सकते हैं। दु:ख में से होकर गुजर रहे लोगों के आंसू कोई पोंछ नहीं सकता। परन्तु हम इतना तो कह ही सकते हैं, कि 'प्रभु यीशु पर विश्वास रखिए। वही आपके आँसू पोंछेगा। आपकी बिमारियों को दूर करेगा। आपकी जरूरतों को वही पूरा करेगा और वही आपको सम्भालेगा।' इस रीति से कई लोग प्रभु यीशु के दास बन सकते हैं। सभी लोगों को उनके जीवते परमेश्वर का संदेश दे सकते हैं; उसके लिए खास ज्ञान समझ की जरूरत नहीं।

एक मनुष्य शांति की खोज में अनेक पालकों एवं शिक्षकों (उपदेशकों) के पास गया, परन्तु कोई उसकी सहायता नहीं कर सका। एक दिन मार्ग में जाते हुए एक निर्धन मनुष्य ने उसे देखा, कि वह बहुत निराश दिखाई दे रहा था। अत: उसने उसे एक शुभ संदेश पत्रिका दी और कहा, 'महोदय, प्रभु यीशु अपने बहुमूल्य लहू के द्वारा आपके पापों को धोकर आपको क्षमा बख्श सकता है। ऐसा कहकर वह चला गया। इस निर्धन मनुष्य के शब्दों को वह सह नहीं सका। इसलिए अपने कमरे में जाकर उसने घुटने टेके और प्रार्थना की।' प्रभु, मुझे सब पापों से माफी दीजिए। शांति के लिए प्रार्थना में इन शब्दों को बोलने के द्वारा उसका जीवन बदल गया। आपके विषय में क्या? आपके पांव सुन्दर हैं कि कुरुप? आपके उद्धार के संदेश दूसरों को देने के द्वारा कुरुप पांव सुन्दर बन सकते हैं।

सितम्बर 7

परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो।
1 पतरस 5:6

प्रभु को सारी सृष्टि पर अधिकार था और यद्यपि वह सवारी के लिए किसी भी प्राणी को आज्ञा दे सकता था। तो भी जानबूझकर उसने गदही के बच्चे का चुनाव किया। सभी प्राणियों में गदही का बच्चा बहुत ही बलवाखोर प्राणी है। किसी को भी वह अपने ऊपर सवार नहीं होने देता और यदि कोई सवारी करना चाहे तो उसे बहुत ही कठिनाई भुगतनी पड़ती है। जब बच्चे को उसके पास लाया गया तब तुरन्त ही प्रभु उसके ऊपर बैठा। बच्चे ने बिल्कुल लात नहीं मारी। बहुत ही आनन्द और तेजी-पूर्वक वह प्रभु यीशु को लेकर चलने लगा।

हम में से अनेक इस बच्चे के समान नहीं होने के कारण अनेकों बार मार खाते हैं। स्वभाव से हम जिद्दी हैं। परमेश्वर की वाणी को हम अज्ञानी से आधीन नहीं होते। हम तो सिर्फ इतना ही चाहते हैं कि वह हमको आशीष दे और कठिनाइयों में से हमको छुड़ायें। प्रभु की इच्छा पूरी करने का समय आता है। तब हम उसके लिए सहमत नहीं होते। हम तो अपनी ही इच्छा को पूरा करना चाहते हैं। इसी कारण से अनेक विश्वासी लोग आत्मिक रीति से वृद्धि नहीं पाते। वे संपूर्ण रीति से प्रभु के आधीन नहीं होते। प्रभु यीशु अपने शिष्यों को बताना चाहते थे कि यदि वे उसके सच्चे चेले बनना चाहें, उसकी सेवा करना चाहें और उसके पीछे आना चाहें तो उन्हें इस बच्चे के समान संपूर्ण नम्र और आधीन होना पड़ेगा।

कोई भी मनुष्य अपनी इच्छा को वश में नहीं कर सकता। हम सभी ही बहुत हठीले हैं और कई वर्षों तक मार खाने के बाद ही हम नम्र बने हैं। गदहे का बच्चा बिछे हुए कपड़ों पर होकर चला। आधीन होने के बदले यदि वह लात मारना शुरु किया होता तो वस्त्रों पर चलने का मान उसे नहीं मिलता। परंतु बच्चे को कैसा मान मिला उसे तो देखो। प्रभु यीशु को योग्य स्थान पर रखने के द्वारा हमें भी यही मान प्राप्त होता है। परमेश्वर के सेवक होने के नाते हम खुद पूरी रीति से आधीन होते हैं तब जहाँ जाएं वहाँ हमारे ऊपर अनेक रीति से प्रेम और स्नेह बरसाया जाता है। परंतु सामान्य बच्चे के समान लात मारें तो हम भी मार खाएंगे।

सितम्बर 8

और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता है। प्रेरि. 2:47

हम प्रभु यीशु मसीह के लहू के द्वारा उद्धार पाए हुए मनुष्य 'जिससे... आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ' बनते जा रहे हैं (इफिसियों 2:22) कि जिससे प्रभु को आराम, शांति और संतोष दे सकते हैं। उद्धार पाने के पूर्व हम प्रभु के पास से क्या पायेंगे, हम इसी की चिंता करते हैं। परन्तु यहाँ बताया गया है कि हम परमेश्वर को क्या दे सकते हैं। जब तक मनुष्य पाप में पड़ा हुआ है तब तक वह परमेश्वर को चैन तथा संतोष दे नहीं सकता। परन्तु उद्धार पाई हुई मनुष्य जाति परमेश्वर को वो चैन तथा संतोष दे सकती है, जो स्वर्ग तथा स्वर्गीय दूत दे नहीं सकते। यह भेद है। जब आप मण्डली का सच्चा अर्थ, तथा परमेश्वर उसका कितना मूल्य आंकता है उसे समझेंगे तब यह भेद आपको समझ आयेगा।

हम 'मण्डली' शब्द का ज्यादा विचार नहीं करते, और उसका सही अर्थ जाने बिना उस शब्द का उपयोग करते हैं। बहुत लोग रविवार को कहते हैं कि 'आज मैं चर्च में (मंदिर) जाता हूँ।' यह तो चर्च शब्द का गलत उपयोग है। पवित्र-शास्त्र में, मनुष्य के हाथ से बनाए हुए भवन के लिए चर्च (मण्डली) शब्द कभी उपयोग नहीं हुआ था। आप तख्ते पर इन शब्दों को लिखा हुआ तथा रंगा हुआ देखेंगे: 'बेपटिस्ट चर्च', 'लूथरन चर्च', 'चर्च ऑफ साऊथ इण्डिया' वगैरह। परंतु भवन के लिए चर्च शब्द का कभी उपयोग नहीं करना चाहिए। आप पूरा पवित्र-शास्त्र जाँच कर देख लीजिए, परंतु किसी भी पुस्तक में भवन को चर्च (मण्डली) कहा हो, ऐसा नहीं मिलेगा। इसीलिए मण्डली का स्वर्गीय मर्म (भेद) समझने में लोग विफल हो गए हैं।

जब प्रेरित इफिसियों की मण्डली को या कुरिन्थियों की मण्डली को या अंताकिया की मण्डली को या फिलादेलफिया की मण्डली को सम्बोधित कर रहा था तब उसका अर्थ कभी भी भवन ऐसा नहीं होता है। उसके कहने का भावार्थ अलग ही था। मण्डली सजीव है, जीवित है, निर्जीव वस्तु नहीं। भवन, पत्थर तथा ईंट प्राणहीन हैं। आप भवन को 'बैपटिस्ट चर्च' कहते हो, पर परन्तु आप पवित्र-आत्मा के शब्दों को गलत

रीति से उपयोग करते हैं। आप उसे 'बैपटिस्ट भवन' हॉल, चैपल या दूसरा कोई नाम दीजिए, परन्तु चर्च शब्द उपयोग न करें। क्योंकि पवित्र-शास्त्र में प्रभु यीशु के लहू से खरीदे गए पुरुष और स्त्रियाँ ही चर्च (मण्डली) कहलाते हैं। आप इसे प्रेरितों. 2:47 पर से देख सकेंगे; प्रभु प्रतिदिन उद्धार पाये हुओं को मंडली में मिला देता था, किसी भवन में नहीं मिलाता था। जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते थे, तथा जो पवित्र-आत्मा पाये हुए थे, उनको मण्डली में मिलाता था। इस मण्डली द्वारा प्रभु के कई प्रकार के ज्ञान तथा पराक्रम प्रकट होने वाले हैं। स्वर्गीय दूतों के द्वारा प्रभु के कई प्रकार के ज्ञान प्रकट होने वाले नहीं हैं, परन्तु प्रभु यीशु के बहुमूल्य लहू से उद्धार पाये हुए मनुष्यों के द्वारा ही प्रगट होने वाले हैं।

सितम्बर 9

इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा; तब उसने यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को यहोवा के सामने फैला दिया। यशायाह 37:14

हिजकिय्याह और उसके लोग बड़ी मुश्किल में आ गये थे। परन्तु वे जानते थे कि प्रभु उन्हें छुड़ायेगा। मानवीय रीति से देखा जाये तो छुटकारे की आशा ही दृढ़ और बड़ी सेना सहित, जैसे दूसरे देश उससे पराजित हो गये थे वैसे ही, उन्हें भी हार की धमकी देने के लिए आए थे। परन्तु हिजकिय्याह का भरोसा प्रभु पर था। वह मंदिर में गया और प्रभु ने उसे उत्तर दिया और छुड़ाया।

कितने वर्षों पूर्व नागरकोईल में हम एक खुले मैदान में सुसमाचार की सभायें आयोजित किये थे। एक संध्या सभा चल रही थी। कीड़ों की एक बड़ी सेना तूफान के समान हमारे ऊपर आ गिरी। संध्या की सभा के लिए लगभग सात हजार लोग एकत्र हुए थे। गीतों के द्वारा हमने प्रारंभ किया। लगभग तीन गीत गाने के पश्चात यह घटना घटी। दक्षिण भारत में साधारणतय: ऐसे कीड़े चढ़ नहीं पाते। परन्तु यहां तो एक स्पोगी दीवार के समान ऐसे कीड़े चढ़ आये और हमारे हाथ, पैर, सिर, गर्दन सबको भर दिया और हम हैरान हो गये। संदेश देना भी कठिन हो गया। क्योंकि ऐसा कहते हुए कीड़े हमारे मुंह में घुस जाते थे। हमने विचार किया कि यह सभा अब बन्द ही करनी होगी, क्योंकि कीड़ों से सभी परेशान हो गये थे। लोग भी तितर-बितर हो जाने की तैयारी में थे। तब मैंने कहा, "कृपा करके रूकिये हम प्रार्थना करें।" और हमने प्रार्थना की, 'प्रभु हमारी सभा में रुकावट डालने के लिए शैतान इन कीड़ों को लेकर आया है उसे हम आपके नाम से धमकाते हैं।' विश्वास से हमने प्रभु को पुकारा और तुरन्त ही कीड़े भाग गये।

इसी रीति से हिजकिय्याह ने प्रार्थना की और यद्यपि वह यह जानता था कि क्या होने वाला है, परन्तु परमेश्वर जानता था (यशायाह 37:36)। दूसरी सुबह पूरी अश्शूरी सेना लाशों में परिवर्तित हो गई। इस पद से हम सीखते हैं कि दुश्मन जब हमारे ऊपर विविध रीति से आते हैं तब हमारे पास एक हथियार है वह तो यह है कि, घुटनों पर जाना। परन्तु दु:ख की बात तो यह है कि हम जीभ का ज्यादातर उपयोग करते हैं, घुटनों का नहीं। जीभ से ज्यादा घुटने का पर्याप्त उपयोग करना हमें सीखना है। स्वर्ग हमारे लिए खुल जायेगा और दुश्मन की ओर से जो तूफान हमारे विरूद्ध उठे, वह सब थम जायेंगे।

सितम्बर 10

वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है। यशायाह 40:29

परमेश्वर ने जंगल में चालीस वर्षो तक इस्राएलियों का मन्ना से पालन-पोषण किया। उन्हें जोतने या बोने का परिश्रम करना नहीं था। सूर्योदय के पूर्व उन्हें उसे एकत्र करना था। उससे उन्हें बहुत बल प्राप्त होता था। आप भी यदि जीतेंगे तो गुप्त मन्ना से परमेश्वर आपका पालन-पोषण करेगा। हममें से कईयों को भारी बोझ उठाना होता है। उस बोझ को उठाने में कितनी बार अत्यधिक भारीपन महसूस होता है। और परीक्षायें ऐसी आती हैं कि सामना करना कठिन होता है। हमको काम छोड़ देने की इच्छा होती है। हम ऐसा कहते हैं कि मैं इसे अधिक समय तक नहीं सह सकता। मेरे लिए यह अत्यधिक भारी है। मैं उठा नहीं सकता। मैं थक गया हूं। मैं एकदम निढाल हो गया हूं। परन्तु जब हम घुटनों पर जाकर प्रार्थना करते हैं, कि 'प्रभु यदि ये आपकी दी हुई जिम्मेदारी है, किसी मनुष्य की ओर से दी हुई जिम्मेदारी नहीं है, यह तो आपकी है। आप ने मुझे दी है। मैंने इसे फलां-फलां व्यक्ति के पास से स्वीकारी है। कृपा करके गुप्त मन्ना का विशेष बल मुझे दीजिये।'

यदि आप बहुत निराश हुए हों, और बहुत कमजोरी महसूस कर रहे हो तो भी आप अपने अंदर नये जीवन को बहता हुआ महसूस करेंगे। आपको ताजापन महसूस होगा और परमेश्वर के वचन के अनुसार आपको नया बल प्राप्त होगा। 'परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जायेंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे। (यशायाह 40:39)। इस पृथ्वी पर का बोझ आप उठा सकेंगे; चाहे वह मंडली का, परिवार का या व्यक्तिगत कोई भी क्यों न हो।

सितम्बर 11

फिर यहोवा ने कहा, मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है। निर्गमन 3:7

आपकी कठिनाइयाँ चाहे कैसी भी क्यों न हों, हृदयपूर्वक विश्वास करें कि परमेश्वर ने आपके कष्ट, दुःख, निर्धनता और कसौटियों को देखा है। मानवीय सहानुभूति न खोजें। आपके दुःखों में आपको किस रीति से सांत्वना देना और आपकी कठिनाइयों में किस रीति से आपकी सहायता करनी है उसे केवल प्रभु ही जानता है। आपको सिर्फ इतना ही करना है कि आप परमेश्वर को अपने कष्ट देखने दीजिए।

पौलुस बहुत ही अधिक सतावों में से गुजरा था (2 कुरि. 1:3-10)। परमेश्वर ने इन सब दुःख और क्लेश में आए हुए लोगों को किस रीति से मदद की। शायद आपके ऊपर मुसीबत आ पड़ी हो, और आप परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाहट करके कहते हों, कि किसलिए इन सब मुसीबतों को आप मेरे जीवन में आने दिए हैं?' आपके पाप की शिक्षा के रूप में इन मुसीबतों को परमेश्वर ने नहीं भेजा, परन्तु ऐसी ही परिस्थिति में जो लोग हों उनके लिए आप सांत्वना का कारण बनें।

निदान ये सभी मुश्किलें दुःखों और तकलीफों के द्वारा परमेश्वर हमको स्वर्गीय बुलाहट के लिए तैयार कर रहा है। इन सभी के द्वारा हम आत्मिक रीति से बल प्राप्त करते हैं। उदाहरण के रूप में, ऊँचे पहाड़ पर दृढ़ और ऊँचा पेड़ होता है। हवा जब भयंकर रीति से चलती है तब पेड़ की जड़ गहरी और गहरी उतरती जाती है। हरेक तूफान पेड़ को गहराई तक ले जाता है, इसी कारण से पेड़ दृढ़ और ऊँचा होता है। इसी रीति से जिंदगी के हरेक तूफान, चाहे वह परेशानियाँ निर्धनता, कसौटियाँ, बिमारियाँ, एकाकीपन या पारिवारिक झगड़ें हों, हमें शिक्षित करने के लिए नहीं परन्तु आत्मिक रीति से मजबूत बनाने के लिए है।

उद्धार पाने के बाद जिन-जिन दुःखों का मुझको सामना करना पड़ा उनके लिए मैं हृदयपूर्वक परमेश्वर की स्तुति करता हूँ। सन् 1927 से 1935 तक परमेश्वर ने मेरे जीवन में हरेक दुःख को आने दिया। मैं उसके लिए परमेश्वर का आभार मानता हूँ। उसने मुझे अनुग्रह दिया इसलिए

किसी भी समय मैंने बुड़बुड़ाहट किया हो ऐसा मुझे स्मरण नहीं है। मैंने विश्वास किया कि मेरे लिए परमेश्वर की यह योजना थी। इन दिनों में परमेश्वर ने मुझे अनेक आत्मिक पाठ सिखाए और वे स्वयं मेरे लिए वास्तविक और कीमती बन गए। किताबें पढ़ने के द्वारा या किसी कॉलेज में जाने के द्वारा यह पाठ हम कभी सीख नहीं सकते।

जिंदगी में किसी भारी परेशानी का सामना करना पड़े तो चिन्ता करने की जरूरत नहीं। परमेश्वर अपने समय में और अपनी रीति से आपको छुड़ाएगा। प्रभु ने हमारा दु:ख देखा है इसे यदि हम स्मरण रखें तो हमको सांत्वना मिलेगी, और परमेश्वर के हृदय के निकट हम लाए जाएंगे, और वह भी यहाँ तक कि दूसरों को सांत्वना देने की सेवा हम कर सकेंगे।

सितम्बर 12

...मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया... और वह बादल उस पर छ: दिन तक छाया रहा।
निर्गमन 24:15,16

पूरे छ: दिन तक पर्वत के ऊपर खा जाने वाली अग्नि के समान परमेश्वर का तेज मूसा को दिखाया गया। बाद में सातवें दिन परमेश्वर ने उसे पुकारकर बुलाया। परमेश्वर मूसा के साथ बोल सके इसके पहले मूसा को परमेश्वर का तेज देखना पड़ा। इसी कारण से बादल के बाहर वह वहाँ देखता रहा। पवित्र-शास्त्र में छः मनुष्य की संख्या को दर्शाता है, और छः दिन तक मूसा बादल के बाहर खड़ा रहा, जब तक कि परमेश्वर उसके संपूर्ण तेज में ही उसके साथ खुद को जाँचते हुए खुद मनुष्य के रूप में क्या था इसे वह जाने।

जब आप खुद को पड़ोसी के साथ जाँचते हैं, तब विचार करते हैं 'मैं उसके मुकाबले अच्छा हूँ। मैं इतना खराब नहीं हूँ। सचमुच पापी हूँ, परन्तु इतना बड़ा पापी नहीं हूँ। मैं किस रीति से बड़ा पापी नहीं हूँ। मैं किस रीति से बड़ा पापी हो सकता हूँ? निःसन्देह मैं झूठ बोलता हूँ, प्रतिदिन दो बार क्रोधित होता हूँ। परन्तु उसकी ओर तो देखो!' दूसरे मनुष्यों के साथ खुद की जाँच करते हुए आप इस प्रकार बोलते हैं। परन्तु मूसा पर्वत के आगे छ: दिन खड़ा रहा। तब परमेश्वर स्वयं कौन है इसे उसने मूसा को बताया। जैसे-जैसे वह परमेश्वर का तेज देखता गया वैसे-वैसे उसके साथ खुद को जाँचता गया। वह कितना ओछा, महत्वहीन बना! अंत में उसने परमेश्वर के समक्ष स्वीकार किया, हे प्रभु मैं कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, किसी महत्व का नहीं! जब हम परमेश्वर की पवित्रता के साथ खुद को जाँचते हैं तब हम क्या हैं? सिर्फ भूमि पर का कीड़ा! इसलिए बादल में प्रवेश करने से पूर्व उसे नम्र बनाने के लिए परमेश्वर ने मूसा को इस तेज के समक्ष खड़ा रखा। हम सब जो गर्विष्ठ है, उन्हें इसी रीति से नम्र बनना चाहिए। हमें प्रतिक्षा करनी चाहिए। हम बादल के अन्दर जा नहीं सकते। सिर्फ नम्र, खेदित हृदय के साथ ही परमेश्वर हमसे बातचीत कर सकता है।

उसके बाद परमेश्वर के साथ अकेले रहने के चालीस दिन आए। पवित्र-शास्त्र में चालीस संख्या कसौटी, परीक्षा को सूचित करती है। हमारा प्रभु स्वयं चालीस दिनों तक शैतान के द्वारा परीक्षित किया गया, इसलिए

चालीस संख्या मनुष्य की जाँच करने की कसौटी को सूचित करती है। मूसा परमेश्वर का मुख, परमेश्वर का दास बन सके इसके पहले उसे हरेक कसौटी में होकर गुजरना चाहिए। यह भी प्रभु का नियम है। जो परमेश्वर का सेवक बनना चाहता है, उन्हें हरेक कसौटी में से होकर गुजरना चाहिए। एकांत में और, अपने स्वजनों, प्रियजनों से दूर रहना जानना चाहिए। भूख, निराश सब प्रकार की हानि को सहन करना चाहिए। परमेश्वर के साथ अकेले होना यह क्या है इसे उन्हें जानना चाहिए। कितने ही लोग विचार करते हैं कि तीन वर्ष बाइबल कॉलेज जाने के द्वारा इब्रानी यूनानी, तत्त्व-ज्ञान सीखने के द्वारा वे परमेश्वर के सेवक बन सकते हैं, परंतु ऐसे मानसिक ज्ञान के द्वारा कोई परमेश्वर का सेवक बन नहीं सकता।

सितम्बर 13

मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है।

2 कुरि. 12:9

जब हम अकेले और निराश होते हैं तब ये थोड़े परन्तु सामर्थी वचन हमें अद्‌भुत रीति से ताजा कर देते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह से हम मसीही जीवन का आरम्भ करते हैं क्योंकि परमेश्वर के प्रिय पुत्र में हमारा अंगीकार किया जाता है (इफि. 1:6,7)। हम अनाज्ञाकारिता के और क्रोध की सन्तान होने के कारण परमेश्वर के लिए सिर्फ क्रोध के योग्य थे। परन्तु उसने हमें बचाया। कोई ऐसा कह नहीं सकता कि मेरी मानवीय लियाकतों या उत्तमता के कारण से प्रभु ने मुझे बचाया है क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना हम कुछ कर नहीं सकते।

इसी रीति से हरेक परीक्षाओं पर जय प्राप्त करने के लिए और हरेक समस्या का हल लाने के लिए हमको अनुग्रह की बहुत जरूरत है। हम इस संसार में परमेश्वर की कृपा का सुखानुभव करें। इतना ही नहीं, प्रभु चाहता है कि आने वाले युग में हमारे प्रति उसके अनुग्रह का अति ज्यादा संपत उसकी कृपा से मसीही यीशु द्वारा प्रगट करें। परमेश्वर का अनुग्रह सदाकाल के लिए है।

यह अनुग्रह हमको ऐसा विश्वास देता है कि जिस प्रभु ने हमारे पाप क्षमा करने के लिए खुद को खाली किया और सब कुछ दे दिया (2 कुरि. 8:9) और हमको भरपूर करने के लिए स्वयं खाली हो गया, वही प्रभु हमारी सब मानवीय निर्बलताओं पर जय प्रदान करेगा। मेरी जीभ तोतली होने के बावजूद उसके अनुग्रह के द्वारा ही मुझे मदद करके सुसमाचार के भेदों को प्रगट करने के लिए मुँह खोलकर बोलने की हिम्मत दी गई (इफि. 6:19) और उसके भरपूर अनुग्रह के द्वारा वह मेरी सब जरूरतों को पूरा करता है, और सब सेवाओं के लिए पर्याप्त प्रबंध करता है।

यही अनुग्रह हमारी प्रत्येक समस्या का हल लाता है और हमारा बोझ हल्का करता है। आपकी समस्या व्यक्तिगत, पारिवारिक या कलीसियाई चाहे कोई भी क्यों न हो, परमेश्वर का अनुग्रह आपके सन्देहों को दूर करने, अविश्वास को हटाने, आँसू पोंछने के लिए पर्याप्त है, तब आपके होंठों पर नया गीत होगा और अनुग्रह के सिंहासन से आपके हृदय में नई हिम्मत उण्डेला जाएगा (इब्रा. 4:16)

सितम्बर 14

तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है। प्रका. 3:8

प्रभु यीशु मसीह ने इस द्वार को खोला है, कई भूखी और प्यासी आत्मा ये शुभ संदेश के लिए तैयार है। आपकी सेवा में प्रभु की इच्छा क्या है? उसकी अगुवाई को खोजें और वह आपको बताएगा। जब हम साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं तब कहाँ और कब करें इसे प्रभु बताता है, और सुसमाचार के लिए आत्माएँ वहाँ तैयार होती है। प्रारंभ में मैं भोर को सुसमाचारों, बाइबलों किताबों और पुस्तिकाओं को लेकर दिनभर चलता; पुस्तिकाओं को बाँटता और किताबों को बेचता था परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं। मैंने बहुत कठिन परिश्रम किया है, प्रतिदिन कई मीलों तक चला कई सुसंदेश और कई पुस्तिकाएं दिए और अनेक वक्त भोजन भी नकारा है, बावजूद मैं देखता हूँ कि परिणाम कुछ भी नहीं निकलता। किसलिए? प्रभु ने कहा 'इतने अधिक मीलों तक चलने के लिए मैंने तुझसे नहीं कहा। एक वक्त का भोजन भी छोड़ने के लिए मैंने तुझसे नहीं कहा।' वह सत्य था। मैंने पश्चाताप किया। 'प्रभु कृपा करके मुझे क्षमा करें अब से मैं आपके कहे अनुसार ही जाऊँगा।'

एक दिन प्रार्थना के बाद मैं और मेरा मित्र एक सार्वजनिक सभा के लिए गए। मैंने अपने मित्र से कहा, हम यहाँ खड़े रहकर प्रचार करें। मेरे मित्र ने मुझसे कहा, थोड़ी दूर उस वृक्ष के नीचे खड़े रहेंगे तो वहाँ के लोग आएंगे।' मैंने कहा 'नहीं प्रभु यहीं रहकर प्रचार करने को कहा है।' उस स्थान पर कोई नहीं था। संदेश पूरा होने के बाद एक नाटा व्यक्ति मेरे समीप आया और उसने कहा, 'मैं दीवार के पीछे खड़े रहकर आपके संदेश को सुन रहा था। मैं रोमन कैथलिक हूँ। आपके वचन से मैंने उद्धार पाया है। फिर उसने कहा, 'मेरे पड़ोस में एक हिन्दू परिवार है। वे उद्धार का मार्ग जानने के लिए मुझसे बहुत दिनों से विनती कर रहे हैं। उनसे क्या कहूँ? यह मैं नहीं जानता। क्या आप आयेंगे? हम वहाँ आनंद से गये। वह व्यक्ति, उसकी पत्नि और उसके बच्चे आँसूओं के साथ इकट्ठे हुए। उन्होंने कहा, हमको सुसंदेश सुनाने के लिए आप आए हैं, इसलिए हम बहुत ही आभारी है।

प्रभु हमारे सामने कई घरों में द्वार खोल रखा है, परन्तु प्रार्थना द्वारा हमें इसे ढूंढना पड़ेगा। 'प्रभु मुझे अभिषेक करें और मुझे अपना संदेश दीजिए और वह हमें आत्माएं देगा। इस द्वार में प्रवेश करने के द्वारा हम स्वर्गीय मीरास के योग्य बनते हैं। परमेश्वर की अगुवाई के नीचे हम जिन आत्माओं को जीतते है, वह परमेश्वर के लिए है और वह उन्हें पहचानता है। यदि द्वार बन्द हो तो उसे खोलने का प्रयत्न नहीं करें। परमेश्वर आपको कहाँ ले जाना चाहता है इसे ढूंढे। ऋतु को देखकर योजना न करें। एक बार बरसते हुए बारिश में हमने सुसंदेश प्रगट किये और आत्माएं उद्धार पाई। बहुतेरे हँसी उड़ायेंगे परन्तु पीछे से वे स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर आपके साथ है।

सितम्बर 15

यीशु पर... ध्यान करो।

इब्रा. 3:1

महायाजक के वस्त्रों में, नीले रंग का एपोद सूचित करता है कि प्रभु यीशु मसीह के सिरपद के नीचे उसका स्वर्गीय निवास स्थान बनाने के लिए स्वर्गीय बुलाहट से हम बुलाए गए हैं। परमेश्वर की परिपूर्णता को पूरी रीति से अनुभव करने के लिए प्रभु के घर के निर्माण-कार्य में हमें हमारा हिस्सा लेना चाहिए।

इस एपोद के नीचे वाले घेरे में चारों ओर नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बने हुए थे। बाहर से देखने पर अनार एक ही फली है, परन्तु जब उसे काटते हैं तब उसमें अनेक खाने होते हैं अनार तो परमेश्वर की प्रजा को सूचित करता है। विश्व के हरेक हिस्सों में विश्वासी इधर-उधर बिखरे हुए हैं तो भी वे सब मिलकर एक मण्डली बनती है। प्रभु यीशु मसीह के लहू के द्वारा मोल लिए गए सभी लोग मण्डली के सदस्य हैं। प्रभु के जीवन द्वारा हम एक देह बनते हैं। विश्वासियों की सात प्रकार की एकता है; एक देह, एक आत्मा, एक आशा, एक बुलाहट, एक विश्वास, एक बपतिस्मा, एक प्रभु। हम हम एकता के द्वारा स्वर्गीय मण्डली बना सकते हैं। अनार जीवित मण्डली का स्मरण दिलाता है, किसी भवन का नहीं।

जामुनी रंग राजपद को दिखाता है। परमेश्वर चाहता है कि हम प्रभु यीशु के राज्यपद के नीचे आएं। हरेक विषय में उसकी अगुवाई प्राप्त करने के वास्ते इच्छुक रहें।

इब्रानियों 9:19 के अनुसार मूसा द्वारा उपयोग किया गया लाल ऊन, बहाया हुआ लहू सूचित करता है। परमेश्वर के सहकर्मियों के नाते हमें शुद्ध प्रेरक बुद्धि की जरूरत है, जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो। ऐसी प्रेरक बुद्धि अथवा मन प्रभु यीशु मसीह के लहू में धोए जाने के द्वारा ही हमको प्राप्त हो सकती है। आँसू बहाने से या लम्बी प्रार्थनाओं के द्वारा हम शुद्ध हो नहीं सकते। यदि आप दीनता से प्रभु के पास आकर प्रार्थना करें कि, 'प्रभु यीशु, विचारवाणी और व्यवहार के द्वारा मैं अशुद्ध हुआ हूँ। अपने पवित्र लहू के द्वारा मुझे शुद्ध करें तो वह आपको तुरन्त ही शुद्ध करेगा। कोई दर्शन या असाधारण अनुभव की राह देखने की जरूरत नहीं। आप प्रभु से माँगें, उसी क्षण वह आपको शुद्ध करेगा। परमेश्वर के सेवकों के लिए यह अत्यन्त आवश्यक बात है कि वे हरेक अशुद्धता से शुद्ध हों और शुद्ध रहें।

इस प्रकार नीला, जामुनी और लाल रंग हमको कहते हैं कि हमें परमेश्वर की बुलाहट को सुनना चाहिए। उसके राजपद को जानना चाहिए और परमेश्वर की मण्डली बनाने के लिए उसकी संपूर्णता को अनुभव करने के लिए पवित्र जीवन बिताना चाहिए।

सितम्बर 16

परन्तु उसने पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा, और परमेश्वर की महिमा....देखी। प्रेरितों. 7:35

यह रूपान्तर और ये महिमा हम ऐसे मनुष्य में देखते हैं जो कि सेवक होने के लिए बुलाया गया था। ऐसे जीवन की सेवा के अन्त में (स्तिफनुस के किस्से में बहुत थोड़ा जीवन कथा सेवा है) यह महिमा आती है। यह और यह भी स्मरण रखें कि यह सेवा, प्रारंभ में बहुत सादी थी। इस कारण स्तिफनुस का व्यक्तित्व या उसका इतिहास इन लोगों को इतना क्रोधित नहीं किया था। परन्तु अब नई रीति से उसमें प्रगट हुए परमेश्वर के सामर्थ ने उनको भयभीत किया था। वे उसके विरुद्ध झूठे आरोप लगा रहे थे, परंतु उसके चेहरे से किरणें निकल रही थी। हमारी कल्पना के विपरीत ही यह था। जब टीका के बदले खुशामद किया जाता है, तब लोगों का मुख चमकता है। लोगों ने जो देखा वह प्रकृति के विरुद्ध था। वह तेज, परमेश्वर जो गौरव देना चाहता है वह था। इसका अर्थ यह कि कुछ ऐसा था कि जिसे वे समझ नहीं सकते थे। फिर भी उनको न्यायदंड के नीचे लाने का असर उसमें था। इसलिए 'वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे' (प्रेरितों. 7:54)। अन्त में वे इस दास के सम्मुख टिक नहीं सके। और अपने मध्य में उसकी उपस्थिति को सह नहीं सके।

अब परमेश्वर के सम्बन्ध में महिमा सेवा के अन्त में आती है। हमको जीवन में कई अद्‌भुत अनुभव हुए हों और आश्चर्यजनक रीति से परमेश्वर को कार्य करते हुए देखकर ऐसा कहने की परीक्षा हो, कि यह महिमा है,' परन्तु परमेश्वर कहता है, 'नहीं, आगे और भी अधिक अच्छा है, बहुत अधिक है' मूसा के अनुभव से यह स्पष्ट होता है। पहले उसने प्रभु को झाड़ियों में देखा (निर्गमन 3)। बाद में इस्राएल के पुरनियों के साथ सीनै पर्वत पर गया, और उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, (निर्गमन 24)। इसके बाद कुछ समय में वह अकेला पर्वत पर बादल में गया, और वहाँ यहोवा का तेज दिखाई दिया (निर्गमन 33)। वहाँ उसे कई सुझाव दिये गये, और उनके साथ वह वापस आया। हमें यह बताया जाता है कि, 'उसके चेहरे से किरणें निकलती थी, (निर्गमन 34:30)। परन्तु अभी भी कुछ अधिक बाकी था। जब सुझावों का अक्षरक्ष: पालन हुआ और मिलाप-तम्बू

परमेश्वर का निवास-स्थान खड़ा किया गया तब लिखा है कि, 'यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया' (निर्गमन 40)। यह गौरव संपूर्णता है, और वह परमेश्वर की मनसा को पूरा करने के सम्बन्ध में है। जब सुलेमान का मंदिर पूरा हुआ तब ऐसा ही हुआ (2 इतिहास 5:14)। और हम ऐसा कह सकते हैं कि पवित्र-शास्त्र में 'तेज' (गौरव) शब्द कम से कम मनुष्य तथा पृथ्वी के सम्बन्ध में तब ही उपयोग होता है, जब ईश्वरीय नमूना तथा योजना को पूरा किया जाता है। गौरव कोई दर्शन या अद्‌भुत लगाव नहीं है। वह परमेश्वर की योजना के सम्बन्ध में है, और यदि हमें महिमा का ज्ञान या अनुभव को देखना हो तो यह जरूरी है कि हम संपूर्ण रीति से ईश्वरीय नक्शा तथा योजना में आयें।

सितम्बर 17

जितने हथियार तेरी हानि के लिए बनाए जाएँ, उनमें से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें, उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है। यशायाह 54:17

परमेश्वर के वचन में यह कैसी बहुमूल्य प्रतिज्ञा है। कोई हमारे विरुद्ध उठ खड़ा होता है, उसके कारण हम दुःखी हो जाते हैं। हमसे कितने ही इस रीति से दुःख उठाये हैं। कितनी ही बार यह हथियार हमारे अपने परिवार में से अर्थात माता, पिता, भाई या बहन की ओर से या तो पड़ोसियों की ओर से आता है। वे हमारे खिलाफ कई बातें करते हैं। और कभी-कभी हमारे सगे-सम्बन्धी पड़ोसी लोग या सहकर्मी हमारे शत्रु बन जाते हैं। पाठशाला, कॉलेज में या कारखाने में वे हमारे विरुद्ध बातें करते हैं। कई भक्तिहीन और सांसारिक अधिकारियों के हम यदि आधीन नहीं होते तो वे बैर हमसे रखते हैं।

उदाहरण के रूप में इंस्पेक्टर को प्रसन्न रखने के लिए, गलत अहवाल राने के लिए शिक्षक हमसे कहें और हम आधीन न हों तो वह हमारे खिलाफ हो जाते हैं। इसी रीति से गलत हिसाब लिखने से मना करें तो दूसरे हमारे विरुद्ध काम करते हैं। हम कैसे भी क्यों न हों, कोई न कोई कहीं भी शत्रुता, ईर्ष्या या तुच्छता के कारण हमारे विरुद्ध काम करेंगे। लोग बुरी बाते करेंगे और हमको हानि पहुंचायेंगे। यूहन्ना 15:19 और 2 तिमुथी 3:12 के अनुसार हमें तिरस्कार और क्लेश उठाने ही पड़ेंगे। परन्तु यशा. 54:17 में हमको प्रतिज्ञा दी गई है कि शत्रु हमारे खिलाफ किसी भी प्रकार का हथियार उपयोग कर सकता है, चाहे पत्र, झूठी बातें या तोहमत, (जो अमुक लोग की खास सेवा है, और जिसमें वे आनन्द मनाते हैं)। प्रभु अपने वचन में कहता है 'जितने हथियार तेरी हानि के लिए बनाएँ जाएँ, उनमें से कोई सफल न होगा।' हाँ जीभ का हथियार भी दोषी ठहरेगा। प्रभु यीशु मसीह द्वारा जिनके पाप क्षमा किए गए हैं, और जिन्होंने उसको अपनी धार्मिकता के रूप में कबूल किया है और परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरे हैं उनकी अर्थात होने की जरूरत नहीं। निंद्रा और भूख खोने की भी जरूरत नहीं। यदि हम निंद्रा और भूख खो बैठेंगे तो यह हथियार हमारी सहायता नहीं कर सकते।

अब से निद्रा नहीं खोयें विश्वास रखें और मीठी निद्रा लीजिए, निद्रा की गोली की भी जरूरत नहीं। अच्छे से अच्छी गोली की भी जरूरत नहीं। अच्छे से अच्छी गोली यशा. 54:17 है, उसका दावा करें। यही रीत भोजन के रूचि के लिए भी है। शत्रुओं के उठ खड़े होने के कारण बहुतेरे लोगों को भोजन की रूचि नहीं होती। यदि यह आपकी दशा हो तो यशा. 54:17 की गोली लो, और खुद ही देखें कि वह कैसी असरदार है। दुश्मन चाहे कितना भी शक्तिशाली या दृढ़ हों, वह जो जी चाहे बात भले ही करें, आप उसके प्रति जरा भी ध्यान न दें। आप कहते रहें, कि जो कुछ कहता है उसे वह करेगा ही (गिनती 11:23)

सितम्बर 18

जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा। यशा62:5

'परंतु नदी बहुत विशाल और गहरी नहीं है। 25 से 30 फुट इससे ज्यादा वह चौड़ी नहीं है। इस्राएली उसे पार करने के लिए पुल बना सकते थे या नावों का उपयोग कर सकते थे। परन्तु प्रभु ने यह आज्ञा दी थी कि वाचा का सन्दूक उठा कर याजकगण पहले जाएं और बाकि लोग उसके पीछे जाएं। याजकों के पैर पानी को छुआ ही था कि पानी के दो भाग हो गए और लोग सूखी भूमि पर चलकर पार हो गए।

यरदन का पानी हमारे पापी देहिक स्वभाव के विषय कहता है, जो हमें हमारी मीरास को प्राप्त करने से रोकता है। जब तक हम उस स्वभाव को जीतने के लिए अपनी इच्छा-शक्ति और बल पर आधार रखेंगे तब तक हम हार को अनुभव करेंगे। जब प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन के अधिकार को धारण करता है तब हम जय भोग सकेंगे।

पौलुस उसके समक्ष एक विद्वान व्यक्ति था। व्यवस्था के अनुसार धार्मिकता के विषय वह निर्दोष था। परन्तु वह अपनी मानवीय लियाकतों पर आधार नहीं रखता था। इसके विपरीत वह कहता है कि, हम 'शरीर पर भरोसा नहीं रखते।' (फिलि. 3:3)। उसने ऐसा भी कहा कि 'मैं नहीं पर मसीह।' जैसे इस्राएलियों के पास नदी पार करने के लिए अपनी योजना नहीं थी परन्तु परमेश्वर की योजना के वे आधीन हुए वैसे ही हम प्रभु यीशु मसीह को स्वर्गीय राज्य के रूप में अपने हृदय में विराजित करना चाहिए और उसके पूर्ण आधीनता में रहना चाहिए।

प्रतिदिन हमें अपने हृदय में अनेक युद्धों का सामना करना पड़ता है, कारण कि शत्रु हमारे अंदर तिरस्कार शत्रुता, ईर्ष्या, दुर्वासना, अपवित्रता, लोभ, अभिमान वगैरह विचारों को जगाता है। इन इच्छाओं को, भावनाओं और विचारों को हम खुद की इच्छा शक्ति या ज्ञान या समझदारी से जीत नहीं सकते। हम विश्वास से कहें, 'प्रभु यीशु इन पापमय इच्छाओं को मैं मेरी अपनी रीति से जीत नहीं सकता। आप मेरे लिए उस पर जय प्राप्त करें', तब ही हम उन बातों पर विजय अनुभव कर सकेंगे।

सितम्बर 19

यहोवा... विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है। भजन. 103:8

योना परमेश्वर के विरुद्ध आमरण अनशन पर उतरता है। आजकल लोग सरकार के खिलाफ भूख हड़ताल पर उतरते हैं। इस रीति से नगर के बाहर मंडप डालकर वह वहाँ बैठा। इम्तिहान से असफल हो जाने पर भोजन लेने से मना करने वाले बालकों जैसा वह था। ऐसे बालकों को माता-पिता प्रेम से स्वादिष्ट भोजन बनाकर खाने के लिए आग्रह करते हैं, तब वे गुस्सा करते हैं। स्वयं ठीक से पढ़ाई किये नहीं उसके बदले माफी न मांगकर प्रेमी माता-पिता के प्रति क्रोधित होते हैं। प्रेमी परमेश्वर जानता था कि योना को सूर्य की गर्मी से बचाने के लिए मंडप के उपरांत दूसरी भी आवश्यकता थी।

इसलिए उसने थोड़े ही क्षणों में एक पेड़ उगाकर योना के ऊपर उसने छायादार बनाया जिससे उसके सिर पर छाया करके उसकी उदासीनता को दूर करे। इस प्रेम और अद्‌भुत प्रबन्ध के लिए योना धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं बोलता। परमेश्वर के प्रति उसका क्रोध थोड़ा सा भी कम नहीं होता। बहुत धीरज से परमेश्वर योना की शान ठिकाने लगाने के लिए कदम उठाता है। परमेश्वर एक कीड़े को उत्पन्न करता है जो पेड़ को खा जाता है। उसके प्रेमी परमेश्वर अपने अद्‌भुत धीरज से उसे हल्का ठपका देता है।

प्रभु कभी विलम्ब नहीं करता। कई मार्गों का उपयोग करके वह हमको अपने पास वापस लाता है। यदि हम उसके पास से दूर भाग जाएं तो हमको उथल-पुथल करने के लिए वह आंधी को भेजता है। हम स्वयं समस्याओं को खड़ा करें और हड़ताल पर उतरें तो भी, वह अद्‌भुत करुणा दिखाता है। अचानक वह पेड़ उगाता है और अचानक वह पेड़ को दूर करता है जिससे वह हमको बताता है कि हम संपूर्ण रीति से उस पर निर्भर हो। जब हम उसके आधीन होते हैं तब वह हमारी सब जरूरतों को पूरी करता है और हमारा सभी खर्च उठाता है। जब हम उसके आधीन नहीं होते तब साधारण और असाधारण मार्गों का उपयोग करके वह हमारी शान ठिकाने लगाता है, जिससे हम उसकी उपस्थिति में जीना सीखें और उसके सहकर्मी बनें।

सितम्बर 20

लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दो जिसमें उसको चलना चाहिए और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा। नीतिवचन 22:6

उत्पत्ति 18:19 में परमेश्वर इब्राहीम के विषय साक्षी देते हुए कहता है, '.....मैं जानता हूँ वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें।' आप जो विश्वासी माता-पिता हैं, उनके विषय क्या परमेश्वर इस प्रकार से कहेगा, 'मैं अमुक-अमुक को जानता हूँ कि वे अपने बच्चों को और परिवार को ऐसी आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल है और विश्व-विद्यालय की कितनी उपाधियाँ प्राप्त की है उसे परमेश्वर जानना नहीं चाहता। पत्नी और बच्चों के साथ आप परमेश्वर के जब इब्राहीम को उसके बच्चों के प्रति जिम्मेदारी को उसके बच्चों के प्रति जिम्मेदारी में विश्वास-योग्य देखा तब उसने उसके विषय में जो कहा था वह भी पूरा किया।

व्यवस्थाविवरण 6:5-9 में बच्चों के प्रति माता-पिता की क्या जिम्मेदारी है उसे हम देख सकते हैं। सर्वप्रथम माता-पिता को जीवित प्रभु यीशु का चौकस रीति से व्यक्तिगत अनुभव होना चाहिए और परमेश्वर के वचन की भूख होनी चाहिए। जीवित परमेश्वर को पहचानने के बाद अपने सारे मन, और सारी शक्ति से उससे प्रेम करना चाहिए। दैनिक मनन के द्वारा परमेश्वर के वचन को मन में रखना चाहिए (पद 6)। दिन में कम से कम तीन बार उन्हें अपनी बाइबल प्रार्थनापूर्वक, घुटनों पर रहते हुए पढ़नी चाहिए। और सावधानी से, धीरज से, स्पष्ट रीति से और प्रेम से परमेश्वर के वचन बच्चों को सिखना चाहिए। बाइबल के पद और बाइबल की कहानियाँ धीमे-धीमे सीखना चाहिए और हरेक विषय के लिए प्रार्थना करना सीखना चाहिए। हरेक बातचीत में और प्रवृत्ति में परमेश्वर के वचन का उपयोग करना सीखना चाहिए। माता-पिता को स्वयं अपनी बातचीत में परमेश्वर के वचन का बारम्बार उपयोग करना चाहिए। और सब आयोजनों को परमेश्वर के वचन के अनुसार करना चाहिए और बच्चों को छोटी उम्र से ही परमेश्वर का वचन सीखना चाहिए।

सितम्बर 21

तुम ही मेरे साक्षी हो।
यशायाह 43:12

प्रभु की स्तुति करना सीखना हो, तो आपको परमेश्वर का मुख-पात्र होने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में प्रभु की उद्धार करने वाली सामर्थ के विषय गवाही देने से कभी भी लज्जित होना नहीं चाहिए। चाहे आप बस में, रेलगाड़ी में या बाजार में कहीं भी क्यों न हों। कई बार हम लोगों की मुखाकृति को देखकर डर जाते हैं और हम अपना मुँह बन्द रखते हैं, पर आप गवाही देना प्रारंभ करेंगे तो तुरन्त ही आपका भय दूर हो जाएगा।

एक दिन परमेश्वर ने मुझे स्पष्ट रीति से कहा, 'जा उस व्यक्ति के साथ बात कर।' उस व्यक्ति की ऐंठन से चढ़ी हुई मूँछों और कठिन दाढ़ी को देखकर मैंने अपने मन में विचार किया, 'नहीं, नहीं, कभी नहीं।' वह अभिमानी रहा था और इसलिए मुझे निश्चय हो गया था कि वह बाइबल के प्रति बिल्कुल आदर या ध्यान नहीं देगा। फिर से परमेश्वर ने मेरे साथ बात करते हुए कहा, 'तू सब कुछ मुझ पर छोड़ दे, जा उसके साथ बात कर।' अन्त में डरते-डरते मैं उसके पास गया, उसके साथ बैठा और कहा, 'साहब, कृपा करके इस किताब को देखेंगे?' उसने किताब देखी और बहुत आनंदित हुआ। उसने मुझसे कहा, क्या आपके पास उर्दू भाषा में पूरी बाइबल है? मैंने उसका पता ले लिया और दूसरे दिन उसको बाइबल दी। बहुत आभार सहित उसने मुझको पूरी कीमत चुकाई। उसके बाद उसने मुझसे कहा, 'इस किताब को प्राप्त करने के लिए दो वर्ष से भी ज्यादा समय तक मैंने इसकी प्रतीक्षा की। उसे प्राप्त करने के लिए मैं अत्यन्त लालायित था। उस विषय में मुझे अधिक जानना है।' तब मुझको मालूम पड़ा कि वह कितनी भूखी आत्मा थी और इसके बावजूद उसका चेहरा और उसकी मूँछों को देखकर मैं डरता था! मैंने इस पाठ को सीखा कि जब परमेश्वर ने हमको संदेश दिया है तब उसका मुख-पात्र होने के लिए हमें हिम्मती होना चाहिए।

सितम्बर 22

इन सब बातों में हम उसके द्वारा...जयवंत से भी बढ़कर हैं।
रोमियों 8:37

इस्राएलियों ने दो व्यूह रचना के द्वारा विजय प्राप्त किये युद्ध के मैदान में यहोशू की अगुवाई के नीचे लड़ने वाली सेना के द्वारा तथा पर्वत पर अपने हाथों को ऊँचा करके परमेश्वर की लाठी को बढ़ाने वाले मूसा के द्वारा।

मूसा के हाथ में दी लाठी परमेश्वर के अधिकार को सूचित करती है। मूसा में स्वयं कोई बल नहीं था। जब उस लाठी का सांप बना था तब मूसा उसके आगे से भाग खड़ा हुआ था। उसी प्रकार वह बलहीन था परन्तु उस दिन से उसने जो कुछ किया वह परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा ही था। इसलिए वह लाठी परमेश्वर के अधिकार को सूचित करती है।

हमें भी अनेक शत्रुओं के सामने लड़ाई करनी है। हमारे से सबसे बुरे शत्रु हमारा शरीर और हम स्वयं हैं। उसमें से ही बुरी लालसाएं धिक्कार, शत्रुता, ईर्ष्या इत्यादि आती है और हमारे जीवन में सिर्फ शिकस्त लाती है। उसके कारण खुशी, शांति और प्रार्थना करने की इच्छा चुरा ले जाती है। हम लोग जब तन्हाई की दशा में, बिना संगति के होते हैं। तब संगति का अभाव आत्मिक निर्बलता को लाता है इसलिए शैतान परमेश्वर के लोगों को संगति से दूर रखने के लिए प्रयत्न करता है। छोटे-छोटे कारणों से भी वे सभा में आने से रुक जाते हैं। परन्तु विजय का रहस्य यह है कि लाठी हाथ में लें; यह लाठी तो हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा प्राप्त की हुई विजय को दिखाती है। हम बाइबल पढ़ने या लम्बी प्रार्थनाओं के द्वारा जय प्राप्त नहीं कर सकते। हमें अपने बल पर आधार नहीं रखना है, परन्तु प्रभु के सामर्थ पर आधार रखना है। प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर जो जय पाई है उसके द्वारा ही हमें जय प्राप्त होती है।

सितम्बर 23

अपनी करुणा की बात मुझे शीघ्र सुना, क्योंकि मैंने तुझी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग से मुझे चलना है, वह मुझको बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ। भजन. 143:8

आप चाहे कोई भी क्यों न हों, आपके दैनिक सुझावों प्रेरणा और अगुवाई के लिए आपको परमेश्वर के वचन की जरूरत है। रोज-रोज खुद को नम्र बनाएं, घुटनों पर जाएं और प्रार्थना करें। 'प्रभु मुझे आज के लिए तैयार करें, अपनी बुद्धि और शक्ति मुझे दीजिए।' जब हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, उस पर निर्भर रहते हैं, और हरेक बात में उसकी इच्छा को स्वीकारते हैं, उस पर परमेश्वर कैसी आशीषें उण्डेलता है उसे आप देखेंगे।

दक्षिण भारत के एक न्यायाधीश के विषय में मैंने सुना कि वे हरेक केस के लिए परमेश्वर की अगुवाई पर निर्भर रहते थे। एक केस में वकील की दलीलों पर बेगुनाह व्यक्ति को गुनहगार ठहराया जा रहा था। परन्तु यह न्यायाधीश किसी न किसी रीति से अपने आत्मा में जानता था कि यह व्यक्ति गुनहगार नहीं है। इसलिए इस केस के लिए वे निरन्तर प्रार्थना करते रहे, कि 'प्रभु इस व्यक्ति को मैं दंड फरमाना नहीं चाहता। वह मुझे निर्दोष लगता है, कृपा करके मेरी मदद करें और मुझे उचित मार्ग में चलाएं।' थोड़े दिन के पश्चात केस के पेपरों को पढ़ते समय वकील की दलीलो में एक छोटी सी गलती दिखाई दी। इस मुद्दों पर अधिक गहराई से उतरने के द्वारा पूरा केस विफल हो गया। वह व्यक्ति निर्दोष ठहराया जाकर रिहा हो गया।

प्रभु हमारे पास से कठिन बातों को नहीं चाहता। वह चाहता है कि हम उसकी वाणी सुनें और पूरे मन से उसके आधीन हों (व्यवस्था. 28:1-2)। आप चाहें किसी भी देश के, कुल के या जाति के हों, यदि उसकी वाणी के आधीन होंगे तो आप परमेश्वर की सभी आशीषों को पाएंगे।

सितम्बर 24

तेरे निकट आनंद की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा रहता है। भजन. 16:11

जब हम परमेश्वर की उपस्थिति की चेतना में जीते हैं तब हमारा आनंद बढ़ता जाता है। बहुतेरे ऐसी गवाही दे सकते हैं कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं। परन्तु हम निरन्तर परमेश्वर की उपस्थिति की चेतना में जी रहे हैं, ऐसा वे कह नहीं सकते। परमेश्वर के लोगों के साथ रहें। उनके साथ भजन में समय बिताएं और उनके साथ मिलकर कार्य करें तो भी सम्भव है कि परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सही न हो।

हम प्रार्थना सभा में उपस्थिति हो और बावजूद परमेश्वर की उपस्थिति को न अनुभव करें, उसकी उपस्थिति की चेतना को खो दें यह हो सकता है। परन्तु यदि आप परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव नहीं करते तो आप संपूर्ण आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। उसके कई कारण हो सकते हैं और वह भी आपके अपने दोष के कारण हो सकता है।

परमेश्वर को सन्तान होने के नाते यदि आपका हृदय पवित्र हो तो आप परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करके इसे भोग सकते हैं। इतना ही नहीं, आपको इसे अनुभव करना है और भोगना ही चाहिए। हमारी प्रार्थना है कि जीवते प्रेमी परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का भेद आप सीखें, क्योंकि उसके लोगों के लिए परमेश्वर का इरादा और उसका उद्देश्य यही है।

सितम्बर 25

प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा सम्भालना जानूँ। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूँ। यशायाह 50:4

क्या यह सम्भव है कि, कैसा भी मूर्ख होने के बावजूद हमको सीखने वाले की जीभ प्राप्त हो सके? मुझे याद है, उत्तर भारत से जन्मा हुआ एक व्यक्ति था। वह अनपढ़ था इसलिए कितने जवान उसका मजाक उड़ाते हुए कहते थे कि 'हे मूर्ख व्यक्ति तू अनपढ़ है।' उसने उनसे कहा, 'आप लोगों की नजर में तो मैं मूर्ख हूँ। परन्तु एक बात मैं जानता हूँ। आपकी पढ़ाई और आपका ज्ञान आत्मिक विषयों के लिए भी उपयोगी है। और मानवीय ज्ञान परमेश्वर की दृष्टि में मूर्खता है।' इस अनपढ़ व्यक्ति के पास प्रार्थना के लिए कई लोग आते थे। संसार की रीति से अनपढ़ होने के बावजूद उसे सीखने वाली जीभ दी गई थी और वह देगा। और उससे कहें, 'प्रभु किसी के लिए मुझे संदेश दीजिए (मत्ती 10:20, लूका 12:12, प्रेरितों. 6:10)। विश्वास से इन वचनों का दावा करें और आपको आपके मित्रों अथवा शत्रुओं के लिए योग्य संदेश देगा।

वह हमारे को नित जगाता है। (यशायाह 50:4) घंटी बजे बिना प्रभु हमको जगाता है। उससे कहें प्रभु मुझे पाँच बजे उठायें और पूरे दिन के लिए संदेश दीजिए। प्रभु जिस रीति से हमको उठाता है और दिनभर के लिए तैयार करता है इसे देखते हुए आपको अचरज होगा। यह तो हमारा अधिकार है। हम सबको भोर को प्रातः उसके साथ बात करनी चाहिए और उसकी उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए और ऐसा करने के द्वारा हम पूरे दिन ताजगी का अनुभव करेंगे। कई लोग सुबह की प्रार्थना में उपस्थिति नहीं देते। वे तो समय नष्ट करते हैं। भोर को प्रातः घुटनों पर जाएं और प्रभु का संदेश प्राप्त करें और कहें, 'प्रभु, मुझे सिखाए। मुझसे बातें करें, और मुझे संदेश दें।' इस रीति से हम हमारे उद्धार के आनंद को भोग सकते हैं और प्रभु के लिए अधिक उपयोगी बन सकते हैं।

सितम्बर 26

सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की ...कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई और ऊँचाई, और गहराई कितनी है। इफि. 3:18

'हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे।' (इफि. 1:17) इफिसियों के विश्वासियों को उद्धार के सिद्धांतों का श्रेष्ठ ज्ञान दिया गया था। फिर भी पौलुस उनके लिए प्रार्थना करता था कि परमेश्वर उनको ज्यादा समझ और बुद्धि दे, जिससे परमेश्वर ने उनके लिए जो रखा है कि वे पूरी रीति से अनुभव कर सकें। हम सभी को उस ज्ञान की जरूरत है। जो ज्ञान दिव्य और स्वर्गीय है और जो ऊपर से आता है, इस ज्ञान के द्वारा परमेश्वर की बातों के सम्बन्ध में हमको समझ प्राप्त होती है। हमारी कल की विफलता से, सीमायें और निर्बलताएं चाहे कैसी भी क्यों न हो, बहुमूल्य लहू के द्वारा खरीदे जाकर उसकी मोल ली हुई सम्पत्ति होने के कारण हमें अधिकार है कि हरेक विश्वासी को दिए गए अधिकार का दावा करें। इफिसियों 1:3 यह वचन प्रत्येक विश्वासी के लिए है, परमेश्वर की सेवा थोड़े विश्वासियों के लिए है, हमारा प्रेमी परमेश्वर चाहता है कि मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में रखी हुई सब प्रकार की आशीषें हरेक विश्वासी प्राप्त करें। हमें हमारे अधिकार को समझते हुए हमारे हिस्से का दावा करना पड़ेगा। हम उसके योग्य नहीं हैं। परन्तु प्रेमी परमेश्वर अपना प्रेम हमारे ऊपर प्रगट करने के लिए यह उपहार देता है। इसलिए ही इफिसियों 3:19 में पौलुस प्रार्थना करता है कि सर्वप्रथम वे परमेश्वर के प्रेम को जानें। व्यक्तिगत रीति से हम उसे समझ नहीं सकते। वर्षो तक परमेश्वर के वचन का ध्यान मनन करें तो भी उसके मर्मों (भेदों) को हम अपने आप समझ नहीं सकते।

इफिसियों 3:17-19 में हमको एक रहस्य बताया गया है, कि संतों की मदद के द्वारा ही हम परमेश्वर के प्रेम को समझ सकते हैं। उसका प्रेम मानवीय ज्ञान से परे है। हमें बारम्बार इकट्ठे मिलने की जरूरत है। साथी विश्वासियों के रूप में संगति के लिए इकट्ठे मिलने से बहुत प्रोत्साहन और मदद मिल जाती है। अविश्वासी ऐसी संगति का अनुभव नहीं कर सकते। जिनको अनन्त जीवन का अनुभव प्राप्त हुआ है, ऐसे लोग ही ऐसी

संगति को अनुभव कर सकते हैं। (1 यूहन्ना 1:3)। संगति का प्रारंभ प्रभु यीशु मसीह में और परमेश्वर पिता में होता है। व्यक्तिगत मनन के द्वारा और प्रभु की उपस्थिति में ठहरने के द्वारा हमको जो प्राप्त होता है उसे दूसरों के साथ बाँटना चाहिए, नहीं तो हम बढ़ नहीं सकते। परमेश्वर की प्रजा होने के नाते प्रार्थना, आराधना, बाइबल अध्ययन और सेवा के लिए लोगों को एकत्र करने के द्वारा मसीह के प्रेम को हम पूरा समझ सकेंगे कि परमेश्वर किसलिए हमको उसकी परिपूर्णता में त्याग दिलाना चाहता है। परमेश्वर का प्रेम महान है कि जो उसके पास है वह हम सब पाएँ, ऐसा वह चाहता है।

सितम्बर 27

वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन् सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी। अय्यूब 5:19

प्रभु हमको निश्चयता दिला रहा है कि वह हमको सम्भाले रखेगा। पवित्र-शास्त्र में सात संख्या संपूर्णता को सूचित करती है। इसका अर्थ यह कि हमारे संकट, कसौटी, दु:ख या पीड़ा जो भी हो, तो भी वह हमको छुड़ाएगा। वह हमको परेशानियों और क्लेशों से बचाएगा (पद 19,20)। युद्ध के समय तथा अकाल में वह हमारी आवश्यकताओं को पूरी करेगा। प्रभु के लोग जब अपने भोजन के लिए प्रभु का आभार मानते हैं तब सादे से सादा भोजन उनके लिए स्वादिष्ट बन जाता है। प्रभु यीशु ने जब बड़े समूहों को खिलाया तब उनको भारी भोजन नहीं दिया था। उसने जीवन की रोटी ली और जब उसे आशीष दी और उसे बढ़ाया तब वे बहुत स्वादिष्ट बन गई। कठिन अकाल के समयों में जब भोजन की कमी के कारण भूखमरी को सहन कर रहे होते हैं तब हम जानते हैं कि उस समय में प्रभु हमको भोजन देता है, उसे आशीष देकर उसे ज्यादा स्वादिष्ट बनाता है। सचमुच, जब हम कहते हैं कि, ‘प्रभु, भोजन को आशीष दीजिए; तब वह बहुत स्वादिष्ट बन जाता है। यह तो प्रभु की प्रतिज्ञा है और हमारा अनुभव है।

इसी रीत से युद्ध के दिनों में बम से लोगों की रक्षा की जाती है। अय्यूब 5:21 हमारा दैनिक अनुभव बनता है। ‘वचनरूपी कोड़े’ मित्रों सगे-स्नेही, पड़ोसियों और दूसरों की ओर से आती है। लोग क्रोध से भर जाते हैं। तब जिन शब्दों से ठेस पहुँचे ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं। पति लोग पत्नियों के साथ और पत्नियाँ पतियों के साथ झगड़ती हैं, और उस वक्त उनके शब्द हथियारों जैसे होते हैं। परंतु सगे-सम्बन्धियों, मित्रों और अड़ोसी-पड़ोसी हमारी भावनाओं को दु:ख पहुंचाने के लिए और उनकी क्रूरता से हमको बचाने वाला वचन प्रभु ने हमें दिया है। क्रोध से भरे हुए शब्दों से जब कोई हमको ठेस पहुंचाए तब उसे भूल जाना मुश्किल होता है, परन्तु प्रभु गिलाद का बाम उपयोग करके इन घावों को भरता है। ऐसे सभी जोखिमों से बचाने की जिम्मेदारी प्रभु ने ली है।

सितम्बर 28

वह चरवाहे की नाई अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए रहेगा और दूध पिलाने वालों को धीरे-धीरे ले चलेगा।
यशायाह 49:11

भेड़ें स्वच्छ पानी पीती हैं, सुअर के समान वे गंदा पानी नहीं पीती। हमारी भूख और प्यास को मिटाने के लिए हमको किस प्रकार के भोजन की जरूरत है इसे प्रभु यीशु जानते हैं। उसका वचन हमारा चारा है। हर सुबह, दोपहर और शाम को वह हमें उसके वचन देता है। सुबह में वह हमको पूरे दिन के लिए अपना स्वर्गीय नक्शा देता है। दोपहर को वह हमको दिन के बचे हुए समय के लिए शक्ति देता है, और रात को हम सो जाएँ इसके पूर्व वह हमको परखता है। इस रीति से हम रोज-रोज ताजगी पाते हैं और हरेक देखी-अनदेखी जोखिमों से सुरक्षा पाते हैं। वह हमारा प्रेमी और विश्वासयोग्य चरवाहा है और हमारे साथ रहता है।

भेड़ों को अपने चरवाहे की आवाज को पहचानने का दान होता है। यद्यपि वे दूसरी कई बातों में मूर्ख हैं तो भी अपने स्वामी की आवाज को वे पहचान सकती है। कितनी बार तो कई चरवाहे अपने झुंड को एक साथ रखकर रात्रि के समय बारी-बारी से उनकी रखवाली करते हैं। प्रातःकाल एक चरवाहा सीटी बजाकर अपनी भेड़ों को अलग करता है। दूसरा चरवाहा सीटी बजाए तो उसकी भेड़ें बाहर आएंगी और तीसरे चरवाहे की सीटी सुनकर उसकी भेड़ें बाहर आयेंगी। भेड़ें किसी दूसरी भेड़ों के चरवाहे के पास कभी भी नहीं जायेंगी क्योंकि वे अपने चरवाहे की आवाज को पहचानती है। किसी वक्त कोई अनजान व्यक्ति आकर सीटी बजाए तो भेड़ें उसके पीछे नहीं जाएंगी। प्रभु यीशु कहता है कि, 'वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी' कारण कि उन्हें स्वामी की आवाज पहचानने के लिए उसके कान आदि होते हैं। परमेश्वर की वाणी सुनना यह हमारा हक है। इतिहास, भूगोल या विज्ञान जैसे विषय हमें न आते हों तो भी हम परमेश्वर की वाणी को पहचान जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह की सुनना और उसके पीछे चलना यह विश्वासियों का हक है। प्रभु जहाँ जाए वहाँ किसी भी प्रकार का प्रश्न पूछे बिना हमें जाना चाहिए।

हमें पूरे विश्वास के साथ प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलना चाहिए, क्योंकि हम जानते हैं कि हम उसमें संपूर्ण सुरक्षित है और हमें किसी भी प्रकार के खतरे की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

सितम्बर 29

यह तो युग-युग के लिए मेरा विश्राम-स्थान है, यहीं मैं रहूंगा क्योंकि मैंने इसको चाहा है। भजन. 131:14

जब गौरेया घोंसला बना रही हो इसे देखना अत्यन्त ही रसप्रद लगता है। वह यहाँ-वहाँ से सूखी घास या तिनके बटोरकर लाती है, उन्हें ऐसे-वैसे बुनकर चतुराई से घोंसला बनाती है। ऐसा करने के लिए बहुत धीरज की भी जरूरत होती है। जब घोंसला तैयार होता है तब वह उसमें जाती है, वह किसी दूसरे घर में नहीं जाती है। आप उससे कहें कि 'मेरे घर में आ। मैं तुझे घर में कोई भी स्थान दूंगा और एक बोरी चावल दूंगा। तेरे विश्राम में कोई तुझे बाधा नहीं पहुंचाएगा।' परन्तु वह उत्तर देगी, 'नहीं, शुक्रिया, किसी भी घर से ज्यादा मेरे घोंसले में मुझे अधिक सुख-सुविधा है।'

गौरेया सभी पक्षियों में सबसे अधिक सामान्य है। उसमें न कोई सुन्दरता है या आकर्षण है। तोता और अन्य पक्षियों के समान उसे कोई पालता नहीं है। हमारा प्रभु यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए इसी रीति से आया। उसने खुद को रिक्त (खाली) किया। यशा. 53:2 में उसे सूखी जड़ के साथ तुलना की गई है। संसार के अन्य अगुओं के समान धूमधाम के साथ उसका जन्म नहीं हुआ था। वह तो चरनी में जन्मा और बढ़ई का साधारण काम किया। हमारे लिए वह निर्धन बना, हमारे वास्ते उसके मुख पर थूका गया, और इसीलिए भ्रष्ट से भ्रष्ट पापी भी पूरी स्वतंत्रता से उसके पास आ सकता है और आशीष पा सकता है। एकमात्र वही संसार के सभी वर्ग के लोगों को विश्राम देने के लिए अपने पास बुलाता है।

पापियों को दिये गए अनेक नामों में एक नाम है सूखी हुई घास (यशा. 40:7,8)। संसार के लोगों की महिमा जाती रहती है, इसलिए हमारी घास के साथ तुलना की गई है। यह घास किसी भी काम में नहीं आती है। यह यहाँ-वहाँ बिखरी हुई पड़ी होती है। परन्तु प्रभु यीशु प्रेम से और धीरज से ऐसे तिनकों को ढूँढता है और अपने पास लाता है। हरेक कुल के लोगों में से वह उन्हें ढूँढता है और बाद में अपना घोंसला बनाता है जिससे घोंसले के उसके द्वारा परमेश्वर को विश्राम मिले।

सितम्बर 30

तू इस्राएलियों से कहना, कि जिसका नाम मैं हूँ उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।
निर्गमन 3:14

'मैं हूँ' यह नाम बहुत अर्थ सूचक है। एक अन्धेरी और तूफानी रात को चेले गलील की झील में एक नाव में थे। उन्होंने प्रभु को झील पर चलते हुए देखा। वे किसी भूत को देख रहे हैं ऐसा समझकर वे घबराए परन्तु प्रभु ने उनके साथ बात करते हुए कहा, 'मैं हूँ, डरो मत।' (मत्ती 14:17) उसने ऐसा नहीं कहा कि 'यह तो मैं तुम्हारा उद्धारकर्ता हूँ। सिर्फ इतना ही कहा 'मैं हूँ'; तुरन्त ही उनका डर जाता रहा और उन्हें ढाढ़स बन्धा।

कोई बेटा घर देर रात को लौटता है और दरवाजा खटखटाता है, तब माता-पिता पूछते हैं कि, कौन है? बाद में उन्हें उत्तर मिलता है कि मैं हूँ। इसी तरह यदि पति देर से आए और पत्नि को उत्तर मिलता है कि 'मैं हूँ।' ये थोड़े शब्द विश्वास दिलाते हैं और सब डर और चिन्ता हर लेते हैं।

इसी रीति से परमेश्वर ने मूसा को कहा कि लोगों से कहना, 'मैं हूँ उसी ने मुझे भेजा है।' अथवा जिस परमेश्वर को मैं व्यक्तिगत रीति से पहचानता हूँ उसने मुझे भेजा है। जो परमेश्वर मेरा घनिष्ट मित्र है उसने मुझे आपके लिए संदेश भेजा है। उसके बाद लोग मूसा पर विश्वास करने वाले थे। मूसा ने इन सुझावों का पालन किया और परमेश्वर ने उससे कहा था, उसी के अनुसार लोगों ने मूसा पर विश्वास किया।

परमेश्वर की घनिष्ट पहचान अति महत्वपूर्ण है। यदि वह हमारे जीवन में न हो तो हमारे अन्दर आत्मिक निर्बलता आयेगी। कई लोग शिकायत करते हैं कि परमेश्वर उनसे प्रेम नहीं रखता, मदद नहीं करता, प्रार्थना का उत्तर नहीं देता। यदि उन्हें परमेश्वर का व्यक्तिगत अनुभव हो तो वे परमेश्वर पर संदेह नहीं उसके आधीन होंगे।

अक्टूबर 1

देख मैंने तुझे निर्मल तो किया, परन्तु चांदी की नाई नहीं, मैंने दुःख की भट्ठी में परखकर तुझे चुन लिया। यशायाह 48:10

प्रकाशित-वाक्य अध्याय चार में प्रेरित यूहन्ना को उकाब का अथवा चार जीवित प्राणियों का दर्शन हुआ। उसने बिजलियों तथा गर्जना तथा सिंहासन के आगे अग्नि के दीपक जलते हुए देखा (पद 5) जिन्होंने उसके विरुद्ध बलवा किया था उन पर प्रभु अपना अन्तिम न्याय दण्ड और विपत्तियाँ लाने वाला था। अग्नि के सात दीपकों का परमेश्वर को सात आत्माएं कहा गया है, वह पवित्र-आत्मा के संपूर्ण कार्य को सूचित करता है। उसका कार्य हमें है और जब वह हमारे मध्य में पूरी रीति से और स्वतंत्रता से कार्य करता है, तब परमेश्वर हमारे द्वारा अपनी मनसा को पूरी कर सकता है। इन न्यायदण्डों (शिक्षाओं) को तजोमयी कलीसिया के द्वारा समाप्त करानेवाला है। हमारे अन्दर बार-बार यह प्रश्न उठता है कि जिस दिन शैतान ने प्रभु के विरुद्ध बलवा किया उसी दिन प्रभु ने उसका नाश क्यों नहीं किया, और उसका न्याय उसी दिन क्यों नहीं किया, और उसका न्याय करने में प्रभु क्यों इतना विलम्ब कर रहा है? उत्तर यह है कि प्रभु अपनी कलीसिया के द्वारा न्यायदण्ड (शिक्षा) को समाप्त करना चाहता है। प्रभु का अपने लोगों पर ऐसा महान प्रेम है, कि वह उनको इस विषय में अपना अधिकार देना चाहता है। परन्तु इस अधिकार को भोगने से पहले हमको स्वयं अग्नि से परखे जाकर शुद्ध होना है। हमको दुःख की भट्ठी में चुना जाता है। परमेश्वर के सेवकों को किसी वक्त शारीरिक या मानसिक अत्यन्त भारी दुःखों में से होकर गुजरना पड़ता है कि जिससे ईश्वरीय योजना पूरी हो।

मलाकी हमसे इस प्रकार कहता है कि जो अग्नि दुष्टों को जला देगी वही अग्नि जो परमेश्वर के मार्ग में चलते हैं, उनके लिये तन्दुरुस्ती लायेगी (मलाकी 4:1,2)। सूर्य की किरणें जिन बिमारियों के जीवाणुओं को मार डालते हैं, वही पौधे तथा पेड़ के पत्तों में तंदुरूस्ती लाती है। इसलिये जब हम जीवित प्राणियों का हिस्सा बनते हैं तब हमारे अन्दर ईश्वरीय आग चढ़-उतर सके इसके लिये हमें तैयार रहना चाहिये, इसलिये कि सब कुछ संपूर्ण रीति से शुद्ध हो।

अक्टूबर 2

सच्ची दाखलता मैं हूँ।

यूहन्ना 15:1

राजा आहब राज-मंदिर में था, फिर भी दु:खी और असंतुष्ट था। उदास होकर बिछोने पर लेट गया और मुंह फेर लिया था। उसके पास सब कुछ था परन्तु आनन्द नहीं था। नाबोत राज मन्दिर के पास की दाख की बारी में आनन्द और प्रसन्नता में था, क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसे मीरास प्राप्त हुई थी। (1 राजा 21:1-4)। यह विश्वासी और अविश्वासी का जीवन दिखाता है। अविश्वासी के पास मकान भूमि बगैरह है, फिर भी वह दु:खी है, जबकि विश्वासी निर्धन होने के बावजूद परमेश्वर की मीरास के कारण सुखी और संतुष्ट है।

प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझमें बने रहो और मेरी बातें तुममें बनी रहें, तो जो चाहो जो मांगों और वह तुम्हारे लिये हो जायेगा"। (यूहन्ना 15:7)। और उसने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूँ" (पद 1)। जिसका प्रभु यीशु है, उसमें मीरास है। वह कहता है, प्रभु यीशु मेरी दाख की बारी है। प्रभु यीशु मेरी मीरास है"। यदि हमको प्रभु यीशु मिला है तो उस रीति से हम बहुत धनी है। जिस प्रकार बच्चे पिता की वसीयत में से विश्वासी होने के नाते सब कुछ प्राप्त करते हैं। आप उसके नाम से पहचाने जाते हैं, उसके सद्गुण आपको प्राप्त होते हैं और उसका सब कुछ ही आपका हो जाता है।

नाबोत ने परमेश्वर का और परमेश्वर के वचन को मान दिया और आहाब को दाख की बारी बेचने से इन्कार किया। परन्तु बहुतेरे विश्वासियों पर जो परीक्षाएं आती हैं तब अपनी मीरास को बेच देते हैं। वे परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध विवाह करते हैं और इस रीति से परमेश्वर के खिलाफ जाते हैं। स्मरण रखें, आपकी सम्पत्ति आपको सुखी नहीं बना सकती। दूसरे कितने ही नौकरी या पैसों के खातिर अपनी मीरास को बेच देते हैं। अपनी दाख की बारी को न बेचें। प्रभु यीशु में रहें। वह आपको सनातन परिपूर्णता में लायेगा। वह आपकी सच्ची मीरास है।

अक्टूबर 3

उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य की सन्तान, तू इस्राएल के घराने के पास आकर उनको मेरे वचन सुना। यहेजकेल 3:4

एक गांव में एक अनपढ़ व्यक्ति था। एक दिन मैं प्रभु का वचन दूसरों को देने के विषय सिखा रहा था तब उसने मुझसे कहा, "मुझे तो पढ़ना भी नहीं आता, तो मैं किस रीति से प्रभु का वचन दे सकता हूँ?" मैंने कहा, विचार करें कि आपके नाम पर किसी का पत्र आये तो आप क्या करेंगे? उसने कहा, 'मैं किसी के पास जाकर पढ़वाऊंगा।' उसके बाद मैंने कहा, "यह परमेश्वर का आपके नाम लिखा हुआ पत्र है। उसके पास एक बकरी थी जिससे उसका गुजारा चलता था, उसने उसे बेचा और बड़ा बाइबल खरीदा। बाइबल लेकर वह अपने गांव में गया। मार्ग में उसे एक व्यक्ति मिला। उसने उस व्यक्ति से बाइबल को पढ़ने की विनती की। इस मनुष्य ने पूछा, 'क्या यह मसीही किताब है'? उसने हाँ में जवाब दिया, उस व्यक्ति ने उसे धक्का दिया और आगे बढ़ गया। एक छोटा स्कूल का बच्चा वहाँ से होकर गुजरा। मसीही व्यक्ति ने उस बाइबल में से एक छोटा पैरा पढ़ने की विनती की। इस छोटे से लड़के को बताना था उस पहले व्यक्ति ने जिसने मसीही को धमकाया था इतने में वह वापस आया।

लड़का जो पढ़ रहा था उसे सुनकर उसने कहा, "क्या इस पुस्तक में सचमुच ऐसे शब्द है? तो मुझे क्षमा करें। मुझे ऐसी जानकारी नहीं थी। उसकी रीति से यह मसीही अनेकों के द्वारा बाइबल पढ़ाता रहा और चेतावनी सुझाता, प्रोत्साहन और उद्धार से संबन्धित पैराओं को चिन्ह करता रहा। एक दिन मैं उसके गांव में गया तब साफ कमीज के साथ उसे देखा उसने मुझसे कहा कि गवाही देने की छूट उसे दी जाये। मैं विचार कर रहा था कि किस रीति से वह गवाही देगा। परन्तु उसने तो गवाही दी और कहा उसने जिन सन्देशों को सुना था उस पर ध्यान देने के द्वारा प्रभु उसे हिन्दू और मुसलमान लोगों में उपयोग कर रहा था, और उसने ऐसी भी गवाही दी कि जैसे-जैसे वह ज्यादा गवाही देता था वैसे-वैसे वह अधिक से अधिक आबाद होता गया। इसी रीति से दु:ख, आँसू और निराशा में आकर गिरे हुये किसी को बाइबल में से थोड़े शब्दों को सुनाने के द्वारा या देने के द्वारा आपके मित्रों में आपका भी उपयोग हो सकेगा। प्रभु से कहें कि आपको किसी के लिये सन्देश दे और उससे विनती करें कि आपको मुख्य पात्र के रूप में उपयोग करें।

अक्टूबर 4

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। यशायाह 53:5

प्रभु यीशु मसीह ने हमारे विचार, कार्य और शब्दों के बदले दु:ख उठाया, क्योंकि हम विचार कार्य और शब्दों में विविध क्षेत्र में पाप करते हैं। हमारे तीन प्रकार के पापों की शिक्षा प्रभु यीशु ने भोगी है। हमारे पापों, विचारों के कारण उस पर थूका गया, पापी शब्दों के कारण उसकी निन्दा हुई और हमारे पापमय कार्यों के कारण, उसके हाथ और पैर छेदे गये, उसकी पसली में भाला भोंका गया और उसके शरीर में कोड़े मारे गये। परमेश्वर के समक्ष हम सम्पूर्ण धर्मी ठहरे और निर्दोष ठहरे, उसके लिए उसने यह सब सहा। इसके कारण हमको परमेश्वर की उपस्थिति में स्वतंत्रता और हियाव प्राप्त होता है और हमारे पिछले पापों का स्मरण हर लिया जाता है। शैतान हमको पिछले पापों की याद दिलाता है परन्तु हम कह सकते हैं, "प्रभु, मुझे शैतान मेरे पिछले पापों की याद दिलाता है, परन्तु मेरी खातिर आपको कोड़े मारे गये, छेदा गया, आपके ऊपर थूका गया और इस प्रकार मेरी दण्डाज्ञा दूर हो गई है और आपकी धार्मिकता ने मुझे धर्मी ठहराया गया है"। इस रीति से प्रभु की उपस्थिति में जाने से हमको संपूर्ण स्वतंत्रता और हिम्मत प्राप्त होती है और गिर जायें तब फिर से उठने के लिये बारम्बार प्रोत्साहन प्राप्त होता है। (भजन. 37:24, मीका 7:8, 2 कुरि. 4:9)।

किसी कसौटी या परीक्षा के कारण विफल हो जायें तो भी प्रभु का हाथ वहाँ है। हम बारम्बार विफल हो जायें तब कितनी ही बार ऐसा कहते हैं, "मैं कब तक इस प्रकार रहूँगा"? परन्तु हमको उठाने के लिये उसका हाथ काफी है। बहुतेरे ऐसे लोग हमें मिल जाते हैं जो वर्षों तक विफल होने के बावजूद प्रभु के सामर्थी हाथों ने उन्हें उठाया और निर्बलता पर जयवन्त किया। हम किसी पाप में किसी भी सीमा तक क्यों न गिरे हों तो भी हमको क्षमा करके अपने दृढ़ हाथों से उठा लेने के लिये प्रभु हमेशा तैयार रहता है, क्योंकि हमारे सभी पापों से उद्धार देने के लिये उसने पूरा-पूरा दाम चुकाया है। हमारे पाप चाहे कितने ही शर्मजनक और हल्के गिने जाने वाले क्यों न हो हम सरल विश्वास से प्रभु के प्रायश्चित करने वाले लहू का दावा करके, घुल जाकर शुद्ध हो सकते हैं, और प्रभु की उपस्थिति में पूरी स्वतंत्रता का आनन्द उठा सकते हैं।

अक्टूबर 5

....यहोवा ने उसे एक पौधा बतला दिया, जिसे जब उसने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। निर्गमन 15:25

इस्राएल की प्रजा मारा नाम एक स्थान पर पहुंचे तब वहाँ पानी पी नहीं सके, क्योंकि वह खारा था। वे मूसा के विरुद्ध बक-बक करने लगे तब मूसा ने प्रार्थना की। परमेश्वर ने उसे एक पौधा बतला दिया। उसे उसने पानी में डाला तब वह पानी मीठा हो गया।

आपके जीवन में भी समय आयेगा जब आपको कड़वाहट का अनुभव करना पड़ेगा। आपके मित्र, परिवार जन और पड़ोसी आपके बैरी होते हैं तब आपको आश्चर्य होता है। कभी-कभी आप पर दोष लगाया जाता है। ऑफिस में आप पर सताव आते हैं। यह तो मारा के भाँति-भाँति के अनुभव है। एक पौधा (वृक्ष) है जो आपके हृदय की कड़वाहट को दूर करेगा। उसके विषय हम गलतियों 3:13 में पढ़ते हैं, "मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है"। यह तो क्रूस की निशानी है। हृदय से कड़वाहट आती है तब केवल क्रूस की शक्ति उसे दूर करती है। और जय प्रदान करता है, जो हम पर झूठे आरोप लगाते हैं, उनके लिये हम प्रार्थना कर सकते हैं। यूसुफ के भाईयों ने उसे वचन दिये। उस पर बहुत दु:ख आये परन्तु आगे चलकर वह मिस्त्र का प्रधानमंत्री बना। फिर भी उसने अपने भाइयों को क्षमा किया। मसीही जीवन के आरंभ में हम ऐसा नहीं कर सकते। परन्तु कुछ कार्य हमारे अन्दर गहरी रीति से होता है तब वैसा कर सकते हैं।

अक्टूबर 6

यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनाने वाला है, वह यों कहता है, क्या तुम आनेवाली घटनाएं मुझसे पूछोगे? मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे? यशायाह 45:11

हम परमेश्वर को आज्ञा कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में परमेश्वर के प्रति इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा की गई थी। परमेश्वर की आज्ञा के अधीन होकर वह अपने पुत्र को मोरिय्याह पर्वत पर बलिदान करने के लिये ले जाता है। वह उसे मारने के शिखर पर था तभी परमेश्वर उसे पुकारता है, 'इब्राहीम ने आंखे उठाई और क्या देखा कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से झाड़ी में फंसा हुआ है'। (उत्पत्ति 22:13) प्रभु ने उससे कहा कि उसके पुत्र की सन्ती इस मेढ़ें का अर्पण करे। प्रभु स्वयं उस मेढ़ें को वहाँ लाया था। ऐसा भय नहीं था क्योंकि वह झाड़ी में फंसा हुआ था। इस प्रकार परमेश्वर कह रहा था कि, "इब्राहीम, तूने मेरी आज्ञा का सम्पूर्ण रीति से पालन किया, तेरे पुत्र को भी तूने मुझे अलग नहीं रख छोड़ा। तो अब जैसे वह मेढ़ा बंधा हुआ है वैसे ही मैं भी तेरे आधीन होता हूँ। आने वाली घटनाओं के विषय मुझसे पूछ"। यह तो हमारा हक है। हम विश्वासी प्रभु को आज्ञा कर सकते हैं। आप यदि प्रभु के पूर्ण हृदय से और किसी भी प्रकार के प्रश्न, या सन्देह किये बिना आधीन हो तो आप प्रभु को आज्ञा कर सकते हैं और वह प्रार्थना का पूरा उत्तर देगा।

यूहन्ना 14:13,14 में प्रभु यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे.... तो में उसे करूंगा"। हमें उसे किसी भी बात के लिये आज्ञा कर सकते है। यह तो एक मर्म (भेद) है। परमेश्वर को आज्ञा करने का हमको हक है। परन्तु सर्व प्रथम यह आवश्यक है कि हमारे पास से वह जो कुछ मांगे उसे हम पूरे हृदय से उसे दें। उसके बाद हम उसे आज्ञा कर सकते हैं और परमेश्वर के सभी विषयों को भरपूरी से और पूर्ण रीति से उपभोग कर सकते हैं। हम उसमें सम्पूर्ण है और इसलिये उसकी परिपूर्णता का उपयोग कर सकते हैं। (कुलुस्सियों 2:9,10)

अक्टूबर 7

और यह भी, कि मेरे लिये उतरने की जगह तैयार रख, मुझे आशा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊँगा।

खुद रोम के कैद खाने में था तब प्रेरित पौलुस ने यह विनती की। वह सांसारिक सुख-सुविधा या आनन्द, दु:खों में महसूस करता था। पौलुस फिलेमोन के घर जाना चाहता था क्योंकि उसने उसके प्रेम और विश्वास के विषय में सुना हुआ था और इसलिये उसके घर में वह ताजगी पाना चाहता था। एक सच्चा मसीही घर पृथ्वी पर स्वर्ग जैसा है और जो लोग ऐसे घर परिवार के विषय में जानते हैं वहाँ वे रहना चाहते हैं।

1929 में प्रभु यीशु मसीह मेरा व्यक्तिगत उद्धारकर्ता बना। मसीही बनने के पश्चात मैंने जो पहली प्रार्थना की वह मुझे अभी भी स्मरण है। प्रभु दो वर्ष इंग्लैड और बाद में कनाडा में बहुत अच्छे और धनिक घरों में मैं रहा हूँ। प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुनी और ऐसे एक परिवार के साथ रहने का हक मुझे दिया। इस घर में छ: हफ्तों में उत्पत्ति से प्रारंभ करके पूरी बाइबल पढ़ी। वहाँ मैंने प्रार्थना करना और परमेश्वर की वाणी सुनना सीखा, वहाँ मुझे सेवकाई की बुलाहट प्राप्त हुई। वहीं मैं अन्त में प्रभु के आधीन हुआ। ऐसे घर के लिये प्रभु की स्तुति हो। हरेक विश्वासी घर ऐसा आनन्दी घर होना चाहिये। सच्चे आनन्द का आधार घर की चीजें, वस्तुएं, कपड़े, गहने या अन्य सांसारिक बातों या उच्च शिक्षा और विश्व-विद्यालय की उपाधियों पर नहीं। उनसे सच्चा और स्थायी आनन्द नहीं मिलता। प्रभु यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत पहचान और परमेश्वर के वचन को हम कितना आदर देते हैं और आधीन होते हैं। उस पर सच्चे आनन्द की आधार हैं जहाँ आध ारशिला रखी हैं। परमेश्वर के वचन को आदर नहीं मिलता है, वहाँ हमें सीख और आदर नहीं मिलता।

अक्टूबर 8

दानिय्येल ने अपने संगी को यह हाल बताकर कहा, इसके विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये वह प्रार्थना करें। दानिय्येल 2:17,18

आत्मिक बातों में हमें अपना बोझ दूसरों के साथ मिलकर उठाना चाहिये। हमें बोझ बांटना चाहिये और साथ मिलकर प्रभु को पुकारना चाहिये, कई कार्यकारियों ने स्वतंत्र विचार रखने के द्वारा अपनी सेवा और आशिषों को खो दिया है। दानिय्येल उसके मित्रों की मदद खोजता है। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे दर्शनों तथा स्वप्नों को समझने तथा उसके अर्थ बताने का दान दिया है। (दानि. 1:17)। इस घटना में दानिय्येल को लगा कि उसे उसके तीन मित्रों की प्रार्थना की संगति को खोजना चाहये। उन्होंने साथ मिलकर प्रार्थना की और इस सेवा में भागीदार बने। उनके दांत अलग-अलग थे, परन्तु परमेश्वर के काम में वे एक समान भागीदार बने।

आपको जयवन्त होना हो तो साथी विश्वासियों की प्रार्थना की संगति खोजने में हिचकिचाये नहीं। आपको परेशानियां हो तो उनसे कहें और उनसे विनती कीजिये कि वे आपके लिये और आपके साथ प्रार्थना करें। यह कितना उपयोगी है इसे आप जान सकेंगे। इन जवानों में दृढ़ विश्वास था। पूरा राज्य शोक और रूदन में था परन्तु उन्हें तो जीविते परमेश्वर में विश्वास था कि वह उनका नाश होने नहीं देगा। हमें ऐसा विश्वास रखना चाहिए कि चाहे अनेक विपत्तियां हमारे जीवन में आयें, हमें किस तरह सम्भालना व देखभाल करनी है हमारा प्रभु जानता है।

अक्टूबर 9

परमेश्वर पिता के भविष्य-ज्ञान के अनुसार आत्मा के पवित्र करने के द्वारा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये चुने गये है। तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। 1 पतरस 1:2

पवित्र-आत्मा का एक काम पवित्रीकरण है। पवित्रीकरण मुझे आज्ञा मानने में मदद करता है। कई बार परमेश्वर हमारे साथ बात करता है परन्तु आज्ञा मानना हमें कठिन लगता है। हमारे दिल में हम कहते है, "मैं किस रीति से आधीन हो सकता हूँ? परन्तु पवित्र-आत्मा मुझे पवित्र करने के द्वारा अधिकाधिक हियाव देता है, यहाँ तक कि मैं उसकी परवाह नहीं करता। मैं तो अपने प्रभु के आधीन होऊंगा। अमुक स्थान में जाऊंगा, ऐसा वह चाहता है तो मैं जाऊंगा। यदि उसने मुझे उसकी सेवा में बुलाया है तो मैं उसके आधीन होऊंगा। वह जो कुछ कहता है उसे मैं करूंगा। वह जो कुछ मांगता है वह मैं दूंगा। इसका नाम सच्चा पवित्रीकरण है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरा जो कुछ है वह केवल उसके लिये है।

कई बार हम किसी बर्तन को अलग रखते हैं, और सिर्फ मेहमानों के लिये ही इस्तेमाल करते हैं। विशेष प्रयोग के लिये ही इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसी रीति से मेरा शरीर और मेरा सभी बल पूरी रीति से प्रभु यीशु मसीह के लिये ही है। उसे दूसरे किसी को दे नहीं सकते। यह पवित्रीकरण है और उसके द्वारा हम अपने प्रभु के आधीन हो सकता हूँ, ... 'अब, प्रभु आप मांगे और मैं दूंगा। मेरे पैसे, मेरा समय, मेरा बल आपका है'।

पवित्रीकरण अर्थात प्रभु यीशु मसीह के लहू का छिड़काव। कोई चित्र देखने के द्वारा कोई अशुद्ध बात सुनने के द्वारा या मलिन विचारों के कारण हम निरन्तर अशुद्ध हो रहे हैं। उसका एकमात्र उपाय प्रभु यीशु का लहू है। रविवार के लिये बाट जोहने की जरूरत नहीं। जिस क्षण मैं अशुद्ध हुआ हूँ। कृपा करके मुझे अभी धो दीजिये, और वह मुझे तुरन्त धोता है। पवित्र-आत्मा का काम यह है कि मुझमें बहुमूल्य लहू का छिड़काव लाकर मुझे कभी-कभी ही नहीं परन्तु हर समय, हर पल, हर घड़ी पूरी रीति से शुद्ध रखे। एक विश्वासी होने के नाते मुझे शुद्ध पवित्र निष्कलंक रहना चाहिये और हरेक पल धुलना ही चाहिये। तब मैं स्वतंत्रता-पूर्वक परमेश्वर

से बात कर सकता हूँ और उसकी निरन्तर उपस्थिति का अनुभव प्राप्त कर सकता हूँ और उसकी निरन्तर उपस्थिति का अनुभव प्राप्त कर सकता हूँ। यह सब मेरे स्व-प्रयन्तों से नहीं होता परन्तु पवित्र-आत्मा के पवित्रीकरण के सामर्थ द्वारा होता है।

हम पवित्र-आत्मा द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कर सकते हैं। अनुग्रह और शान्ति संकलित है (1 पतरस 1:2)। मुझमें संपूर्ण शान्ति नदी के समान बढ़ती जाती है। जब यह शान्ति कम होती है तब वह मेरे लिये चिन्ह है, "तू अशुद्ध हुआ है। तेरी शान्ति कम हो गई है। तो अपने घुटनों पर जा"। तब मैं कहता हूँ "प्रभु मुझे शुद्ध करो, और आत्मिक रीति से धो डालो" और फिर से शान्ति आती है।

अक्टूबर 10

चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं। प्रेरितों. 3:6

परमेश्वर के दास का यह कैसा इकरार। परन्तु वह शोकित होकर इसे नहीं कहता। वह तो पूरे आनन्द के साथ इन शब्दों को कहा, क्योंकि इसका उत्तर उसके पास था, 'मेरे पास जो है उसे मैं तुझको देता हूँ, यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर"। हमें भी हमारे रुकावटों पर जय प्राप्त करने के लिये प्रभु यीशु मसीह के नाम के अधिकार का इस्तेमाल करना है।

परमेश्वर विश्वासयोग्य है। हमारी सब जरूरतों को पूरा करेगा। किसी वक्त वह अपना हाथ पीछे खींच रखता हो, परन्तु यह हमको उस पर सदैव पूरा विश्वास रखने की सीख के लिये होता है। ऐसी परीक्षा के समय एक प्रश्न यह है क्या आप परमेश्वर की योजना में हैं? यदि हाँ, तो समस्या हल हो गई समझो। परमेश्वर आपके साथ वाचा के द्वारा बँधा हुआ है और आपकी सभी आवश्यकताएं वह पूरी करेगा।

एक बार एक व्यक्ति ने मेरे पास आकर कहा कि उसके पास घर का किराया भरने के लिये पैसे नहीं है। मैंने प्रार्थना की और प्रभु से कहा कि उसकी जरूरत पूरी करें। परन्तु प्रभु ने मुझसे कहा, मेरी पेटी में बारह रुपये हैं, वह इस व्यक्ति को दे। मैंने कहा, 'यह तो अजमेर जाने का किराया है। गुरुवार को वहाँ सभाओं के लिये जाने का मैंने वचन दिया है। ये पैसे मैं दे दूं तो ये पैसे तेरे नहीं है मेरे हैं। मैंने पैसे उस व्यक्ति को दे दिये। गुरुवार आया गाड़ी का समय होने लगा। मेरे पास पैसे नहीं थे फिर भी सूटकेस लेकर मैं स्टेशन गया। वहाँ मैं खड़ा था तब एक व्यक्ति आकर मुझसे पूछा- आप बख्त सिंह है"? मैंने कहा, हाँ। उसने कहा किसी ने अपना नाम बताये बिना आपको यह देने को कहा है। मुझे एक लिफाफा देकर वह चला गया। मैंने उसे खोला तो गाड़ी के किराये के लिये जितने पैसों की जरूरत थी उतने ही पैसे उसमें थे।

प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हम रुकावटों पर जय पा सकते हैं।

अक्टूबर 11

जो मुझे सामर्थ देता है उसमें
मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
फिलिप्पियों 4:13

पुनरुत्थान के बाद प्रभु ने याकूब को दर्शन दिया। (1 कुरिन्थियों 15:7)। याकूब मुख्य प्रेरितों में से एक था और प्रेरितों के काम में हम देखते हैं कि शंकास्प विषयों में याकूब की सलाह ली जाती थी।

पतरस को जब कैद-खाने में से दूत के द्वारा छुटकारा मिला जब कैद-खाने में से दूत के द्वारा छुटकारा मिला तब वह यूहन्ना मरकुस की माता मरियम के घर गया। वहाँ प्रभु उसे किस रीति से कैद-खाने में से बाहर लाया उसे वह उन्हें कह सुनाया, और कहा, 'यह समाचार याकूब और दूसरे भाइयों को पहुंचाना। उसके बाद वह दूसरी जगह चला गया'। (प्रेरितों. 12:17) और प्रेरितों. 15:13,14 में हम आगे पढ़ते हैं कि जब वे चुप हुए तो याकूब कहने लगा कि हे भाइयों मेरी सुनो।

इन दो संदर्भो पर से यह स्पष्ट होता है कि जब-जब किस विषय पर सलाह या अन्तिम निर्णय की जरूरत पड़ती तब-तब याकूब को पूछा जाता था। इस आने वाली घड़ी के लिये प्रभु ने उसे दर्शन दिया। परमेश्वर के घर में जिन्हें अधिक व जिम्मेदारी उठानी होती है, उनको परमेश्वर अधिक शक्ति और अनुग्रह देता है। बहुतेरे विश्वासी कुछ प्राप्त करने के लिये ही सभाओं में जाते है और उनको सन्देशों और गीतो की ही चिन्ता होती है। परन्तु परमेश्वर के घर को बनाने में उनका हिस्सा क्या है इसे वे खोजते हैं। दूसरों की सेवा करने में परमेश्वर की महिमा के लिये सुसन्देश प्रचार करने में और परमेश्वर की मण्डली बनाने में, बड़ी जिम्मेदारी को उठाने के लिये हम जैसे-जैसे अधिक तत्पर होते हैं वैसे-वैसे पुनरुत्थान के सामर्थ्य को हम अधिक रीति से अनुभव कर सकेंगे। इसी कारण से पौलुस कहता है मैं.... सब बातों को हानि समझता हूँ जिसके कारण मैं उसको और उसके मृत्युन्जय की सामर्थ को जानूँ।

अक्टूबर 12

स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता है। प्रेरितों. 6:8

विधवाओं की देखरेख करने के लिये तथा अन्य कामों के लिये स्तिफनुस को चुना गया था। परन्तु थोड़े ही समय में यह जानने में आया कि वह विश्वासयोग्य व्यक्ति था। वह दूसरों से पैसे नहीं मांगता था। वह बोल सकता था, 'पूरी मण्डली ने इन लोगों की देख-रेख के लिये मुझे पसंद किया है। अब यरूशलेम में इतनी विधवाओं, इतने बालक और दूध पीते बच्चे हैं। उनके पालन-पोषण के लिये ज्यादा पैसे दीजिये'। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। आप भी परमेश्वर पर विश्वास रखना सीखे। वह तो जीवित, पराक्रमी और अविनाशी परमेश्वर है। वह सब कुछ कर सकता है। इसलिए वह विश्वास के द्वारा जरूरतें पूरी होते हुये देख सका। परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म किये और इस प्रकार स्तिफनुस को उस कार्य के लिये स्वयं चुनाव किया था। इसे प्रगट किया। क्या परमेश्वर ने आपको चुना है?

आप उसकी इच्छा पूरी करने के लिये राजी है तो वह आपको चुनेगा और आपको विश्वास का आदमी बनायेगा। परमेश्वर आश्चर्यकर्मों को आपको दिखायेगा। वह तो जीवित परमेश्वर है। प्रेरितों के काम 6:10 में हम पढ़ते हैं, 'परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिससे वह बातें करता था, वे सामना न कर सके। स्तिफनुस उसका काम करता रहा और साथ ही साथ जो उससे मिलने उन सबको परमेश्वर का वचन देता रहा। वह तो आत्मा से भरपूर था और ईश्वरीय ज्ञान से भी परिपूर्ण था जिसके द्वारा शिक्षितों के मुंह वह बन्द कर सकता। आप परमेश्वर के आधीन होते जायेंगे वैसा वह आपको ईश्वरीय ज्ञान देगा जिससे कि आप हरेक परिस्थिति को पहुंच सकेंगे और वह आपको उसका चुना हुआ पात्र बनायेगा।

अक्टूबर 13

मैं तुझको नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा।
यहेजकेल 36:26

हृदय भावनाओ का अथवा स्नेह का स्थल है और यदि हमको नया हृदय न मिले तो हम परमेश्वर पर प्रेम रख नहीं सकते। हम संसार से प्रेम रखते हैं क्योंकि हमारा पुराना हृदय सांसारिक वस्तुओं को चाहता है। नया हृदय प्राप्त करने के द्वारा हम स्वर्गीय वस्तुओं से प्रेम रखते हैं। "पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ"। (कुलुस्सियों 13:2) नया हृदय प्राप्त करने वाले व्यक्ति में जो प्रथम परिवर्तन आता है वह यह है, स्वर्गीय बातों के विषय उसका प्रेम जागृत होता है।

1929 के दिसम्बर के महीने में प्रभु यीशु मेरा उद्धारकर्ता बना। मुझे स्पष्ट रीति से याद है कि मेरे परिवर्तन के पूर्व में सांसारिक मौज-शौक कपड़ों का और फैशनों का चाहता था। समाचार पत्रों, अर्थहीन चित्रों, उपन्यासों, पत्रिकाओं और कहानियों में समय बर्बाद करता था। किस रीति से पैसे कमाना और जमा करना इस विचार में समय बर्बाद करता था। और मेरे जीवन में पाप के गुप्त मौज शौक भी थे। परन्तु मैं प्रभु यीशु मसीह के पास आया कि तो तुरन्त ही उसने इन सभी इच्छाओं को हर लिया। एक भी व्यक्ति हाँ कोई उपदेशक तक भी किसी ने भी इन इच्छाओं को छोड़ देने के लिये मुझसे नहीं कहा। पवित्र-शास्त्र कहता है, "में तुम्हें नया हृदय दूंगा"। यह पूरी तरह से सत्य है। उसने मुझे नया हृदय दिया और उसके लिये मैं उसका आभार मानता हूँ, क्योंकि उसने मेरा गंदा हृदय ले लिया और शुद्ध हृदय दिया"। धन्य है वे, जिनके मन शुद्ध हो हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे"। (मत्ती 5:8) केवल परमेश्वर ही शुद्ध हृदय दे सकता है।

आप चाहे कितने भी प्रयत्न करके देखिये आपकी आंतरिक मलिनता अपने आप नहीं जायेगी। आप कह सकते हैं, मैं अब से कभी भी किसी स्त्री के सामने या पुरुष को नहीं देखूंगा, यह नहीं देखूंगा या वो नहीं देखूंगा। परन्तु इससे, आप कामयाब नहीं होंगे। पूरे दिन आपके विचार यहाँ-वहाँ भटकते ही रहेंगे। परन्तु पवित्र-शास्त्र द्वारा आप जान सकते हैं कि हमें शुद्ध करके हममें और उनमें कुछ भेद न रखा। परमेश्वर पवित्र हृदय देता है। हमारे पाप चाहे कितने ही शर्मजनक, चाहे कितने ही काले और चाहे कितने ही भयंकर हो तो भी हम उन्हें परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करें तो उन्हें माफ किया जाता है। उसी समय पाप के दाग धो दिये जाते हैं।

अक्टूबर 14

तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे, जो बात मुझसे कहे, जो बात सारा तुझसे कहे। उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलायेगा सो इसहाक ही से चलेगा। उत्पत्ति 21:12

इश्माएल के प्रति कुदरती प्रेम से खिंचा जाने के कारण इब्राहीम भारी आत्मिक कठिनाई में था। इसी कारण ही से परमेश्वर उसको सलाह देता है कि जो बात सारा तुझसे कहे, उसे मान, क्योंकि वह जो कहती है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। "भूतकाल में हमने परमेश्वर की इच्छा पूरी की इसलिये भविष्य में भी निरन्तर किसी भी समय, हम भूल कर बैठे, यह संभव है। उम्र के अनुसार हम बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे हमारे सगे-सम्बन्धियों और मित्रों के प्रति प्रेम भाव अत्याधिक गहरा होता जाता है। परिणाम-स्वरूप परमेश्वर के प्रति विफल हो जाने का खतरा बढ़ता जाता है। बहुतेरे विश्वासी माता-पिता, पति-पत्नी और बालकों के प्रति प्रेम के कारण परमेश्वर को नकारते हैं। उसकी आज्ञा की अवगणना करते हैं। इस मानवीय प्रेम का परमेश्वर के ईश्वरीय प्रेम को आधीनता अति कठिन है, यह अति दु:खदायी है, परन्तु उसमें पूरी सुरक्षा है। इब्राहीम को भी अपने बेटे को बाहर निकालने का कर्त्तव्य बना।

इस विषय में वह आज्ञाकारी नहीं हुआ तो परमेश्वर उसे दर्शन नहीं दिया होता। आज्ञा दु:खदायी होने के बावजूद इब्राहीम उसके आधीन हुआ। परमेश्वर के वचन के और परमेश्वर की आज्ञा के आधीन होना कई बार बहुत ही दु:खदायक होता है। परन्तु इब्राहीम परमेश्वर की उलाहना को स्वीकार करने के लिये तैयार था। इस समय परमेश्वर ने इब्राहीम को सिखाया कि किस रीति से हमारा जीवन निरन्तर आत्मा की अगुवाई और कब्जे में होना चाहिये। आप यदि परमेश्वर के मित्र होने की इच्छा रखते हैं तो परमेश्वर की इच्छा के आधीन न होने में आपके प्रियजन आपको न रोके इसके लिये जागृत रहें। बहुत ही होशियारी से शैतान इन प्रियजनों को आपकी पत्नि या बच्चों को आँसू बहाने के लिये प्रेरित करेगा। रोकने वाली हरेक बात को इन्कार करना सीखें। माता, पिता, भाई, बहन, पति या पत्नि कोई भी आपको परमेश्वर की इच्छा के आधीन होने से रोके नहीं।

अक्टूबर 15

अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़, और उस पर भरोसा रख, वहीं पूरा करेगा। भजन. 37:5

सामान्य रीति से जवान लोग अपने भविष्य की योजना खुद ही बनाते हैं। यदि आप परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे तो वह उसके अपने समय में वह आपके लिये सबसे ज्यादा योग्य ऐसे जीवन-साथी की जरूरत पूरी करेगा। परमेश्वर ने रूत के लिये बोअज को रखा था, परन्तु उसे पाने के लिये रूत ने जरा भी प्रयत्न नहीं किया। परमेश्वर ने खुद उसके पक्ष में कार्य किया। जीवनसाथी खोजने के विषय में जिन्होंने परमेश्वर के वचन को तुच्छ माना और उसकी अवहेलना की वे लोग आज दु:खी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस कारण आपके लिये योग्य साथी परमेश्वर को ही खोजने दें। वह हमारा उत्तम चरवाहा और सदाकाल का महायाजक है। इसलिये वह हमारे लिये बहुमूल्य है।

हमारी सभी परीक्षायें वह जानता है, कितनी ऐसी बातें हैं और कितने ऐसे विचार हैं जिन्हें हम अपने गहरे मित्र के साथ भी बांट नहीं सकते। परन्तु उन्हें हम प्रभु के समक्ष पेश कर सकते हैं क्योंकि वह सब बातों में परखा गया था। उसके अनुग्रह के सिंहासन के समक्ष आने के लिये जो हियाव है उसके लिये प्रभु की स्तुति हो, धन्यवाद हो। जो उसे अनुभव से पहचानते नहीं वे कांपते हुए जाते हैं परन्तु हम मानते हैं कि वह हमारा महान स्वर्गीय महायाजक है।

विचार करें कि किसी भी समय में किसी भी प्रश्न, बोझ या समस्या के लिये आपके राज्य के प्रधान नायक के पास जाने की आपको पूरी स्वतंत्रता है, तो स्वभाविक रीति से आपको बहुत ही गर्व हो। इसी रीति से किसी भी समय कोई भी जरूरत के लिये हम प्रभु के पास जा सकते हैं क्योंकि वह हमारे समान ही परखा गया था। उसके पास जाने के द्वारा और उसे पुकारने के द्वारा प्रभु हमारे लिये अधिक से अधिक बहुमूल्य बनता है।

अक्टूबर 16

और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया....। मत्ती 3:16

जब तक कोई मनुष्य अपने पुराने मानवीय स्वभाव के संबंध में सम्पूर्ण रीति से मर नहीं जाता तब तक वह परमेश्वर के राज्य का भागीदार हो नहीं सकता। इसलिये जो नया जन्म पाते है वे बपतिस्मा में ऐसी गवाही देते हैं कि उसका पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ सम्पूर्ण रीतियों से क्रूस पर चढ़ाया गया है और वे नये मनुष्यत्व को पाये हैं।

चीन में ऐसा रिवाज था कि जब कोई मनुष्य मृत्यु पाये तब बड़ी जियाफत (वन भोजन) होती है। एक बार मि. लू नामक व्यक्ति का बदलाव हुआ। बाद में उसने फरमान जारी किया कि 'मि. लू ने मृत्यु पाया है इसलिये दफनाने के लिये आओ। बाद में उसने एक बड़ी पेटी बनाई। लोग आये और पेटी को देखकर मि. लू के लिये दु:खी हुये और दफनाने की प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में मि. लू पेटी उठाने के लिये आये। उन्हें लगा कि, यह क्या। मि. लू तो मर गये हैं। तब यह कोई आत्मा तो नहीं? उसके बाद, उन्होंने कहा, "हाँ यह बात तो सत्य है कि मि. लू मर गया है, वह अपने पाप के विषय मर गया है।" उसके बाद उन्होंने पेटी में रखे हुए, सिगरटों, तम्बाकू, शराब की बोतलों, ताश के पत्तों, सांसारिक किताबों इत्यादि सभी जगत की बातों भरपूर चीजों को दिखाया और उसके बाद किस रीति से उसका परिवर्तन हुआ। बाजार में उसने किस रीति से सुसन्देश सुना उसे कहा और उसके बाद एक विशेष भोजन दिया।

कितने ही मनुष्य ऐसे हैं कि जो पाप के विषय में मरे बिना ही बपतिस्मा के पानी में जाना चाहते हैं। क्या कोई बिना मरे कब्र में जा सकता है? बहुतेरे बिना पश्चाताप किये बपतिस्मा की गवाही देते हैं और वे उसे सही बपतिस्मा मान लेते हैं, पर इसका कोई अर्थ नहीं। बपतिस्मा यह तो दफनाने की गवाही है। मनुष्य का पुराना मनुष्यत्व मर जाना चाहिये और दफन हो जाना चाहिये। और यह गवाही पानी के छिड़काव से दे नहीं सकते। बपतिस्मा का दिन ये गाड़े जाने का दिन है, यह कोई बाहरी क्रिया या रिवाज नहीं है परन्तु नया जन्म पाये हुये व्यक्ति की गवाही है।

अक्टूबर 17

जो आज्ञा यहोवा ने दी है, वह यह है कि तुम उसमें से अपने-अपने खाने के योग्य बटोरा करना। निर्गमन 16:16

इस्राएल की प्रजा जंगल में थी तब तक परमेश्वर प्रतिदिन मन्ना बरसाता रहा, परन्तु कनान में आने के बाद वह बरसना बन्द हो गया। अब से अपने भोजन के लिये उन्हें कठिन परिश्रम करना था। आत्मिक परिपक्वता में आने के लिये हमें परमेश्वर के कार्यशील सहकर्मी बनना चाहिये।

आत्मिक जीवन के प्रारंभ में परमेश्वर विशेष रीति से हमारी देखभाल करेगा और रखवाली करेगा। परन्तु बाद में हमें खुद ब खुद काम करना सीखना पड़ेगा। परमेश्वर के वचन के भेदों को समझने की, उसके ऊपर मनन करने की और उसके द्वारा परमेश्वर की वाणी सुनने की गहरी क्षमता हमारे पास होनी चाहिये। बहुतेरे विश्वासी बहुत लम्बे समय तक बालक ही रहते हैं। वे इच्छा करते हैं कि परमेश्वर के दास उनका दूध से पोषण करें। वे वृद्धि नहीं पाते और परमेश्वर के वचन में जो भारी आत्मिक खुराक है, (इब्रानियों 5:12-15) उसे पचाने की उसके पास शक्ति नहीं है। जो लोग परमेश्वर की वाणी सुनना सीखते हैं और उसकी पूरी इच्छा को खोजते हैं वे लोग आत्मिक रीति से बालक ही न रहकर पुख्ता दशा में आते हैं।

अक्टूबर 18

परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। प्रेरितों. 12:5

प्रेरितों के काम में हम पढ़ते हैं कि पतरस जब बन्दीगृह में था तब मण्डली (कलीसिया) ने उसके लिये प्रार्थना की। पौलुस और बरनबास को सेवा के लिये भेजा गया तब भी कलीसिया ने प्रार्थना की। परमेश्वर के दासों के नाते हमें कलीसिया की प्रार्थना की आवश्यकता है। परन्तु ऐसे बहुत कम विश्वासी हैं जो परमेश्वर के दासों के लिये प्रार्थना करते हैं। बहुतेरे लोग व्यक्तिगत आनन्द में तृप्त होने के कारण शायद प्रार्थना करें। परन्तु जिन्हें सेवा के लिए भेजा जाता है उनके लिये प्रार्थना करने का बोझ कदाचित ही कलीसिया लेती हो। लोग काम के लिये चाहे कितने ही पैसे देंगे, परन्तु उनके लिये प्रार्थना करने का समय उनको नहीं है।

इसीलिये हम देखते हैं कि परमेश्वर के बहुतेरे सेवकों पर दुश्मन निरन्तर हमला करता है और इस प्रकार भारी नुकसान होता है। जो प्रार्थना करते हैं वे भी ऐसी प्रार्थना करते हैं, "प्रभु हमारे भाइयों पर दृष्टि रखें, उन्हें संभालें, अच्छा स्वास्थ दीजिये और जरूरतों को पूरा करें"। परन्तु शत्रु की चालाक युक्तियों को तथा काम में वह कैसी भारी हानि पहुंचाता है। उसे वे नहीं समझते। शैतान जानता है कि परमेश्वर के दासों पर कलीसिया की प्रार्थना की सुरक्षा नहीं है और इसलिये वह बड़ी धूर्तता से उन पर हमला करता है और इस प्रकार काम में बहुत नुकसान पहुंचाता है और निन्दा का कारण बनता है। कलीसिया के रूप में हम शैतान को डरा सकते हैं और बांध सकते हैं। इसलिये ही हमारी सेवा के लिये प्रार्थना करने वाली कलीसिया हो, यह महत्त्वपूर्ण है।

अक्टूबर 19

यदि तू आप न चले तो हमें
वहाँ से आगे न ले जा।
निर्गमन 33:15

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि, "मैं" तेरे आगे-आगे एक दूत को भेजूंगा.. मैं तुम्हारे बीच में हो के न चलूंगा। (निर्ग. 33:2,3)। परन्तु मूसा ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने कहा, "हम दूतों को नहीं मांगते। हमारे साथ तुझको आना पड़ेगा"। परमेश्वर के साथ ऐसी बातचीत यह दिखाती है कि परमेश्वर के साथ उसका कितना निकट का संबन्ध था। यदि कोई परमेश्वर की ऐसी व्यक्तिगत रीति से पहचानता नहीं हो तो वह ऐसी स्वतंत्र रीति से परमेश्वर के साथ बात नहीं कर सकता।

बहुतेरे लोग जायदाद और धन को खोजते हैं। परमेश्वर की समक्षता न हो तो भी सोना चांदी और सांसारिक बातों से वे सुखी होंगे, ऐसा वे सोचते हैं। जमीन का टुकड़ा प्राप्त करने के लिये या दूसरे किसी भौतिक लाभ के लिये, मनुष्यों की दया प्राप्त करने के लिये वे दौड़े-दौड़े जाते हैं। वे बहस करते हैं, परन्तु ऐसे लोगों को आत्मिक बातों के लिये समय नहीं है। उनके लिये बाइबल एक बंद किताब है। विश्वासी लोग ऐसा रुख रखते हैं, इसलिये वे ठंडे पड़ जाते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति की इच्छा न रखकर वे सांसारिक वस्तुओं की इच्छा ज्यादा रखते हैं। आत्मिक आनन्द वे खो बैठते हैं। मूसा तो परमेश्वर की समक्षता के सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं मांग रहा था।

परमेश्वर ने उसे वचन दिया कि मैं आप चलूंगा। आपको भी यह बड़ा निर्णय करना चाहिये कि परमेश्वर की उपस्थिति के सिवाय कहीं भी नहीं जाऊंगा। आप लम्बी यात्रा में जायें या केवल मुलाकात के लिये जायें, परमेश्वर आपके साथ है इसकी निश्चयता करें। मार्ग में पर्वतों का सामना करना पड़े तो भी परमेश्वर आपके साथ है इसलिये पर्वत भी आनन्द मनायेंगे। आपके जीवन में सफलता और आनन्द का रहस्य यही है। यीशु मसीही के ऐसे अधिकार के नीचे जायें जिससे उसकी उपस्थिति आपके साथ रहे। उसके सिवाय सफलता या आनन्द नहीं है।

अक्टूबर 20

जिस (शिरोमणी) से सारी देह जोड़ों और पट्टों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ते जाते हैं।
कुलुस्सियों 2:19

आप मसीह की देह के अंग है और मसीह आपका शिरोमणी है, ऐसा जानने के द्वारा सच्चा आनन्द और उपयोगिता का रहस्य है। शिरोमणी के जिस शरीर की आप कल्पना कर सकते हैं? मसीह के सर पद (प्रमुख) को जो विश्वासी स्वीकार नहीं करते वो ऐसे देह के समान है।

मानवीय देह के अवयव शिरोमणी के नियंत्रण के बगैर स्वतंत्र रीति से कलीसिया के सदस्य भी शिरोमणी अर्थात जीवित कलीसिया बन सकती है। प्रभु यीशु मसीह जो शिरोमणी है उसके अधिकार के नीचे हम किस रीति से रह सकते हैं? कोई भी योजना करें या किसी भी स्थान पर जायें इसके पूर्व हमें प्रभु के पास जाना पड़ेगा। आप मसीह को, आपने प्रभु के रूप में स्वीकार किया है, तो अपनी योजना बनाने से पूर्व उसकी सलाह लें, "प्रभु, मुझे आपका मार्ग बताए और आपकी इच्छा पूरी करने के लिये मुझे अनुग्रह दीजिये। आपके संपूर्ण मार्ग में मुझे लायें और आपके हाथों से मुझे पकड़े रहें"।

यदि आप इस रीति से करेंगे तो यह अत्यन्त आनन्द का अनुभव बन जायेगा। "जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं"। (रोमियों 8:14) हरेक विषय में और, हमारे शब्द के लिये भी हमें पवित्र-आत्मा के अधिकार के नीचे रहना जरूरी है। विश्वासी लोग स्वयं एक मन के न हो और परमेश्वर की इच्छा के विषय उनके हृदय में पूरी शान्ति न आये तब तक कलीसिया से संबन्धित विषय के लिये उन्हें साथ मिलकर प्रार्थना करनी चाहिये। बाइबल का ज्ञान ही काफी है। संयुक्त प्रार्थना जरूरी है। मैं अनुभव से जानता हूँ कि बारम्बार साथ मिलकर प्रार्थना करने से परमेश्वर के लोगों के रूप में हम बड़े सामर्थ का अनुभव कर सकते हैं।

अक्टूबर 21

तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूँ, इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ। भजन. 119:104

यह एक दु:खद बात है कि परमेश्वर की ओर से बारम्बार चेतावनी मिलने के बावजूद कई माता-पिता धोखा खा जाते हैं और अपने बालकों के भविष्य के विषय में भूल कर बैठते हैं। कई बार उन्हें यह भय रहता है कि हमारी लड़की (बेटी) की उम्र बढ़ती जा रही है और कोई पात्र नहीं मिलेगा। इसलिये उतावले होकर वे परमेश्वर की सलाह न लेकर अपनी बेटी का विवाह अविश्वासी के साथ कर देते हैं। वे ऐसी दलील करते हैं कि विवाह के बाद उनकी लड़कियां उनके पतियों का बदलाव कर देगी। बहुत दु:ख के साथ हमें आपको चिताना पड़ रहा है, कि यदि आप इस रीति से करेंगे तो आप, आपका परिवार और आपकी यही बेटी कई वर्षों तक दु:ख भोगेंगे और बेहाल हो जायेंगे।

परमेश्वर के वचन को बदलने का अधिकार किसी विश्वासी या खुद प्रचारक को भी नहीं है। इसलिये परमेश्वर के वचन के प्रति अविश्वास लाते हैं? संसार के किसी भी व्यक्ति से ज्यादा परमेश्वर आप से अधिक प्रेम रखता है यदि आप उसके आधीन होंगे तो वचन के देश की सभी दौलत आप पायेंगे। परन्तु यदि आप आधीन नहीं होंगे तो रोज-रोज बड़ी हानि उठायेंगे, आपका जीवन पराजित जीवन रहेगा, आप आत्मिक रीति से बहरे, गूंगे और विफल रहेंगे, आप अनेक बुरी आदतों के गुलाम हो जायेंगे।

परमेश्वर की खोज में ही हमारी सुरक्षा है। यदि आप खुद से परमेश्वर की सलाह को प्राप्त नहीं कर सकते, तो प्रमाण में छोटी दिखने वाली बातों में भी यह विश्वासियों से विनती करें कि आपके साथ वे प्रार्थना करें, और बाद में प्रभु आपको जयवन्त रीति से चलायेगा। मानवीय भावनाओं, सहानुभूति के द्वारा आकर्षित मत हो जाइये। इस रीति से आप आत्मिक मीरास खो देंगे। हरेक विषय में परमेश्वर की इच्छा खोजे जिससे अपनी मीरास को पूरी रीति से भोग सकें।

अक्टूबर 22

इसलिये तुम अब... परमेश्वर के घराने के हो। इफि. 2:19

प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के बाद पांच सौ भाइयों को उसका दर्शन हुआ। (1 कुरिन्थियों 15:6) जैसे-जैसे पुनरुत्थान का समाचार फैलता गया वैसे-वैसे विश्वासी लोग जहाँ छिप गये थे वहाँ से बाहर आकर एक स्थल पर एकत्रित होने लगे। उनकी संख्या पांच सौ के ऊपर पहुंची। उस समय प्रभु यीशु उनको दिये दर्शन द्वारा हमें सिखाता है, कि जब हम, सभी मानवरचित भेदभावों पर जय प्राप्त करके एक परिवार के रूप में इकट्ठे होते हैं तब हम पुनरुत्थान के सामर्थ्य का अनुभव कर सकते हैं। गतसमनी के बाग में इसके पूर्व प्रभु यीशु मसीह ने प्रार्थना की, कि "वे सब एक हों जैसा तू हे पिता मुझ में है, और में तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा"। (यूहन्ना 17:20,21)

इस अध्याय में यीशु मसीह अति प्रेरणादायक प्रार्थना करता है। पहला, संबन्धों में एकता, दूसरा प्रेम में एकता, तीसरा संपूर्ण एकता, चौथा महिमा में एकता। राष्ट्रीय, सामाजिक और कुल सम्बन्धी भेदभाव को भूलकर हम एक परिवार के रूप में जैसे-जैसे अधिकाधिक रहते हैं वैसे-वैसे हम प्रभु के अधिकाधिक समीप खिचंते हैं। साथ ही साथ प्रभु के साथ और एक दूसरे में जो एकता आती है वह ज्यादा दृढ़ विश्वास से पुनरुत्थान के सामर्थ्य को स्वीकार करने में हमारी सहायता करता है।

इन दिनों में हम देखते हैं, कि तुच्छ बातों के कारण विश्वासियों में विभाजन होते हैं। परिणाम-स्वरूप भारी आत्मिक हानि होती है और कितने ही आत्मिक रीति से दीर्घकाल तक बालकपन में ही रहते हैं। जहाँ-जहाँ विश्वासी लोग प्रभु यीशु मसीह के सरपद (प्रभु पद) के नीचे, एक दूसरे के प्रति सहनशीलता तथा सच्चे प्रेम से हो रही सेवा को प्रगट करते हुए एक परिवार के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ-वहाँ आत्मिक दृष्टि परमेश्वर के वचन की गहरी समझ और परमेश्वर की उपस्थिति को भोगने की शक्ति को देखा जाता है। परमेश्वर के वचन में हम देखते हैं कि, जहाँ प्रारभिक विश्वासी एक परिवार के रूप में एकत्रित हुये, वहाँ-वहाँ प्रभु ने गहरी रीति से तथा स्वतंत्र रीति से कार्य किया।

अक्टूबर 23

तुम पृथ्वी के नमक हो।

मत्ती 4:13

नमक क्या सूचित करता है? अथवा नमक का अर्थ क्या है? सर्वप्रथम, नमक स्वाद देता है। हरेक देश के लोग अपने भोजन में नमक इस्तेमाल करना चाहते है। कोई पकवान बहुत अच्छी रीति से पकानी हो, पर यदि उसमें नमक न हो तो किसी को भी वह जचेगा नहीं। परमेश्वर की इच्छा यह है कि अपने लिये ऐसे लोगों को एकत्रित करना है जो नमक के समान पूरे संसार में स्वस्थता और आनन्द लाये।

नमक विश्वासयोग्यता को भी सूचित करता है। हिन्दी में एक कहावत है कि जिसका नमक आपने खाया है उसके प्रति आप विश्वास-योग्य रहें। वैसे तो सामान्य रीति से नमक निष्ठा ओर विश्वासयोग्यता को दिखाता है।

इसके उपरान्त नमक का उपयोग देखभाल के लिये भी होता है। मक्खन, आचार, मछली, मांस वगैरह को नमक डालकर लम्बे समय के लिये संभालकर रखा जाता है। और नमक निभाये रखनेवाली मित्रता के विषय में कहता है। 2 इतिहास 13:5 हम लानेवाली वाचा में उसका अर्थ 'मित्रता का अक्षय वाचा' दिया गया है। पुराने नियम में हरेक अन्नबलि नमक के साथ चढ़ाया जाता था (लैव्य. 2:13,49,50)।

इस प्रकार नमक अक्षय जीवन, मित्रता और प्रेम में विश्वासयोग्यता को सूचित करता है। यह सब हमें ये समझने में मदद करते हैं, कि किसलिये प्रभु ने शिष्यों को कहा कि, 'तुम पृथ्वी के नमक हो'?

अक्टूबर 24

हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ...परमेश्वर के समीप जाएं। इब्राहीम 10:22

क्या आपकी गुनाहित प्रेरक बुद्धि आपको सता रही है? क्या परमेश्वर के समीप आने में आपको भय लगता है? परमेश्वर की उपस्थिति में आना आपको दु:खद प्रतीत होता है? इसी कारण से बहुतेरे लोगों की उपस्थिति में उनके पाप प्रगट हो जाते हैं। वे घंटों तक फुटबाल मैच में या दूसरे किसी समारोह में जायेंगे, परन्तु सभा में आना उनके लिये असंभव हो जाता है क्योंकि परमेश्वर का वचन उनके पाप प्रगट करता है। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए"। (यूहन्ना 3:20) आप घबरायें नहीं। परमेश्वर जब हमारे पाप खोलते हैं, तब वह हमें क्षमा करने के लिये वैसा करता है, लज्जित करने के लिये नहीं। मनुष्य जब हमारे पाप खोलता है, वह मानवीय स्वभाव है। परमेश्वर प्रेमी है इसलिये, सर्वप्रथम हमको आंतरिक रीति से शुद्ध होने की जरूरत है। हमारे अन्तकरण को अथवा प्रेरक बुद्धि को शुद्ध करने की जरूरत है, क्योंकि वह हमारी आत्मा का एक हिस्सा है। मसीह के लहू के द्वारा जब परमेश्वर मुझे आंतरिक रीति से स्वच्छ और शुद्ध करता है तब पवित्र-आत्मा मेरे अन्दर आकर मुझे नया मनुष्य बनाती है। इसे नया जन्म कहा जाता है और यह पवित्र-आत्मा महान है (तीतुस 3:5)।

आपकी आंतरिक आत्मिक शक्तियां नई बनती है और एक बार मृत ऐसी आपकी प्रेरक बुद्धि तीक्षण है। उसका सबूत यह है कि एक ही झूठ बोलने के द्वारा आप दु:खी हो जाते हैं। रात में आपको नींद भी नहीं आती। पहले तो आप खुशी से झूठ बोलते थे और विचार करते थे, "मैं कैसा समझदार हूँ", परन्तु अब आप ऐसा नहीं कर सकते एक छोटे से छोटा पाप भी आपको बेचैन कर देता है, जब तक कि आप उसे कबूल करके ठीक-ठाक न कर लें तब तक। आपके पाप क्षमा किये जाने के बाद पवित्र-आत्मा जब आपकी आत्मा में आता है तब खुद व खुद आप बिल्कुल नये बन जाते हैं। आपके दिमाग में से दुष्ट विचारों को निकाल फेंक दिया जाता है और आपको नये विचार आते हैं। आपस मे नई इच्छायें, नई प्रीति, परमेश्वर के वचन के लिये नई भूख और अनन्तकाल की बातें जानने की नई आतुरता आती है। खुद व खुद एक बदलाव आपमें आती है। एक जीवित आत्मा, ज्योर्तिमय प्राण और शुद्ध देह दिया जाता है। यह कार्य आत्मा के द्वारा होता है।

अक्टूबर 25

सो हममें से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा। रोमियों 14:12

क्या हम अपने पैसों का दुरुपयोग कर रहे है? पूर्व दिनों में मैं अपने पास में बहुत से सिक्के रखता था, क्योंकि जो काई मांगता उन्हें देने की मेरी आदत थी। परन्तु एक दिन मैंने एक सिक्का दिया तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, ये पैसों को इस्तेमाल करने वाला तू कौन है? उस दिन से मैंने तय किया कि परमेश्वर की इजाजत के बिना एक भी पैसा इस्तेमाल नहीं करना है। आपका समय और पैसे दोनों परमेश्वर के स्वामित्व की है। मैं पैसों को मेरे पैसे नहीं मानता। जब तक मुझे निश्चय न हो जाये कि वे पैसे खर्च करने में परमेश्वर का इरादा है तब तक मैं कुछ भी खरीदता नहीं हूँ।

अमेरिका में एक समय मुझे मेरे बाल कटवाने थे। मेरे पास पैसे थे, परन्तु बाल कटवाने के लिये परमेश्वर ने मुझे कोई शान्ति नहीं दी। तीन हफ्तों तक मैं प्रार्थना करता रहा, उस दरमियान मेरे बाल बढ़ते गये, मैं निनियापोलिस आया तब प्रभु ने मुझसे कहा कि "भूतल पर भाई की दुकान है वहाँ जा। वहाँ अच्छी रीति से बाल कटा सकेगा"। नाई बाल काट रहा था उस दौरान मैंने पूछा, 'श्रीमान ब्रुस क्या तुम मुझसे कह सकते हो, कि तुम नया जन्म पाये है? उसने कहा, नहीं, परन्तु मुझे इस अनुभव को पाना है। उसके बाल काटने के बाद मैंने मेरा बाइबल लिया, और उसे उद्धार का मार्ग समझाया। उसने घुटने टेके और प्रभु को अंगीकार किया। बाद में उसने पैसे लेने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार मेरे बाल मुफ्त में काटे गये और नाई की आत्मा को प्रभु के पास लाने का हक मुझे मिला।

मैं मानता हूँ कि परमेश्वर के वचन के अनुसार हमारा समय और पैसों का लेखा हमें परमेश्वर को देना पड़ेगा। इतना ही नहीं, हमारी बातचीत और व्यवहार का हिसाब भी परमेश्वर को देना पड़ेगा। 'और मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हरेक बात का लेखा देंगे'। (मत्ती 12:36-37) यदि हम अनन्तकाल के न्याय में विश्वास रखते हैं तो हम हमारी बातचीत के विषय से बहुत सावधानी बरतेंगे, हमारी हाँ की हाँ और न की न होनी चाहिये। कई बार मन में जो बात हो उससे कहीं अलग ही बात हम बोलते हैं। जो अनन्त न्याय में विश्वास रखते हैं। जो अनन्त न्याय में विश्वास रखते हैं वे अपने पैसों और शक्ति को नष्ट नहीं करेंगे। हमें जागृत जीवन जीने के लिये बहुत सावधानी रखनी चाहिये।

अक्टूबर 26

...मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा। यिर्मयाह 31:34

हमारा प्रभु हमारे पाप का दण्ड भोगने के लिये मरा, इतना ही नहीं परन्तु हमारे पाप को सदा के लिये गाड़ देने के वास्ते मरा यह आत्मिक सत्य कुलुस्सियों 2:12 और रोमियों 6:4 में हम पढ़ते हैं। जैसे एक मृत देह को कब्र में गाड़ दिया जाता है वैसे ही हमारे पापों को प्रभु यीशु मसीह के साथ गाड़ दिया गया है। जिसे सरकार की ओर से अधिकार नहीं मिला ऐसा कोई व्यक्ति कब्र को खोले तो वह गुनाह है और सरकार उस व्यक्ति पर नियमानुसार कार्यवाही करेगी।

आत्मिक क्षेत्र में शैतान हमारे बीते हुए पापों को खोदकर निकालता है और इस प्रकार हमें निराश करता है। हम मुसीबत अथवा विश्वास में डगमगाते हैं तब वह विशेष रीति से यह काम करता है। वह ऐसा कहता है, "हाँ, प्रभु यीशु तेरे पाप क्षमा करने के लिये मरा। परन्तु उसने तेरे पाप क्षमा किये हैं इसकी तुझे निश्चयता है? अमुक पाप के विषय में क्या? तुझे क्या ऐसा नहीं लगता कि इस पाप के कारण तुझे शिक्षा मिल रही है? इस प्रकार संदेह के हथियार इस्तेमाल करके दुश्मन आप पर जुल्म करता है और आपका आनन्द और आपकी शान्ति को हर लेता है।

ऐसे समय पर दुश्मन के प्रति जरा भी ध्यान न दें। परन्तु हृदय-पूर्वक विश्वास रखें कि आपके सभी पाप क्षमा किये गये हैं, और उनमें से हरेक को गाड़ दिया है। परमेश्वर का वचन कहता है कि उदयांचल-अस्तांचल से जितनी दूर है उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है"। (भजन. 103:12)। और हमारे पाप उसने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिये हैं। (यशा. 38:17) इसलिये हमें पूरे विवास के साथ मित्रता रखनी है कि परमेश्वर मेरे पाप की ओर फिर से कभी भी दृष्टि नहीं करेगा। शैतान के झूठों को सुनकर आपके जयवन्त जीवन को बर्बाद करने के लिये उस दुष्ट को जरा भी छूट न दें। इसके विपरीत उसे धमकायें और कहें कि 'शैतान, मेरे पिछवाड़े जा'। परमेश्वर का वचन कहता है कि, "मैं वही हूँ जो तेरे पापों को मिटा देता हूँ और स्मरण न करूंगा"। (यशा. 43:25) हाँ, परमेश्वर जब माफी देते हैं तब सदाकाल के लिये माफी देता है। प्रभु यीशु मसीह का गाड़ा जाना हमें इस बात की निश्चयता देती है। रोज-रोज प्रभु का उपकार मानें कि उसने आपके पाप क्षमा किये हैं और उन्हें गाड़ भी दिया है।

अक्टूबर 27

क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊँगा, मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा। यशायाह 44:3

हमारे जीवनों को बहुतायत से फलवन्त करने की प्रभु इच्छा रखता है। वर्षों तक हम बिल्कुल उजाड़ हो तो भी, सरल विश्वास के द्वारा पवित्र-आत्मा का दान पाकर हमारे उजाड़ जीवनों को बहुतायत से फलवन्त बना सकते हैं। हमने देखा है कि, लुटेरे और खूनियों ने नया जन्म पाने के बाद परमेश्वर के सामर्थी सेवक बने हैं इसके पूर्व तो उनके जीवन पाप से भरपूर थे। परन्तु प्रेम, सेवा और प्रार्थना के द्वारा अनेक जीवन बदल जाते हैं, क्योंकि यूहन्ना 7:37,38 के वचनानुसार जो प्रभु पर विश्वास करते हैं उनके जीवन में से जीवन जल की नदियां बह निकलेंगी। सरल विश्वास के द्वारा जीवन जल की नदियां हममें से दूसरों तक बह निकलेंगी। हमारे बदले हुए जीवनों के द्वारा बहुतेरे आशीष पायेंगे और उनके जीवन भी बदल जायेंगे। हमने ऐसे अनेक लोगो को देखा है, जिनके जीवन पहले तो शर्म से भरपूर थे पर अब परमेश्वर के सामर्थी लोग बने हैं। उनकी सेवा, गवाही और उनकी प्रार्थना के जीवन द्वारा दिखता है कि वे पवित्र-आत्मा से भरपूर लोग है। एक सामान्य व्यक्ति द्वारा प्रभु महान कार्य कर सकता है। (1 कुरिन्थियों 1:26-29) बड़े काम करने के लिये परमेश्वर मूर्ख और तुच्छ मनुष्यों का भी उपयोग करता है और परिवर्तित हुये थोड़े जीवनों के द्वारा वह बहुतेरे जीवनों को बदल सकता है।

उत्तर भारत में एक छोटे से गांव में एक निर्धन अनपढ़ व्यक्ति था। उसने सुसमाचार सुना और उसका उद्धार हुआ। सेवकों ने उससे कहा, "तब तू मुसीबत में है, आकर हमारे साथ रह, वहाँ तेरी सुरक्षा रहेगी"। परन्तु उसने उत्तर दिया, "मेरी सुरक्षा के लिये प्रभु ने मुझे नहीं बनाया है। लोग चाहे मुझे धिक्कारें, मैं परमेश्वर का गवाह बनना चाहता हूँ। गांव के लोग उसे धिक्कारने लगे। उनके कुओं में से पानी लेने से उसे इन्कार किया। उसे पड़ोस के गांव में जाकर गंदा पानी पीना पड़ा। पर उसने अपने गांव के लोगों के लिये प्रार्थना करनी शुरु की और एक-एक करके वे उसके पास आये और अपनी-अपनी तकलीफों के लिये उसे प्रार्थना करने की विनती करने लगे, उन्होंने जाना कि वह ईश्वर भक्त है और उसके पास आकर उन्होंने माफी मांगी और उनके गांव में वापस आने की विनती की। परमेश्वर मूर्ख, अनपढ़ और तुच्छों को बदलकर उन्हें पवित्र-आत्मा से भरपूर करता है, जिससे उनकी सेवा के द्वारा अनेक जीवन बदल जायें।

अक्टूबर 28

यीशु ने... कहा... क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम रखता है? यूहन्ना 21:15

"तुम क्या करते हो, कि रो-रोकर मेरा मन तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बांधे जाने ही के लिये वरन मरने के लिये भी तैयार हूँ। (प्रेरितों. 21:13) पौलुस ने स्पष्ट रीति से परमेश्वर की आज्ञा को सुना था और परमेश्वर की इच्छा उसके समक्ष बहुत ही स्पष्ट रीति से प्रगट की गई थी। उस विषय में वह बहुत ही चौकस था। इसलिये ही वह यरूशलेम न जाये इसके वास्ते उसके मित्रों ने आँसू सहित उससे गिड़गिड़ाया, इसके बावजूद वह दृढ़ रहा। हममें से बहुत कम लोग इस रीति से दृढ़ रह पाते है। दूसरों के आँसूओं को देखकर परमेश्वर की इच्छा के आधीन स्नेही जनों के आँसुओं को देखकर क्या आपने अनेक बार परमेश्वर की इच्छा को ठुकाराया नहीं है? इसी कारण से बहुतेरे परमेश्वर की पूर्ण समय की सेवा को बुलाहट के आधीन नहीं होते, परमेश्वर जहाँ भेजना चाहता है वहाँ नहीं जाते और परमेश्वर की मांग को पूरी करने में विफल हो जाते हैं। आपके स्नेही जनों के आंसू अनाज्ञाकारिता के कारण बनते हैं। परिणाम-स्वरूप परमेश्वर आपको उलाहना देता है। वह व्यक्ति चाहे कितना भी प्रेमी और निकट हो तो भी आप परमेश्वर से ज्यादा उसे अधिक चाह नहीं सकते।

परमेश्वर का वचन कहता है। "जो मुझसे ज्यादा अपने माता-पिता या भाई-बहन को अधिक प्रेम करता है वह मेरे योग्य नहीं"। इसहाक के प्रति प्रेम सारा के जीवन को अंकुश में रखे यह संभव था। इसीलिये परमेश्वर के द्वारा मांगा हुआ इसहाक के बलिदान के विषय इब्राहीम सारा से कुछ भी नहीं कहता। कितने ही पति ऐसा समझते हैं कि उसके जीवन की एक-एक बात पत्नी को बतानी चाहिये। परमेवर के कई सेवक ऐसा करने के कारण अपनी सेवा बर्बाद करते हैं। निर्बल मन के प्रति पत्नियों को सभी ब्यौरा देते हैं और पत्नी चारों ओर बातों को फैलाती रहती है। इस रीति से पत्नियां उनके पतियों की सेवा में भारी नुकसान लाती है। इब्राहीम अनुभव से सीखा था कि पत्नि के साथ सभी बातों को बांटने में कौन सा जोखिम समाया हुआ था। वह जानता था कि परमेश्वर इसहाक का बलिदान मांगा है, ऐसा यदि वह सारा को बताये तो सारा तुरन्त ही विलाप करेगी और कहेगी, 'हे मेरे बेटे इसहाक, मेरा इकलौता पुत्र'। और तो और ऐसा भी कहेगी कि, "परमेश्वर ऐसी मांग कही करेगा"? परन्तु नहीं पवित्र-आत्मा की अगुवाई से सारा को जरा भी संकेत किये बिना इब्राहीम इसहाक को लेकर चला जाता है। पतियों चेत जाओ, आपके और परमेश्वर के मध्य जो बातें है वे कभी भी पत्नि से न कहें। परमेश्वर को पहला स्थान देना सीखें।

अक्टूबर 29

क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।
1 कुरिन्थियों 11:26

जब विश्वासी लोग हर रविवार को इकट्ठे मिलते तब 'प्रभु के आने तक' उसकी मृत्यु का प्रचार करते थे। प्रभु की मेज में भागीदार होने से पहले हरेक से खुद को जांचने के लिये कहा जाता था। जब तक प्रभु के प्रति उनका अन्तःकरण सिद्ध न हो जाये, तब तक वे मेज में भागीदार नहीं हो सकते। जब तक वे सच्ची रीति से 'नया जन्म' न पाये और ऐसी गवाही न दे सके, 'हे प्रभु मेरा मन आपके प्रति दृढ़ है, मैं आपकी बाट जोह रहा हूँ, "तब तक वे मेज में भागीदार हो नही सकते। जब तक वे प्रभु यीशु को रू-ब-रू मिलने को तैयार न हों, तब तक भोज में भाग ले नहीं सकते।'

रोटी और प्याला में कोई चमत्कार नहीं है। वे सिर्फ इतनी ही गवाही देते हैं कि हम प्रभु के हैं। हमारे अंतःकरण ऐसा कहने के लिये शक्तिमान होने चाहिये कि 'हे प्रभु आपने आपके लहू से मेरा उद्धार किया है, और मुझे मेरे मन में शान्ति दी है। इसी एक कारण से शुद्ध अन्तःकरण से तथा शुद्ध हाथों से आपकी मेज में से खा-पी सकता हूँ। मेरा अन्तःकरण आनन्द और हरेक के प्रति प्रेम से भरा हुआ है। यह रोटी आपकी देह को सूचित करती है। प्रभु, मुझे अपना अधिक प्रकाशन दीजिये। हे प्रभु, मैं आपका मुख देखने को तैयार हूँ। रोटी तोड़ने का सच्चा अर्थ यह है।

जब प्रभु के बाल प्रभु मेज में से उचित रीति से भाग लेते हैं तब उनमें एकता तथा भोज है, मनुष्य की नहीं। (1 कुरिन्थियों 10:16) परोसनेवाला कोई मनुष्य नहीं परन्तु प्रभु स्वयं है। प्रभु की मेज के समक्ष सभी विश्वासी समान है। कोई विश्वासी ऐसा नहीं कह सकता मैं उस पहले से ज्यादा अच्छा हूँ। आप कह सकते हैं कि, "हे प्रभु यीशु मसीह, आपके अनुग्रह द्वारा हम बच गये एक पापी के सिवाय मैं दूसरा कुछ नहीं हूँ। इस रीति से प्रभु को मेज के समक्ष सभी विश्वासी समझ सकते हैं कि वे सब एक जीवन, एक देह और एक मण्डली के भागीदार है। इससे मनुष्यों द्वारा स्थापित सब भेदभाव दूर होते हैं। इस प्रकार मेज परमेश्वर के बालकों की एकता में रखनेवाला बन्धन है।

अक्टूबर 30

परन्तु जब की परमेश्वर का आत्मा तुममें बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। रोमियों 8:9

एक खाली मकान आपको अनुकूलता दे नहीं सकता। उसे माल-असबाब (साजो-सामान) से सजाना पड़ता है, उसके बाद ही वह उपयोगी बनता है। पवित्र-आत्मा इसी हेतु सर हममें वास करती है, कि वह हमें प्रभु के वास्ते अनुकूल और योग्य निवास स्थान देह को उसका मन्दिर, उसका निवास-स्थान बनाना चाहता है। यह तो एक मर्म है। वह हममें थोड़े दिनों के लिये ही नहीं परन्तु हमेशा के लिये आता है। प्रकाशितवाक्य 19:16 में प्रभु यीशु को राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु ऐसा नाम दिया हुआ है। इसलिये वह श्रेष्ठ अभिनन्दन के योग्य है।

यह स्वर्गीय राजा भीतर आये इसके लिये यह आवश्यक है कि योग्य निवास स्थान बनाये। दूसरे शब्दों में पवित्र-आत्मा प्रभु यीशु मसीह के सद्गुणों को हमारे अन्दर लायेगा। हम गाते हैं, 'मसीह की सुन्दरता.... मुझमें दिखाई दे'। परन्तु उसे अमल में लानेवाले शायद ही देखने में आते हैं। यदि आप पवित्र-आत्मा के सम्पूर्ण अधिकार के नीचे आये तो परमेश्वर के द्वारा आपके जीवन में किये हुये अच्छे कार्यो को लोग देख सकते हैं और वे हमारे विषय कहते हैं, 'यह व्यक्ति अवश्य मसीही होना चाहिये'। गलतियों 2:20 में प्रेरित कहता है, 'मसीह मुझ में जीता है'। यदि मसीह मुझमें जीता है तो अवश्य दूसरे लोगों को कहना ही पड़ेगा, "मैं देख सकता हूँ आप मसीही है"।

उदाहरण के रूप में मार्ग में जाते हुये आप कहते हैं, 'वह मकान पाठशाला जैसे लगता है। वह कारखाना जैसे लगता है'। इसी रीति से, हमारे सामने से कोई मनष्य गुजरता हो तब हमारे मुख पर से वो देख सकता है" कि यह देह प्रभु यीशु मसीह का मन्दिर है कि नहीं। हमारे मुख, आंखों, मुस्कान और व्यवहार पर से वे जान सकते हैं। कुलुस्सियों 3:12-16 में विश्वासी के सद्गुणों को दिया गया है, निवास करने वाला आत्मा, प्रभु यीशु के सभी सद्गुणों को हमारे अन्दर लाता है, हमारे खुद के प्रयत्नों से नहीं, हमारे बल के द्वारा नहीं और लम्बी प्रार्थना के द्वारा भी नहीं, परन्तु पवित्र-आत्मा के द्वारा। जब हम परमेश्वर को अपने जीवन का सम्पूर्ण अधिकार सौंप देते हैं और कहते हैं कि "मैं आपका हूँ, आप मुझ पर पूरा अधिकार लीजिये, मैं आपको पूरा प्रभुत्व देता हूँ"। तभी प्रभु यीशु मसीह को सौंदर्य से भरपूर सभी सद्गुण हमारे अन्दर और हमारे मुख पर लोग देख सकेंगे।

अक्टूबर 31

उसने उनसे कहा, नाव की दाहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियां की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके। यूहन्ना 21:6

चेले जब मछलियां पकड़ने गये थे तब प्रभु ने गलील के तिबिरियास झील के किनारे उनको दर्शन दिया (यूहन्ना 21:1-23)। शिष्यों ने पूरी रात मेहनत की परन्तु कुछ न पकड़ा। भोर को प्रभु यीशु मसीह उन्हें दर्शन दिया और कहा, 'नाव की दाहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे'। वे तुरन्त ही उसके आधीन हुये और जाल में इतनी अधिक मछलियां भर गई कि वे जाल को खींच न सके। जाल में एक सौ तैरेपन बड़ी मछलियां थी फिर भी जाल नहीं फटा (यूहन्ना 21:11) इस आश्चर्य के काम के द्वारा प्रभु ने अपने शिष्यों को, अत्यन्त अधिक फलवन्त सेवा का रहस्य बताया। हममें से अधिकांश प्रभु के काम में भारी मेहनत करते हैं, इसके बावजूद कोई परिणाम नहीं देखते, क्योंकि परमेश्वर की योजना को खोजे बिना हम यहाँ-वहाँ जाते हैं। हमारे उत्साह और ज्ञान के ऊपर हम जरूरत से ज्यादा आधार रखते हैं, तब परमेश्वर खुद जिम्मेदारी हाथ में लेते हैं, और हमारी मेहनत को फलवन्त करते हैं।

मछलियां प्रभु की आज्ञा के आधीन होकर किसी भी प्रकार की धक्का-मुक्की किये बिना जाल में आई (क्योंकि जाल फटा नहीं)। इसी रीति से हम प्रभु की आज्ञा को मानकर, वह जो कहे उसे करना चाहिये और जो मांगे वह देना चाहिये। इन मछलियों ने उनके सृष्टिकर्ता की वाणी को सुना था। इसी रीति से हमें प्रभु की सेवा में किसी भी प्रकार की (खींचतान) या डाह किये बिना प्रभु की आधीनता में रहना चाहिये।

नवम्बर 1

जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। यूहन्ना 3:6

शमूएल परमेश्वर का नबी और अनुभवी व्यक्ति था। कई वर्षों तक परमेश्वर के नबी के रूप में सेवा करने के बाद परमेश्वर द्वारा उसे बेतलेहम भेजा गया। जब उसके समक्ष एलीआब को लाया गया तब उसकी उंचाई, रूप और व्यक्तित्व को देखते हुये वह राजा बनने के योग्य दिखा। उसके विषय में सभी संपूर्ण था। परन्तु परमेश्वर ने स्पष्ट तथा उससे कहा, उसका रूप देखकर धोखा न खा, मैंने उसे अयोग्य जाना है।

इस रीति से लोग कई बार धोखा खा जाते हैं। हमारा दिखावा चाहे कितना ही अच्छा हो, उससे परमेश्वर तृप्त नहीं होता। हम अच्छी रीति से शिष्टता से बोलते हो और नम्र दिखते हो इसलिये लोग भले ही हमारे विषय में उंचा ख्याल रखें। जब तक मनुष्य सम्पूर्ण रीति से नया न बने तब तक परमेश्वर के प्रेम, सामर्थ और अनुग्रह को वह प्राप्त कर नहीं सकता। बाह्य रीति से तो वह अच्छा और शिष्ट दिखे परन्तु बुलाये हुये न हों तो वह परमेश्वर को प्रसन्न कर नहीं सकते। जब तक हम प्रभु यीशु के पास नहीं आते तब तक हम दण्ड आज्ञा के नीचे रहते हैं। हमारे पुराने स्वभाव के अंदाजन हमारे पास जो कुछ हो, चाहे वह शिष्टाचार या नम्रता हो, अथवा जिसे हम सद्‌गुण कहते हैं वह हो, परमेश्वर की दृष्टि में मैले चिथड़ों के समान है। (यशायाह 64:6)। जब हमें नया जीवन प्राप्त होता है तभी हमारा स्वभाव भी नया हो जाता है और उन सद्‌गुणों द्वारा हम परमेश्वर का भय मानना सीखते हैं।

हम जो कुछ है, जो कुछ करते हैं, भोगते हो, या संपादन करते हैं वह सब परमेश्वर की ओर से होना चाहिये। केवल तभी वह तृप्त होता है और उसी उद्देश्य से वह हमारे पास आता है। जब तक हम नये जन्म का पूरा अनुभव कर पाएं तब तक परमेश्वर उसके लोगों को तथा उसके सेवकों को बारम्बार हमारे पास भेजता है। बाद में तो हमारी हाँ, हाँ होती है और ना, ना होती है और हरेक कदम उसके अधिकार के नीचे आते हैं। इन सबको समय लगता है, परन्तु हमारी सभी तकलीफों को प्रभु जानता है तथा इसलिये वह प्रेम-पूर्वक बारम्बार हमारे पास आता है।

नवम्बर 2

तुम उसी में भरपूर हो गए हो।
कुलुस्सियों 2:10

प्रभु हमें जो कुछ देता है वह भरपूरी से देता है, वास्तविकता में वह परमेश्वर की सम्पूर्णता को साबित करता है। परमेश्वर हमें जीवन देता है तब प्रारंभ से ही भरपूर और बहुतायत का जीवन देता है। हम परमेश्वर पर पूरी रीति से विश्वास नहीं रखते और उसके आधीन नहीं होते इसलिये इस जीवन को कई वर्षों तक हम भोग नहीं पाते। परन्तु प्रेमी परमेश्वर हमें भरपूर जीवन देता है।

इसी रीति से परमेश्वर हमें सम्पूर्ण शान्ति और सम्पूर्ण सत्य देता है। (यिर्मयाह 33:6)। परमेश्वर के आधीन होना सीखें और हरेक छोटी-छोटी बातों में उसकी इच्छा पूरी करना सीखें, तो परमेश्वर की शान्ति हमारे मनों में बढ़ती जायेगी।

यूहन्ना 15:11 और 16:24 के अनुसार परमेश्वर हमें सम्पूर्ण आनन्द देना चाहता है, जब तक क्लेशों में आनन्द करना न सीखें तब तक हमारा आनन्द सम्पूर्ण नहीं होता। प्रेरितों के काम 13:52 के अनुसार विरोध और सतावों के बाद चेले आनन्द और पवित्र-आत्मा से भरपूर थे। परमेश्वर की खातिर दु:ख सहन करने के हक के वास्ते उसका आभार व्यक्त करना सीखें, तो हमारे आभार के प्रमाण में हमारा आनन्द बढ़ता जायेगा। परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के द्वारा हमारा आनन्द भरपूर होता जाता है। (भजन. 16:11)। हमारा प्रभु चाहता है कि हम पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण हों और निरन्तर छलकते रहें (इफिसियों 5:17,18)। जब हरेक छोटी-छोटी बातों में प्रभु की सम्पूर्ण इच्छा खोजना सीखते हैं, तब ही हम पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण होते हैं। हमारे खुद के विषय के प्रति और हमारी इच्छा के प्रति जैसे-जैसे हम मृत्यु के अनुभव में आये वैसे-वैसे हम आत्मा से परिपूर्ण होंगे।

प्रभु जिस रीति से सम्पूर्ण शान्ति, आनन्द और जीवन देता है वैसे ही वह कहता है, कि 'सारा अधिकार मुझे दिया गया है' (मत्ती 28:18)। प्रभु चाहता है कि वह अधिकार हम इस्तेमाल करें। जैसे-जैसे हम उसके आधीन हों, उसके पीछे चलें और उसकी सेवा करें वैसे-वैसे वह अधिकार हमें दिया जायेगा।

प्रभु हमको उसकी भरपूरी थोड़ी मात्रा में नहीं परन्तु सम्पूर्ण रीति से देना चाहता है। वह सम्पूर्णता का परमेश्वर है और हमको सब कुछ सम्पूर्णता से देना चाहता है।

नवम्बर 3

मार्था सेवा कर रही थी।

यूहन्ना 12:2

जो मार्था ईर्ष्या और क्रोध से भरी हुई थी (लूका 10:40) वही अब आनन्द से सेवा कर रही थी। इसके पहले तो वह बहुत बातों की चिन्ता करती थी, सेवा करते हुए थक गई थी, वह सेवा तो करती थी परन्तु आनन्द-पूर्वक नहीं। उसकी बहन उसे अकेली छोड़ गई थी, इसलिये वह ईर्ष्या और क्रोध से भरी हुई थी। परन्तु अब वही मार्था आनन्द से सेवा करती है। विजयी जीवन, सुखी परिवार और जीवित मण्डली के लिये आनन्दपूर्वक सेवा या खातिरदारी की जरूरत है। जैसे-जैसे हम दूसरों की अधिक सेवा करते हैं वैसे-वैसे हमें अधिक आनन्द प्राप्त होता है।

हमारा प्रभु जब गलील के काना में आया तब वह नौकरों के बीच में था। बहुतेरे लोगों को विवाह समारोह में प्रथम पंक्ति में बैठना पसन्द आता है। प्रभु यीशु खास अवसर हेतु नौकरों के मध्य में था। इसलिये ही उसकी मां ने नौकरों से कहा, "जो कुछ वह तुमसे कहे वह करना"। दूसरे अवसर पर प्रभु यीशु ने शिष्यों के पांव धोये। (यूहन्ना 13:5, मत्ती 13:12)

मार्था में पुनरुत्थान का सामर्थ्य आया है इसलिये वह अब नम्र हो गई है। आनन्द और कृतज्ञता से वह सबकी सेवा करती है। जैसे आप अधिक सेवा करेंगे वैसे ही आप आत्मिक रीति से बढ़ते जायेंगे। जब आप प्रभु के घर में जायें तब वहाँ आप कौन सा काम कर सकते हैं उसे आपको खोजना चाहिये। कई लोग केवल सन्देश के लिये ही जाते हैं। हर रविवार किसी खम्भे के पास या किसी कोने की जगह में वे बैठते हैं, नियमित आते हैं और वापस चले जाते हैं, परन्तु वे पानी का गिलास तक उठाने के लिये अपना हाथ बढ़ाते नहीं हैं। वह यहाँ-वहाँ घूमते फिरते हैं। दोष ढूंढ़ने का काम उन्हें बहुत प्रिय लगता है। दूसरे कितने तो यहाँ-वहाँ देखा करते हैं। परन्तु झाड़ू लगाने के काम करने के द्वारा, आनन्दपूर्वक सेवा के द्वारा, आत्मिक रीति से हम वृद्धि पाते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक और कलीसियाई जीवन में यह बात सत्य है।

नवम्बर 4

उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

1यूहन्ना 1:7

क्रूस के कार्य को तथा पवित्र-आत्मा को आप कभी अलग नहीं कर सकते। जब हम खुद को प्रभु यीशु मसीह के राजपद के नीचे लाते हैं तब हमारी आंतरिक अशुद्धता से बहुमूल्य लहू के द्वारा घुलकर शुद्ध होते हैं, और बाद में पवित्र-आत्मा से भरपूर होते हैं। बहुतेरे लोग प्रभु यीशु के लहू का दावा किये बगैर पवित्र-आत्मा मांगते हैं। यह असंभव है। लेटने के द्वारा, चिल्लाने के द्वारा, दैहिक या जैविक किसी भी कार्यवाही के द्वारा हम उसे प्राप्त नहीं कर सकते।

अपने परिवर्तन के बाद दो वर्षों तक मैं मंथन करता रहा, "प्रभु, मुझे आपकी भरपूरी चाहिये"। प्रभु ने कहा, "तू विश्वास कर कि तू निर्बल व्यक्ति है, और तुझको सामर्थ मिलेगी। बिजली की चमक के समान मुझे समझ आया कि जिन हरेक शब्दों को मैं बोलू उसके लिये मुझे प्रभु पर भरोसा रखना था। उसके बाद मैं समझा कि प्रभु ने मुझे किसलिये हकलाने वाला बनाया है। पहले तो मैं पूछता था, "प्रभु किसलिये मेरी जीभ चिपकती है, और मैं हकलाता हूँ? ऐसा व्यक्ति किस रीति से उपदेशक बन सकता है? मैं स्वतंत्रता से अपने विचारों को प्रकट कर नहीं पाता। मेरे मुख से शब्द नहीं निकलते और मैं लाचार हो जाता हूँ और उलझन में पड़ जाता हूँ। परन्तु प्रभु ने कहा, "तू मुझ पर विश्वास रख"। उसने मुझे अपना वचन दिया है जिससे मैं प्रतिदिन प्रार्थना करता हूँ, 'प्रभु मेरे होंठ को, मेरी जीभ को और मेरे गले का स्पर्श कर, क्योंकि मैं अपने आप कुछ भी बोल नहीं सकता। प्रभु प्रार्थना सुनता है। अब मैं हरेक शब्द के लिये केवल उसके ऊपर ही आधारित रहता हूँ। वही मेरे हृदय, मन, हाथ, पांव और सम्पूर्ण जीवन का राजा है। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूँ। प्रभु मेरे विचार, दृष्टि, वाणी या व्यवहार द्वारा जो आन्तरिक अशुद्धता आई है, मुझे अपने लहू द्वारा कृपा करके शुद्ध करिये। इस प्रकार दैनिक शुद्धता हमको एक झरने की नाई निरन्तर शुद्ध करती रहती है।

हमें परमेश्वर की भरपूरी मिलती है, उसका चिन्ह उसकी प्रसन्नता के शब्द है। प्रतिदिन सुबह घुटनों पर प्रभु के समक्ष धीरज से ठहरे रहें, वचन का मनन करें, और कहे, "प्रभु मेरे साथ बोलो, मैं यहाँ हूँ, मेरे साथ बोलो और जब वह कहता है, हाँ मेरे बेटे, मेरे बालक में तुझसे प्रसन्न हूँ, तू चिन्ता न कर, शान्ति से जा, मैं तेरे संग हूँ। उसके बाद ही आप अपने दिन का तथा दैनिक क्रिया का आरंभ करें।

नवम्बर 5

आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है, कि हम परमेश्वर की सन्तान है। और यदि सन्तान है तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह संगी-वारिस है। रोमियों 8:16,17

यह तो पवित्र-आत्मा का कार्य है, जिसके द्वारा प्रभु यीशु मसीह के सभी वारिस के रूप में स्वर्गीय मीरास में मेरा जो हिस्सा है उस विषय में आत्मा मुझे सिखाता है। आपके पिता यदि आपके वास्ते जायदाद छोड़ जाने वाले हों तो उसकी साख संभाले रखना आपको सीखना चाहिये, नहीं तो वह व्यर्थ जायेगा। प्रभु यीशु मसीह ने मुझे उसके वारिस का संगी-वारिस बनाया है और इसे पृथ्वी पर उसकी साख संभाले रखना मुझे सीखना चाहिये। इस जगत में जो सभी दु:ख मुझ पर आते है उसका उद्देश्य यही है कि मेरे स्वर्गीय वारिस का उपभोग करने में मुझे मदद करे, शिक्षण दे, सिखाये ओर तैयार करे।

पद 17,18 'और यदि सन्तान है, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस है। जबकि हम उसके साथ दु:ख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं। क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाले हैं, कुछ भी नहीं है। पवित्र-आत्मा कहता है कि किस रीति से परमेश्वर हमारे वास्ते स्वर्ग में एक महान मीरास तैयार किया है आपके सभी दु:ख, संकट, कसौटी और मुश्किलों आपको तालीम देती है और शिक्षा देती है जिससे स्वर्गीय मीरास के उपभोग के लिये आप तैयार हो सकें। इसी कारण से हमारे क्लेशों में हम जयवन्त होते हैं, बुड़बुड़ाहट और शिकायत करने के बदले हम क्लेशों के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं क्योंकि इन्हीं दु:खों के द्वारा हम स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

नवम्बर 6

सप्ताह के पहले दिन.... हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए।
प्रेरितों. 20:7

इम्माऊस की ओर जाते हुए, दो शिष्यों के साथ प्रभु भोजन करने बैठा, तब उसने रोटी ली, आशीष मांगी और उनको दिया। रोटी तोड़ते ही उन्होंने उसे पहचान लिया और यीशु तुरन्त अदृश्य हो गया। बाद में चेलों को स्मरण आया कि फसह के पर्व की रात्रि प्रभु ने यही काम किया था और कहा था कि उसका शरीर उनके लिये तोड़ा जायेगा। यहाँ पर हम बहुत ही गहरा और महत्त्व का विषय देखते हैं। हर रविवार के दिन रोटी तोड़कर हम प्रभु को मृत्यु को याद करते हैं। तब हमें ज्यादा स्पष्ट स्वर्गीय दृष्टि मिलती है।

बहुतेरे लोग रविवार की सभा में इसलिये आते हैं कि अच्छे सन्देश सुनने के लिये मिलें। अन्य कई लोग उनके मित्रों से मिलने के लिये और दूसरे कई लोग किसी बुरी ईच्छा को पूरा करने के लिए आते हैं। परन्तु हमारा मुख्य उद्देश्य तो प्रभु की आराधना करने के लिये और जो उसने हमें सिखाया उस रीति से उसकी मृत्यु को स्मरण करना होना चाहिये। जैसे-जैसे हम उसकी अधिक से अधिक उपासना करेंगे और हमारे वास्ते मर जाने के एवज में और हमारे पापों की माफी के लिये लहू बहाये जाने के एवज में उसका आभार मानेंगे वैसे-वैसे हो सकेंगे। यह स्वर्गीय दृष्टि, ज्ञान और सन्देश सुनने के द्वारा नहीं मिलती। साढ़े तीन वर्षों तक प्रभु ने अपने शिष्यों को बारम्बार अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के विषय कहा, परन्तु वे इसे समझ नहीं सके। रोटी तोड़ते समय ही उन्हें सच्ची समझ प्राप्त हुई। जब हम प्रभु के अद्भुत प्रेम और बलिदान को समझ कर उचित रीति से और धन्यवादी हृदय से प्रभु की भेज में भाग लते हैं तब परमेश्वर के वचन को अधिक स्पष्ट समझ हमें दी जाती है।

नवम्बर 7

क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।
2 कुरि. 9:7

आपसे परमेश्वर जो कुछ मांगे उसे देने के लिये क्या आप तैयार हैं? यदि वह आपका समय मांगे, तो वह उसे दीजिये, फिर कुछ न रख। हम उसे देना नहीं जानते इसलिये हम हर समय उसका धन्यवाद कर नहीं पाते।

एक दिन एक आदमी मेरे पास आया। उसने कहा, भाई मुझे बहुत ठंड लग रही है, मुझे कुछ ओढ़ने के लिये देंगे? मैंने उत्तर दिया, "यहाँ खड़े रहो, मुझे जाकर परमेश्वर की इच्छा मालूम कर लेने दो"। बाद में मैंने प्रार्थना की। परमेश्वचर ने कहा, तू अपना कंबल उसे दे दे। यह तो नया कंबल था, उसमें एक भी छेद नहीं पड़ा था। मुझे लगा परमेश्वर ने भूल की होगी। इसलिये मैंने फिर से प्रार्थना की। परन्तु परमेश्वर ने कहा, यह मेरा कंबल है, तू उसे दे दे। मैंने उसे दे दिया और बाद में विचारने लगा कि रात में मुझे ठंडी झेलनी पड़ेगी। किस रीति से अपना ठण्ड से बचाव करूंगा, उस विषय पर मैं विचार करने लगा। परन्तु उस शाम को मैं जब अपने कमरे में आया तब मैंने एक पार्सल देखा। उस पर एक चिट्ठी भी थी जिसमें ऐसा लिखा हुआ था कि... इसे आपको भेजने के लिये परमेश्वर ने मेरे साथ बात की है। कृपा करके यह प्रभु की ओर से है। ऐसा समझकर उसे स्वीकार करें। पार्सल में बिल्कुल नया कंबल था, मेरे दिये हुए कंबल के समान ही वह था। वही रंग और वही नाप।

कई बार हम बुड़बुड़ाहट करते हैं और परमेश्वर से कहते हैं, "प्रभु, मैं इतना सब नहीं दे सकता। मेरी पत्नी और मेरे बच्चों के लिये और मेरी वृद्धावस्था के लिये थोड़ा तो रखना चाहिये"। परन्तु हमें तो परमेश्वर को प्रथम स्थान देना चाहिये। वह जो कुछ मांगे वह प्रसन्नता से देना चाहिये। जैसे-जैसे इस रीति से हम अधिक देंगे वैसे-वैसे हम उसकी विश्वासयोग्यता को विशेष साबित करते जायेंगे।

नवम्बर 8

...उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आंख की पुतली की नाई उसकी सुधि रखी। व्य.वि. 32:10

याकूब अर्थात ठगी। हम सब याकूब के समान ठगी है, इसके बावजूद जैसे परमेश्वर ने याकूब के उसकी मीरास का भाग बनाया वैसे ही उसने हमें भी उसकी मीरास बनाया है। (इफिसियों)

"उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजने वालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया (व्यवस्थाविवरण 32:10) हमारी दशा भी ऐसी हो, बिल्कुल अनुपयोगी तथा निकम्मा था। किसी जंगल में आप जायें तो जलाने लायक झाड़ के सूखे ठूंठ आप देखेंगे। मीलों तक कोई पेड़-पत्तों का नामो-निशान नहीं दिखता। सिर्फ सुनसान और मरूभूमि। हमारी दशा ऐसी हो थी। हमारी देखभाल करने वाला या हम पर प्रेम रखने वाला कोई भी नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया। वह हमको चलाता है, शिक्षा (उपदेश) देता है, मदद करता है और अपनी आँख की पुतली नाई सम्भालता है। वह हमें उसकी अपनी मीरास बनाना चाहता है और जब हम खुद को उसके हाथ में रख देते हैं तब वह कदम-कदम पर हमारी अगुवाई करता है। विश्वासी के लिये हरेक कसौटी उच्च शिक्षा की तालीम के समान है। निर्धनता और बिमारी दण्ड नहीं है, वह तो उच्च शिक्षा की तालीम है। अपनी आंख की पुतली की नाई उसकी सुधि रखो। पलकें आँख की रक्षा करती है। सिर के लिए रक्षा नहीं, कान के लिए भी नहीं और जबकि नाक में बाल होते हैं तो भी कभी कभार उसमें मच्छर घुस जाता है, परन्तु आँख के लिये इस प्रकार नहीं होता। क्योंकि खतरे के आते हुए देखकर आंख की पलकें खुलती व बन्द होती हैं। धूल के छोटे कण से भी आंख की रक्षा हो इसलिये परमेश्वर ने ऐसा प्रबन्ध किया है। परमेश्वर का वचन कहता है कि, जिस रीति से आंख की पलकें हरेक जोखिम से आंख के डोले की रक्षा करती है वैसे ही उसने हमारी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है। वह तो जीवित परमेश्वर है। वह कहता है कि जो कोई तुमको छूता है वह मेरी आंख की पुतली ही को छूता है। यदि हम उसके बहुमूल्य लहू से मोल लिए हुए धन है, तो वह हमें अपनी आंख की पुतली की नाई सम्भालेगा।

नवम्बर 9

विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड होता है। नीतिवचन 16:18

यहूदा का राजा यहोशापात, अच्छी रीति से परमेश्वर के भय में अपनी जीवन चर्चा का आरंभ किया। प्रभु को मान देने के उसके जोश के कारण प्रभु ने उसे बहुत आशीष दी। परमेश्वर की आशीष के कई परिणामों में से एक परिणाम यह था कि यहोशापात आर्थिक रीति से आबाद हुआ। परन्तु धीमे-धीमे इन भौतिक चीजों ने उसके जीवन में स्थान जमाया और उसका आत्मा कुचलते चला गया। इस फंदे के विषय में हमें भी बहुत ही सावधान रहने की जरूरत है। सांसारिक धन दौलत का प्रेम ऐसी चालाकी से हमारे जीवन में प्रवेश करता है, कि उसकी खबर शायद ही हमें होती है। शत्रु हमारी निर्बलता को जानता है, इसलिये जब हम अपनी आशीषों में खूब लीन हो जाते हैं तब हमारी बेफिक्री का लाभ उठा कर वह हमारे जीवन में प्रवेश कर जाता है।

2 इतिहास 18:1 में हम पढ़ते हैं कि यहोशापात ने आहाब के साथ समधियाना किया। इस्राएल के सबसे दुष्ट राजाओं में का एक आहाब था। जब लोग आबाद, धनवान और प्रख्यात होते हैं तब संसार में दूसरे जो धनी लोग है उनके साथ मित्रता स्थापित करने की परीक्षा सामने आती है। बाद में प्रार्थना का बोझ हल्का और हल्का होता जाता है। वे ज्यादा से ज्यादा सांसारिक रीति रिवाजों को अपनाते और सांसारिक मित्रों के साथ समाधान या निबटारा करने लगते हैं, परमेश्वर और उसके वचन के प्रति उनका ध्यान कम और कम होता जाता है। शत्रु कैसी चालाकी से कार्य करता है उस पर ध्यान दें।

आहाब ने अपनी बेटी का विवाह यहोशापात के बेटे के साथ किया, उसके बाद यहोशापात के जाल में ऐसी सख्त रीति से फंस गया कि मीकायाह नबी की चेतावनी पर उसने ध्यान नहीं दिया। युद्ध के मैदान में आहाब ने यहोशापात को सुझाव दिया कि वह राजपोषक पहने और वह खुद भेष बदलेगा। यहोशापान ऐसा मूर्ख बन गया था कि वह अपनी सामान्य बुद्धि भी खो बैठा था। उसे विचार करना चाहिये था कि किसलिये आहाब मुझे राज-वस्त्र पहनने के लिये कह रहा है और स्वयं भेष बदलना चाहता है? जब हम परमेश्वर के अनाज्ञाकारी होते हैं तब हमारी मति मारी

जाती है, हम मूर्ख के समान बर्ताव करते हैं और अपने विनाश की ओर धंसते जाते हैं। यहोशापात ने जिस पतन के मार्ग को अपनाया था वह उसकी स्वाभाविक चरम सीमा अर्थात मृत्यु तक उसे ले गई। परन्तु युद्ध भूमि पर संकट की बेला पर उसने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उसे बचाया।

सांसारिक मित्रों और सम्बन्धियों के साथ समाधान करके यदि आपके जीवन में नुकसान और अंधापन आया हो तो पश्चाताप करें। परमेश्वर दयावंत है, वह आपको भी बचायेगा।

नवम्बर 10

जैसे सेब का वृक्ष जंगल के वृक्षों के बीच में, वैसे ही मेरे प्रेमी जवानों के बीच में है। श्रेष्ठगीत 2:3

यहाँ प्रभु यीशु मसीह को सेब के वृक्ष के साथ तुलना की गई है। यह वृक्ष छाया और फल देता है। सभी फलों में सेब रसदार और विटामिनों से भरपूर होता है, और दूसरे फलों से ज्यादा पोष्टिक तत्वों से भरा होता है। इसलिये खास उद्देश्यसर गीतकार प्रभु यीशु को सुन्दर फलदार वृक्ष के रूप में दर्शाता है। गीतकार थक जाने के कारण पेड़ के नीचे बैठकर आनन्द पाता है और उसका फल खाने से बाकी के लम्बी यात्रा के लिये नया बल प्राप्त करता है। इसी रीति से संसार रूपी जंगल में प्रभु यीशु आनन्द और बल देता है। उसे पाने के लिये दूसरे कितने ही वृक्षों के अनुभव में से होकर गुजरना पड़ता है।

प्रथम, गूलर वृक्ष के पास आना पड़ेगा। (लूका 19:4) यह पेड़ जक्कई को प्रभु यीशु के पास लाता है। जक्कई कौतुहल-पूर्वक यीशु को देखने गया था। उसने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि प्रभु यीशु उसके घर में आयेगा। यह गूलर पेड़ हमें प्रभु यीशु के पास आने का सुझाव देता है। आपके पाप काले हो तो भी, यदि आप प्रभु यीशु को देखने की इच्छा रखकर पापों से पश्चाताप करेंगे तो प्रभु आपके हृदय में आयेगा आपके पाप क्षमा करेगा और आपका जीवन बदलेगा। दूसरा अनुभव अंजीर का पेड़ है। (यूहन्ना 1:48) फिलिप्पुस बैतसैदा का निवासी था और नतनएल से मिलकर प्रभु के विषय में उससे कहता है, ये जवान परमेश्वर का भय मानते थे और पवित्र-शास्त्र की भविष्यवाणियों के विषय जानकारी रखते थे। इसलिये यह अंजीर का वृक्ष विश्वास और मनन को सूचित करता है। आप नया जन्म पाते हैं तब बाइबल के प्रति आपकी भूख जागती है प्रभु यीशु के विषय अधिक जानने का मन और वचन का अध्ययन करने का मन यह ही अंजीर के पेड़ का सन्देश है। परमेश्वर का वचन पढ़ें और मनन करें। जो बातें संसार के ज्ञानी मनुष्यों से गुप्त रखी गयी है उन्हें हम विश्वास और प्रार्थना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु ने नतनाएल से कहा, "तुम स्वर्ग को खुला.... देखोगे"। प्रार्थना और तन ही से आप भी परमेश्वर की महिमा तथा उसका सामर्थ देखेंगे और अनुभव करेंगे।

तीसरा अनुभव झाऊ के पेड़ का है। (1 राजा 19:5) एलिय्याह निराश हो गया था ओर ईजीबेल के कारण जीवन का अन्त लाना चाहता था, परन्तु झाऊ के पेड़ के नीचे परमेश्वर ने उससे कहा कि ऐसे सात हजार लोग थे जिन्होंने अपने घुटने बाल के आगे नहीं टेके थे। और भविष्य में परमेश्वर एलीश को इस्तेमाल करने वाला था वह भी उसने बताया। दुष्ट ईजीबेल के लिए परमेश्वर के पास योजना थी। ऐसी गुप्त बातों का प्रकाश झाऊ के पेड़ के नीचे मिलता है। और 1 राजा 19:6 के अनुसार वहाँ उसे स्वर्गीय भोजन दिया गया। निराशा का समय आता है तब आप कहते हैं, "हे प्रभु, मेरी सेवा ले ले"। परन्तु आपकी निढाल अवस्था में परमेश्वर आपके वास्ते स्वर्गीय भोजन देता है और गुप्त विषयों का प्रकाश भी देता है।

"मैं उसकी छाया में हर्षित होकर बैठ गई और उसका फल मुझे खाने में मीठा लगा"। (श्रेष्ठगीत 2:3)

नवम्बर 11

तुम अपने नहीं हो.... तू मेरा ही है। 1 कुरिन्थियों 6:19, यशा. 43:1

कृपा करके सावधानी-पूर्वक ध्यान दें, हमारा शरीर परमेश्वर का मन्दिर है। हमारे पैसे उसके है, हमारा समय भी उसका है, क्योंकि प्रभु यीशु का हम पर दुगना हक है प्रथम, वह हमारा सृजनहार है। उसने हमें बनाया, उसने हमें जीवन दिया। दूसरा, वह हमारा उद्धारकर्ता है। यशा. 43:1 में वह कहता है, "हे इस्राएल तेरा रचनेवाला है याकूब तेरा सृजन यहोवा अब यो कहता है, मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है, मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है"। सर्वप्रथम परमेश्वर कहता है, "याकूब मैंने तेरी सृष्टि की है, तेरी मां नहीं, परन्तु तेरी सृष्टि करनेवाला मैं हूँ। तेरा सृष्टिकर्ता मैं हूँ। यह पहला दावा है उसके बाद वह कहता है, "मैंने तेरा नाम लेकर बुलाया है, मैं प्रभु यीशु मसीह की मोल ली हुई सम्पत्ति हूँ। उसने अपने लहू से मुझ मोल लिया है। इसलिये मेरा समय, मेरे पैसे, मेरी शक्ति और मेरा शरीर उसके है, मैं अपना खुद का नहीं हूँ।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है, एक बार मेरी माता ने मुझसे कहा, "मेरे बेटे, क्या एक दिन से ज्यादा यहाँ रुक नहीं सकते? मैंने उत्तर दिया, माँ प्रभु ने मुझे जाने के लिये कहा है और मुझे आज की गाड़ी में जाना चाहिये।"। उन्होंने कहा, "मैं तेरी माँ हूँ। तुझ पर मेरा भी हक है"। मैंने कहा, "हाँ एक ही हक परन्तु प्रभु यीशु का मुझ पर दुगना है"। वह मेरा सृष्टिकर्ता भी है और मेरा उद्धारकर्ता भी है। मैं जानता हूँ कि पहला स्थान उसका है। उसने कहा, "ठीक, तू प्रार्थना कर और देख, प्रभु क्या कहता है"। मैंने प्रार्थना की, "प्रभु यीशु मसीह मेरी माता एक दिन रुक जाने को कह रही है, तो क्या मै रुकूँ? प्रभु ने कहा, "नहीं"। और मैंने मेरी माता से कहा कि, "मैं खेदित हूँ। प्रभु मुझे जाने को कह रहा है इसलिये मुझे उसके आधीन हो जाना चाहिये"। वो जानना चाहती थी कि प्रभु को प्रथम स्थान मिलना चाहिये। जो कोई प्रभु से ज्यादा माता अथवा पिता से अधिक प्रेम रखता है वह प्रभु की अवहेलना करता है। इसी कारण से हमें पवित्र-आत्मा दिया गया है। जिससे वह हमें पग-पग चलाये। जब हम धीरज से बाट जोहते हैं तब उसकी सम्पूर्ण इच्छा जान पाते हैं।

नवम्बर 12

...हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि वह देख सके। तब यहोवा ने... आंखें खोल दी।
2राजा 6:17

"हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है"। (मत्ती 16:17)

प्रभु ने शमौन से "धन्य" कहा, परन्तु इसके साथ ही उसे प्राप्त हुए प्रकाशन के विषय घमण्ड न करे, इसके लिये उसे चिताया भी, क्योंकि अपने ज्ञान या विद्या के द्वारा उसे यह नहीं प्राप्त हुआ था। वह प्रकाशन प्रभु यीशु के द्वारा स्वर्गीय पिता से की गई प्रार्थना द्वारा प्राप्त हुआ था। प्रभु यीशु की सच्ची पहचान मानवीय शिक्षा द्वारा हमें कभी भी प्राप्त नहीं होती। ईश्वरीय प्रकाशन, ईश्वरीय प्रकाश द्वारा ही वह प्राप्त होती है। मनुष्य का स्वाभाविक मन परमेश्वचर की बातों के प्रति अंधा है। (2 कुरिन्थियों 4:4) यह अंधापन हमारे दलीलों के द्वारा दूर नहीं होता। केवल प्रभु यीशु मसीह ही अंधे मनों को प्रकाशित कर सकता है। इसलिये, जिनको हम परमेश्वर का वचन देते हैं उनके लिये बहुत ही प्रार्थना करनी चाहिये, कि परमेश्वर उनकी अंधी आँखों को खोले और ईश्वरीय प्रकाश दे। हम उनके लिये मध्यस्थी करेंगे तब वे प्रभु यीशु कौन है उसे जान सकेंगे। इस रीति से हम परमेश्वर के सह मध्यस्थ बनेंगे।

प्रभु यीशु ने अपने आने वाले कष्ट उठाने और क्रूस पर की मृत्यु के विषय कहा तब यही पतरस थोड़े क्षणों के बाद प्रभु को उलाहना देने लगा (पद 22) पतरस को अधिक प्रकाश की जरूरत थी। प्रभु उसे रूपांतर के पहाड़ पर ले गया। वहाँ पहाड़ पर जब प्रभु प्रार्थना कर रहा था तब ईश्वरीय प्रकाश से उसका मुख चमकने लगा। इसी रीति से हम भी जैसे-जैसे अधिक प्रार्थना करेंगे वैसे-वैसे अधिक स्वर्गीय प्रकाश प्राप्त करेंगे। सुबह और शाम बाइबल पढ़ने से पूर्व प्रार्थना करें कि, "मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं। भजन संहिता 119:18 को समझने के लिये हमें आंतरिक प्रगटीकरण और प्रकाश दिया जायेगा।

नवम्बर 13

और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।
रोमियों 1:4

हम परमेश्वर की पवित्रता का अर्थ समझ सकें और जैसे परमेश्वर पवित्र है, वैसे हम पवित्र बन सकें इसलिये यह नाम दिया गया है। 1 पतरस 1:16 मैं परमेश्वर अपने दास के द्वारा कहता हूँ, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ"। परमेश्वर की पवित्रता का ऐसा ऊंचा दर्जा हमारे समक्ष है। इब्रानियों 12:10 वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। इस ईश्वरीय दर्जे तक कोई भी व्यक्ति किसी भी मानवीय उपायों द्वारा पहुंच नहीं सकता, मनोबल, ज्ञान, उपवास, आँसुओं अथवा अन्य किसी साधना के द्वारा वह प्राप्त नहीं हो सकता। पवित्र-आत्मा मुझमें आये और मुझमें गहराई से स्वतंत्रता से, सम्पूर्ण रीति से काम करे तब ही मुझे जैसे वह पवित्र है वैसा बन सकता हूँ। मेरा भाग सिर्फ इतना ही है कि उसे मुझ पर सम्पूर्ण अधिकार सौंपू और मुझमें उसे गहराई से, स्वतंत्रता से, सम्पूर्ण रीति से कार्य करने दूं और उसे कहूँ, 'प्रभु मेरे हाथ आपकी सेवा में और मेरे पांव आपके काम के लिये सुपुर्द है। मेरे सभी अवयव मनुष्यों की परवाह किये बिना आपके आधीन होंगे। हमें उसके अधिकार के नीचे आना पड़ेगा जिससे कि पवित्र-आत्मा हमें सम्पूर्ण रीति से वश में ले, कारण यह हैं कि हम खुद उसे ले नहीं सकते।

बहुतेरे लोग सोचते हैं कि किसी शान्त स्थान में रहने के द्वारा वे पवित्र बन सकेंगे, इसी कारण से प्रारंभ के दिनों में कई साधु-सन्यासी बन गये परन्तु उनके विचार गलत थे। किसी दूर एकान्त जगह में, एकाकी जीवन बिताने से मनुष्य पवित्र बन नहीं सकता।

बहुतेरे लोग अधिकार के लिये पवित्र-आत्मा चाहते हैं। इस ख्याल से कि अधिक अधिकार प्राप्त करने के द्वारा उनकी प्रशंसा ज्यादा होगी। लोग कहेंगे, "देखो कैसा अद्भुत व्यक्ति, कैसा अच्छा मसीही। जब-जब वह प्रार्थना करता है, तब-तब कुछ होता है"। लोग अधिकार, सूचना, चिन्हों, चमत्कारों और दूसरी कई बातों को खोजते हैं। परन्तु यह परमेश्वर का काम नहीं है। उसकी पहली मांग पवित्रता की है और जैसे परमेश्वर पवित्र है वैसा पवित्र होने की उत्सुकता हममें न हो तब तक पवित्र-आत्मा हम में स्वतंत्र रीति से आ नहीं सकता।

नवम्बर 14

हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए। रोमियों 6:6

आत्मिक रीति से मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में हम बपतिस्मा पाये है, उकी मृत्यु की सामर्थ द्वारा हम हमारे पुराने स्वभाव के विषय में मृत्यु पाते हैं। कैंसर के रोग की एक दवा मृत्यु है। डॉक्टर जांच के बाद खोजते हैं कि कैंसर किस भाग में हैं और उसके बाद बिजली की तरंगों को उसी भाग में लाया जाता है। यह क्रिया बहुत कष्टदायक होती है परन्तु इन्हीं बिजली की तरंगों द्वारा रोग को मारा जाता है। उसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है। इसी रीति से हमें भी विश्वास द्वारा हमारे अन्दर मसीह की मृत्यु को लाना पड़ता है और हमारे पुराने पापी स्वभाव के विषय में रोज-रोज मरना पड़ता है।

बहुतेरे लोग प्रभु यीशु की मृत्यु को मानते हैं परन्तु वे उनके पुराने स्वभाव के विषय मरते नहीं है, क्योंकि उन्हें नया बनाने वाले पुनरुत्थान की सामर्थ्य को अपनाने में वे निष्फल हो जाते हैं। जैसे हम उसकी मृत्यु की समानता के समान हो जाते हैं (रोमि. 6:5) वैसे ही हम उसके पुनरुत्थान की समानता में भी जुड़ जाते हैं। जयवंत जीवन के लिये प्रतिदिन, हरपल विश्वास सहित पुनरुत्थान की सामर्थ्य का दावा करना, यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जब-जब हम बाइबल पढ़ें तब-तब प्रार्थना करने के बाद ही बाइबल पढ़नी चाहिये। कोई भी सेवा करने से पूर्व हम प्रार्थना करें उसके बाद ही काम प्रारंभ करना चाहिये। हरेक चीज के लिये विश्वास से हमें पुनरुत्थान के सामर्थ्य का दावा करना चाहिये। हमें परमेश्वर के दान को स्वीकार करना चाहिये। यह तो कार्यशील और जीवित विश्वास है, जैसे गलतियों 2:20 में पौलुस कहता है, 'परमेश्वर के पुत्र का विश्वास (अंग्रेजी के अनुसार) हमारा विश्वास नहीं यह विश्वास क्रियाशील और जीवित होना चाहिये। प्रभु यीशु मसीह आपमें जीता है उसकी आपको चेतना होनी चाहिये, उसके बाद आपकी सभी जरूरतों, जिम्मेदारियों और मुश्किलों के लिये विश्वास का उपयोग करें। स्कूल, दवाखाना, कार्यालय या चाहे दूसरी कोई जगह हो हमारी दैनिक रोजमर्रा के लिये हम इसी सामर्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं। इसी रीति से परीक्षा और कसौटी के समय में भी सामर्थ हमारे लिये उपलब्ध है। प्रथम हम अपने विषय मर जाने के लिये मृत्यु के सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं और उसके बाद हमारी जिम्मेदारियों, आवश्यकताओं और कसौटियों के लिये विश्वास से पुनरुत्थान के सामर्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह दोनों बातें साथ-साथ होती है।

नवम्बर 15

...जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती है, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। रोमियों 8:28

हमारे मुख में एक नया गीत डाला गया जिससे परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करें। यही मुख पहले शाप से, धिक्कार से और दुष्ट बातों से भरपूर था, परन्तु अब हमेशा परमेश्वर का आभार, स्तुति प्रशंसा, आराधना और भजन से भरपूर है और शाप, कड़वाहट, ईर्ष्या, दुश्मनी और द्वेष मुक्त है। क्या आज हर एक परिस्थिति में हम परमेश्वर का आभार व स्तुति कर सकते हैं?

कई वर्षों पूर्व गिर जाने के कारण मेरे टखने की हड्डी में मोच आ गयी थी। मुझे बहुत दर्द होता था और मुझसे खड़े भी हुआ नहीं जाता था। उन्नीस (19) दिनों तक मुझे बिस्तर में रहना पड़ा। मैंने मोच के लिये परमेश्वर की स्तुति की। मैं जानता था कि खास वजह से यह हुआ था और मैं उसके लिये परमेश्वर को दोषी ठहराने वाला नहीं था। इन उन्नीस दिनों तक मैं बिस्तर में था उस समय दो पुरुष, एक मुसलमान और एक हिन्दू जवान जो उद्धार की जरूरत में थे वे मुझे मिलने के लिये आये। पूरे दिन में उनके साथ बात कर सका, क्योंकि मैं बिस्तर में था। वे दोनों उद्धार पाये। उसके बाद परमेश्वर ने कहा, "अब तू उठ उद्देश्य पूरा हुआ। बिस्तर में उन्नीस दिन बिताने के बाद मैं सम्पूर्ण स्वस्थ हो गया। मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर जो कुछ आने देता है वह एक हेतु उद्देश्य के द्वारा ही आने देता है। दु:ख के लिये मैं उसकी स्तुति कर सकता हूँ, कसौटी के लिये मैं उसकी स्तुति कर सकता हूँ, मुश्किलों के द्वारा में कुछ अच्छा पाठ सीख सकता हूँ। पिछले अनेक वर्षों में घटी एक भी घटना मुझे स्मरण नहीं जिनके लिये मुझे परमेश्वर को दोष देना पड़ा हो। चाहे घटना घटे, मैं कहता हूँ, 'प्रभु हरेक बात के लिये मैं तुम्हारा आभार मानता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि सब मिलकर आखिर भलाई ही उत्पन्न करती है।

कई वर्षों पूर्व लंदन शहर में मैं एक घर की तलाश में था। अखबार में इश्तहार पढ़ा कि कमरा किराये में देना है। उस स्थल को खोजकर मैं वहाँ गया और दरवाजा खटखटाया। एक छोटी लड़की ने दरवाजा खोला। उसने मुझे ठहरे रहने के लिये कहा और उसकी मां को बुलाने वह अन्दर

गई। उसकी मां आधी दूर तक आई और मुझे दरवाजे पर खड़ा देखा। उसने मेरा काला मुंह देखा और लड़की से कहा, 'दरवाजा बन्द कर'। मुझे बुरा लगा। परन्तु यह नुकसान मेरा नहीं था, उसका था। उसने अच्छा किरायेदार गवाया था। क्योंकि मैं उसे अच्छा खासा किराया देने वाला था। मैंने कहा मैं और भी अच्छी जगह तलाश करूंगा। "इसलिये थोड़ा आगे गया बाद में दूसरे रास्ते में एक बहुत बड़ा रूम मुझे मिला। मैंने उसके लिये परमेश्वर की स्तुति की। मैं जानता हूँ कि जो कुछ होता है वह मेरी भलाई के लिए ही है।

नवम्बर 16

धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जायेगी।

केवल सच्चे विश्वासी ही सच्ची दया और भलाई दिखा सकते हैं। वे चाहे किसी पर भी, चाहे कहीं भी और चाहे कभी भी दया दिखा सकते हैं। सबसे अयोग्य के प्रति भी दया दिखा सकते हैं, परन्तु हममें ईश्वरीय प्रेम होते ही यह संभव हो सकता है। ऐसा प्रेम मानवीय प्रवृत्ति या प्रयत्नों से उत्पन्न नहीं हो सकता। वह तो पवित्र-आत्मा द्वारा हमारे अन्दर बहाया जाता है। ऐसा ईश्वरीय प्रेम पाने के बाद दूसरों को क्षमा देना सरल होता है। बहुतेरे मसीही कठिन हृदय के होते हैं। वे जो प्रेम दिखाते हैं वह केवल शब्दों में ही होते हैं, हृदय से नहीं।

लोग जब हमसे मांगते हैं तब मसीह के नाम में दया दिखाने का अवसर हमें मिलता है। (मत्ती 18:35) मैं अनुभव से जानता हूँ, कि परमेश्वर के वचन से स्पर्श पाने के बाद बहुतों ने जान पहचान वाले लोगों के पास जाकर क्षमा मांगी थी। परन्तु कई बार ऐसा जवाब मिलता है कि हाँ मैं क्षमा करता हूँ, पर मैं आपके साथ बात नहीं करूंगा, मैं क्षमा कर देता हूँ, परन्तु कृपा करके अब से मेरे घर नहीं आयें। यह क्षमा, क्षमा नहीं है। आपको उन्हें अंत:करण से क्षमा देनी चाहिये, चाहे वह आपके विरुद्ध अनेक बार पाप क्यों न किया हो। (मत्ती 18:21,22) दयावन्त और करूणावन्त होईये, और जैसे हमारे प्रभु ने आपको क्षमा किया है वैसे ही आप भी दूसरों को क्षमा कीजिये। कुलुस्सियों 3:13,14 को देखें। यदि आपको दयावन्त होना हो तो जो क्षमा मांगते हैं उन्हें क्षमा करने को तैयार रहें।

केवल प्रभु यीशु मसीह ऐसा प्रेम हमारे हृदय में उण्डेल सकता है। इस प्रकार हम हमारे मित्रों ओर संबन्धियों के लिये ही नहीं परन्तु शत्रुओं के लिए भी आशीष का कारण बनेंगे।

नवम्बर 17

तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो। 1 पतरस 2:5

हमारी आत्मा की भूख और प्यास किससे संतुष्ट हो सकती है? भजन संहिता 36:8 मे उसका उत्तर मिलता है, "वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे"। परमेश्वर के घर में आने के द्वारा ही परमेश्वर के लोगों को पूरी तृप्ति मिलती है। हम स्वयं जीवित पत्थर है, जिन्हें साथ में रखने के द्वारा ही परमेश्वर का घर बनता है। (1पतरस 2:5)

जब मैं पिलिस्तिन गया, तब एक पुराने यहूदी सभा-स्थान में कितने ही बड़े पत्थरों को मैंने देखा। एक छोटा पत्थर लेकर दिवाल पर के इन बड़े पत्थरों में के एक पर मारने के द्वारा उसमें से संगीत का मधुर सुर उत्पन्न होता था। हरेक पत्थर के अलग-अलग सुर थे। आज भी कोई जानता नहीं कि इन पत्थरों को किस रीति से लाया गया था। कई लम्बी दूरी से लोग इन पत्थरों को देखने तथा इनसे उत्पन्न सुन्दर संगीत सुनने आते हैं। इसी रीति से जब आप नया जन्म पाते हैं तब प्रभु यीशु मसीह में आप स्वर्गीय संगीत धारण करने वाले जीवित पत्थर बनते हैं।

लोग चाहे हमें शाप दें, मारें या हमारे विरुद्ध बुरी बातें करें, हम उन्हें कह सकते हैं, "प्रभु आपको आशीष दे। आपको ज्यादा सुखी बनाये और क्षमा करे"। स्तिफनुस को पत्थर मारा जा रहा था इसके बावजूद उसने कहा, "हे प्रभु, इस दोष को इन पर न लगने दे"। अर्थात वह यह कहता था, कि "प्रभु इन्हें माफ कर"। प्रभु ने उसे स्वर्गीय संगीत दिया था। ऐसे जीवन पत्थरों के साथ मिलकर परमेश्वर का घर बनाते हैं।

नवम्बर 18

वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है, वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।
कुलुस्सियों 1:18

परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को योग्य स्थान में लाने का आनन्द दाऊद को दें इसके पूर्व परमेश्वर ने दाऊद को दो पाठ सिखाये। एक, अपने ज्ञान रूपी मूंसे को दूर करके परमेश्वर के ज्ञान के लिये जगह तैयार करना।

दूसरा, परमेश्वर के घर के लिये ईश्वरीय क्रम को पूरा-पूरा और चौकसाई से पालना। हमें यह पाठ सीखने में कई वर्ष लग जायें, परन्तु जब परमेश्वर की वाचा के सन्दूक तब हम प्रभु यीशु मसीह का चित्र है। आपके हृदय में आपके घर में और आपकी कलीसियाई क्रम में मसीह को योग्य स्थान देना ही पड़ेगा, तो ही बड़ा आनन्द होगा। दाऊद ने कई युद्ध जीते थे, परन्तु अरौना के पास में खरीदे गये खलिहान में परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को आते देखकर उसे जो आनन्द हुआ ऐसा उसे दूसरे किसी से नहीं मिला था, कई घरों में हम इन शब्दों को पढ़ते है, "मसीह इस घर का सिर है"। परन्तु मुख्य रूप से आप दो-तीन दिन वहाँ रहें तो सचमुच ये घर किसका है उसे आप जान सकेंगे।

प्रभु यीशु मसीह को विश्वासियों के हृदय में राजाओं के राजा के रूप में, परिवारों में सिर के रूप में और मण्डली में प्रभु के रूप में सिंहासन आरूढ़ देखते हैं, तभी हमको आनन्द और सामर्थ्य प्राप्त होता है।

नवम्बर 19

विश्वासी का अविश्वासी के साथ क्या मेल।

2 कुरिन्थियों 6:15

गिबोनी लोग यहोशू के पास आये तब वे पुराने जूते ओर पुराने फटे हुये कपड़े पहने थे और फफूंदी रोटी लाये थे। उन्होंने कहा, "हम दूर देश से आये है, हमने तुम्हारे विषय सुना है, कृपा करके तुम हमसे वाचा बान्धो"। परमेश्वर की सलाह लिए बिना यहोशू ने वाचा बांधी। परिणाम-स्वरूप ये ही लोग उनके लिये फंदा रूप बन गये। तत्पश्चात धीमे-धीमे उनके साथ विवाह संबन्ध, मूर्ति-पूजा और अन्य बातें जिनके विषय मना किया गया था, उन लोगों में प्रवेश किये और आत्मिक रीति से वे अंधे बन गये थे।

परमेश्वर के बालक को स्वर्गीय कनान का उपभोग करना हो तो जगत और सांसारिक व्यवहार तथा सांसारिक आनन्द से सम्पूर्ण रीति से अलग होना पड़ेगा। परमेश्वर के लोगों में इसलिये सर्वत्र उज्जड़ता दिखाई देती है? उन्हें उत्तम तालीम मिल रही है फिर भी अंधे और निष्फल रहते हैं। इसका एक कारण यह है कि अधिकांश वो, संसार के लोगों के साथ वाचा बांधते है। कोई वस्त्र और वेशभूषा के फैशनों में, दूसरे कितने तो विवाह संबन्धों में और दूसरे कितने तो व्यवसाय की बातों में ऐसे लोग प्रभु यीशु मसीह में जो प्रबन्ध है उसे किस रीति से भोगेंगे? वह हमारा स्वर्गीय खान-पान है और सम्पूर्ण तृप्ति देता है। परन्तु आपको उसमें विश्वासयोग्य रहना पड़ेगा। कदाचित उसका अर्थ यह भी हो कि सच्चा आत्मिक साथी न मिलने के कारण कई वर्षों तक कितनों को अविवाहित रहना पड़ेगा। परन्तु सुख भोग का जीवन होने के बावजूद आत्मिक रीति से उजाड़ रहना, इससे कि अविवाहित रहना ज्यादा लाभकारी है।

आपके हरेक बात में, चाहे कुटुबिक जीवन हो, आत्मिक जीवन हो या कलीसियाई जीवन हो, परमेश्वर के वचन के आधीन होना पड़ेगा, तभी आप भरपूर जीवन और सम्पूर्ण शान्ति अनुभव कर सकेंगे। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं"। (यूहन्ना 10:10)। केवल तभी वह अकथनीय और महिमा से भरपूर आनन्द दे सकेगा और सब अधिकार तथा अखंडित राज्य भी दे सकेगा। मसीह मेरा कनान है। वह मेरी तृप्ति है और वह मुझे सब बात में भरपूरी देता है। बहुतेरे मसीही ऐसे नदियों के समान है जो वर्ष में दस महीने सूखे रहती हैं। हाँ विशाल नदियां भी दस से ग्यारह महीने उनमें पानी नहीं होता। वर्षा-ऋतु में केवल एक ही महीना पानी रहता है छिछला बाढ़, जिसमें जीवन नहीं होता। मसीह हमेशा और कहीं भी उसकी सनातन शान्ति, आनन्द और सामर्थ देने के लिए तैयार है, वह हमारा कनान है।

नवम्बर 20

इसलिये मनुष्य अपने आपको जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीएं। 1 कुरि. 11:28

प्रभु की मेज में भाग लेने के पूर्व भजन संहिता 139:23,24 के अनुसार प्रभु से कहे कि आपकी वह जांच करे। यदि आप सच्चे हृदय से प्रार्थना करेंगे तो वह आपको बतायेगा कि आपको क्या करना है।

यदि किसी के साथ समाधान करना जरूरी हो तो परमेश्वर को वचन दीजिये कि आप वैसा करेंगे। आपके पड़ोसियों, मित्रों या संगे-सम्बन्धियों के साथ मेल-मिलाप नहीं, तो आप जानते हैं कि इसमें आपका दोष है। यदि आपके शब्दों ने किसी का मन दु:खाया है, या परमेश्वर के पैसों का दुरुपयोग लिया है, तो पश्चाताप करें और सब ठीक-ठीक करें। बहुतेरे लोग दशमांश ही नहीं देते। और इस प्रकार वे परमेश्वर की चोरी करते हैं। दूसरे लोग उसका गलत रीति से खर्च करते हैं। कितने तो अपनी आवश्यकता के लिए बिल भरने को कहते हैं कि "अगले महीने ठीक कर देंगे"। पर अगला महीना आता ही नहीं है।

अधिकांश लोग छुट्टियां मिलने के लिये या मुआवजा प्राप्त करने के लिये गलत कारण देते हैं। कितने तो रेलवे की चोरी करते हैं। दूसरे कितने तो दवाखाने में से चोरी करते हैं, कितने ही सरकार की चोरी करते हैं। इन सभी बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। जो लोग ऐसा काम करते हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। खुद को नम्र करें, सब कबूल करें आधीन होने के लिये अनुग्रह मांगे। प्रार्थना करने में आप लापरवाह हुये हो या उसकी अवगणना की हो तो प्रभु से क्षमा मांगें। प्रभु को दिये जाने वाले समय में चोरी की हो, अपने विषय में अभिमान किये हो और आपके जीवन में धीमे-धीमे कार्य किए हों तो इन सबको अवश्य ही कबूल करें, उन्हें छोड़ दें, प्रभु से क्षमा मांगें। और उसके लहू में घुलकर शुद्ध हों और उसके बाद योग्य रीति से प्रभु के मेज में भागीदार हों।

नवम्बर 21

...तू हमको उदार की भरपूरी के स्थान पर ले आया।

भजन. 66:12

इसहाक गरार में रहना चाहता था, पर जब उसने उसके पिता के खुदवाये हुए कुओं को खोदा तब पलिश्तियों ने आकर कहा कि वे कुएं उनके थे। इसहाक उनके साथ वाद-विवाद करके उनसे भारपूर्वक यह कह सकता था कि ये कुएं उसके ही है, परन्तु उसने एक भी शब्द नहीं कहा। पलिश्ति उससे डाह करने लगे और झगड़ना चाहते थे पर परमेश्वर का भक्त होने के नाते वह वहाँ से चला गया। उनके साथ लड़ाई-झगड़ा करने से उसने इन्कार किया। वह शक्तिशाली पुरुष था और उनके विरुद्ध सांसारिक हथियारों का इस्तेमाल कर सकता था, परन्तु उसने खुद को झगड़े से पृथक रखा, खुद नुकसान उठाया और वहाँ से चला गया। फिर से कुआं खोदा, वहाँ भी पलिश्तियों ने उसके साथ झगड़ा किया इसलिये वह वहाँ से आगे चला गया। फिर से उसने कुआ खोदा और उसके लिये उन्होंने झगड़ा नहीं किया इसलिये उसने उसका नाम रहोबात रखा जिसका अर्थ है "चौड़ा स्थान"।

जब अपने पिता के स्वामित्व पर कुआं छोड़कर वह चला गया तब परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया और उसे आशीष देने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 26:24)। हमें यदि आत्मिक और अनन्त आशिषों को भोगना हो तो इस संसार का जो है उसे छोड़ देने के लिये हमें तैयार होना पड़ेगा। परमेश्वर हमसे प्रेम से कहता है, "मेरे बच्चो, तुम संसार में खींचे मत जाओ" चौड़े स्थान (विस्तृत) में आने की अपनी खुद की योजनाओं को छोड़कर परमेश्वर ने जिस स्थान को हमारे लिये रखा है वहाँ आने के लिये हमें सहमत होना पड़ेगा। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके पास आयें और आशीष पायें।

नवम्बर 22

हे यहोवा कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।
1 शमूएल 3:9

परमेश्वर का सदाकाल का निवास-स्थान बनाने के लिए उसका सहकर्मी बनना यह एक महान हक है। परमेश्वर की वाणी स्पष्ट रीति से सुनकर उसके आधीन होएं। प्रार्थना सभा बाइबल अध्ययन, आराधना सेवा और अन्य प्रवृत्तियों में भाग लेने के द्वारा आप परमेश्वर की वाणी सुनेंगे। परमेश्वर के लोगों की संगति की अवगणना न करें, क्योंकि ऐसा करके आप आत्मिक रीति से अंधे एवं आत्मिक रीति से बहरे हो जायेंगे। इस्राएली निरन्तर जंगल में परमेश्वर से प्रश्न करते रहे और सन्देह लाते रहे। इस रीति से वे परमेश्वर से नाराज हुये।

परमेश्वर से प्रश्न करने का हमें कोई अधिकार नहीं। वह जो करता है वह सम्पूर्ण है। वह कभी भूल नहीं कर सकता। अपने स्वभाव के विरुद्ध वह कुछ नहीं करेगा, प्रभु हमें दण्ड दे या उलाहना दे तो वह हमारी आशिष के लिये ही है, हमें अधिक पवित्र करने के लिये और हमारे अन्दर उसका प्रेम अधिक उण्डलेने के लिए ही है। रहस्य मात्र यह है कि परमेश्वर की वाणी सुन और उसके अधीन हो।

आपके शान्त मनन के समय में या प्रार्थना के समय में परमेश्वर की वाणी सुनने का रहस्य क्या आपने सीखा है? यदि नहीं तो प्रभु से कहें, "अपनी वाणी सुनना मुझे सिखा दे। अपने मार्ग और अपने संकल्पों को मुझे बता दे"। बाद में जैसे-जैसे उसके अधीन होते जायेंगे वैसे-वैसे हमें ज्यादा समझ प्रदान किया जायेगा। (यूहन्ना 7:17)। बाद में हम प्रभु से पूछ सकते है, "तेरे घर के निर्माण कार्य में मेरा क्या हिस्सा है"? वह आपको शक्ति दे और आपके हिस्सा लेने में सहायता करे इसके वास्ते प्रार्थना करें? आपकी सेवा संसारी घर में नहीं परन्तु परमेश्वर के घर में है ऐसा विश्वास करें। उसका संकल्प पूरा होने के लिये हम सबकी जरूरत है। इसीलिए विश्वासियों को संगति में रहना अत्यन्त आवश्यक है।

नवम्बर 23

उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

1 यूहन्ना 1:7

कई बार हम प्रगट में सुसमाचार प्रचार के लिऐ जाते हैं तब लोग हमारा मजाक उड़ाते हुए कहते हैं, "हमें परमेश्वर को देखना है। अपने ईश्वर को दिखाओ, उसके बाद हम उस पर विश्वास करेंगे"। वे यह नहीं समझते कि वे परमेश्वर को देखे इसके पूर्व उनके मन शुद्ध होने चाहिये। परमेश्वर का वचन कहता है, "धन्य है वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे"। एक क्षण, एक मिनट या एक घंटे के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर को उसके पूर्ण महिमा में देखेंगे और उसके बहुत करीब रहेंगे।

1 यूहन्ना 1:7 में परमेश्वर का वचन कहता है कि यीशु मसीह का लहू हमें शुद्ध करता है। इस बात को मुझे समझने दीजिये। हमारी आँख को इस रीति से बनाया गया है कि धूल का कण या छोटे से छोटा दूसरा कुछ भी उसमें गिरे तो आँख में से पानी निकलता है और पलकें फड़फड़ाने लगती है, जब तक कि वह कचरा निकल न जाए। इस रीति से आंख का डेला सदा स्वच्छ रहता है। इसी रीति से लहू हमें शुद्ध करता है। हम देखते हैं कि एक या दूसरा बुरा विचार हमारे मन में आता है, प्रभु यीशु मसीह के लहू के सिवाय ये विचार दूर नहीं होंगे।

जब हम विश्वास से कहते हैं, "हे प्रभु, मुझे शुद्ध करें" और तुरन्त ही हमें शुद्ध किया जाता है। प्रभु ऐसा नहीं कहता कि "अभी मुझे समय नहीं है। मैं कल आकर वह काम करूंगा" इसके विपरीत वह ऐसा कहता है, "मुझे पुकार और मैं तुझे उत्तर दूंगा। हम शुद्ध हुए है इसे हम किस रीति से जान सकते हैं? यूहन्ना 4:24 के अनुसार "परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसका भजन करें"। हमारे आत्मा में हम शुद्ध होते हैं उसके बाद हम परमेश्वर को पहचान सकते हैं, देख सकते हैं और उसके साथ रह सकते हैं।

नवम्बर 24

उन्होंने स्तिफनुस नाम एक पुरुष को... चुन लिया।
प्रेरितों. 6:5

पवित्र-आत्मा की अगुवाई के अनुसार मण्डली ने स्तिफनुस को चुन लिया। उन्होंने मत लेकर नहीं परन्तु सर्वानुमती से एक मन के होकर चुन लिया। स्तिफनुस नाम अर्थ 'मुकुट' होता है और जो कि इस पुरुष की आयुष्य कम होने के बाद भी वह कैसा जयवन्त था। अचानक ही एक प्रकाशित चमकते हुये तारे के समान वह दिखाई देता है और मृत्यु की घड़ी में प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते हुये वह प्रथम शहीद बनता है।

स्तिफनुस के समान बनने के लिये एक आवश्यकता यह है कि सत्ता या स्थान की खातिर काम न करना। वह मान और स्थान के लिये काम नहीं करता था, परन्तु शांत रीति से और प्रेमपूर्वक काम करता था। हमारी सेवा कैसी भी हो, छोटी हो या बड़ी, हरेक के लिये हमें पवित्र-आत्मा के अभिषेक की जरूरत है। चाहे घर की रखवाली करनी हो, भोजन परोसना हो, चटाई बिछानी हो या उसी के समान कोई भी दूसरा काम परमेश्वर के घर में हो, परन्तु उसके लिये हमें अभिषेक की जरूरत है, ज्ञान तथा पवित्र-आत्मा से भरपूर होने की जरूरत है। हमें मनुष्यों की ओर से महिमा खोजने की जरूरत नहीं। मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर के लिये है। ऐसा समझ कर हमें सब कुछ करना चाहिये। स्तिफनुस की उत्कंठा इतनी थी कि परमेश्वर को प्रसन्न करे। उसका जीवन जयवंत था। परमेश्वर के अधीन होना उसने पसंद किया। इसलिये वह पवित्रआत्मा तथा ज्ञान, विश्वास और सामर्थ से भरपूर था। परमेश्वर के द्वारा जो चुने हुए है उनका यह हक है।

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की उत्कंठा यदि आपके हृदय में हो तो परमेश्वर की उपस्थिति में ठहरे और आप देखेंगे कि उसकी अपनी रीति के अनुसार वह आपके हृदय की इच्छा पूरी करेगा। आपकी आशायें पूर्ण हो इसके लिये चिल्लाने की या लड़ने की जरूरत नहीं। परमेश्वर की आज्ञओं का पालन करें, उसके वचन को मानें और उसे अपने हृदय में ग्रहण करें तो आप देखेंगे कि जिन सद्‌गुणों की उत्कंठा आप रखते थे, वो आपके जीवन में प्रगट होंगे और आप उसके पसंद किये हुए पात्र बनेंगे।

नवम्बर 25

...चार जीवनधारियों....हर एक के चार-चार मुख....और जीवनधारियों के रूप अंगारों और जलते हुये पीतल के समान दिखाई देते थे। यहेजकेल 1:5,6,13

पहले, मनुष्य का मुख यह स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु मनुष्य बना। जो राजाओं का राजा था वह हमारे बदले में निर्बलता में मृत्यु पाया। इस प्रकार हमें नम्र होकर उसके पास से नम्रता सीखनी है। प्रभु के क्रूस को हमारे अन्दर गहरा कार्य करना चाहिये, क्योंकि तब ही हम परमेश्वर की मनसाओं के साथ एकरूप हो सकते हैं।

दूसरे करूब या जीवधारी का मुख सिंह का सा था। मसीह राजा की रीति से आया। एक दिन उसका राज्य पृथ्वी पर आने वाला है। अभी हम उसके साथ हरेक बात में एक रूप होंगे, जब वह न्याय करने और राज करने आयेगा तब हम उसके साथ होंगे।

तीसरे जीवधारी का मुख बैल का सा था। लेवीय होमबलि, मेलबलि और पापबलि के लिये बैल का उपयोग करते थे। प्रभु यीशु मसीह आपके बदले में आपके पाप और बोझ को उठा लेने वाला बनकर मरण हुआ। (भार) उठाने के लिये बैल का उपयोग करते हैं। आप अपना बोझ उठा नहीं सकते। परन्तु यदि आप प्रभु को छूट देंगे तो वह उठा सकेगा। यदि अभी तक आप अपना बोझ और चिन्ता उठा रहे हो तो प्रार्थना करें और जब तक आपके सभी बोझ उसके ऊपर न डाल दें तब तक प्रार्थना चालू रखें। बाद में आपको मालूम होगा कि उसकी ओर से आपको कितना बल मिलता है।

अन्तिम जीवधारी का मुख उकाब पक्षी का सा था। उकाब पक्षी जल्दी वृद्ध नहीं होता। वह सनातन यौवन की प्रति-छाया है। (भजन संहिता 103:5, यशा. 40:31)। इसका अर्थ यह है कि जब हम प्रभु यीशु मसीह के साथ उसके स्वर्गीय कार्य में एकरूप होते हैं तब हमें निरन्तर बल प्रदान किया जाता है। हम मर जायें तब भी प्रभु यीशु के नाम में हमने जो कार्य किये हैं, वह पूर्ण होने तक आगे बढ़ेंगे। यदि वह प्रभु यीशु मसीह के सामर्थ से प्रारंभ हुआ हो तो वह आगे बढ़ेगा, उसका अन्त नहीं आयेगा।

और हमें कहा गया है कि इन जीवधारियों का दिखना, "अंगारों और जलते हुए पीतल के प्रकाश के समान था"। पवित्र-आत्मा में अग्नि

न्याय-दण्ड को सूचित करता है, यहाँ हमारे लिये गंभीर चेतावनी है। हमारे अपने मनुष्य के प्रयत्न क्या है, और आत्मा की प्रेरणा क्या है, उसे परखना व सीखना चाहिये। मनुष्य के प्रयत्नों का सब कुछ न्याय के दिन जल जायेगा, परन्तु जो स्वर्गीय और साधनों से प्रारंभ होकर आगे बढ़ा है वहीं परमेश्वर के समक्ष स्वीकार हो सकेगा। हमारी शक्ति, पैसे, समय को हमें कितना सम्भालना, क्योंकि प्रभु हमारे सब कामों को अग्नि से परखने वाला है। जिसको पवित्र-आत्मा प्रेरणा देती है, वह सदाकाल तक टिकेगा। परन्तु मनुष्य को उत्साह से जो प्रारंभ हुआ है, वह थोड़े समय में पिघल और घट जायेगा। तो हम जलते, चमकते, अग्नि जैसे हो, और प्रभु ऐसी ही सेवा को स्वीकार करता है।

नवम्बर 26

मनुष्य और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है। और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई सिखाए, वरन जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है और यह सच्चा है और झूठा नहीं, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।
1 यूहन्ना 2:27

पवित्र-आत्मा का एक नाम अभिषेक है। हम जानते हैं कि अंत के दिनों में हमें भरमाने के लिये अनेक झूठे नबी उठ खड़े होंगे। "क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूँ और बहुतों को भरमाएंगे"। (मत्ती 24:5)। इसी रीति से 2 कुरिन्थियों 11:13-15, क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और छल से काम करनेवाले और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं। और वह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरे, तो कुछ बड़ी बात नहीं परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

अंत के दिनों में अनेक झूठे नबी उठ खड़े होंगे। परन्तु हमें पवित्र-आत्मा का अभिषेक दिया गया है जिसके द्वारा उनसे हम बच सकते हैं। यह मेरा अनुभव है। विनिपेग, केनेडा में मेरे परिवर्तन होने के बाद वहाँ वाई.एम.सी.ए. में रहनेवाला मैं अकेला ही सिख में से आया हुआ मसीही था। उस समय अनेक लोग प्रतिदिन मुझसे मुलाकात के लिये आते थे। वे मरे प्रति बहुत प्रेम दिखाते और मुझे उनके घर भी ले जाते। परन्तु मेरा आत्मा मुझसे कहता, "उन पर भरोसा न रख, वहाँ कुछ गलत है"। और इस रीति से परमेश्वर ने मुझे अनेक गलत शिक्षणों से बचाया। उनके पास अनेक अच्छी किताबें थी और वे बहुत ही प्रेम दिखाते थे। परन्तु मुझे महसूस होता था कि उनमें कुछ गलत था और इस रीति से इन सब वर्षों में परमेश्वर ने मुझे गलत शिक्षण से बचाया है। आप यदि पवित्र-आत्मा को आपके ऊपर पूरा कब्जा होने दे तो वह आपको झूठे उपदेशकों से बचायेगा क्योंकि कोई-कोई ऐसे चालाक होते हैं कि वे क्या सिखाते हैं और क्या पालन करते हैं, उसे आप अपने आप कभी भी जान नहीं सकेंगे। हमारी सुरक्षा और रक्षा के लिए परमेश्वर द्वारा हमें दिये गये पवित्र-आत्मा के लिये उसकी स्तुति हो।

नवम्बर 27

जब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूँ जो.... इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं? निर्गमन 3:11

मूसा ने मिस्त्र में उच्च शिक्षा (तालीम) प्राप्त किया था और सभी सुख सुविधाओं में वह पला था, परन्तु अब वह फिरौन के पास इस्त्राएलियों को जाने देने की अनुमति मांगने के कठिन काम से डरता था। यह तो मानवीय स्वभाव है कि कठिनाइयों से भरे काम से खुद को दूर रखना और सच्ची जिम्मेदारियों को उठाने से डरना। लोगों को गीत गाना और अच्छे भाषणों को सुनना पसन्द है परन्तु किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी उठाने की इच्छा वे नहीं रखते।

परमेश्वर ने मूसा को वचन दिया 'निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा।' (पद 12) अपनी लाचार हालत के विषय सोचकर "मैं कौन? ऐसा कहने की उसे जरूरत नहीं थी, मिस्त्र में से वह भाग इसके पूर्व वह समझता रहा कि फिरौन के वास में से इस्त्राएलियों को छुड़ाने की जिम्मेदारी उसके ऊपर ही थी। उस वक्त वह खुद सम्पूर्ण रीति से भरोसा रखता था। अब वह खुद को एक चरवाहा या जंगल का मनुष्य समझता था। परमेश्वर किसलिये उसे ऐसा कठिन कार्य देना चाहता था यह उसे समझ नहीं आ रहा था। उसकी ऐसी नम्रता देखकर परमेश्वर कहता है, "निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा"। हरेक प्रकार की जिम्मेदारी परमेश्वर को उठानी थी। परमेश्वर हमको ऐसा काम सौंपे जिसके लिये हम खुद को पूरी रीति से निर्बल और अयोग्य समझें पर यदि वह हमारे साथ हो तो वह काम सफलतापूर्वक पूरा करने के लिये परमेश्वर हमारा इस्तेमाल करेगा। परमेश्वर मूसा को मदद करने के लिये शक्तिशाली या योग्य व्यक्तियों को या दूतों को भेजने वाला नहीं था। स्वयं परमेश्वर उसके साथ रहनेवाला था। यह सबसे श्रेष्ठ था।

नवम्बर 28

न तो बल से और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। यशायाह 4:6

प्रभु यीशु मसीह पवित्र-आत्मा के द्वारा जन्मा मानवीय कार्य द्वारा नहीं। इसी रीति से हम भी पवित्र-आत्मा के द्वारा नया जन्म प्राप्त करते हैं। मानवीय आज्ञा या समझ के द्वारा नहीं। हम चाहे कितने ही भाषण सुनें परन्तु वे हममें उद्धार का कार्य नहीं कर सकते। पतरस तीन वर्ष तक प्रभु यीशु के संग रहा, कैसा अधिकार। वह सब कुछ छोड़कर प्रभु यीशु के पीछे हो लिया था, उसके प्रत्येक आश्चर्यकर्म उसने देखा था और उसने उसके हरेक सन्देश को सुना था। फिर भी जब उसने कहा कि, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है", (मत्ती 16:16,17)। प्रभु ऐसा कह रहा था कि शमौन, तू ऐसा न समझ कि मेरे आश्चर्यकर्म देखने के द्वारा या तेरी अपनी समझ के द्वारा तू मुझे पहचाना, ऐसा नहीं परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने तुझ पर यह प्रगट किया है।

जब तक पवित्र-आत्मा सहायता न करे तब तक हम कोई भी प्रभु यीशु मसीह को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में पहचान नहीं सकते। संदेशों द्वारा या मानवीय कार्यों द्वारा या तर्क-वितर्क अथवा वाद-विवाद द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं होता, यह तो ईश्वरीय प्रकाश के द्वारा पवित्र-आत्मा का कार्य है। केवल उसी के द्वारा ही मैं समझ सकता हूँ कि वह व्यक्तिगत रीति से मेरे लिये मरा। इस व्यक्तिगत प्रकाशन के द्वारा सुसमाचार का कार्य प्रारंभ हुआ और संसार के अनेक हिस्सों में फैलता गया। आप वर्षों तक किसी के साथ दलीले ही देते रहें और फिर भी परिणाम कुछ भी न निकलेगा। परन्तु आप प्रार्थना करना प्रारभं करते है तब कुछ होने की संभावना शुरू होती है।

लोगों के लिये और उनके उद्धार के लिये प्रार्थना करना हम न सीखें तब तक वे उद्धार नहीं पायेंगे। हम कई बार विचार करते हैं सांसारिक पद्धतियों, समझदारी, अच्छे सन्देश और संगीत के द्वारा हम कई आत्माओं को बचा सकेंगे। यह सिर्फ धोखा है। परमेश्वर का सही काम पवित्र-आत्मा द्वारा होता है। हम चाहे कितने ही होशियार हों तौभी पवित्र-आत्मा को अलग (पृथक) नहीं रख सकते। 1 कुरिन्थ 12:3 कहता है, इसलिये मैं तुम्हें चितोनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है, और न कोई पवित्र-आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है। उद्धार के लिये यह अति महत्त्व का सत्य है। माता-पिता प्रार्थना कर सकते हैं, "प्रभु, मेरे भाई को मेरी बहन को, मेरी पत्नि को मेरे पति को अथवा मेरे बालकों को बचाइये"। आपके विश्वास के द्वारा परमेश्वर उनके हृदयों में पवित्र-आत्मा को भेज सकता है। उसके बाद वे वृद्धि पायेंगे और कैसी भी कसौटी या सतावों को सहने के लिये तैयार होंगे।

नवम्बर 29

मैं तुझसे प्रेम रखता हूँ, इस कारण मैं तेरी शान्ति मनुष्यों को दूँगा।
यशायाह 43:4

जब-जब हमको जरूरत होगी तब-तब उपदेशकों और सेवकों को भेजकर परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। कितनी अचरज की बात है कि प्रभु संसार के अनेक हिस्सों में से सेवकों को हमारे पास भेजता है। हमें प्रोत्साहित करने के लिये, चेतावनी देने के लिये और उससे दूर चले जाने से बचाने के लिये प्रभु, संसार के अनेक भागो में से कितने ही सेवकों को हमारे पास भेजता है। अनेक कसौटियों और कष्टों के द्वारा उन्हें तैयार किया जाता है, और उनके जीवन तथा सेवा द्वारा हाल में हम लाभ उठा रहे हैं।

इसी रीति से दुनिया के अनेक भागों में से लोग हमारे लिये प्रार्थना कर रहे हैं। अनेक देशों में मुझे कई ऐसे लोग मिले हैं जिन्होंने मुझसे कहा, "कि लम्बे समय से हम आपके लिये और आपकी सेवा के लिये प्रार्थना कर रहे हैं"। यह सुनकर मुझे आश्चर्य होता है। जगह-जगह में परमेश्वर की प्रजा की प्रार्थना में हमें उठाये रखा जाता है और इस रीति से अनेक खतरों से हमारा बचाव होता है, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में हम मूल्यवान है। कोई बच्चा गंदा दिखता हो तो तुरन्त ही उसकी माँ उसे उठा लेती है और बारम्बार उसे धोती है। काकी मामी ऐसा नहीं करेंगे। वे ज्यादा से ज्यादा एक या दो बार वैसा करेंगे और बाद में बच्चे को मां से कहेंगे कि वे इस जिम्मेदारी को उठा नहीं सकती। केवल माता ही यह सहन कर सकती है। प्रभु हमसे कहता है कि "तू मेरी दृष्टि में अनमोल है"।

मार्था और मरियम लाजर के लिये रो रही थी और प्रभु से कह रही थी कि "प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता"। प्रभु यीशु जब कब्र के पास आया तब उसने कहा, "पत्थर को उठाओ"। प्रभु तो कब्र के समीप खड़ा था, परन्तु बहने दूर खड़ी रहीं। वे दुर्गन्ध को सह नहीं सकीं। लाजर के शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी और उसकी अपनी बहनें कह रही थी कि, "प्रभु उसमें से अब तो दुर्गन्ध आती होगी, कृपा करके पत्थर हटाने के लिये मत कहना"। तो भी प्रभु यीशु अभी भी लाजर से प्रेम रखता था। हमारी मूर्खता को केवल प्रभु यीशु ही सह सकता है, हमारे मित्र सह नहीं सकते हैं। वे हमें ठट्ठों में उड़ा सकते हैं परन्तु प्रभु की दृष्टि में हम अत्यन्त कीमती हैं और हमारे नुकसान को समेट लेने में मदद के लिये प्रभु ने हरेक प्रबन्ध किया है।

नवम्बर 30

क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसको पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है... पर यह तो हमारे लाभ के लिए (ताड़ना) करता है। इब्रा. 12:6-10

प्रभु यीशु पिता की नाई मुझसे दिव्य प्रेम करता है। उसके दर्जे तक मुझे पहुंचाने के लिये आवश्यकता है कि वह मुझे उलाहना दे और ताड़ना करे। किसलिये आप अपने बच्चों को शिक्षित करते हैं? जब उनका व्यवहार ठीक नहीं होता तभी आप उनकी ताड़ना करते हैं जिससे वे आपके दर्जे तक पहुंच सके। आप कहते हैं, "तुम मेरे बेटे हो। तुम मेरे बच्चे हो। तुम्हें योग्य व्यवहार करना ही पड़ेगा। कठिन मेहनत करके तुम्हें अच्छे मार्क लाने ही पड़ेंगे"। परमेश्वर कहता है, "तुम मेरे बच्चे हो, और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे दर्जे तक पहुंचो, जिसे तुम मेरे संग मेरे राज्य में आ सको"। इसी कारण से हमारी ताड़ना करनी पड़ती है और हमें कोड़े मारने ही पड़ते हैं।

"जैसे माता अपने पुत्र को शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति दूंगा। तुम को यरूशलेम ही में शान्ति मिलेगी"। (यशायाह 66:13)। प्रभु यीशु मसीह माता की नाई हमसे प्रेम करता है। बालक को किस रीति से मारना है यह पिता जानता है, उसके लिये कैसी रसोई तैयार करनी है यह माता जानती है। माता जो कर सकती है उसे पिता नहीं कर सकता। एक दवाखाने में एक जवान बहुत गंभीर बिमारी से फंस गया था। उसकी माँ उसे देखने आई। मानो बेहोशी में हो ऐसी दशा में वह सो रहा था। माँ ने आकर उसके हाथ पकड़े। तुरन्त ही जवान ने कहा, "माँ तुम आ गई हो"? उस जवान को स्पर्श से ही यह मालूम पड़ गया कि यह उसकी माँ का हाथ था, नर्स का हाथ नहीं। परमेश्वर कहता है, "मैं तुम्हारी ताड़ना करूंगा, साथ ही साथ शान्ति भी दूंगा। मैं दोनों काम करूंगा"। जब-जब हम दुःखी, अकेले हताश और निराश होते हैं, तब-तब परमेश्वर के प्रेम की ऊष्मा हमें दी जाती है, "मेरे बेटे, मैं तेरे संग हूँ, छोडूँगा नहीं, न ही त्यागूंगा। ढांढ़स रख, उदास मत रह"। माँ की तरह वह हमको शान्ति देता है पिता के समान वह हमें ताड़ना देता है।

दिसम्बर 1

मै निश्चय तुझे आशीष दूंगा।
उत्पत्ति 22:17

यहोवा परमेश्वर ने इब्राहीम को सात प्रकार की आशीषें देने की प्रतिज्ञा की थी (उत्पत्ति 12:2-3), परमेश्वर का मित्र होने की चाह रखने वाले हरेक के लिये ये आशीषें रखी गई है।

1. "मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊंगा। पहले हम उद्धार पाये, उसके बाद हमारे द्वारा दूसरे उद्धार पायेंगे और उनके द्वारा दूसरे कितने ही उद्धार पायेंगे। हमारी प्रार्थनाओं, गवाही प्रेम भरी सेवा द्वारा और दूसरे अनेक रीतियों के द्वारा बहुतेरे लोग उद्धार पायेंगे। इस प्रकार हम सब परमेश्वर के सदस्य बनेंगे"।
2. "मैं तुझे आशीष दूंगा"। हम प्रतिदिन परमेश्वर पिता की ओर से सभी प्रकार की सनातन और विशेष आशीष प्राप्त करते जाते हैं उसकी ओर से प्राप्त हुई नये जीवन के कारण से तथा उसके प्रेम के कारण हमको सनातन शान्ति, अन्नतकालिक प्रेम और मित्रता प्राप्त होती है।
3. "तेरा नाम करूंगा"। इस संसार में मनुष्य ने कैसी भी ख्याती प्राप्त की हो तो भी उसकी मृत्यु के बाद उसे सहज रीति से भूला दिया जाता है। परन्तु नया जन्म प्राप्त किया हुआ प्रत्येक व्यक्ति, जो प्रभु यीशु मसीह की सम्पत्ति है, उन प्रत्येक को मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में राजा तथा याजक के रूप में स्वागत किया जाता है।
4. "तू आशीष का मूल होगा"। हमारे द्वारा अन्य लोगों को सांत्वना, बल और प्रोत्साहन मिलेगा।
5. "जो तुझे आशीर्वाद दे, उन्हें में आशीष दूंगा"। क्या ही स्पष्ट शब्द। प्रभु अक्षरश उसे पूरा करेगा।
6. "जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा"। वह हमारे विरुद्ध दुश्मन के किसी भी हथियार को प्रबल नहीं होने देगा।
7. "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पायेंगे"। यह वचन सूचित करता है कि संसार के सभी लोगों के लिए हमारे पास संदेश है। प्रभु हमें किसी भी जगह लज्जा जायें तो भी हम वहाँ प्रभु का शुभ सन्देश और उपदेश दे सकेंगे। जो पुरानी मित्रता, पुराने संबंध और पुरानी संगति से खुद को पृथक रखने को तैयार हों, उन सब के लिये ये सात प्रकार की आशीषें प्रभु ने रखी है।

दिसम्बर 2

...यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है... जयवंत हुआ है। प्रका. 5:5

विश्वासी होने से हमें युद्ध लड़ने पड़ते हैं, संसार में जो बुराई है उसके सामने और आसमानी स्थानों में दुष्टता के आत्मिक सेना के सामने जिस रीति से दाऊद ने गोलियत को हराया उसी रीति से हमारे प्रभु यीशु मसीह ने दुश्मन को पूरी रीति से पराजित किया है। चालीस दिनों तक प्रभु यीशु की परीक्षा की परन्तु अन्त में गोलियत के समान ही शैतान पराजित हुआ। शाऊल और उसकी सेना की हालत बहुत ही लथड़ा गई थी। उसी समय एक जवान युद्ध भूमि पर आया। उसके पिता ने अपने एकलौते पुत्र को इस संसार में भेजा, पर "उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। दाऊद को आते हुए देखकर गोलियत ने उसका तिरस्कार किया। उसी रीति से शास्त्रियों और फरीसियों ने क्रूस पर चढ़ाये गये प्रभु का तिरस्कार करते हुये कहा, "उसने दूसरों को बचाया पर खुद को बचा नहीं सका"। गोलियत को पराजित करने में दाऊद ने पालिस्तियों की पूरी सेना को हराया। इसी रीति से प्रभु यीशु ने क्रूस पर शैतान को हराया है और उसी क्षण से उसकी सेना भी हारी हुई है।

दाऊद अकेला ही लड़ा परन्तु जय सबको प्राप्त हुई। चालीस दिनों से जो भय के मारे थरथराते थे वे हिम्मत से शत्रु की सेना पर चढ़ आये। निर्बल से निर्बल सैनिक भी बलवन्त हुआ। एक मरा, इसलिये सब मरे"। कैसा मर्म है एक के विजय होने से सभी विजयी हुए, एक के पराक्रम से सभी पराक्रमी बने। क्या आप प्रभु यीशु के साथ एकरूप हो गये हैं? उसके विजय से विजयी होकर दुश्मन को भगाने का अनुभव प्रतिदिन आपको मिल सकता है।

हम सांसारिक हथियारों से दुश्मन को हरा नहीं सकते। अंधकार की शक्तियों को हारने के लिये हमें आत्मिक हथियारों की जरूरत है। प्रेम, शान्ति, धीरज के गुणों से शैतान को पराजित कर सकेंगे। पवित्र और शुद्ध जीवन से हम जयवंत होंगे। सबसे बड़ा हथियार परमेश्वर ने हमें स्तुति का दिया है, प्रतिदिन सुबह पंद्रह मिनट तक प्रभु द्वारा तुम पर किये हुए उपकारों को याद करके स्तुति करें, तो प्रभु आपकी कैसी भी मुसीबतों को दूर करेगा। निर्गमन 14:14 में परमेश्वर का वचन कहता है, "यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो"।

दिसम्बर 3

यहोवा की बाट जोहता रह, हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे, यहोवा ही की बाट जोहता रह। भजन. 27:14

प्रभु का स्वर्गारोहण हुआ इसके पूर्व उसने शिष्यों को आज्ञा दी कि, "पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो"। (प्रेरितों के काम 1:4) उन्हें परमेश्वर के समय की बाट जोहनी थी। इसी रीति से जंगल में परमेश्वर की प्रजा को परमेश्वर की अगुवाई के लिए बाट जोहनी पड़ती थी। जब तक बादल न उठे तब तक वे यात्रा कर नहीं सकते थे। वे अपनी योजना नहीं बना सकते थे। विजयी जीवन एवं फलवन्त सेवा के लिये यह बड़ा रहस्य है। व्यवसाय या आत्मिक प्रवृत्तियों में परमेश्वर के समय की बाट जोहें। उसके बाद परमेश्वर की सेवा में हमें शान्ति का अनुभव होगा।

हमें पूरी रीति से पवित्र-आत्मा के अधिकार में रहना चाहिये और उसकी ही अगुवाई में चलना चाहिये। बहुतेरे लोग यह साबित नहीं कर सकते कि परमेश्वर की इच्छा को उन्होंने किस रीति से खोजा। "परमेश्वर ने मुझसे बात की" इतना कहना ही काफी नहीं है। परमेश्वर किसी भी समस्या या बात के विषय में यदि हमारे साथ बात की हो, तो परमेश्वर के वचन द्वारा कब और किसी रीति से उसने कहा उसे हमें साबित करने के लिये शक्तिमान होना चाहिये।

हमारी सभी परिस्थितियों का नियंत्रण हमें परमेश्वर को सौंपना चाहिये। वह सर्वसत्ताधीश है। अपनी योजना में वह किसी को भी दखल करने नहीं देगा जैसे-जैसे हम उसके आधीन होते जायेंगे वैसे-वैसे हम उसकी योजना में आते हैं। हमारा जीवन पहाड़ी मार्गो जैसा है, सपाट मार्गो के समान नहीं। सपाट भाग के ऊपर हम लम्बी दूरी तक देख सकते हैं। पहाड़ी मार्ग के ऊपर मोड़ होते हैं जिससे थोड़ा ही रास्ता दिखाई देता है। इसी रीति से प्रभु हमें एक साथ कई बातें बताता नहीं है। परमेश्वर ने जब शमूएल से कहा कि "यिशै के घर जा तब वह कह सकता था कि दाऊद का अभिषेक करना" परन्तु परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया। यिशै के सभी पुत्रों को देखने के बाद शमूएल परमेश्वर के मन (जो उत्तम विचार है) को पूरा किया।

दिसम्बर 4

पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है। प्रका. 2:4

किसी विश्वासी में ऐसे सारे गुणों से भरपूर लोग इफियुस में थे। वे पवित्र-शास्त्र के ज्ञान में खरे, बहुत उत्साही लोग, गलत सिद्धान्त को बिल्कुल चला न लेने वाले और धीरजवंत थे, परन्तु प्रभु कहता है, "मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है"। हममें से बहुतेरे लोग कठिन हृदय के विश्वासी बन जाते हैं। हम विश्वासी हैं, हमारे उद्धार के विषय किसी को प्रश्न या सन्देह नहीं है, हमारे सिद्धान्त में भी कोई प्रश्न करे ऐसा नहीं है। हम ऐसे तो सच्चे, सही और बराबर है, परन्तु हममें प्रेम नहीं।

क्या आप सच्चाई से कह सकते हैं, कि जिन दिनों में उद्धार पाये उस समय प्रभु यीशु मसीह बाइबल और परमेश्वर के लोगों के लिये जो प्रेम आपके हृदय में थे क्या उससे भी अधिक आज है? प्रभु यीशु मसीह के प्रति प्रेम रोज व रोज कम नहीं, परन्तु ज्यादा और ज्यादा गहरा और शुद्ध होना चाहिये।

यदि लोग हमें धिक्कारें, तो हम उनके लिये प्रार्थना कर सकते हैं, यदि वे श्राप दें तब हम उन्हें आशीष दे सकते हैं। यदि वे हमें नकारते हैं तो याचना कर सकते हैं। यह तो आत्मिक प्रेम का अनुभव है, जो सनातन और धीरजवन्त है। कुलुस्सियों 3:12-14 के अनुसार परमेश्वर हमारे पास से आत्मिक प्रेम मांग लेता है। इसमें किसी प्रकार का बहाना नहीं चल सकता। यदि हम स्वर्गीय मीरास चाहते हैं तो, मात्र कभी-कभी ही नहीं। परन्तु हमें सदैव प्रेमी, दयालु, नम्र, दीन और सहानुभूति पूर्ण होना पड़ेगा। जब हमें लगे कि हमारा हृदय कठोर है तब प्रार्थना करनी चाहिये, "प्रभु, मेरे हृदय को नम्र बनाइये"। केवल प्रार्थना द्वारा ही हमारे हृदय कोमल प्रेमी और दयालु रहेंगे। परमेश्वर के वचन के अनुसार यह ईश्वरीय दान प्राप्त हो सकता है। यदि परमेश्वर ने हमें क्षमा किया हो तो क्यों न हम दूसरों को क्षमा करें।

प्रभु कहता है कि, "यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा"। कैसी गंभीर शिक्षा है। इसका अर्थ यह है कि प्रभु हमारा उपयोग कर नहीं सकता। वह लोग हममें दिव्य ज्योति को देख नहीं सकते। हम आत्मिक रीति से निष्फल बन जायेंगे। कृपा करके चेतावनी पर ध्यान दें, हमें किस रीति से कठोर हृदय का बनाना है इसे शत्रु जानता है, जिससे हमें क्षमा करना एवं भूल जाना यह कठिन लगता है। बाइबल के लिये, प्रभु यीशु मसीह के लिये और परमेश्वर के लोगों के लिये हमारे हृदय में पहला प्रेम है इसको हमारी खातिर होना चाहिये।

दिसम्बर 5

यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। रोमियों 8:9

बाइबल के अनुसार एक मसीही की यह सरल एवं सादी व्याख्या है। जिनके अन्दर प्रभु यीशु का आत्मा वास करता है वह मसीही है। प्रभु जो कुछ देता है वह अनन्तकाल के लिये देता है। यदि वह आनन्द देता है तो वह सदाकाल का आनन्द है। यदि वह राज्य देता है तो वह अनन्तकालिक राज्य देता है। यदि वह प्रेम करता है तो वह सनातन प्रेम है। हमारी मीरास सनातन काल के लिये है और प्रभु के साथ रहने के लिये हमें अनन्त जीवन की जरूरत है।

सर्वप्रथम खुद को, जैसे हैं वैसे ही देखें और झूठे स्वांग (द्वेष) के नीचे न रहें। हमें भरमाने के लिये शैतान जितना संभव हो उतना ही ज्यादा प्रयत्न करेगा। हम कहते हैं, कि मैं इतना अधिक बुरा नहीं हूँ। हम एक पाप करें या एक हजार पाप करें परिणाम एक ही होता है। आप विष का एक बूंद पीयें या गिलास भर कर पीयें, आप अवश्य मरेंगे ही। किसी घाव में गंदे हाथ का स्पर्श लगने से मृत्यु हो जाती है। इसी रीति से, एक पापी विचार या कल्पना हमें अशुद्ध करके समस्त जीवन को अपवित्र कर सकती है। और इस प्रकार परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के वास्ते हमें अयोग्य बना सकती है। परन्तु प्रभु की स्तुति हो, हमारे पाप क्षमा हों और हमारे जीवन संपूर्ण रीति से बदल जाएं इसके लिये एक मार्ग है, "यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है"।

कोई भी मनुष्य, नाम से मसीही होने के कारण परमेश्वर के राज्य में जाने के योग्य नहीं होता। मत्ती 7:21-22 पढ़ें और प्रभु जो उत्तर देता है उसे ध्यानपूर्वक देखें। "तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना है, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ"। (पद 23) कैसी करूण दशा। कैसी गम्भीर चितावनी। उस दिन बहुतेरे कहेंगे, "हमने तेरे नाम से अद्भुत सन्देश दिये थे, हमने तेरे नाम से बहुत पैसे दिये थे"। परन्तु प्रभु कहेगा, "मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।" कैसी गंभीर चेतावनी है और ये शब्द मेरे नहीं है। जब तक हम मसीह के साथ जुड़कर उसके भागीदार न हो जाएं और उसका जीवन हममें बहने न लगे तब तक परमेश्वर के राज्य में न तो हमारा हिस्सा है और न ही भाग है।

दिसम्बर 6

जो दुःख तुझ को झेलने होंगे, उससे मत डर, क्योंकि देखो, शैतान तुममें से कितनों को जेल-खाने में डालने पर है तो कि तुम परखे जाओ और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। प्रकाशितवाक्य 2:10

प्रभु यीशु हमसे ऐसा नहीं कहता कि वह हमारे दुःखों को ले लेगा, या उन्हें कम या हल्का करेगा: यदि हम आनन्द-पूर्वक दुःख (क्लेश) सहेंगे तो वह हमें प्रतिफल देगा। (1पतरस 4:12) प्रेरितों. 5:41 वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे। शिष्यों को धमकी दिया गया और उन्होंने दुःख उठाया तो भी वे प्रभु के आभारी थे।

प्रभु के अनुसार दुःख सहना यह एक मान एवं हक है, हम उसमें से बच नहीं सकते। "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं हो सकता और न दास अपने स्वामी से। चेलों का गुरु से और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है, जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे? (मत्ती 10:24,25)। हम जो सह रहे हैं, उस प्रभु द्वारा हमारे खातिर झेले हुए उसके दुःखों के साथ करना उचित नहीं। निदान जैसे-जैसे हम सहते जायेंगे। वैसे-वैसे हमारा आनन्द बढ़ता जायेगा। "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जायेंगे"। (2 तीमुथी 3:12) हमारा बड़ा हक और अनुभव यह है कि आनन्द से दुःख झेलना। (मत्ती 5:11,12)

क्या हम सच्चाई से कह सकते हैं कि प्रभु के नाम की खातिर आनन्द से हम दुःख झेलेंगे? हमें सताया ही जायेगा, पर हमारे क्लेशों में हम आनन्द करें। लोग चाहे हमें धिक्कारें, धुत्कारें और श्राप दें, पर हम उन्हें आशीष ही दें। ऐसे रुख से हम आत्मिक रीति से दृढ़ होंगे और स्वर्गीय मीरास के हिस्से को प्राप्त करने के योग्य बनेंगे।

दिसम्बर 7

तुम उसकी आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ।
इफिसियों 3:16

विश्वासी होने के नाते हम मनुष्य मात्र ही रहते हैं तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व होता जाता है। हमको नया जीवन, नई शक्ति और नये सामर्थ को रोज व रोज आवश्यकता होती है, जिससे हम परमेश्वर को परिपूर्णता से भरपूर हों। इस पृथ्वी पर हम उसका स्वाद अनुभव कर सकते हैं। जब-जब आपको लगे कि आप आत्मिक रीति से निर्बल हो गए हैं, बाइबल पर पूरा विश्वास रखना आपको कठिन मालूम पड़ रहा हो और मध्यस्थता करना भी मुश्किल लग रहा हो तब प्रार्थना करें।

हम पुनरुत्थान के सामर्थ के आनन्द को तथा परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव भोगने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं, क्योंकि पवित्र-आत्मा द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में किस रीति से बलवन्त होना है उसे हम नहीं जानते। पौलुस प्रेरित इफिसुस के विश्वासियों को कह रहा है, "मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ, जिससे तुम भीतरी मनुष्यत्व में बलवन्त होते जाओ"। जैसे-जैसे हम भीतरी मनुष्यत्व में बलवन्त होते जाते हैं, वैसे-वैसे हम परमेश्वर की सर्व सम्पूर्णता से परिपूर्ण होने के लिए लायक बनते हैं। आत्मिक रीति से खाली और उजाड़, लाचार और निर्बल जानों अब प्रयत्न करके देखें, घुटनों पर जाकर विश्वास से प्रभु से कहें, "प्रभु मुझे बहुत निर्बलता महसूस हो रही है। मेरे पास कुछ नहीं। मुझे क्या करना या क्या नहीं कहना है यह मैं नहीं जानता। मैं ठीक तरह से प्रार्थना भी कर नहीं सकता। प्रभु, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा। यह तो मेरा हक है, अधिकार है, क्योंकि मेरा दूसरा कोई नहीं जिसके पास मैं जा सकूं। कृपा करके मुझे नया बल दें। जिससे मैं आपके वचन का आनन्द भोग सकूं, आपके साथ बात कर सकूं और आपकी उपस्थिति में समय बिता सकूं। आंतरिक मनुष्यत्व में मुझे बलवन्त करें और आपनी आत्मा को मुझमें उण्डेले"। प्रभु अवश्य वैसा करेगा।

दिसम्बर 8

मुझसे कहा, तू मेरा दास इस्राएल है, मैं तुझमें अपनी महिमा प्रगट करूंगा। यशायाह 49:3

प्रभु ने आपको और मुझको माता के गर्भ में थे तब से बुलाया। हम उसके द्वारा चुने हुए हैं। (यशा. 49:1, यिर्म. 1:5, गलतियों 1:15)। हम सम्पन्न घर में जन्म लिए हों या निर्धन घर में, इसमें कोई योजना होती है। हम परमेश्वर के सेवक बनें ऐसा वह चाहता है। ये शब्द मात्र सन्देश वाहकों के लिये ही नहीं परन्तु हरेक विश्वासी के लिये है। बहुतेरे लोग उद्धार अर्थात सिर्फ पापों की क्षमा, इतना को ही समझते हैं, और जैसे कितने ही लोग नियमित सभा में आकर उनके किसी खास कोने को सम्भाल लेते हैं, वैसे ही अंत में स्वर्ग किसी कोने को प्राप्त करने में संतोष मानते हैं। परमेश्वर के कार्य में हिस्सा लेने में उन्हें जरा भी रस नहीं होता। परन्तु पवित्र-शास्त्र बहुत स्पष्ट रीति से कहता है कि प्रत्येक विश्वासी के लिये काम रखा गया है। मूर्ख या निर्बल, छोटे हो या बड़े, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परमेश्वर के कार्य में हिस्सा लेने में उन्हें जरा भी रस नहीं होता। परन्तु पवित्र-शास्त्र बहुत स्पष्ट रीति से कहता है कि प्रत्येक विश्वासी के लिये काम रखा गया है। मूर्ख या निर्बल, छोटे हो या बड़े, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका सेवक हो। हरेक विश्वासी में कोई न कोई निर्बलता होती है इसके बावजूद परमेश्वर के घर में उसके लिये कम है। परमेश्वर के घर को बनाने में हम सब बराबर हिस्सा ले सकते हैं।

यशा. 49:2 के अनुसार हम अपना मुख प्रभु के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं। जो कठिनाई में हो उन्हें मदद एवं प्रोत्साहन देने के लिए अथवा बचाने के लिए, परमेश्वर हमें उसके मुख-पात्र के रूप में इस्तेमाल कर सकता है। प्रभु का वचन देने के लिये हममें से हरेक का उपयोग हो सकता है। यदि हम अपने आप कुछ नहीं कर सकते तो हम परमेश्वर के वचन को प्रार्थना में इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि हम किसी को अकेले या निराशा में देखें तो एकान्त में उसके साथ प्रार्थना कर सकते हैं। और इस प्रकार उसे प्रोत्साहन दे सकते हैं। उद्धार पाये हुए हैं तो भी बहुतों को प्रोत्साहन और सामर्थ की जरूरत होती है। कितनी ही बार बाइबल का एक वचन देने के द्वारा सुझाव या चेतावनी दे सकते हैं और इस रीति से सभी को लाभ मिल सकता है। विश्वासी के शब्द परमेश्वर के हाथ में दिये गये बाण जैसे है जो अटकल के निशान को पहुंचता है। हमारे शब्द ऐसे होने चाहिये। हम व्यर्थ के शब्दों को कभी भी इस्तेमाल न करें। इधर-उधर जाते हैं तब गवाही के रूप में परमेश्वर के शब्दों को हम कहें। इस रीति से कई घरानों ने आशीषें पाई हैं, और वे सचमुच बदल गये हैं। कैसी भी खामी होने वाले विश्वासी भी इस रीति से परमेश्वर के साक्षी विश्वासी प्रभु के कार्य में इस्तेमाल हो सकते हैं।

दिसम्बर 9

यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है। होशे 6:3

प्रभु यीशु के चेले स्वर्ग की ओर ताक रहे थे तब दो पुरुष उनके पास आकर कहने लगे, "तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा"। (प्रेरितों. 1:11)

अपने शिष्यों को उसके दूसरे आगमन के लिये तैयार करने के वास्ते प्रभु ने बैतनिय्याह की आखिरी मुलाकात की। मैं हृदय-पूर्वक मानता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह ने उसके अनुग्रह द्वारा मुझे बचाया है। वह मेरे हृदय में आया है और मुझमें जी रहा है। यहाँ प्रभु यीशु मेरे लिये फिर से आनेवाला है। प्रभु के आगमन के लिये और उसके साथ रहने के लिये मैं तैयार हूँ लेकिन उसके आगमन के लिये मेरे पड़ोसियों, संगे-संबन्धियों और मित्रों को भी मुझे तैयार करना है। मण्डली का बड़ा काम यह है कि लोगों को प्रभु यीशु के आगमन के लिये तैयार करें।

सुसमाचारों में और पत्रियों में प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन के लिये 365 संदर्भ और 28 अध्याय है। यह महत्त्वपूर्ण घटना है। इसलिये प्रति रविवार को हम एकत्रित होते हैं, जिससे कि उसके द्वितीय आगमन के लिये हम तैयार हों। मुख्य रूप से हम संदेश सुनने के लिये या गीत गाने के लिये एकत्रित नहीं होते, परन्तु प्रभु के आने तक उसकी मृत्यु को स्मरण करने के लिये एकत्रित होते हैं (कुरिन्थियों 11:26)। प्रभु के दिन आराधना का समय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि इस रीति से हमारे हृदय शुद्ध होते हैं, सब कुछ ठीक-ठीक करने में आता है और उसके आगम के लिये हम तैयार होते हैं।

दिसम्बर 10

जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा। यशा. 62:5

जैसे अच्छी सेहत के लिये शारीरिक भोजन आवश्यक है, वैसे ही हमारे आत्मा के लिये आत्मिक भोजन जरूरी है। प्रभु यीशु मसीह के साथ संगति रखने के द्वारा इस आत्मिक भोजन को प्राप्त कर सकते हैं। इस हेतु हम व्यक्तिगत रीति से और पारिवारिक रीति से दिन का प्रारंभ नास्ता करने के पूर्व घुटनों पर रहकर परमेश्वर के वचन के साथ करना जरूरी है। हम ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं, "प्रभु हम आत्मिक और स्वर्गीय भोजन की आतुरता रखते हैं। हम आपकी वाणी सुनना चाहते हैं। कृपा करके हमारे साथ आप बात करें। ऐसी इच्छा की बात पढ़नी चाहिये। तभी तो परमेश्वर का वचन हमारे लिये आत्मिक आहार बन जायेगा। जब हम हमारे मित्रों के साथ भोजन करते हैं तब बहुत आनन्द आता है। क्योंकि संगति द्वारा भोजन और भी अधिक स्वादिष्ट हो जाता है। प्रतिदिन सुबह और शाम नियमित रीति से परमेश्वर का वचन पढ़ने के द्वारा और प्रभु की अगुवाई मांगने के द्वारा हम आत्मिक भोजन प्राप्त कर सकते हैं।

हम इन दिनों में देखते हैं कि बहुत ही कम मसीही परिवारों से नियमित रीति से पारिवारिक प्रार्थना होती है। परिणाम-स्वरूप अनेक परिवारों में झगड़े होते हैं। उनके बच्चे हठीले और आवारा बन जाते हैं। इसलिये पारिवारिक प्रार्थना के विषय कभी भी लापरवाह नहीं होना चाहिये। संभव हो तो पति-पत्नी को आत्मिक अनुभवों को बांटना चाहिये और एक दूसरे को प्रेम और धीरज से मानवीय निर्बलता और असफलता पर जय प्राप्त करने के लिये सहायता करनी चाहिये। सुखी पारिवारिक जीवन के लिये उनके हृदयों में प्रभु की आराधना करनी चाहिये और उसका आदर करना चाहिये। उन्हें स्तुति के गीत के साथ, घुटनों पर परमेश्वर के वचन को पढ़कर दिन की शुरुआत करनी चाहिये और इसी रीति से प्रभु की कृपा, दया, प्रेम और इसी रीति से उनका विश्वास दृढ़ होगा और प्रभु पर ज्यादा से ज्यादा प्रेम रखने में सामर्थवान होंगे। निदान उन्हें आराधना की सेवा में भी पूरा भाग लेना चाहिये। जहाँ तक संभव हो एक साथ प्रभु के घर में जाना चाहिये। कई पति महोदय कहते हैं, मेरी पत्नी को प्रार्थना करने दें। मेरे काम धंधे से मुझे समय नहीं मिलता। परन्तु साथ मिलकर प्रार्थना करना अत्यन्त आवश्यक है ऐसे घर में पृथ्वी पर स्वर्ग का अनुभव मिलता है।

दिसम्बर 11

क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया तो भी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें। इब्रानियों 4:15,16

सात सोने की दीवटों के मध्य महायाजक के रूप में प्रभु की उपस्थिति उसकी मध्यस्थ को सेवा के विषय कह रहा है। दुर्दशा में आ गिरे हुए लोगों के लिये यह आशा है कि हमारे मध्यस्थ के रूप में वह विनती करता है, भटके हुओं को बचाने में वह समर्थ है, "क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है (इब्रा. 7:25) वह उन्हें दोषित नहीं ठहराता, वह उन्हें उचक लेता है, उठाता है और उन्हें स्थिर करके स्थापित करता है। प्रभु को तथा उसके कार्य को तज देने वाले जैसे लोगों के लिये भी प्रभु विनती करता है। वह तब तक उनके लिये विनती करता है जब तक कि वे फिर से स्थिर न हो जाएं।

हमें भी प्रभु यीशु मसीह के सहकर्मियों के रूप में विनती करनी सीखना चाहिये। कई बार हम देखते हैं कि परमेश्वर के सेवकों पर शैतान अनेक रीति से परीक्षणों द्वारा हमला करता है। शत्रु की चालाकी के आगे वे हार जाते हैं और फिसल जाते हैं। ऐसे समय में क्या करना चाहिये? क्या हम उन्हें दोष देंगे? नहीं, मसीह उनके लिये विनती करता है। हमें भी उनके लिये विनती करनी चाहिये। जब हम मध्यस्थ की प्रार्थना को याजकीय सेवा करते हैं तब प्रभु जय दिलाता है और उनको अपने लिये फिर से स्थापित करता है।

आपसे मेरी नम्र विनती है कि किसी को दोष न दें। हमारे भाई का न्याय करना यह हमारा कार्य नहीं। निदान आप खुद भी निराश मत होईये, किसी को भी अपने लिये प्रार्थना करने को कहें। हमने बारम्बार अनुभव किया है कि एक दिन की उपवास प्रार्थना के बाद प्रभु ने हमें जय दिलाई है। इन दिनों में प्रार्थना के बोझ की बहुत आवश्यकता है।

दिसम्बर 12

हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चित रहकर क्यों कर बच सकते हैं। इब्रानियों 2:3

लेवियों को दिये नगरों में छः नगरों को नगर के रूप में पृथक रखा गया था। भूल से अनजाने में किसी को मार डालने वाला व्यक्ति इस नगर में भागकर सुरक्षित रहता था।

छः संख्या मनुष्य की संख्या है। परमेश्वर द्वारा हर एक मनुष्य के लिये एवं शरण स्थान की व्यवस्था किया हुआ है। प्रभु यीशु हरेक पापी के लिये सही शरण स्थान है। पापियों पर आने वाले परमेश्वर के कोप से बचने के लिये आपको मसीह में शरण लेनी पड़ेगी। तो ही आप संपूर्ण रीति से सुरक्षित रहेंगे। परमेश्वर का वचन कहता है, कि विश्वास के द्वारा धर्मो-जन जीवित रहेगा। (रोमियों 1:17) केवल विश्वास से ही आप धर्मी ठहर सकते हैं। अनुग्रह से प्राप्त हुये इस धार्मिकता को जो स्वीकार नहीं करते उन्हें परमेश्वर के क्रोध के लिये तैयार रहना पड़ेगा।

इन छः शरण नगरों में के तीन यरदन के इस पार और तीन उस पार थे। यह दिखाता है कि प्रभु यीशु की मृत्यु से पूर्व जीने वाले लोगों और उसके बाद जीने वालों लोगों के लिये परमेश्वर द्वारा व्यवस्थ किया हुआ है। कई बार हमसे यह प्रश्न किया जाता है, कि "यदि प्रभु यीशु मसीह एकमात्र उद्धारकर्ता है तो उसके संसार में आने से पूर्व जीवन बिताये लोगों के विषय में क्या? मसीह से पहले और मसीह के बाद के लोगों के लिये परमेश्वर और मसीह के बाद लोगों के लिये परमेश्वर ने बंदोबस्त किया है। पुराने नियम के विश्वास से जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनकर उस पर विश्वास किया उन सबके लिये धार्मिकता है। हरेक मनुष्य के लिये, हरेक युग के लिये और हरेक देश के लिये परमेश्वर ने ऐसी व्यवस्था लिये है, और हरेक युग के लिये। किसी भी देश के लिये और किसी भी युग के मनुष्य के लिये इस रीति से धर्मी होने का अधिकार मिला हुआ है। इसलिये तो वह सम्पूर्ण उद्धार है।

स्मरण रखें, एक दिन आपको आपके सृजनहार के समक्ष खड़े होना पड़ेगा। प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर के न्यायासन के समीप खड़े होना पड़ेगा। उस समय आप खुद या दूसरा कोई मनुष्य आपको बचा नहीं सकेगा, कारण कि वह खुद भी इसी खतरे में हो यह संभव है। परन्तु यहाँ एक है जो आपको बचा सकता है। प्रभु यीशु मसीह आपके पापों के लिये मारा गया और आपको धर्मी ठहराने के लिये वापस जी उठा, वह आपकी रक्षा करेगा। मसीह की पवित्रता ही आपको परमेश्वर के क्रोध से बचायेगी, क्योंकि सच्ची पवित्रता के बिना दूसरा कोई चीज परमेश्वर के क्रोध को शांत नहीं कर सकता।

दिसम्बर 13

मैं यहोवा के विषय कहूँगा कि वह मेरा शरण स्थान और गढ़ है। भजन. 91:2

इस्राएलियों के लिये ठहराये गए छः शरण नगरों में पहला "कादेश" था, जिसका अर्थ है, पवित्र। प्रभु यीशु मसीह हमें पवित्र एवं शुद्ध कर सकता है। उसकी अपनी धार्मिकता के द्वारा वह हमें धर्मी बनाता है। परमेश्वर की इच्छा है कि जैसा वह पवित्र है, वैसे ही हम पवित्र बनें। कोई भी मानवीय प्रयत्न हमें धर्मी और पवित्र नहीं बना सकते। हमें पवित्र बनाने के लिये प्रभु यीशु मसीह ने सभी कुछ किया है। उसने अपना प्राण देकर, हाँ, अनन्त जीवन देकर वह कार्य किया है। अपने सच्चे शरण स्थान प्रभु यीशु मसीह के पास आयें और कहें, प्रभु तुम ही मेरी धार्मिकता हो, मेरी पवित्रता हो।

दूसरा शरण नगर "शेकेम" था। शेकेम अर्थात भुजा। हममें से प्रत्येक को अनेक प्रश्नों का सामना करना पड़ता है, बोझ उठाना पड़ता है, जिम्मेदारियां उठानी पड़ती हैं, और दिक्कतों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। वे सोचते हैं कि प्रभु यीशु मसीह की सहयता के बिना वे सब कुछ कर सकेंगे। इसीलिये हमारी प्रार्थनाएं छोटी हो जाती हैं। हम अपने ज्ञान के आधार पर चलते हैं। परिणाम-स्वरूप सब कुछ विफल हो जाता है। हम थक जाते हैं और चिन्ता और भय के कारण आहें भरते हैं। परन्तु प्रभु यीशु हमारा उत्तम चरवाहा हमें अपनी भूजा देता है। वह हमें अपनी भुजाओं पर उठा लेता है। किसी भी परिस्थिति में कोई भी बोझ उठाने के लिये प्रभु यीशु मसीह को भुजा पार्यप्त बलशाली है। घुटनों पर जाकर प्रार्थना द्वारा जब हम उसकी भुजाओं पर अपना बोझ डालते हैं तब हमारा बोझ उठा लिया जाता है। हमारे सभी बोझ को उठाने का जिम्मा हमारे प्रेमी उद्धारकर्ता को सामर्थ भुजाएं ले लेती है।

तीसरा शरण नगर "हेब्रोन" था, जिसका अर्थ संगति कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति को मित्र चाहिए, नहीं तो वह अकेला हो जाता है। सच्चा विश्वासी यदि अकेले में रहता हो तो भी खुद को अकेला नहीं जानेगा, क्योंकि उसकी संगति परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र-आत्मा के साथ है। प्रभु यीशु मसीह आपके आत्मा के साथ है। प्रभु यीशु मसीह हमारे अकेलेपन में सच्चा शरण स्थान है। परमेश्वर के वचन में हम देखते हैं कि हनोक परमेश्वर के साथ चला अर्थात यह कि परमेश्वर के साथ उसकी मित्रता थी। इब्राहीम की भी परमेश्वर के साथ मित्रता थी। इब्राहीम भी परमेश्वर के संग बात करता और चलता था। यह अनुभव आपको भी हो सकता है। प्रभु यीशु आपको उसके प्रेमी, सदा टिकने वाला और सच्ची संगति देने वाला आपका सच्चा शरण नगर है।

दिसम्बर 14

हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक
हमारे लिये धाम बना है।
भजन.98:1

इस्राएलियों के लिये पृथक किए गये छः शरण नगरों में से चौथे नगर के विषय में हम यहोशू 20:8 में पढ़ते हैं। "…..जंगल में का बेसेर"। बेसेर अर्थात बल अथवा सामर्थ यह नगर जंगल में था। जब आप विपत्ति और कसौटी के जंगल में से गुजरते हैं तब आपको आश्चर्य होता है, परन्तु इन अनुभवों के द्वारा परमेश्वर आपको शक्तिशाली बनाता है। विपत्ति, कठिनाई, निर्धनता और संकट के समय प्रभु यीशु मसीह आपको सामर्थ का भण्डार जान पड़ता है। आपका विश्राम दृढ़ होता है, परमेश्वर के वचन के विषय की समझ गहरी होती है और आप अनेक स्वर्गीय मर्मों को समझ पाते हैं। आप जंगल को दण्ड (शिक्षा) का स्थान न मानें। उसे सामर्थ का भण्डार, गढ़ या किला समझें।

पांचवा शरण नगर समोत था। अर्थात ऊंचाई परमेश्वर चाहता है उसके बालक आत्मिक ऊंचाई को पहुंचें। परमेश्वर की इच्छा ऐसी है कि हम प्रभु यीशु के राज्यासन पर बैठें परन्तु शत्रु हमेशा हमें नीचे गिराने का प्रयत्न करता है। कई सांसारिक लोगों के द्वारा वह सलाह देता है कि, 'किस लिये आप इतने सारी सभाओं में जाकर समय बर्बाद करते हो? रविवार को एक दो घंटे सभा करें तो काफी हो"। इस रीति से आत्मिक पिछड़ापन आता है। परमेश्वर की इच्छा है कि उसके बालक उसका सामर्थ और उसका अधिकार पायें और उसके राज्य के भागीदार होकर उसके साथ राज्य करें। प्रत्येक विश्वासी का यह हक है।

छठवां एवं अन्तिम शरण नगर गोलान था। गोलान अर्थात गोलाकार। गोलाकार का आरंभ एवं अंत नहीं होता। इसलिये वह अनन्तकाल के संबंध में कहता है। जब आप प्रभु यीशु मसीह के पास आते हैं तब आपकी प्रवृत्तियां अनन्तकाल को लक्ष्य में रखकर होती है। मनुष्य की योजनाएं थोड़े वर्षों के लिये होती है। परन्तु एक विश्वासी की योजनाएं और उसके निर्णय इस रीति से होती है, जिनसे कि उसे अनन्त काल का लाभ हो। हरेक बात के लिये वह प्रश्न करता है कि, 'वह अनन्तकाल तक टिकेगा या मात्र थोड़े सालों तक? बाद में अनन्तकाल की बातों को स्वीकार करके, व्यर्थ की बातों को वह नकार देता है"।

प्रभु यीशु मसीह हमारा सच्चा शरण स्थान है। वह हमारी पवित्रता है, वह हमको और हमारे बोझ को अपने कंधों पर उठा लेता है, वह हमें सच्ची संगति और मित्रता देता है, वही हरेक परीक्षा पर जय प्राप्त करने के लिये सच्ची सामर्थ देता है, ऊंचे स्थान पर चढ़ने के लिये बल देता है और हमें अनन्तकाल के लिये तैयार करता है।

दिसम्बर 15

मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूँ। यशायाह 42:1

परमेश्वर अपने सेवकों को उसके हाथों से संभाले रखता है। हममें से कोई भी खुद के बल पर परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकते। जब तक हम अपने बल, ज्ञान या होशियारी पर आधार होंगे तब-तब हमारी मेहनत व्यर्थ जायेगी। कई वर्षों के बाद पौलुस इस बात को सीखा कि, "हम....शरीर पर भरोसा नहीं रखते"। (फिलिप्पयों 3:3)। यदि किसी को शरीर पर घमण्ड करने का कारण था तो वह पौलुस था। परमेश्वर के हाथों से उठाये रखे जाने का पाठ सीखा।

प्रभु हमसे बड़ी या छोटी चाहे कैसी भी सेवा ले, परन्तु यदि हम शरीर पर भरोसा रखेंगे तो विफल हो जायेंगे। हम हमारी परिस्थितियों तथा ज्ञान के अनुसार बर्ताव करने के अभ्यस्त हो गये है। इसलिये परमेश्वर बारम्बार हमारी योजनाओं को तोड़ डालता है। जिससे हम उस पर निर्भर रहना सीखें। परमेश्वर की सेवा करना, हमारा यह दृढ़ निश्चय होना चाहिये कि मैं अपने आप कुछ भी नहीं करता। वह जो कुछ करता है उसमें वह हमेशा अपने पिता पर आधार रखता था। यदि हम अपने बल पर सेवा करेंगे तो हमारी मेहनत परमेश्वर के लिये मानवीय प्रयत्न ही रहेगी, जिससे वह प्रसन्न नहीं होगा।

परमेश्वर की सेवा में यदि हमें बोलना हो तो हमारे होठ उससे अभिषिक्त होने चाहिये। यदि हमें हाथ से या पांव से उसकी सेवा करनी हो तो उससे हमें शक्ति प्राप्त होनी चाहिये। हमें उसके लिये लिखना हो तो हमारा मन उससे शुद्ध होना चाहिये। हम बोल सकें इसके पूर्व हमारे होठों को स्पर्श करने तथा हम जहाँ कहीं जायें वहाँ हमें मदद करने के लिये हमें उससे विनती करनी पड़ेगी। छोटे से छोटे काम के लिये परमेश्वर का सामर्थ मांगने में हमें हिचकिचाहट नहीं करना है हमारा कार्य चाहे जितना भी छोटा हो तो भी हमारी यह प्रार्थना होनी चाहिये, "मैं आपसे सामर्थ तथा मदद पाने के लिये आप पर आधार रखता हूँ"। जब आप निरन्तर ऐसा करेंगे तो आपको मालूम पड़ेगा कि परमेश्वर किस रीति से आपको अपने हाथ से संभाले रखा है।

दिसम्बर 16

मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है। भजन. 16:8

प्रभु यीशु ने पतमुस नाम टापू पर प्रेरित यूहन्ना को दर्शन दिया, जहाँ उसे देश निकाला हुआ था। उस समय विश्वासियों के विरुद्ध भारी सताव शुरू हुआ था, दोस जैसे अनेक विश्वासियों ने प्रभु का त्याग किया था और पीछे हठ गये थे। मण्डलियों में आत्मिक पतन आया था। इसीलिये यूहन्ना बहुत उदास, हताश और निराश हो गया था। प्रकाशितवाक्य 1:10,12 में हम पढ़ते हैं कि उसने पीछे से एक बाणी सुनी और जो उससे बोल रहा था उसे देखने के लिये उसने अपना मुंह फेरा। जब हत कोसी में मुलाकात के लिये जाते हैं तब सच्ची दिशा में जाते हैं। प्रभु भी सच्ची दिशा में आया था। परन्तु यूहन्ना विपरीत दिशा में देख रहा था। इसीलिये उसे फिरना पड़ा। उसके द्वारा प्रभु मानों यूहन्ना से कह रहा था कि, "यूहन्ना तू परिस्थितियों की ओर देख रहा है इसलिये तू निराश हुआ है। अपनी दृष्टि मुझ पर रख, परिस्थितियों पर नहीं"। हम भी जब विपरीत दिशा में देखते हैं तब निराश होते हैं। पतरस में जब तक प्रभु पर दृष्टि रखी तब तक तो वह सुरक्षित रहा, परन्तु जब उसने लहरों की ओर देखा तब वह डूबने लगा। (मत्ती 14:29-31)। चाहे हमारी परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, हमारी दृष्टि प्रभु यीशु पर ही होनी चाहिये। वह हमारी समस्याओं को जानता है। हम उन्हें सुलझा नहीं सकते उसे भी वह जानता है। इसलिये जब आप असफल हो और भविष्य के विषय दुविधा अनुभव कर रहे हों या सेवा में उलझ गये हों, तो प्रभु चाहता है कि आप फिरें और नई रीति से उसे देखना सीखें।

यूहन्ना ने प्रभु को सनातन याजक के रूप में देखा। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन के से थे। वे तो उसके सनातन ज्ञान, परिपक्वता और अनुभव को सूचित करता है। (दानिय्येल 7:9)। अग्निमय आग की ज्वाला की नाई उसकी आंखें सब देख सकती थी। वह सब कुछ जानता है। उसके पांव भट्ठी में तपाए गए उत्तम पीतल के समान थे वह न्यायदण्ड के विषय कहता है। प्रभु यीशु ने शैतान को चमत्कारों के द्वारा नहीं परन्तु क्रूस पर की मृत्यु द्वारा पराजित किया, उसके हाथों में सात तारे थे। वे बताते हैं कि हर समय एवं हर परिस्थिति में हमें उसके हाथों से पकड़ कर रखा जाता है। उसके मुख से निकलती हुई चोखी दोधारी तलवार परमेश्वर के वचन को सूचित करती है। उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। हमारे प्रभु को मलाकी 4:2 में धार्मिकता का सूर्य कहा गया है। जैसे वस्तुएं सूर्य के प्रकाश में नाश होती है वैसे ही संदेह, भय और शंका से आत्मिक वस्तुएं उसके मुंह के प्रकाश में नाश होती है।

प्रभु यीशु के स्वर्गीय महिमा तथा सौंदर्य पर दृष्टि करने के द्वारा हमें हमारी निराशा पर जय प्राप्त होती है।

दिसम्बर 17

तुममें जो प्राचीन है, मैं... उन्हें यह समझाता हूँ कि परमेश्वर के उस झुण्ड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो। 1 पतरस 5:1-2

दाऊद अच्छा, भला और प्रेमी चरवाहा था। उसके पिता की भेड़ों को रखवाली करते समय एक सिंह तथा एक रीछ ने झुण्ड पर हमला किया। तब मेम्ने को छुड़ाने के लिये वह सिंह के पीछे दौड़ा और जबड़ों को पकड़कर उन्हें फाड़ डाला। यह तो अच्छे चरवाहे के लक्षण हैं। हमारा प्रभु यीशु उत्तम चरवाहा है। यूहन्ना 10:11 के अनुसार उत्तर चरवाहे के रूप में भेड़ों के लिये उसने अपना प्राण दे दिया। वह हमें शैतान जो गर्जने वाले सिंह के समान है उससे बचाता है। (1पतरस 5:8)

इफिसियों के पुरनियों से पौलुस ने कहा, ...अपनी ओर पूरे झुण्ड की चौकसी करो, जिससे पवित्र-आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आयेंगे, जो झुण्ड को न छोड़ेगे"। (प्रेरितों. 2.:28,29) प्रभु के झुण्ड को क्रूर भेड़ियों से बचाने के लिये सच्चे अध्यक्षों की जरूरत है। पौलुस की गवाही (पद 2:31-35) पर से सच्चे अध्यक्ष के गुण लक्षणों को हम देख सकते हैं।

1) अध्यक्ष को सावधानी-पूर्वक प्रभु के झुण्ड की रखवाली करनी चाहिए।

2) उसे सोने-चांदी का लालच नहीं रखना चाहिए।

3) हाथों से परिश्रम करके दूसरों की जरूरतों को पूरा करना चाहिए।

4) निर्बलों की उसे मदद करनी चाहिए।

5) प्रभु के संग दु:ख उठाते हुए अन्त तक टिके रहना चाहिए।

6) उसका अन्त:करण निर्दोष एवं गवाही सही होनी चाहिए।

7) वह परमेश्वर के पूरे मनोरथ को जाननेवाला होना चाहिए।

ऐसे लोग ही परमेश्वर की मण्डली के लिये योग्य और अच्छे अध्यक्ष बन सकते हैं।

दिसम्बर 18

फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। निर्गमन 30:30

इसके पूर्व कि अभिषेक का तेल हारून पर उण्डेला जाये, सर्वप्रथम उसे मिलाप वाले तम्बू में वाचा का सन्दूक धूप की वेदी, होमवेदी पर उण्डेला जाता था। अन्त में उसे हारून पर उण्डेला जाता था। (लेवियों 8:10-12) दूसरों शब्दों में याजक की सेवा पूरे मिलाप तम्बू के संस्थापन के वास्ते थी, सभी स्थानों पर अभिषेक के तेल की सुगंध को देखा जाता था। हारून को न केवल एक मनुष्य या एक कुल को, परन्तु पूरे इस्राएल प्रजा की सेवा करनी थी।

इस बात को भी ध्यान में लें कि यह तेल ऐसी सेवा को सूचित करता था कि जिस सेवा को मिलाप तम्बू की परिधि में ही करना था। आप कहते हैं कि कई मकान एवं संस्थाएं है, कई अच्छे लोगों ने उन्हें बनाया है और उनके लिये काम करते हैं। उनका क्या? क्या ये सब झूठे एवं गलत है? मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आपकी सेवा परमेश्वर के मिलाप तम्बू को लक्ष्य में रखकर है? यदि नहीं, तो वह कोई फल ला नहीं सकती। लोगों का अर्पण लेकर याजक जिधर चाहे वहाँ नहीं जा सकता था। वह ऐसा कह सकता था कि, उससे पहले व्यक्ति के तम्बू में, उसे पहले कम्पाऊंड में या पहले वाले स्थल में से यज्ञ (हवन) कर सकता था। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा कि मिलाप तम्बू के आंगन से हरेक यज्ञ किया जाये और उसका हलू खुद की उपस्थिति में होना चाहिये।

इसी रीति से ही, परमेश्वर की वास्तविक मण्डली में वृद्धि लाने वाली सेवा ही प्रभु को स्वीकार्य है। यह विचार आपको कई प्रश्नों के उत्तर देगा। प्रभु को सिर्फ उसके मिलाप तम्बू के परम पवित्र स्थान से सुगन्ध लाने वाली सेवा चाहिये। ऐसी सेवा चाहिये, जिसके द्वारा प्रभु की समस्त मण्डली की उन्नति हो। सिर्फ एक शहर में ही नहीं, भारत में ही नहीं, पूरे एशिया खण्ड में ही नहीं, परन्तु विश्व भर में तथा युगानुयुग प्रभु की मण्डली की उन्नति हो, ऐसी सेवा प्रभु को चाहिये।

परन्तु ऐसी सेवा अत्याधिक दु:ख सहन तथा त्याग माँग करती है।

दिसम्बर 19

जिधर आत्मा जाना चाहती थी, उधर ही वे जाते थे, क्योंकि उनकी आत्मा पहियों में थी। यहेजकेल 1:20

यहेजकेल 1:15-21 में जीवधारियों अथवा करूबों के विषय पढ़ते हैं। बड़े पहिये तथा पंख सहित ये जीवधारी एक झुण्ड की रीति से दौड़ते थे। उन्हें पृथक नहीं कर सकते। जब जीवधारी चलते तब पहिये भी उनके साथ चलते थे और जीवधारी रुक जाते थे तब पहिये भी रुक जाते थे। पवित्र-आत्मा की आज्ञानुसार वे चलते या स्थिर खड़े रहते थे। पंख स्वर्गीय हलचल को सूचित करते हैं। परन्तु पहिये पृथ्वी पर के हमारे ध्येय तथा प्रवृत्ति को सूचित करते है। जिस रीति से पहिये एक साथ फिरते हैं और उसी रीति से हमें परमेश्वर के साथ कार्य करना है। पृथ्वी पर हमारी प्रवृत्ति, उपदेशक या शिक्षा अथवा जरूरत मंद वाली कोई सेवा स्वर्ग में, ईश्वरीय प्रवृत्ति अंकुश में होनी चाहिये। इस बात को हम तभी जान पाते हैं जब हम परमेश्वर के साथ शांत समय बिताते हैं। ऐसे कितने ही स्वप्न देखने वाले है, जिनके पंश तो है पहिये नहीं है। पृथ्वी परगवाही नहीं है। दूसरी ओर दूसरे कितने ही पृथ्वी प्रशंसा-पत्र तथा अच्छे माने जाने वाले ऐसे सत्कार्यों को करते है, परन्तु स्वर्ग के साथ उनका कोई संबंध नहीं है। ऊपर दर्शाई गई दोनों सेवाओं में से एक भी सेवा को परमेश्वर स्वीकार नहीं कर सकता। हमें पहिये एवं पंख दोनों ही चाहिये। हमारे पांव पृथ्वी पर हो, परन्तु जीवन स्वर्ग से प्राप्त होना चाहिये यह बड़ा भेद है। परन्तु इसके द्वारा हम एक साथ स्वर्ग का तथा पृथ्वी पर का मुख भोग सकते हैं।

निदान पहिये चारों ओर आंख की आंखों से भरे हुये थे। (यहेजकेल 1:18) आँखों की मद से पहिये चलते थे, स्वर्ग में जो कुछ हो रहा था उसे आंख देखकर समझ सकती थी। और वह भी देखते थी कि पहिये और पंख एक ही दिशा में जा रहे हैं, विपरीत दिशा में नहीं। अभी हम पृथ्वी पर है तब भी हमें परमेश्वर के साथ एक रूप होकर काम करना है, यह जानकर करना है कि वह किस रीति से तथा कौन सा काम करता है और क्या कहता है। बाह्य मुश्किलों, अकाल, भूकम्प, युद्धों, अनाथों के द्वारा परमेश्वर बोलते अथवा वो हमारी आंतरिक निराशाओं तथा असफलताओं द्वारा बोले। परमेश्वर हमसे क्या कह रहा है, उसे हमें ध्यान से सुनना है, और आत्मा की प्रेरणा से तुरन्त आधीन होना है। जब हम परमेश्वर के काम के साथ चलते हैं तब जो स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है, उसके द्वारा हमारी प्रवृत्ति और हलचल मार्ग दर्शन पाते हैं।

दिसम्बर 20

यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिये। तीमुथियुस 6:8

परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा कि, "मैंने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तुझे..... खिलाए"। (1 राजा 17:4), उसके बाद दूतों ने उसे भोजन दिया, परन्तु अभी तो उसकी आगामी सेवा के लिये तैयार होने के वास्ते एलिय्याह को कौओं के द्वारा भोजन दिया गया। सामान्य रीति से हम ऐसे भोजन को नकार देते है। कई बार खाना ठीक हो तो कॉलेज के बालक हड़ताल पर उतरते है, भोजन लेने से इन्कार करते हे। विद्यार्थियों के लिये तो चलता है, परन्तु परमेश्वर के सेवकों, गुप्त रीति से या प्रगट रीति से इस प्रकार करें तो वह गंभीर बात कहलाती है। हममें से बड़ी संख्या के लोगों को परमेश्वर अपनी कृपा से जो पूरा करता है उससे कहीं अधिक पाने की इच्छा होती है परन्तु परमेश्वर जो देता है उसे धन्यवाद के साथ स्वीकारना यह अच्छा है।

बॉम्बे (मुंबई) में एक बहुत धनवान पारसी सद्‌गृहस्थ रहते थे। एक दिन उन्होंने एक मिशनरी के पास जाकर कहा, "आप यदि मुझे एक सच्चा मसीही दिखा सकें तो में मसीही बन जाऊंगा"। वह मिशनरी उन्हें एक बहुत गरीब एरिया में ले गये। वहाँ एक मसीही झाड़ू लगाने वाला भोजन करने बैठा था। वह झाड़ू लगाने वाला मार्गों में झाड़ता और जो रोटी के थोड़े टुकड़े उसे मिलते उसे खाता था। उस दिन भी वह इसी रीति से रोटी का टुकड़ा खाने बैठा था। रोटी के साथ खाने के लिये सब्जी भी नहीं थी फिर भी प्रकाशित मुख के साथ वह प्रभु का आभार मानता गया। इसे देखकर उस पारसी सद्‌गृहसी का हृदय पिघल गया। उसने कहा, "मेरे पास अच्छा-अच्छा भोजन है, परन्तु कभी भी मैंने परमेश्वर को धन्यवाद नहीं दिया"। उस झाड़ू वाले का जीवन देखकर वह मसीही बन गया यह घटना सच्ची है। हमें सैकंड़ों बार छोटी-छोटी बातों से बड़बड़ाहट करते हैं कि यह ज्यादा है या कम है, या है ही नहीं वगैरह-वगैरह। हम यदि प्रभु को धन्यवाद देना सीखें तो चाहे भोजन कैसा भी हो पर परमेश्वर हमें आनन्द प्राप्त करने में सहायता करेगा।

दिसम्बर 21

मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे। भजन. 140:2

परमेश्वर के मन्दिर में पवित्र-स्थान में रात-दिन सोने की वेदी पर धूप जलाया जाता था। वैसे सोने का धूपदान हमेशा जलता रहता था। वैसे ही धूप भी दिन रात हमेशा जलता रहता था। प्रकाश यीशु के वचन को सूचित करता है जबकि धूप महायाजक द्वारा परमेश्वर तक पहुंचेवाली मध्यस्थी तथा प्रार्थना को सूचित करता है। उसमें हम सब का हिस्सा है। प्रकाशितवाक्य 8:3,4 से भी हम देख सकते हैं कि धूप पवित्र लोगों को प्रार्थना का प्रतीक है। उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोनहली वेदी पर जो सिंहासन के सामने है चढ़ाए"। हमें अब अनन्त जीवन का दान मिलता है, तब हम परमेश्वर के सहकर्मी बनते हैं, और सहकर्मियों के रूप में हमें सभी बातों की प्रार्थना, यीशु के पास लानी चाहिये। परन्तु किसलिए हमें प्रार्थना करनी है? हम प्रार्थना करें इसके पूर्व तो प्रभु जानता है। सचमुच हमें क्या चाहिये उसे प्रभु जानता है, इतना ही नहीं परन्तु हमारी कठिनाई तथा निष्फलताओं को भी वह जानता है। फिर भी हम सर्वदा प्रार्थना करें ऐसा वह चाहता है। ऐसा किसलिये?

किस रीति से हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं इसे हमें समझना चाहिये। जब हम प्रार्थना में उसके साथ बात करना आरंभ करते हैं तब वह दूसरे स्थानों में कार्य आरंभ करता है। यह विचार प्रकाशितवाक्य 8:5 में ज्यादा स्पष्ट दिखता है। ऊपर दर्शाये गये पद के नीचे ही वह आता है। और स्वर्गदूत ने धूपदान ले कर उसमें वेदी की आग भरी और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियां और भूंई-डोल होने लगा"।

हम परमेश्वर के सहकर्मी है। इसीलिये हमें प्रार्थना करनी है, और यदि इस पृथ्वी पर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर हमें न भी मिले, तो भी हम स्वर्ग जायेंगे तब हरेक को प्रभु प्रार्थना का उत्तर देगा कोई भी प्रार्थना निरन्तर नहीं जायेगी। परमेश्वर उसके नया जनम पाए हुये हरेक बालक की हरेक प्रार्थना सुनकर लिख लेता है। इसलिये जब आप प्रार्थना करते हैं, तब आपका समय व्यर्थ नहीं जाता। आप परमेश्वर के सहकार्यकर्ता, सहकर्मी के रूप में कार्य करते हैं।

ऐसा न विचारें कि प्रार्थना करते हुये आपको एक ही बात का पुनरुच्चारण करना है। प्रार्थना के लिये कोई शिष्टाचार नहीं है। हम परमेश्वर के सहकर्मी है और उस विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं। कभी कभार हमारे अंत:करण से आने वाले अवाच्य, दु:खद विश्वास हमारी प्रार्थना बनती है। जब हम सर्वत्र तथा दुष्टता देखते हैं तब प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु क्या तू न्याय नहीं करेगा। और हमारी प्रार्थना के द्वारा प्रभु कार्य करेगा।

दिसम्बर 22

उसने मुझसे कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है। 2कुरिन्थियों 12:9

बहुतेरे लोग कहते हैं कि मुझे विश्वास है, पर जब सच्ची कसौटी आती है तब उन्हें विश्वास नहीं होता। कितने ही विश्वास के विषय बात करते हैं। और कितने ही विश्वास के विषय गीत गाते हैं, परन्तु जब कसौटी आती है तब विश्वास डिग जाता है। उनके हृदय शंका और भय से भरपूर होते हैं, इसलिये वे जो कुछ करते हैं वह सच्चे और जीवित विश्वास से नहीं करते। पौलुस की देह में का कांटा क्या था इसे आज तक कोई नहीं जानता, परन्तु इतना तो स्पष्ट है कि वह बहुत ही कष्टदायक था। वह बड़बड़ाहट करने वाला व्यक्ति नहीं था। उसने कभी प्रभु से शिकायत नहीं की और जिन कसौटियों में उसे गुजरना पड़ा उसके लिये भी उसने बड़बड़ाहट नहीं की। पौलुस जिन परीक्षाओं में से गुजरा उसकी सूची 2 कुरिन्थियों 11:24-27 में मिलती है। इन सब दु:खों के होने के बावजूद पौलुस एक भी शिकायत नहीं करता। अत्यन्त भारी कसौटी में से भी किस रीति से पार होना है इसे वह जानता था। उसने कभी भी नहीं कहा, "हे प्रभु इन दु:खों में से मुझे फिर कभी भी न ले जाना"। वह कांटा इतना कष्टदायक था कि उसने कहा, "मैं उसे सहन नहीं कर सकता, मुझे बहुत ही पीड़ा होती है"।

प्रभु ने कहा, तेरे लिये मेरे अनुग्रह काफी है। पहला तो हद से बाहर जाकर बड़ाई करके पौलुस घमण्डी न होकर नम्र रहे इस तरह से और दूसरा अपने जीवन में पुनरुत्थान के सामर्थ को वह अनुभव कर सके, इस हेतुसर प्रभु ने कांटा आने दिया। इसी कारण से 2 कुरिन्थियों 12:10 में पौलुस कहता है कि निर्बलताओं को सहन करने में ही वह राजी नहीं था, पर दु:खों में, अपमान सहन करने से, संकट में, उपद्रव में वह प्रसन्न होता था और इस प्रकार पुनरुत्थान के सामर्थ को अनुभव करता था। फिलिप्पियों 4:13 में वह कहता है, "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ"। हरेक प्रकार की परिस्थिति में से गुजरने के बाद ही वह ऐसी गवाही दे सका। यदि वह भूखा भी हो तो वह प्रसनन रहता था। परमेश्वर ने उसके द्वारा अनेक आश्चर्यकर्म किये थे, फिर भी परमेश्वर उसे कई बार भूखे भी रखता था। कई बार उसे कई दिनों तक बिना भोजन के रहना पड़ता था, इसके उपरान्त दूसरी भी अनेक जरूरते उठ खड़ी होती थी। परन्तु उसकी सभी कसौटीयों में से वह बल प्राप्त करता था। परमेश्वर हमारे जीवन में अनेक कष्टदायक परिस्थितियों और संयोगों को आने देता है। जिससे हम उसकी विश्वासयोग्यता को परख सकें और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ हमारे अन्दर अधिक आती जाये।

दिसम्बर 23

तुम पृथ्वी के नमक हो.... तुम जगत की ज्योति हो, जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। मत्ती 5:13,14

हमारे प्रभु के समक्ष एक महान लक्ष्य था, और वह तो यह है कि इस पृथ्वी पर उसका कार्य करने के लिये कुछ चेलों को बुलाना। वह पापियों को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिये आया, जिससे कि संपूर्ण जगत के लिये नमक और रोशनी को पूरा करे। प्रभु जो कुछ करता था वह इसी विचार का आन्नद देने के लिये नमक को सदाकाल का आनन्द देने के लिये नमक और सदाकाल का जीवन देने के लिये प्रकाश को पूरा करना।

हम में से हरेक अच्छा शुद्ध नमक बन सकता है। हम संख्या में बहुत कम हों तो भी जहाँ हो वहाँ पूरे प्रदेश को आनन्द देने के लिये काफी है। हजारों की संख्या में लोगों को भोजन देने के लिये चावल की अनेक बोरियों की जरूरत पड़ती है, परन्तु इतने सारे नमक की जरूरत नहीं पड़ती। थोड़ा सा नमक बहुत भोजन को स्वाद दे सकता है।

ऐसे नगर और गांव है जहाँ विश्वासियों की संख्या बहुत कम है। शायद, दो, तीन, चार या पांच, परन्तु उस स्थान के सभी लोगों को आनन्द, प्रसन्नता और उजाला देने के लिये वे काफी है। इसीलिये प्रभु विश्वासियों की पहाड़ पर बसे हुए नगर के साथ तुलना करता है। वहाँ लोगों में चाहे एक ही विश्वासी हो तो भी यीशु मसीह के द्वारा जीवन और प्रकाश मिलता है यह संदेश देने के लिये काफी है।

स्वभाव से हम लाल मिर्च के समान है, सांत्वना एवं राहत देने के बदले हम दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं और दु:ख देते हैं। परन्तु कितने तो ऐसे हैं जो आशीष लाते हैं। वे दूर जाते हैं तब हमें दु:ख होता है। थोड़े से नमक के समान वे आनन्द सांत्वना प्रोत्साहन एवं ताजगी लाते हैं।

दिसम्बर 24

यहोवा ने तो सदा के जीवन
की आशीष ठहराई है।
भजन. 133:3

हम दिव्य प्रेम किस रीति से पा सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं? बहुतेरे लोग दिव्य प्रेम को सांसारिक आशीष से नापते हैं। वास्तव में यदि उनके पास सब समृद्धि हो तो वे समझते हैं कि परमेश्वर उनके ऊपर प्रेम रखता है। परन्तु परमेश्वर हम पर अनेक रीति से प्रेम प्रगट करता है। कोई मनुष्य बहुत सम्पन्न हो तो भी आंतरिक रीति से बेहाल हो सकता है। सांसारिक आबादी दिव्य प्रेम चिन्ह नहीं है फिर भी यह गलत विचार अनेक लोगों के मन में होता है। और दूसरे कितने तो स्वास्थ और सफलता को अत्याधिक आशीष समझते हैं। परन्तु परमेश्वर की आशीष अनंत जीवन में है और अनन्त जीवन के द्वारा हम जो अनुभव करते हैं वही सच्ची आशीष है। जब हमारे अन्दर आंतरिक शान्ति होती है तब हम सही जीवन को अनुभव कर सकते हैं।

परमेश्वर हमारे जीवन में सताव या दु:ख या दूसरी कोई परिस्थिति को आने दे तो भी अनन्त जीवन के कारण हम सच्ची आशीष को अनुभव कर सकते हैं। आशीषें भिन्न-भिन्न रीति से हमारे पास आती है। भजन संहिता 119:67,71 में देखते हैं कि दाऊद दु:ख एवं कसौटी को आशीष समझता है। उसके दु:ख के लिये दाऊद आभारी है, क्योंकि उसके द्वारा परमेश्वर के वचन को किस रीति से समझना और उसका पालन करना है। इसे वह सीखता है, दु:खों के द्वारा वह विस्तृत स्थल में आता है (भजन संहिता 18,19,35 और 36)। इसी रीति से अय्यूब 42:6,1,13 के अनुसार अनेक दु:खद कसौटियों के बाद अय्यूब आशीष का दुगना भाग पाता है। परमेश्वर हमारे जीवन में कैसी भी परिस्थितियों को आने दे, बाद में चाहे वह अत्यन्त कष्टदायक हो, तो भी हमें अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है इसलिये वे परिस्थितियां आशीषमय हो जाती है।

दिसम्बर 25

जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश रखने की वस्तु न समझा.... वरन अपने आप को दीन किया। फिलिप्पियों 2:6-8

प्रभु यीशु ने जब अपने वस्त्र उतारे, कमर में अंगोछा बांधा और चेलों के पांव धोये तब उसने चेलों की तरह हमें भी एक नमूना दिया। "यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोने चाहिए"।

सच्ची दीनता एक वह सद्‌गुण है। हम सब कभी-कभी जाने या अनजाने घमंड कर बैठते हैं। यह संभव है। हम हमारे बाइबल के ज्ञान के विषय या परमेश्वर के विषय जो सेवा करते हैं उस विषय में भी हम गर्व कर सकते हैं, परन्तु घमंड हमारी वृद्धि में भारी अड़चन समान है।

प्रभु यीशु मसीह स्वयं हमारा नमूना एवं सामर्थ है। उसकी दीनता को प्राप्त करने के द्वारा ही हम सेवा करना सीखते हैं। यह दीनता, मानवीय प्रयत्नों से नहीं आती। हमें प्रभु यीशु मसीह के साथ एक जुए में सच्ची रीति से जुड़ना पड़ेगा। जैसे दो बैल एक जुए के नीचे एक साथ कार्य करते है वैसी ही प्रभु यीशु मसीह के साथ भागीदार के रूप में कार्य करने के लिये आपको इच्छा रखनी पड़ेगी। इसी रीति से आप को प्राप्त कर सकते हैं हम में से अनेकों को दीन होने के लिये वर्षों लग जाते हैं। किसी न किसी कारण से हम घमंड करते हैं और इसीलिये दूसरों के प्रति ना पसन्दगी रखते हैं, और शायद धिक्कारते भी है।

प्रेरित पौलुस अति बड़ाई करने के खतरे में था इसीलिये परमेश्वर ने उसकी देह में कांटा रखा। दाऊद भी घमंडी हुआ और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को परमेश्वर के द्वारा स्थापित नियम के विरुद्ध बैलगाड़ी में लाया। दूसरी बात उसने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध इस्राएलियों को गिनती करने की आज्ञा दी। इसीलिए परमेश्वर उसे दो बार खलिहान के अनुभव में लाया। शिक्षित करके परमेश्वर ने उसके जीवन में से व्यर्थ बातों को दूर किया। हमारे जीवन में से भी बुरी बातों को दूर करके हमारे साथ भी ऐसा ही व्यवहार करता है। उसके बाद ही वह हम को उठाता है और अपना सामर्थ हमारे द्वारा प्रगट करता है।

दिसम्बर 26

तो मसीह का लोहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।

सनातन बातें सीखने के वास्ते परमेश्वर ने हमें सनातन आत्मा दिया है। मनुष्य जाति होने के नाते हम टल जाने वाली बातों के प्रति अधिक ध्यान देते हैं। परन्तु अनन्तकालीन बातों के संबन्ध में क्या? इस पृथ्वी पर हम जो सीखते हैं वे टल जायेगी।

मत्ती 24:35 में हम पढ़ते हैं, "आकाश एवं पृथ्वी टल जायेगी परन्तु मेरी बातें कभी भी नहीं टलेगी"। हम इतिहास भूगोल, तत्वज्ञान, गणित विज्ञान, भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र, विद्युत-शास्त्र से संबन्धित इत्यादि अनेक विषयों को सीखते हैं, परन्तु वे सब टल जायेगी। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे याद्दाश्त घटती जाती है। इन विषयों में बहुत अच्छे प्रतिशत से पास होकर उच्च उपाधियों को हम प्राप्त करते हों तो भी बहुत वर्षों के बीतने पर उसका स्मरण भी अदृश्य हो जाता है। परन्तु परमेश्वर के पास से जिसे हम प्राप्त करते हैं वह कभी टल नहीं जाता, वह अनन्तकाल तक टिका रहता है। जिसके द्वारा हम अनन्तकाल की बातों को समझ सकें और स्वर्गीय मर्मों का अर्थ भी पा सकें। अनन्तकालिक बातें, परमेश्वर की बातें और स्वर्ग की बातें मानवीय ज्ञान से समझ नहीं सकते।

आप नया जन्म और पवित्र-आत्मा को पायें तब ही आप स्वर्गीय मर्मों की पूरी समझ प्राप्त कर सकेंगे। यदि हम पवित्र-आत्मा पाएं हो तो हमें अनन्तकालीन बातों के प्रति अधिक भूख दिया जाता है। पवित्र-आत्मा हमारे साथ स्वतंत्र रीति से बात कर सकता है। बालक के समान सरल विश्वास से हमें कहना चाहिए, "प्रभु, अनन्तकाल, दिव्य, स्वर्गीय सत्यों को समझ कुछ अधिक समझाएं। आपके स्वर्गीय राज्य, दिव्य प्रेम और दिव्य अनुशासन के विषय मुझे अधिक समझायें"। और वह हमें समझाएगा कारण है कि वह सनातन आत्मा है।

दिसम्बर 27

हमारा राजा इस्राएल का पवित्र. ..है। भजन. 89:18

प्रभु यीशु हमारा स्वर्गीय राजा है और उसके स्वर्गीय अधिकार के नीचे हमें आना पड़ेगा। हममें से बहुतेरे प्रभु को नबी के रूप में और आश्चर्यकर्म करने वाले के रूप में प्रचार करते हैं। परन्तु स्वर्गीय राजा और अपने हृदय के राजा के रूप में पहचान नहीं देते। इसके लिये बहुत नम्रता दीनता एवं आधीनता की ओर रिक्त होने की जरूरत है। हमारा प्रभु यरूशलेम से बैतनिय्याह चौथी बार आया तब गधही के बच्चे पर सवार होकर आया। यह बताने के लिये कि वह राजा के रूप में प्रवेश कर रहा था। सर्वप्रथम हमें उसे हमारे हृदय में राजा की नाई सिंहासन के ऊपर विराजमान करना है और उसके बाद परिवार में और अन्त में मण्डली में। केवल तब ही हम हिम्मत और अधिकार सहित सुसमाचार फैला सकेंगे क्योंकि हमारे स्वर्गीय राजा की नाई हमने उसे हृदय में विराजमान किया है।

मरकुस 11:8 में हम देखते है कि बैतनिय्याह में आनन्द शुरू हुआ और यरूशलेम तक पहुंचा। बैतनिय्याह तो छोटा सा गांव और शास्त्रियों, फरीसियों का बड़ा नगर था जिसमें शास्त्रियों, फरीसियों और अन्य लोग और इसके अलावा बहुत लोग भी थे। परन्तु आत्मिक रीति से वे बिल्कुल अंधे थे। बैतनिय्याह छोटा सा गांव था इसके बावजूद भी वहाँ से आनन्द और वचन फैला।

इन दिनों में भी छोटे झुण्ड के द्वारा प्रभु अपने संकल्पों को पूर्ण करता है। हम संख्या में थोड़े हो तो भी यदि हम नम्र और आधीन रहें तो प्रभु हमारे द्वारा महान कार्य कर सकता है। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार के प्रश्न बिना पूर्ण हृदय की संपूर्ण आधीनता होनी चाहिये। प्रभु जो कुछ आज्ञा देता है उसे मानें। बछड़े को खोलते समय आसपास के लोगों ने चेलों से पूछा कि किसलिये वे उसे खोलते थे। (मरकुस 11:5) जब उन्होंने कहा कि प्रभु को इसका प्रयोजन है तब उन्होंने उसे जाने दिया। इसी रीति से प्रभु आपके पास से जो कुछ मांगे वह उसे तुरन्त इच्छा-पूर्वक और आनन्द-पूर्वक दीजिये। इस प्रकार विजयी जीवन के लिये, सुखी परिवार के लिये और जीवित मण्डली के लिये उसके सामर्थ का रहस्य आप पा सकेंगे।

दिसम्बर 28

तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी। यूहन्ना 2:17

हम से बहुतेरे लोग मित्रों की ओर से सम्मान मिले ऐसी इच्छा रखते हैं। हमारे नाम की निन्दा हो यह हमें पसन्द नहीं। परन्तु परमेश्वर की बातों में हमें प्रमाण में बहुत ही थोड़ा रस होता है।

मूसा परमेश्वर के घर के प्रति तथा परमेश्वर के संकल्प पूरे हो उसके लिये बहुत सावधानी बरतता था। परमेश्वर का नाम पूरी रीति से महिमा पाए ऐसी वह इच्छा रखता था। जब परमेश्वर कहा कि उसके द्वारा एक बड़ी जाति उत्पन्न करेगा तब वह सहमत नहीं हुआ। उसने कहा कि इस रीति से परमेश्वर का नाम निन्दित होगा। उसने कहा, "प्रभु तू इन लोगों को बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा निकाल लाया है। उन्हें बाहर निकालने में तूने अनेक आश्चर्यकार्य किए थे, वाचा के देश में उन्हें ले जाने की तूने प्रतिज्ञा की थी। अब यदि तू इन लोगों को मिटा डाले तो तेरे विषय और तेरे वचनों के विषय मिस्री लोग क्या कहेंगे? हे प्रभु तेरा नाम निन्दित होगा"।

मूसा परमेश्वर के वचन से लिपटे रहा। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर उसने भरोसा रखा। हमें जीवन की कठिन परिस्थितियों की ओर न देखते हुए हमें परमेश्वर के वचनों का दावा करना चाहिये। हमारे आसपास मुश्किल परिस्थितियाँ हों तो भी तरीके से चलना चाहिये। परमेश्वर की विश्वास-योग्यता पर भरोसा रखकर, उसके वचन पर विश्वास और भरोसा रखेंगे तो परमेश्वर अपने वचनों को पूरा करेगा।

इस्राएलियों के पाप के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा तब भी मूसा ने उनके पाप को कबूल किया और उनके पक्ष में बलिदान चढ़ाया। उसने प्रार्थना करते हुए कहा, "मेरा नाम मिटा डाल... परन्तु लोगों को क्षमा कर"। परमेश्वर की धार के लिये मूसा कितनी चिन्ता रखता था। परमेश्वर की प्रजा से कितना प्रेम करता था। परमेश्वर की प्रजा के लिये किसी भी प्रकार की हानि उठाने के लिये वह तैयार था। वह बिल्कुल निःस्वार्थी था। हमें भी लोगों के उद्धार के लिये कोई भी हानि उठाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

दिसम्बर 29

एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें....पर एक दूसरे को समझाते रहें। इब्रानियों 10:25

यरदन नदी के पार करने के लिये वाचा के सन्दूक को उठाकर याजक आगे चले और बाकी के लोग उनके पीछे गये। हमें भी पूरी मण्डली के साथ खुद को एक करना है और इस प्रकार हरेक रुकावट पर जय प्राप्त करनी है। हमें अन्य विश्वासियों के साथ संगति रखनी है और मण्डली के निर्माण कार्य में पूरा हिस्सा लेना है। बहुतेरे विश्वासी अन्य विश्वासियों के साथ संगति के लिये नहीं मिलते है। वे ऐसा समझते हैं कि घर में रहकर, अच्छी किताबों को पढ़ने के द्वारा या कोई अच्छा कार्य करने के द्वारा या ऐसी बातों को अपनाने के द्वारा उन्हें आशीष मिलेगी। इन दिनों में आप रेडियो पर दिन-भर संदेशों से तृप्ति पाते हैं।

वे मानते हैं कि अच्छे संगीत और अच्छे सन्देशों से परमेश्वर की सभी आशीषों को वे प्राप्त करेंगे। परन्तु भजन, प्रार्थना या बाइबल अध्ययन के लिये इकट्ठे मिलने के द्वारा जो संगति मिलती है उसका मूल्य वे जानते नहीं है। अच्छी सामायिकों या किताबों को पढ़कर रेडियों पर सन्देशों को सुनकर आप पूर्ण आशीषों प्राप्त करेंगे ऐसा विचार न करें। इस रीति से तो आप निर्बल और बलहीन हो जायेंगे। साथी विश्वासियों की प्रार्थना और संगति में न जाने से आप इकट्ठे मिलने के अनेक लाभों को खोयेंगे। हमारी शक्ति और वृद्धि का आधार एक दूसरे की संगति पर है। प्रारंभिक विश्वासी लोग आत्मिक रीति से वृद्धि पाने लगे क्योंकि वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति में, रोटी तोड़ने में तथा प्रार्थना में दृढ़ता से लागू रहे। (प्रेरितों के काम 2:42)

दिसम्बर 30

प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। प्रकाशितवाक्य 2:10

जो जय पाते हैं उन्हें बड़ा प्रतिफल दिये जाने के वचन के विषय में हम परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। बाइबल का असामान्य ज्ञान या श्वास सिद्धान्त हमें जयवन्त नहीं कर सकते। परन्तु ईश्वरीय सिद्धान्तों की समझ हमें जयवन्त होने में मदद करती है। जयवन्त जीवन एवं सरल ईश्वरीय सिद्धान्त यह है कि... विश्वासी बने रहना। छोटी-बड़ी बातों में भी विश्वासी बने रहना सीखेंगे तो किस रीति से जयवन्त जीवन जीना है इसे हम जान सकेंगे।

यह सन्देश स्मुरना की कलीसिया गया था स्मुरना और गंधरस ये दोनों शब्द एक ही भूल में से आते हैं। गंधरस सुगंधद्रव्य को घंटों तक बारीक कुटा जाता था और तब उसमें से मीठी सुगन्ध आती थी। जैसे-जैसे वह ज्यादा कूटे जाते हैं वैसे-वैसे सुगन्ध ज्यादा आती। इसी रीति से जैसे-जैसे हम अधिक दु:ख सहेंगे वैसे-वैसे आत्मिक रीति से हम दृढ़ होते जाते हैं, और प्रभु यीशु की मीठी सुगन्ध फैलाते हैं।

प्रभु चाहता तो स्मुरना के विश्वासियों को क्लेश में से बचा सकता था। परन्तु उसने वैसा नहीं किया और इसके विपरीत अत्याधिक भारी दु:खों की नबूवत किया। उसने उन्हें विश्वासी रहने को कहा और ऐसा भी कहा कि उन्हें दस दिन तक क्लेश सहने पड़ेंगे। दस संख्या कसौटी की संख्या है। हरेक क्लेश और परीक्षा में उन्हें विश्वासी रहना था, तभी उन्हें जीवन का मुकुट प्राप्त होना था।

इन दिनों में विश्वास-योग्यता की बड़ी जरूरत है। विश्वास-योग्यता के द्वारा ही हम परमेश्वर के घर में जीवन के कार्यकर्ता व अविश्वासी बनते हैं। कभी-कभी परमेश्वर को प्रजा में असफलता, नुकसान, झगड़े और विभाजन दिखाई देते हैं। इसलिये हरेक सेवा जो प्रभु हमें देता है उसमें विश्वासी बने रहना अनिवार्य है।

दिसम्बर 31

हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं। इब्रानियों 6:1

प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य रक्त द्वारा उद्धार पाए हुए हम सबों में यह इच्छा होती है कि परमेश्वर जिसकी आशा हमसे रखता है वह आत्मिक पुख्तता और सिद्धता हम प्राप्त करें। प्रभु यीशु मसीह स्वयं सिद्धता का प्रमाण है, और परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम इस श्रेणी तक मसीह की सिद्धता के सोपान तक पहुँचें। इसी हेतु परमेश्वर ने हमें उद्धार दिया है। परन्तु हममें से अधिकांश लोग परमेश्वर की श्रेणी से बहुत ही नीचे मालूम पड़ते हैं और आत्मिक रीति से बालक ही रहते हैं। इब्रानियों 5:11 में भारी हृदय के साथ पौलुस लिखता है, "तुम ऊंचा सुनने लगे हो"।

इसका एक कारण इब्रानियों 2:1 में दिया गया है, "इस कारण चाहिये कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी है, और भी मन लगाएं ऐसा न हो कि बहकर उनसे दूर चले जाएं (अंग्रेजी में हाशिया में के अनुसार) ऐसा न हो कि वह हममें से बह जाए"। जो लोग उद्धार की महानता के विषय सुनते हैं पर उसके पूर्ण सुखानुभव में आते नहीं है उन्हें एक दरार पड़े हुए बर्तन के साथ तुलना की जाती है। दरार इतनी बारीक होती है कि वह नजर नहीं आती परन्तु उससे प्रवाही को उण्डेलते ही वह बह जाता है। कई विश्वासियों में आत्मिक सत्य इसी रीति से निकल जाते हैं। कितने ही लोग हैं जो एक कान से सुनते है, और वह दूसरे कान से निकाल देते हैं। कितने तो घर भी नहीं पहुंच पाते हैं इस दरमियान वचन बहाते हैं। दूसरे कितने तो थोड़े दिनों तक उन्हें संभालते हैं परन्तु बाद में वह भी खाली हो जाता है। परमेश्वर की सिद्धता की श्रेणी तक वे पहुंचते ही नहीं हैं।

प्रभु यीशु मसीह के साथ निरन्तर संगति बनाये रखने के द्वारा हम इस जोखिम में से बच जाते हैं। अपनी समझदारी स्वेच्छा या मानवीय लियाकतों से हम इस जोखिम से खुद को बचा नहीं सकते। पल-पल प्रभु की उपस्थिति की चेतना में रहने के द्वारा वह हमें जयवन्त जीवन जीने में मदद करेगा।